CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

2009

CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

2009

Contents

February 2009 Vol-21 No. 7

March 2009 Vol-21 No. 8

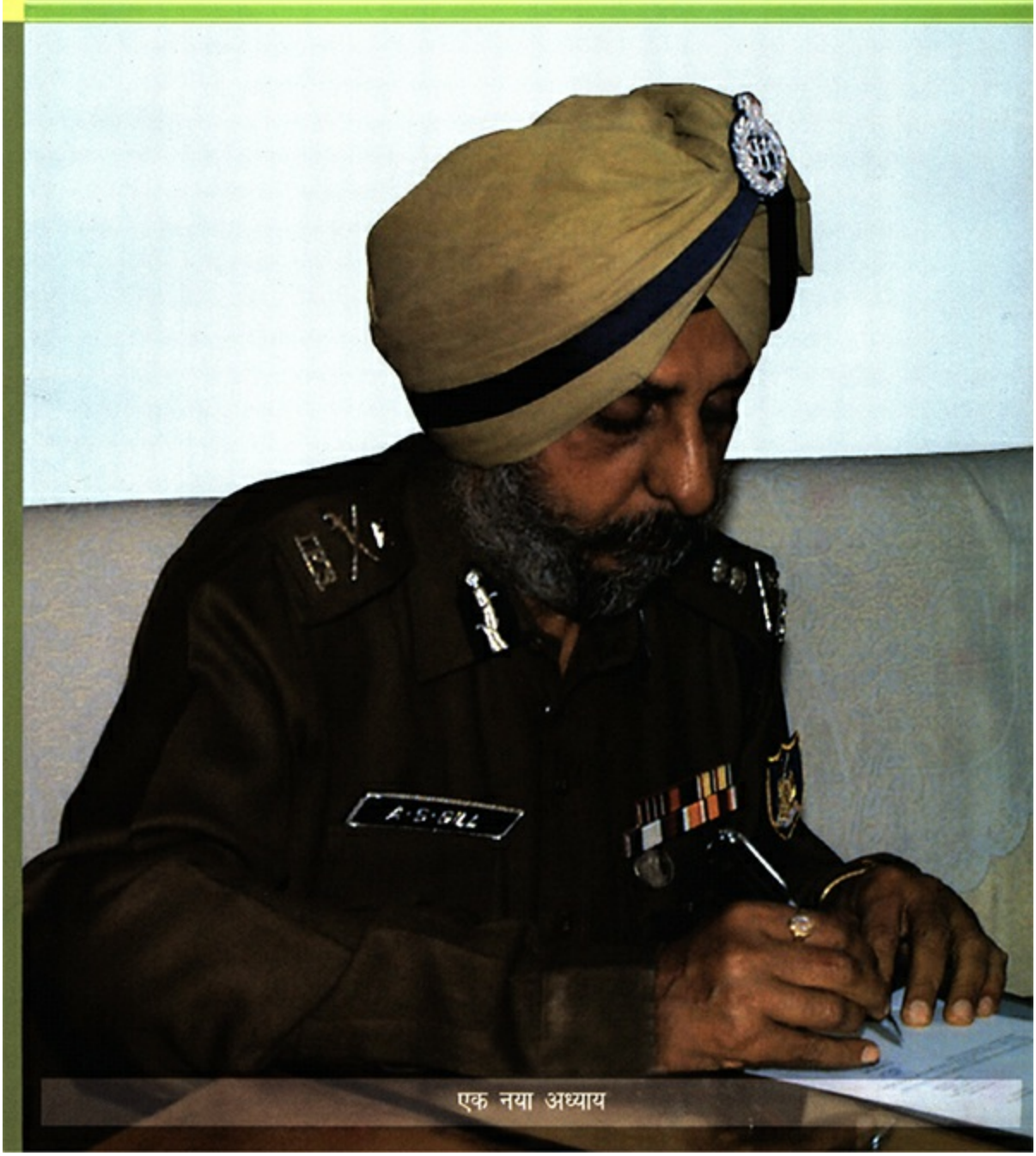
May 2009 Vol-21 No. 9

August 2009 Vol-21 No. 10

November 2009 Vol-21 No. 10

December 2009 Vol-21 No. 10

सी.आर.पी.एफ. समाचार



एक नया अध्याय



पूर्व महानिदेशक श्री वी.के. जोशी, नए महानिदेशक श्री ए.एस. गिल को बेटन सौंपते हुए।



ग्रुप केंद्र झड़ौदाकलां में आयोजित फेयरवैल परेड का निरीक्षण करते हुए श्री वी.के. जोशी, महानिदेशक

सीआरपीएफ सामाचार

Vol.21 No.7

फरवरी 2009

मुख्य संपादक: अजय चतुर्वेदी, **संपादक:** पंकज गुप्ता, **चित्र:** जनसंपर्क फोटो सेल, महानिदेशालय और सीआरपीएफ यूनिट्स, **संपादकीय कार्यालय:** महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, ब्लॉक-1, केन्द्रीय कार्यालय परिसर, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003, **दूरभाष:** 24360649, **महानिदेशक सीआरपीएफ की ओर से मुद्रित और प्रकाशित:** विबा प्रेस प्रा. लि., सी-66/3, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली-110020, दूरभाष: 41611300-31, 9810049515

संपादकीय सलाहकार समिति

अध्यक्ष: विजय रमन, अपर महानिदेशक (मुख्यालय), **सदस्य:** एस.के. सिंह, महानिरीक्षक (कार्मिक), डी.सी.डे., महानिरीक्षक (संभरण), एस.आर.ओझा, उपमहानिरीक्षक (प्रशासन), रमेश चन्द्र, उपमहानिरीक्षक (कार्मिक), एल.आर.सिधरा, उपमहानिरीक्षक (परिचालन), पी.पी. सिंह, उपमहानिरीक्षक (प्रशिक्षण), जी.डी. पेवाल, उपमहानिरीक्षक (संभरण), रोजी अग्रवाल, उप वित्तीय सलाहकार

सीआरपीएफ समाचार मासिक पत्रिका है जिसमें प्रकाशित किये जाने वाले विचार लेखकों के व्यक्तिगत विचार हैं। विभाग की नीति से इसका कोई संबंध नहीं है।

मुख्य संपादक



लाइबेरिया स्थित केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की महिला संघटित पुलिस यूनिट (FFPU) का दौरा– खुले मानव संसाधन के नये झरोखे

के.रि.पु. बल : नीति वचन, धारणा, संभावना

तनाव का सामना करने के लिए अपनी भावनाओं की साम्यावस्था को पूर्ण रूप से समझें



नए महानिदेशक का परिचय



विषय सूची

लाइबेरिया स्थित सीआरपीएफ की महिला संघटित पुलिस यूनिट (FFPU) का दौरा- खुले मानव संसाधन के नए झरोखे

केरिपुबलः नीति वचन, धारणा, संभावना

स्पैशल सेक्टर का उगता सूरजः ग्रुप केन्द्र बिलासपुर

ग्रुप केन्द्र काठगोदाम का शिलान्यास

करवा चौथ

मधुमेह

तनाव

महिलाएं घरेलू हिंसा से कैसे बचें

सफलता के लिए

हम भूल गये... हँसना

आंतकवाद एक परिवेश प्रक्रिया एवं समाधान

रिपोर्ट

23 बटालियन को ट्राफी

बल कार्मिकों के लिए एक नई उम्मीद

नए महानिदेशक का संक्षिप्त परिचय

महानिदेशक की सेवानिवृत्ति

नए महानिदेशक द्वारा कार्यभार ग्रहण

पश्चिमी सेक्टर को राजभाषा शील्ड

विविध समाचार

कांवेता



लाइबेरिया स्थित केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की महिला संघटित पुलिस यूनिट (FFPU) का दौरा- खुले मानव संसाधन के नये झरोखे

ए.पी. माहेश्वरी
पुलिस महानिरीक्षक, भा.पु.से

अ हा हा, मेरा अंगूठा अभी तक सलामत है! अपनी आज़ादी के बाद,

आत्म-गौरव की इस अनुभूति को लाइबेरिया वासी पालते-पोसते हैं। इसको वे अपनी हाथ मिलाने की स्टाइल से व्यक्त करते हैं। एक गणतंत्र, जिसने वर्ष 1986 में अपना संविधान अंगीकार किया, अमरीकी उपनिवेशवादी समाज से वर्ष 1847 में आजादी प्राप्त की तथा इस प्रक्रिया द्वारा दासता को समाप्त किया। एक संपन्न देश, जिसने वर्ष 1989 से 2003 तक 14 साल चले लम्बे पाशविक गृह युद्ध में अपना लगभग आकस्मिक विध्वंस देखा। यहां मूल देशज आबादी से बने अलग-अलग 16 जातीय समूह हैं। देश घोर संकट का सामना कर रहा है, जो कि लोगों के जीवन स्तर

में अत्यांधेक ंगिरावट के कारण और ंबिगड़ गया है। वहां ंविशेषकर ंशिक्षा और बुनियादी ढांचे का अभाव है। संघर्षरत इस ग्रिड में निर्वाह के साधनों का स्थान, लूटमार, ड्रग तस्करी,वेश्यावृति, भ्रष्टाचार और अन्य अनाचारों ने ले लिया है।

ऐसे परिदृश्य के बीच, वर्ष 2003 के दौरान लाइबेरिया में संयुक्त राष्ट्र मिशन (UNMIL) स्थापित किया गया था। समय गुजरने के साथ सेना की यूनिटों का स्थान, संघटित पुलिस यूनिटों (FPUs) द्वारा, लाइबेरियन राष्ट्रीय पुलिस (LNP) को सहायता प्रदान करने तथा उचित कानून व व्यवस्था स्थापित करने के साथ ही साथ LNP के लिए क्षमता निर्मित करने के उद्देश्य से, लिया गया। लाइबेरिया में संयुक्त राष्ट्र मिशन (UNMIL) में के0रि0पु0बल की सहभागिता, वर्ष 2007 में पूर्णतः महिला संघटित पुलिस यूनिट (FFPU) की वार्षिक आधार पर तैनाती के साथ शुरु हुई। अब तक ऐसी दो सैन्य टुकड़ियों द्वारा एक के बाद एक, अपनी व्यावसायिक एवं आचरण संबंधी कुशाग्रता प्रमाणित की गई है। उन्होंने सशक्त रूप से यह संकेत दिया है कि ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे के0रि0पु0बल दुःसाध्य मानता हो। संयुक्त राष्ट्र प्राधिकारियों का यह कथन कि "क्या आपकी पुरुषों की सैन्य टुकड़ियां भी, आपकी महिला FPUs के समान ही उत्तम हैं ?" प्रोत्साहित करने वाला है।

24-26 नवम्बर 08 को केरिपुबल के लाइबेरियन मिशन के दौरे का अनुभव लाभप्रद रहा। श्रीमती राखी साही, वरिष्ठ कमांडर के नेतृत्व में सैन्य टुकड़ी के उत्साही सदस्यों ने, उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों के संबंध में, आत्म गौरव के जोशीले भावों को व्यक्त किया। अंतर्राष्ट्रीय प्रेस द्वारा उनकी सफलता की कहानियों को विश्वभर में प्रचारित किया गया है।

लाइबेरियाई नारी जाति के लिए आदर्श व परिवर्तन की उत्प्रेरक महिला सैन्य टुकड़ी की सदस्य, जो कि लाइबेरियन राष्ट्रपति के मुख्यालय की भी दिन-रात पहरेदारी करती हैं, प्रजातांत्रिक ढंग से चुनी गई पहली महिला राष्ट्रपति महामहिम एलेन जानसन सिर लीफ की भी कृपा-पात्र बनी हुई हैं। अन्य कठिन कार्यों में, UNPOL और LNP के साथ संवेदनशील क्षेत्रों में संयुक्त गश्त लगाना, लूटमार रोकने में सहायता देने के लिए गश्त करना, कानून व व्यवस्था ग्रिड पर किसी भी संकट/ हिंसा के प्रति त्वरित प्रतिक्रिया करना सम्मिलित हैं। इलाके में कार्यरत नेपाली व जोर्डन के FPUS के साथ भी इस सैन्य दल के सुखद संबंध हैं।

भारत से गए दो सदस्यों वाले प्रतिनिधिमंडल को विवरण देते समय सैनिक टुकड़ी के अधिकारियों की टिप्पणी थी कि "श्रीमान, यहां के लोग आमतौर पर काम नहीं करते है। वे बेकार बैठे रहते हैं, गपियाते हुए और मद्य सेवन करते हुए आराम से समय गुजारते रहते हैं। पुलिस भी भ्रष्ट है।" यह देखकर आश्चर्य होता है कि प्राकृतिक संपदा से परिपूर्ण यह देश, इतनी घोर गरीबी तथा विभिन्न स्तरों के अभावों के कष्ट क्यों झेल रहा है? तथापि, यहां के इतिहास और जन-सांख्यिकी में कहने के लिए काफी कुछ है। तथापि, जब आप स्थानीय जनता, विशेषकर बच्चों के साथ बातचीत (Interact) करते हैं तब सभी ज्ञानात्मक असंगतियां सहज ही समाप्त हो जाती हैं। इस

संबंध में हम यह उल्लेख करना नहीं भूल सकते कि, भारतीय सैन्य टुकड़ी द्वारा अपने नज़दीकी एक विद्यालय को अंगीकार किया गया है तथा इसे हर प्रकार से यथा संभव सहायता प्रदान की जा रही है। समाज तक पहुचने का कार्यक्रम अथवा नागरिक कार्य प्रोग्राम जैसा कि हम इसे पुकारते हैं, स्थानीय जनता के साथ संबंध जोड़ने और बेहतर सहयोग करने में सहायता प्रदान करता है। महिला सैन्य टुकड़ी द्वारा प्रशिक्षित अफ्रीकी बच्चों को "गिद्दा" नृत्य करते तथा लोकगीत गाते देखना एक सुखद अनुभूति थी। हाल में जब इस संबंध में हम इस बात का विशेष उल्लेख करते हुए जानकारी दे रहे थे कि हमारी सैन्य टुकड़ी द्वारा कैसा अच्छा काम किया गया है तथा लोगों के साथ झिझक को दूर करने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आदान-प्रदान भी किया है, तब अधिकांश ने तो इन प्रयासों की प्रशंसा की परन्तु एक अधिकारी ने उदास होकर कहा कि 'सावधान रहें तथा स्थानीय भावनाओं को ठेस न पहुंचाएं।' और वह पूरी तरह ठीक कह रहा था। चालाकी भी उनके जीवन का अंग है।

"प्रत्येक को बहत सतर्क रहना होगा, और इसलिए हम पहले से ही अपेक्षित सावधानियां बरत रहे हैं" सैन्य टुकड़ी कमांडर राखी साही ने तुरन्त एक भी शब्द का खंडन किए बिना, विशेषकर स्थानीय पुलिस कमिश्नर के साथ अतः क्रिया (Interacting) करते समय, मृदु शब्दों में प्रत्युत्तर दिया। ऐसे अवसरों पर ट्यूसिंग प्रायः मुस्कराकर सहमति व्यक्त करते हुए कहता 'जी मैडम, आप सही कह रही हैं।' यह अनुचित होगा अगर हम ट्यूसिंग को उस रूप में न जानें जिस रूप में कि हमें जानना चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र और लाइबेरिया की अन्य एजेंसियों के बीच अंतरापृष्ठ (Interface) उपलब्ध करानें वाला भारतीय FFPU का एक कुशल व स्पष्ट बोलने वाला स्नेही पुरुष।

चूंकि FFPU सहचारिता, टीम कार्य, विचारों की स्पष्ट और अपेक्षित व्यावहारिक प्रतिक्रिया की प्रतीक बन गयी है, अतः दूसरों की अपेक्षा केवल इन दो अधिकारियों के नामों का उल्लेख करना प्रतीकात्मक है। उनकी मेडल परेड तथा अन्य प्रोग्राम भी इन सब गुणों को प्रतिबिंबित कर रहे थे।



तथापि, एफएफपीयू के सदस्यों के अपने निजी दुःख, कुछ काम से संबंधित व कुछ व्यक्तिगत दुःख हैं। बीमारी के कारण स्वर्गवासी हुई कांस्टेबल भारती की दुःखद मृत्यु पर श्रीमती इन्द्रजीत कौर, निदेशक पुलिस, गृह मंत्रालय का दुःखी होना स्वाभाविक था। मृत्यु मलेरिया से हुई अथवा दोनो फेफड़ों के खराब हो जाने से, इस विवाद से क्षीयमान हो रहे हम लोग, स्थानीय पर्यावरण द्वारा प्रस्तुत स्वास्थ्य संबंधी खतरों व किए जा रहे जवाबी उपायों की पर्याप्तता के प्रति बहुत चिंतित थे। आवधिक मलेरिया रोधी औषधियां खिलाने के साथ-साथ कदाचित हमें बार-बार गहराई से मेडिकल जांच करवाने की जरुरत है। सैन्य टुकड़ी की कमांडर द्वारा यह भी प्रकाश में लाया गया कि अन्य FPUs में प्रशिक्षण के एक अंग के रूप में शस्त्रों से फायरिंग की अच्छी प्रेक्टिस होती है, और उन्होंने 12”X12” तक के छोटे टारगेटों पर परिशुद्ध फायरिंग करनी सीख ली है। स्थानीय भूभाग में अच्छी प्रकार आवागमन निसान (NISSAN) जैसे वाहनों से संभव है और भारतीय सूमो, भारी टूट-फूट के बावजूद संयुक्त संचलन के दौरान कारवां के अन्य वाहनों के साथ मुश्किल से चल पाती हैं। यह समस्या, पीछे स्वदेश में बार-बार उत्पन्न होने वाली प्रक्रियात्मक विलम्ब से बचने के लिए, स्थानीय सैन्य टुकड़ी कमांडर को वाहन खरीदने की शक्तियों के प्रत्यायोजन के साथ जुड़ी है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि कानून व व्यवस्था से संबंधित परिस्थितियों में सचलता उतनी ही महत्वपूर्ण है जितने कि उपयुक्त किस्म के दंगारोधी उपकरण। क्षेत्र की गरम व आर्द्र जलवायु को ध्यान में रखते हुए कालर ‘टी’ शर्ट के साथ टग्ड आउट पैटर्न की डांगरी के संबंध में सुझाव स्वागत योग्य है। चूंकि

अन्य FPUs केवल 6 माह के लिए आती हैं और उनकी तुलना में भारतीय FFPU पूरे एक वर्ष रहती है अतः संयुक्त राष्ट्र के साथ समझौता पत्र (MoU) में प्रत्येक 6 माह में दोनों तरफ आने-जाने के मुफ्त छुट्टी पास के लिए मोल-भाव करना विवेकपूर्ण होगा।



पुरुष प्रधान पारिवारिक वातावरण, जो कि आम तौर पर व्यापक रूप से सत्य है, से दूर, एफएफपीयू की कुछ सदस्यों को सांस लेने की फुर्सत तथा दुबारा सोचने के पुनर्योवन प्राप्त करने का समय मिल रहा है। इसकी प्रतिक्रिया काफी रोचक रही है, तथा ऐसा महसूस किया गया कि, काम के मोर्चे पर तैनात महिलाओं की समस्याओं को भली प्रकार समझने के लिए,सैन्य टुकड़ी कमांडर द्वारा इनके अनुभवों को संकलित किया जाना चाहिए। उन्हें विदेश प्रतिनियुक्ति से प्राप्त धन को व्यर्थ खर्च करने से बचाकर बचत में लगाने के संबंध में मार्गदर्शन दिए जाने की भी जरुरत है।



ऐसी बहुत सी अन्य बातें हैं जिन्हें हम अपनी सरकारी रिपोर्ट में सम्मिलित करना चाहते हैं। तथापि मैं अपने लेख को, हमने केरिपुबल की क्षमताओं के संबंध में संयुक्त राष्ट्र के महासचिव की लाइबेरिया में स्थित विशेष प्रतिनिधि सुश्री एलेन मार्गेट को जो कुछ बताया, उसे सम्मिलित करते हुए यही समाप्त करता हूं। यूएनएमआई एल इतने प्रयासों से जो कुछ कर रहा है, यह भारत में के0रि0पु0बल के लिए एक आम कार्य है। एक अग्रणी केंद्रीय बल के रूप में यह विभिन्न संघीय राज्यों के दूरस्थ, अगम्य, संघर्षग्रस्त क्षेत्रों में जाता है, और दुर्गम भौगोलिक के साथ-साथ मानवीय भूभाग को पार करता है। यह संकट की स्थितियों से निपटने में, स्थानीय एजेंसियों तथा स्थानीय लोगों के साथ सहक्रिया स्थापित करने में, और स्थानीय सुरक्षा ग्रिड में एकीकृत होने में निपुण है। मानवाधिकारों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा देने में इसकी साख बहुत ऊँची है। यह अनुशासन को महत्व प्रदान करता है। महिला ने मुस्कराते हुए तिरछी नजरों से सैन्य टुकड़ी कमांडर की ओर देखते हुए कहा यह सत्य है। के0रि0पु0बल की महिला सैन्य टुकड़ी को देखने पर हम भी ऐसा ही अनुभव करते हैं। पुरुषों की टुकड़ी कितना शीघ्र आकर हमारे साथ काम करेगी?

के.रि.पु. बल : नीति वचन, धारणा, संभावना हां, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, समर्थ है

रमेश चन्द्र, उप महानिरीक्षक (भर्ती)
महानिदेशालय,केरिपुबल

नीतिवचन

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के मद्रास सेशन के फलस्वरूप 1936 में भारतीय रजवाड़ों में शुरु हुए प्रजा परिषद् के आंदोलन का दमन करने के लिए काउन रिप्रेजेन्टेटिव पुलिस के रूप में खड़ी की गई, केरिपुबल ने नफरी, व्यवस्था और ड्यूटियों के चार्टर के विस्तार की एक हंगामेदार यात्रा तय की है। नीमच में स्थापित 1000 लोगों की एक बटालियन, जिसमें 8 अधिकारी, 30 अधीनस्थ अधिकारी, 100 हेड कांस्टेबल और 870 कांस्टेबल थे और जिसका उपयोग सरकार (ब्रिटिश साम्राज्ञी) के प्रतिनिधि की अलंकारिक पुलिस के रूप में किया जाता था, से विस्तारित होकर, सभी प्रकार के सपष्ट खतरों से रक्षा करते हुए राष्ट्र की एकता और अखंडता को

बनाए रखने के लिए देश की लम्बाई व चौड़ाई (एक कोने से दूसरे कोने) में तैनात इस बल की नफरी बढ़कर अब 2.52 लाख हो गई है, जिनमें 3400 एग्जीक्यूटिव अधिकारी, 2700 एग्जीक्यूटिव अधीनस्थ अधिकारी तथा 2.46 लाख अन्य रैंकों के कार्मिक हैं।

यह विस्तार केवल संख्यात्मक, भौगोलिक और प्रौद्योगिकीय ही नहीं था वरन् गुणवत्ता, सहनशक्ति और लचीलेपन में भी विकास हुआ था। इनमें से प्रत्येक कारक के विकास का अपना जीवन्त लघु इतिहास है। आपातकाल के बाद के शासन को छोड़कर, जब पूरे देश में मितव्ययता के उपायों के चलते हमारी 5 बटालियनें तोड़ दी गई, यूनिटें और ग्रुप केन्द्र निरंतर खड़े हो रहे हैं। स्थानीय आंदोलनों और सीमापार विवादों का दमन करने तथा भारतीय राज्यों के भारत संघ में एकीकरण को सुविधाजनक बनाने के लिए, नीमच से हमने मध्य प्रान्तों, पश्चिमी गुजरात और सिंध में प्रवेश किया। वहां से हमारा ध्यान धीरे-धीरे पर नियमित रूप से सुदूर पूर्वोत्तर के राज्यों नागालैण्ड, मिज़ोरम, उत्तरी असम, अरुणांचल और त्रिपुरा, जो 1956 में भारतीय राज्यों के पुनर्गठन के बाद अस्तित्व में आए थे, परन्तु जिनमें भारत राष्ट्र के साथ मनोवैज्ञानिक एकता का अभाव था, की ओर केन्द्रित होता गया। इन में से कुछ की सांस्कृतिक भिन्नता का लाभ हमारे पड़ोसी पूर्वी ड्रेगन ने अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए उठाया। इस स्थिति से उबरने के लिए हमें मज़बूरन पांच दशक लगने वाला ऐतिहासिक चक्करदार मार्ग अपनाना पड़ा। शुरुआती समर्पित सेवा के आधार पर बल को 1950 में राष्ट्रपति का ध्वज प्रदान किया गया। बाद में नब्बे के दशक में बल के उप बल द्रुत कार्य बल को दूसरा ध्वज प्रदान किया गया।

हमारे इतिहास का एक भाग असम राज्य के इन जिलों के पुनर्गठन से पहले के समय से गुजरा है। हमने गांवों में अभिमख होती हई बिखरी आबादी देखी है, देखा है गावों को छोटे नगरों में, छोटे नगरों को बड़े शहरों में और जिलों को राज्यों व केंद्र शासित क्षेत्रों में बदलते हुए। हमने इन क्षेत्रों के बाहरी दुनिया से बेखबर लोगों को गंदी बस्तियों वाले गावों में रहते हुए, विद्यालयों में जाते हुए, अध्यापक, क्लर्क और सरकारी कर्मचारी बनते हुए, कुछ को राजनैतिक क्षेत्रों में जाते हुए तो कुछ को सीमापार करके, सीमापार बहकाने वाले लोगों का शिकार बनते देखा है। बहुत से सेवा निवृत अधिकारी व कर्मचारी याद करते हैं उन दिनों की जब वे इन भागे हुए ग्रुपों के लीडरों, जो कि बाद में राजनैतिक दल बन गए और कुछ राज्यों में प्रशासन की बागडोर भी संभाली, का पीछा करते थे। हमने उनको नियंत्रित करने के लिए अपना खून-पसीना बहाया है। यह कार्य अभी तक पूरा हुआ नहीं माना जा सकता है परन्तु कुछ ऐसे क्षेत्रों, जहां अभी भी राजनैतिक नेतृत्व व अर्ध सैनिक बलों के दखल की जरुरत है के अलावा, अन्य क्षेत्रों में यह उस सीमा तक पूरा कर लिया गया है जहां से राजनैतिक नेतृत्व बागडोर संभाल सकता है।

बाद के वर्षों में हमने 350 कम्पनियों की नफरी के साथ पंजाब के लिए कूच किया, और ज़बरदस्त विरोध का सामना करते हुए वहां के दिग्भ्रमितों को प्रजातांत्रिक

ढंग से जीने की राह दिखाई। जब यह कार्य पूरा हुआ तो हम कश्मीर के पठार पर जा चढ़े और राष्ट्रीय एकता व अखंडता रूपी वस्त्र, जिसमें अनुचित प्राथमिकताएं अपनाने वाले एक और लोभी पड़ोसी ने बार-बार छिद्र किए हैं, के चीर को पुनः जोड़ने के लिए पुंछ से डोडा और बारामूला से लेह तक कठिन स्थानों और तंग घाटियों में फैल गए। इन दोनों राज्यों में देश की एकता व अखण्डता की रक्षा का मूल्य अपने कई साथियों की बहुमूल्य जीवनों का बलिदान करके चुकाना पड़ा। हाल के वर्षों में, साठ के दशक के नक्सल बाड़ी के चारु मजूमदार के नक्सलवाद के आधुनिक संस्करण, जो कि अविकसित राज्यों के कई जिलों में तेजी के साथ सिर उठा रहा है को कुचलने के लिए हम ग्रामीण छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश और झारखण्ड के जंगलों में प्रवेश कर गए हैं, और हमने कई बार अपने दर्जनों साथियों के जीवन का बलिदान किया है।



गार्ड आफ आनर का निरीक्षण करते हुए प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरु व श्री पी.एल. मेहता, पु0म0नि0



Presentation of President's Colours by Sardar Vallabh Bhai Patel on 19th March, 1950

हमने अपने हथियार-गोली बारुद, उपकरणों, सैनिक परिधान, वाहनों और मशीनों की फेहरिस्त में विस्तार किया है। हमने प्रशिक्षण और धैर्य का विशाल भूभाग पार किया है। सिंगल शाट राइफलों और स्टेनगनों से शुरु करके अब हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि अब हमारे पास परिष्कृत मशीन गनें, राकेट लांचर और स्वचालित ग्रेनेड लांचर हैं, जब कि पुरानी परन्तु उपयोगी लाठी व बेंत की ढाल भी हैं। संचार के मोर्चे पर डिस्पोजल में खरीदे गए द्वितीय विश्वयुद्ध के पुराने फिलामेंट रेडियो एम्मिटरों से शुरु करके अब हम आवाज़, प्रतिकृति (Facsimile), हाई स्पीड के डाटा ट्रांसमीटरों की आधुनिक माइक्रो चिप प्रौद्योगिकी तथा जैमर (Jammers) तक पहुंच गए हैं। परिवहन के क्षेत्र में कुछ विल्लीज़ जीपों और हैंडल से स्टार्ट होने वाले बेड फोर्ड ट्रकों से यात्रा शुरु करके पर्याप्त संख्या में अत्याधुनिक फ्लीट तक का सफर तय किया है। प्रशिक्षण के लिए जहां पहले केवल एक रंगरुट प्रशिक्षण केंद्र था, वहीं अब पांच रंगरुट प्रशिक्षण केंद्र, संचार सहित पांच केंद्रीय प्रशिक्षण कालेज, एक प्रति विद्रोहात्मक व आंतकवाद विरोधी स्कूल तथा अधिकारियों के प्रशिक्षण के लिए दो अकादमी हैं।



The President Dr. Rajendra Prasad meeting the Officers

हमारे चीफ के रूप में एक महानिरीक्षक, राजस्थान रेलवे और आबू के साथ-साथ, प्रथम कमांडेंट के रूप में सेना के मेजर और गिनती के 7 अधिकारयों से शुरु करके हमने अति विशाल आकार प्राप्त कर लिया है और अब हमारी प्राधिकृत नफरी में हैं एक महानिदेशक, 26 महानिरीक्षक 149 उप महानिरीक्षक और कुल मिलाकर 3400 अन्य अधिकारी जिनको अधिकांशतः हमारे द्वारा ही भर्ती और प्रशिक्षित किया जाता है।

जैसा कि 01 जार्ज क्रास, 03 किंग के पी एम जी, 979 राष्ट्रपति के पुलिस पदक वीरता के लिए और 2293 विशिष्ट/ सराहनीय सेवाओं के लिए प्राप्त पदकों से विदित होता है, बल ने जैसा आपरेशनों में श्रेष्ठ प्रदर्शन किया है वैसा ही अपने अस्तित्व के 7 दशकों के दौरान खेलों भी 1 पद्म श्री (खेलों में गुरुचरण सिंह रंधावा), 1 राजीव गांधी खेल रत्न (कुंजु रानी को), 14 अर्जुन पुरस्कार प्राप्त करके किया है। यह असंख्य रंगों का सुंदर इन्द्रधनुष बनाता है। जो नग्न आंखों से दिखाई नहीं पड़ती, वे समय-समय पर प्रत्यक्ष ज्ञान के कैनवस पर गहरी लाइनों, रंगों से बनती-बिगड़ती व पुनः बनती छापों (impressions) से उकेरी गई और भी बड़ी तस्वीरे हैं। ये रेखाएं हैं एक सैनिक, एक अधिकारी और एक फोर्स के रूप में मनोवैज्ञानिक वृद्धि की। ये रंग हैं प्रशिक्षण, मशीनरी व उपकरणों में किए गए निवेश के, प्रदत्त अधिकारों और क्षति-पूर्ति के, ड्यूटियों और जिम्मेदारियों के आउटपुट के, तैनाती की कठोरताएं व किए गए बलिदानों के बीच संतुलन और असंतुलन के। ये एक लम्बी अवधि के दौरान कार्य संतुष्टि, प्रगति की योजना तथा बल के "कल्याण कार्यक्रमों के स्तर पर प्राप्त किए गए अनुभव हैं। वृद्धि, परंपरा, जीवनशैली, विविधता और परिणाम में निरंतर बढ़ता इसका ड्यूटियों का चार्टर, बल की शक्ति और विवशताओं के संबंध में इतिहास की पूरी समझ उत्पन्न करने में इन सब कारकों का गहरा और अविच्छेद संबंध है। बेहतर होगा कि इन अनुभवों को शुरु से अंत तक इनमें पूरी तरह आत्मसात् होकर समझा जाए।



आं0सु0अ0 आबू पर्वत में वरिठ अधिकारियों को संबोधित करती प्रधान मंत्री इन्दिरा गांधी।

वृद्धि का दूसरा पहलू व्यावसायिक मनोविज्ञान है। अधिकारियों और कार्मिकों का मनोविज्ञान, अज्ञात क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं के रूप में रहने का है। इन दोनों ने किसी अन्य प्रमुख के सहायक की भूमिका, इतनी अधिक और इतने लम्बे समय तक निभाई है कि अब उन्हें प्रमुख बनने में संकोच होने लगा है। अपराध एवं कानून व व्यवस्था की चुनौतियों के राज्यों की सीमाओं से बाहर वृद्धि के साथ-साथ, जिन चुनौतियों का सामना वे पूरी तरह से कर रहे थे, उन चुनौतियों से अपने आप निपटने का कानूनी अधिकार उन्हें नहीं दिया गया है। इससे उनके असली विश्वास व निष्पादन में विखण्डन के साथ यह धारणा पैदा हुई है कि वे बराबर के दक्ष व्यक्ति से नीचे हैं, और इस प्रकार उनका वास्तविक निष्पादन असल से कम आंका जा रहा है। चाहे कितना ही प्रशिक्षण व पुनः प्रशिक्षण दिलवाया जाए, इस खण्डित सहकारी कारण को कमी पराभूत नहीं किया जा सकता है। यद्यपि हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों को, राज्यों व अधिकांश अर्ध सैनिक बलों के समकक्षों की तुलना में कहीं अधिक कठोर व्यावसायिक प्रशिक्षण कोर्स से गुजरना पड़ता है, कमी तब भी रहेगी। इनके लिए विदेशी प्रशिक्षणों, जिन पर पहले राज्यों के पुलिस कार्मिक व मंत्रालय के कर्मचारी कब्जा कर लेते थे, के अवसर खोल देने पर भी केवल अपूर्ण परिणाम प्राप्त होंगे। उनके अंदर बैठे सहायक ने अच्छी स्थितियों, परिस्थितियों और क्षेत्रों के संबंध में विचार किए बिना, और यहां तक कि निज की सुख-सुविधाओं व पारिवारिक जिम्मेदारियों को नजर अंदाज करते हुए सभी स्थितियों, परिस्थितियों और क्षेत्रों में काम किया है। उनके कठोर मेहनत की वाह-वाही का अक्सर उन छद्म निष्पादकों ने लाभ प्राप्त किया है। अतः उनके द्वारा बुरी परिस्थितियों में यथा संभव शत-प्रतिशत निष्पादन भी, जितने परिमाण में कार्य के प्रति असंतोष में परिणित होता है, उसकी तुलना में कार्य के प्रति संतुष्टि में परिणित नहीं होता है, और यह प्रदर्शित होता है व्यवहार के विकृत पैटर्न, आत्म हत्याओं व साथियों की हत्याओं में।

धारणा

वर्तमान में बल को सरकार की आंतरिक सुरक्षा और आंतकवाद विरोधी नीति के प्रमुख साधन के रूप में देखा जा रहा है, परन्तु इसके अधिकारियों अथवा कर्मचारियों

में से किसी को भी व्यक्तिगत तौर पर इस दृष्टिकोण से नहीं देखा जाता है। अगर कोई चीज है तो, वह है जिन लोगों के बहुत बार अपने मुख्य दायित्वों को पूरा करने में असफल रहने और कानून व व्यवस्था की स्थिति के खराब होने पर जिनकी इज्जत बचाने के लिए इन्हें (के0रि0पु0बल) बुलाया जाता है, उन लोगों की तुलना में ये दूसरे दर्जे के समझे जाते हैं। इसमें सुस्पष्ट परिवर्तन की जरुरत है तथा संबंधित मामलों में प्रमुखता इसके असली हकदार - के0रि0पू0बल को दी जानी चाहिए। इतना कर लेने पर, बल के मनोबल, निष्पादन और व्यवहार के पैटर्न में तात्कालिक जादुई सुधार होगा।

के0रि0पु0बल एक कार्य करने वाला बल हैं परन्तु यह एक विडंबना है कि इसके पास काम स्वेच्छा के बजाए मजबूरी में आ रहा है। यह ऐसा है जैसे गाड़ी को घोड़े के आगे रख दिया जाए। फिर भी दिखाई यह देता है कि गाड़ी व घोड़ा दोनों उपलब्ध करवाए गए हैं तथापि ऐसी मान्यता है कि संसार में लोगों के पास ऐसी संवेदनशील नाक हैं जो कि भली प्रकार यह अनुभव कर सकती है कि उदार दान मजबूरी में दिय गया है अथवा स्वेच्छा से। यह दूसरा क्षेत्र है, जहां अगर उच्च मनोबल, दक्षता और क्षात्र धर्म का पालन करने वाले अच्छे बल की जरुरत है तो प्राथमिकताओं को पुन: निर्धारित किए जाने की जरुरत है।

राजनैतिक नेतृत्व व अधिकारी तंत्र, देश के विभिन्न भागों में विकसित हो रहे सक्रिय आंतरिक सुरक्षा परिदृश्य की सम-सामयिक जरुरतों के विशेष प्रयोजनों के लिए बल में एक अलग घटक की मांग के प्रति सजग है, तथा बल के पास इस जरुरत के साथ मेल खाने लायक अनुकूली लोच उपलब्ध है। अतः इस महत्व को समझने की आवश्यकता है कि ऐसे विशेष प्रयोजनों के लिए एक अलग घटक का गठन केरिपुबल की देख-रेख में भली प्रकार किया जा सकता है।

आकार में बड़ा हुआ, विस्तारित तथा निरंतर तैनाती। हमें विगत में बल की अच्छी सेवा करने वाली परन्तु अब अपनी उपयोगिता खो चुकी अपनी तीन पुरानी व्यवस्थाओं, अर्थात् पूरे बल का डिटेचमेंट पर होना, यूनिटों की वास्तविक लोकेशनों का ध्यान किए बिना ग्रुप केंद्रों में उनके मुख्यालय होना तथा कमांड का दोहरापन, को समाप्त करना होगा। बल की तैनाती का फैलाव तथा कमांडरों का मुख्यालय में केंद्रित होना, ये सभी व्यवस्थाएं एक विशिष्ट न्यूनतम सीमा रेखा तक बहुत उपयुक्त और उपयोगी थी। जब यूनिट मुख्यालय स्थैतिक थे, तब डिटेचमेंट प्रासंगिक थे। कम्पनियों के डिटेचमेंट पर रहने के समय, उप महानिरीक्षक और कमांडिंग अफसर, हर दो मास में अथवा तिमाही में एक बार डिटेचमेंट के दौरे पर जाते थे, तथा निकटतम उप महानिरीक्षक/ महानिरीक्षक को परिचालन उप महानिरीक्षक / महानिरीक्षक घोषित किया जाता था। अब जबकि, सभी यूनिट मुख्यालय अपने कमांडिंग अफसरों के साथ फील्ड एरिया में होते हैं, अतः टीए/डीए, मकान किराया भत्ता, स्थानान्तरण अनुदान, छुट्टी यात्रा रियायत और क्षेत्र विशेष से जुड़े भत्तों की पात्रता की गणना करने के लिए उनके ग्रुप केंद्रों के स्थान का संदर्भ देना बेतुका है।

दूसरे, देश के एक कोने में अवास्थित ग्रुप केंद्र, रेंज मुख्यालय के रूप में तो अपने दायित्वों का निर्वाह कर सकते हैं, परन्तु इनका व्यासीय (diametrically) विपरीत कोनों में अवस्थित यूनिटों के लिए घोषित मुख्यालय नहीं होना चाहिए। इस असंगति का तीसरा पहलू है कमांड का दोहरापन। यूनिट के प्रशासनिक व परिचालनिक (दोनों) के नियंत्रण के उद्देश्य के लिए, इसके निकटस्थ उप महानिरीक्षक और महानिरीक्षक को एकल कमांडर होने दें। इस उद्देश्य के लिए, पर्याप्त संख्या में पुलिस रेंजों और कमिश्नरियों के अनुरूप बाकायदा वरिष्ठ अधिकारियों को देश के आर-पार छितराना (interspersed) पड़ेगा। पुरानी व्यवस्थाओं के प्रति हमारा लगाव, समय पर परिवर्तनों को सम्मिलित करने के प्रति हमारी जड़ता को प्रत करता है। वर्तमान में, अटैचमेंट, काडर कोर्सी, स्टोर कलेक्शन ड्यूटियों अथवा खेलकूद के कारण, सेक्शनों की कमान उपलब्ध हेड कान्सटेबलों, प्लाटून की उपलब्ध उप निरीक्षकों तथा कम्पनियों की कमान या तो किसी निरीक्षक अथवा उपलब्ध सहायक कमांडेन्ट के पास हैं। यूनिटों के कमांडेंटों को इस प्रकार के संचलन/अटैचमेंटों को मानने की अवपीड़क बाध्यता (coercive obligation) है। इससे न केवल कमांड संरचना पर भारी ऐंठन आई है, वरन् दिन का अवर अधिकारी, दिन का अधीनस्थ अधिकारी और सप्ताह का अधिकारी जैसी बल की नेमी कवायद में भी लगभग आत्म विस्मृति की स्थिति उत्पन्न कर दी है। सबसे निचले स्तर का कमांडर- सेक्शन कमांडर, जिसके द्वारा हम अपनी कमांड में आने वाले सभी कार्मिकों की नब्ज पहचानने की अपेक्षा रखते हैं, वह अपने कर्तव्यों की उलट दिशा की सीमा पर पहुंच चुका है। यह एक कार्य पूरे बल को गीयर से बाहर करने के लिए पर्याप्त है; तथा प्लाटून स्तर पर भी समान व्यवधान होने पर आत्म संभावना विस्मृति का कार्य पूर्ण हो जाएगा।



बुनियादी, रोटेशनल और अप-ग्रेडेशन प्रशिक्षण, गंभीर लापरवाही का दूसरा क्षेत्र है। हमें बुनियादी प्रशिक्षण को प्रशिक्षण केंद्रों से इतर स्थानों पर चलाना पड़ा है, रोटेशनल प्रशिक्षण का परित्याग करना पड़ा है, जबकि अप ग्रेडेशनल प्रशिक्षण को कामचलाऊ स्थानों पर आयोजित करना पड़ा है। जवान द्वारा अपनी ड्यूटी करने के लिए प्रशिक्षण एक आवश्यक निवेश है, रोटेशनल प्रशिक्षण उसकी स्मृति को तरोताजा करने के लिए प्रशिक्षण का विस्तार है और अप ग्रेडेशनल प्रशिक्षण उसको उच्च दायित्वों के लिए तैयार करना है। सभी प्रकार के प्रशिक्षणों पर कुप्रभाव पड़ रहा है, जबकि उससे निरन्तर, बढ़िया तथा उच्च दायित्वों के साथ ड्यूटी करने की मांग निरंतर बढ़ रही

निरीक्षण और आडिट निराशा के दूसरे क्षेत्र हैं जहां नेतृत्व को सम्मिलित रूप से ध्यान देने की जरुरत है। निरीक्षण अधिकारी के दिमाग में यह स्पष्ट होना चाहिए कि उसे क्या अपेक्षा करनी है। इसके लिए उसको, यूनिट की कमांड से संबंधित सभी नियमों, नियम पुस्तकों (manuals) और स्थाई आदेशों की जानकारी होनी (अध्ययन होना) चाहिए। जब तक इनका अध्ययन नहीं किया जाता है, तो इसकी पूरी संभावना है व वह (निरीक्षण अधिकारी) अपने मार्ग से या तो धुर दाएं अथवा धुर बाएं और यदि केंद्र में रहता है तो अज्ञात सीमा तक च्युत हो जाए। इसके अलावा यह उन लोगों के प्रशिक्षण की भी अवमानना होगी, जिनका कि वह निरीक्षण करने जा रहा है। एक व्यावसायिक संस्था के लिए यह कोई आदर्श स्थिति नहीं है।

संभावना

बल में भर्ती का मामला कभी भी अटकलबाजी पर आधारित नहीं रहता है। हम सब को यह जानकारी होनी चाहिए कि सभी 2.6 लाख कार्मिकों (कोबरा यूनिटों सहित) के स्थान पर 35 वर्ष में दूसरों को नियुक्त करना होगा, जो कि औसतन सभी रेंकों के 7.5 हजार कार्मिक प्रति वर्ष होता है। सूचना के इस खण्ड से तीन चीजें प्रकट होती हैं, पहली : हमें प्रत्येक वर्ष इतनी संख्या में लोगों को भर्ती और प्रशिक्षित करना होगा, दूसरी : हमारे पास लक्षित संख्या में सभी रैंकों के कार्मिकों को प्रशिक्षित करने की क्षमता होनी चाहिए, क्योंकि इतनी संख्या में लोगों को भर्ती व प्रशिक्षित करने में डेढ़ वर्ष का समय लगेगा, तीसरी : अगर सभी वर्गों में प्रत्येक 35 व्यक्तियों के पीछे एक ट्रेनिंग रिजर्व उपलब्ध नहीं कराया जाता है तो हर समय इतनी रिक्तियां बनी रहेंगी।

बल की उत्तरजीविता व वृद्धि के लिए यह आवश्यक है कि बल के उच्च नेतृत्व के पास, देश में आपरेशनों के सभी क्षेत्रों के आर-पार, आंतरिक सुरक्षा संभावित परिवर्तनों के संबंध में कम से कम एक दशक तक के लिए पूर्वानुमान लगाने; भविष्य की भूमिकाओं में, तैनाती के विभिन्न क्षेत्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए, प्रशिक्षण, रणनीति और बल की बनावट में विविधता लाने, सुधार करने अथवा इसे नए रूप से प्रस्तुत करने की अन्तर्दृष्टि होनी चाहिए। इसके लिए तीन चीजों का होना आवश्यक है, पहली नेतृत्व की निरंतरता, दूसरी : व्यापक प्रशिक्षण (Exposure) और कई कार्य क्षेत्रों में बल के साथ ज्यादा समय तक कार्यानुभव प्रदान करना; और तीसरी : शीर्ष पद के लिए गहराई के साथ समय पर चयन करना।

कार्यों की योजना में प्रशिक्षण को इसका उचित स्थान प्रदान किए जाने की जरुरत है। किसी भी व्यक्ति के सेवाकाल के दौरान बुनियादी प्रशिक्षण अति महत्वपूर्ण है। वर्दीधारी सभी कर्मचारी, प्रशिक्षकों व प्रशिक्षण संस्थानो के प्रति उच्च श्रद्धा रखते हैं। अतः इसे पूर्ण, संस्थागत होना चाहिए तथा यह सख्ती के साथ दिया जाना चाहिए। प्रशिक्षण के विस्तार तथा प्रशिक्षु की उन्नति के लिए विभिन्न रूपों में पुनः प्रशिक्षण दिया जाना महत्वपूर्ण है। एक अच्छा कमांडर वह होता है जो अपने मिशन में सफल होता है। एक ऐसा कमांडर, जो अच्छा बुनियादी व परवर्ती प्रशिक्षण सुनिरिचित नहीं कर सकता, वह दोषपूर्ण तरीके से प्रशिक्षित बल के साथ अपने मिशन में सफल नहीं हो सकता है, अतः वह कभी भी एक अच्छा कमांडर नहीं बन सकता है।

बल के द्वारा अपना श्रेश्ठ प्रदर्शन किया जा सके इस उद्देश्य के लिए बल का वृति विकास (career progression) इस प्रकार उत्कीर्ण किया जाए कि सभी कर्मचारियों का पहले चार चरणों में प्रत्येक छह वर्ष में पदोन्नति से सहबद्ध योग्यता का दाव लगा हो, तथा बाद के वर्षों के दौरान प्रत्येक चार वर्षों में एक पदोन्नति होनी चाहिए। अच्छा काम न करने वालों की, प्रथम चार चरणों के दौरान छटनी कर देनी चाहिए। उच्च पदों के लिए चयन केवल ऐसे ईमानदार, सच्चे, दक्ष और सुस्पश्ट काम करने वालों में से किया जाना चाहिए जो कि बल के बारे में पहले से कार्य क्षेत्र का अनुभव रखते हों,

क्योंकि बल का नेतृत्व तभी किया जा सकता है और बल को तभी समझा जा सकता है, जब कि उसके साथ पर्याप्त समय तक रहा हो, यह केवल पाठ्य पुस्तकों के अध्ययन के आधार पर नहीं किया जा सकता है। सेक्शन, प्लाटून और कम्पनी स्तर पर कमान संरचना को निश्चित तौर पर सुदृढ़ करने की जरुरत है, क्योंकि यह बल में परिवर्तन व विकास को लागू करने का आधार है। लोगों के तैनाती की योजना बनाने के लिए और उस स्तर पर कमान को सुदृढ़ करने के लिए नेतृत्व के स्तर पर बार-बार अधिक लोगों को हटाए जाने की आवश्यकता है। सेक्शनों की कमान हेड कान्सटेबल के पास होनी चाहिए और इस स्तर तक, राइफल मैन से सेक्शन द्वितीय कमांडर से उत्तरोत्तर प्रगति करते हुए पहुंचना होगा, प्लाटून कमांडर उस रेंक तक सेक्शन कमांडर और प्लाटून हेड कान्सटेबल के पदों से उत्तरोत्तर प्रगति करते हुए बनेगा, कम्पनी कमांडर को कंपनी के द्वितीय कमान अधिकारी का काम जानना चाहिए। अन्य बातों के साथ-साथ इसका यह अर्थ निकलता है कि सीधे नियुक्त अधिकारियों को कम्पनी का चार्ज लेने से पहले 3 साल तक अनिवार्य रूप से वास्तव में कम्पनी के द्वितीय कमान अधिकारी के रूप में काम करना चाहिए, चाहे इसके लिए कम्पनी कमांडर के पद को उप कमांडेन्ट के रूप में वर्गीकृत करना पड़े।

बल की संरचना की समीक्षा करते समय, किसी को भी, राज्य पुलिस की यूनिटों, जिनके यूनिट मुख्यालय स्थैतिक रहते हैं तथा कम्पनियां आस-पास के जिलों के पुर्वानुमित ज्ञात क्षेत्रों में संचलन करती हैं, से जानकारियां नहीं प्राप्त करनी चाहिए। अतः यहां हर एक को उदार विचारों वाला होना चाहिए और इन तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए कि यहां यूनिटों और कम्पनियों को स्वतंत्र रूप से किसी भी समय और कई बार तीन वर्ष की अवधि के दौरान कई राज्यों के आर-पार संचलन करना पड़ता है। अतः जैसी कि पिछले पैरा में चर्चा की गई है, बल को अतिरिक्त रूप से सुदृढ़ कमान संरचना के साथ सुव्यवस्थित और छरहरा रखने की जरुरत है। भविष्य का के0रि०पु०बल, चार सविर्स कम्पनियों के साथ में एक हेड क्वार्टर कम्पनी व एक सहायक कम्पनी जिसमें विशेष शस्त्र स्कवाड व अन्य ट्रेडस मेन हों व कम्पनियों की कमाण्ड उप कमांडेन्टों के हाथों में हो तथा संयुक्त परिचालनिक व प्रशासनिक कमान वाला होना चाहिए।

जैसा कि यूनीवर्सल डिजाइन में सेन्ट्रल मास तथा अणु से लेकर ब्रहमाण्ड तक निश्चित संख्या में कक्षा में घूम रहे पिण्डों की आत्म निर्भर यूनिटें हैं और जिसे हिन्दू दर्शन शास्त्र में 'पूर्णम इदम्' कहते है, उसी उप सिद्धांत के आधार पर बल के आकार के संबंध में एक आत्म निर्भर यूनिट को पहचानने की जरुरत है तथा इसी सिद्धांत के अनुसार सिस्टम में कहीं भी असंतुलन उत्पन्न किए बिना समान फोर्स की अतिरिक्त यूनिटों को निरन्तर जोड़ा जा सकता है। इस सबके बिना, बल के प्रत्येक अतिरिक्त परिवर्धन (addition) के साथ बल के सभी कार्यकर्ताओं को उनकी क्षमताओं से काफी ज्यादा जिम्मेंदारियां सौंपी जाती हैं। अगर इसकी समय पर सुध नहीं ली गई तो, जैसे किसी तंग सड़कों व असंवेदनशील नगर निगम वाले आधुनिक महानगर में ट्रैफिक जाम हो जाता है, उसी प्रकार सिस्टम भी जाम हो जाएगा। सुधारों व

अधिकारों को मज़बूरी के बजाए उद्देश्यों के साथ आने दें। भविष्य के बल को आत्मनिर्भर अंचलों में, सेक्टरों में तैयार होना है। सेक्टरों को भारतीय सेना की रेजीमेंटों की भांति एक पूर्ण व आत्मनिर्भर यूनिट क्राण्टम के आधार पर विकसित किए जाने की आवश्यकता होगी। इसका मतलब है कि सेक्टरों के पास स्वयं की भर्ती, प्रशिक्षण, मेडिकल, रिकार्ड और पेमेंट की स्थापनाएं होंगी। आपरेशनल टुकड़ियों को कमांड करना और दफ्तर में काम करना ये गेंद के दो अलग-अलग खेल हैं जिनकी मूल संरचना भिन्न है। इसका सबसे अच्छा सम्मिश्रण यह होगा कि इसमें पहले वाले से शुरु करके फिर बाद वाले में क्रमिक रूप से दक्षता हासिल की जाए। किसी को भी बल का मनोविज्ञान समझने के लिए, एक लम्बी अवधि तक इसका प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करना होगा, ताकि वह विभिन्न स्तरों पर व अलग-अलग कोणों से किए गए अध्ययनों से अपने लिए बल की संकल्पनात्मक स्वलेख धारणा निर्मित कर सके । अत्यधिक पाण्डित्यपूर्ण / मधुर व स्पष्ट उच्चारण भी, बल में लम्बे समय से रह रहे अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाली ढकोसले बाजी ही होगी। अतः उच्च पदों के लिए चयन प्रक्रिया व्यापक होने के बजाए अधिक गहन होनी चाहिए।

देश व बल के इतिहास की तीन दुर्लभ संपाती घटनाएं अर्थात् मुम्बई 26/11, सरकार की कुछ करने की भाव दशा तथा अपर पुलिस उप महानिरीक्षकों के पदों का उन्नयन, के कारण बल के लिए कुछ भी न होने के बजाए कुछ होने का व तीन प्रकार से लाभांवित होने का एक अनुपम अवसर उपलब्ध हुआ है। पहला : केरिपु०बल के लिए (आवश्यक कानूनी आदेश के साथ) संघीय सशस्त्र पुलिस और इसे राष्ट्रीय जांच एजेंसी की संपूरक बनाने (निम्नवर्गीय ड्यूटियों की जिम्मेदारी राज्य के सशस्त्र पुलिस बलों को सौंपते हुए) की मांग करना; दूसरा : इस भ्रमणशील बल का, पुनर्वास करना तथा सरकार से इसे सभी संघ शासित क्षेत्रों/राज्यों में/एक यूनिट (25 एकड़ में) प्रत्येक पुलिस रेंज/5 जिलों की कमिश्नरी के तदुनरूप (लगभग 40 प्रतिशत बल को स्थापित करना, शेष 30 प्रतिशत जम्मू व कश्मीर में, 20 प्रतिशत पूर्वोत्तर में, और 10 प्रतिशत वामपंथी उग्रवादग्रस्त क्षेत्रों के लिए), एक रेंज मुख्यालय (5 एकड़ में) प्रत्येक पांचवी पुलिस रेंज/कमिश्नरी के तदुनरूप, एक सेक्टर मुख्यालय (5 एकड़ में) प्रत्येक पन्द्रहवीं कमिश्नरी के तदुनरूप, एक अंचल मुख्यालय (5 एकड़ में) कुल संघशासित क्षेत्रों/राज्यों के एक तिहाई के तदनुरूप छितराने (interspers) करने का अनुरोध करना; तीसरा : ग्रुप केंद्रों, और __ महानिरीक्षकों के स्टाफ में उप __ महानिरीक्षकों को, रेंजों में महानिरीक्षकों को। (26) और सेक्टरों में अपर महानिदशकों को (8) तथा अंचलों में विशेष महानिदेशकों को (3) तैनात करके पद संरचना का पुनर्व्यवस्थापन करना।



आजादी के पश्चात् देश अपनी चौमुखी प्रगति और विश्व पटल पर अपनी पहचान बनाने के उत्साहपूर्ण कदम के बढ़ते चरणों में राष्ट्र कई क्षेत्रों में बंटता चला गया और विविधताओं में एकता के प्रतीक भारत, प्राकृतिक संपदाओं से परिपूर्ण तथा भौगोलिक परिदृश्य, आम जनता के रहन-सहन, भाषा एवं खान पान के मददेनजर राज्यों में विभक्त किये गये इसी क्रम में मध्य भारत के पठारी क्षेत्रों को अलग राज्य के रूप में नये राज्य का गठन किया गया जिसे छत्तीसगढ़ नाम दिया गया। अन्य राज्यों की अपेक्षा इस राज्य में भी राजनैतिक हलचल कम रही है। इस कारण आजादी के 61 वर्ष के पश्चात भी यहां के लोगो का जीवन स्तर अन्य बड़े राज्यों के अपेक्षाकृत कम सुधार हुआ है। यहा के लोगों का मुख्य कार्य खेतीबाड़ी हैं। छत्तीसगढ़ को "घान का कटोरा' भी कहा जाता है। यहां पर हर प्रकार की खेतीबाड़ी, फसल के साथ-साथ प्राकृतिक सम्पदाओं से धनी और घने जंगलों से घिरे इस क्षेत्र की भौगोलिक इकाई का परिचय इन्हीं शब्दों से किया जा सकता है रीड़ छत्तीसगढ़ रीड़ इण्डिया) अर्थात् जिसने छत्तीसगढ़ देखा मानों सम्पूर्ण भारत के दर्शन कर लिए हों।

नक्सलवाद, अलगाववाद, आतंकवाद से ग्रसित छत्तीसगढ़ के कई क्षेत्र आज भी इन्हीं कारणों से पिछड़े हैं और नक्सलवादी गतिविधियों के कारण यहा पर्यटकों का आना-जाना कम है। नक्सलवादी गुट अपने हितों के लिए सरकार के नीतियों का विरोध करते रहते है। इसी कारण यहां पर सैनिक एवं अर्धसैनिक बलों की भारी संख्या में तैनाती करनी पड़ी है।

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से तकरीबन 125 किलोमीटर दूर बिलासपुर क्षेत्र में ग्रुप केन्द्र केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की स्थापना 27 जून 2006 को की गई। श्री टी एच कांबले, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक द्वारा यहां की स्थापना और व्यवस्था बनाने में पूर्ण योगदान रहा है तथा स्पेशल सेक्टर केरिपुबल के एक उगते सूरज के समान ग्रुप केन्द्र बिलासपुर की आधार शीला उस मील के पत्थर के समान रखी गई है जो कि भविष्य में मिसाल के रूप में साबित होगा। श्री प्रवीण कुमार शर्मा, पुलिस उप महानिरीक्षक द्वारा ग्रुप केन्द्र के कमान 10 अक्तूबर 08 से संभाली गई अपने मजबूत कुशल नेतृत्व के साथ ग्रुप केन्द्र के कार्यकलापों, प्रगतिशील कार्यों व्यवस्थापना, जवानों के उच्च मनोबल, उच्चकोटि के अनुशासन को ध्यान में रखते हुए श्री शर्मा ने ग्रुप केन्द्र की प्रगति और बुनियादी सुविधा उपलब्ध कराने को गति प्रदान की है। अधिकारियों एवं जवानों की नफरी की कमी के बावजूद भी अपने सकारात्मक विचारों लम्बे अनुभव और कार्य के प्रति समर्पण के आधार पर हर चुनौतियों का सामना करते जा रहे हैं। ग्रुप केन्द्र का कोई ऐसा कोना नहीं है जहां प्रगति को गति न मिली हो और किसी कार्य की उपेक्षा की गई हो। कुछेक कार्यो पर रोशनी डालते हुए लेख है कि:-

(क) ग्रुप केन्द्र में स्थाई आवास/भवन न होने पर भी बड़े ही सुसज्जित और व्यवस्थित तरीके से जवानों के रहने, मुख्य कार्यालय, स्टोर आदि के समुचित रख-रखाव उच्च स्तर की क्वार्टरगार्ड के साथ-साथ पूरे ग्रुप केन्द्र को बड़े ही आकर्षित रूप में व्यवस्थापित किया गया है। कैम्प की सुरक्षा और स्वच्छता के साथ पर्यावरण की दृष्टि से भी साफ सुथरा रखने का लगातार प्रयास रहता है

(ख) ग्रुप केन्द्र में मुख्य कार्यालय के काम काज, छत्तीसगढ़ में तैनात परिचालनिक यूनिटों को स्टोर आवंटन तथा ग्रुप केन्द्र के सम्पूर्ण कार्यकलापों को सुचारू रूप से निष्पादित किया जा रहा है। बुनियादी सुविधाओं के न होने के बावजूद भी समय-समय पर दी गई जिम्मेदारियों और चुनौतियों को स्वीकार्य किया और सफलता प्राप्त की।

(ग) छत्तीसगढ़ के भौगोलिक इकाई के कारण यहा पर विषम परिस्थितियों जैसे तेज तूफान, वर्षा, आदि के कारणवश कई परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। बावजूद इसके रोजमर्रा के काम-काज और जवानों के मनोबल पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा और दुगने उत्साह के साथ विषम परिस्थितियों के बावजूद भी ग्रुप केन्द्र की व्यवस्था मजबूत रही है।

(घ) यहां पर प्रशिक्षण को भी उच्च दर्जा देते हुए यहा बड़े गर्व की बात है कि इतने कम समय मे एससीसी के दो बैच, जिसमें की एक बैच में 41 आरक्षियों और वर्तमान में चलाये जा रहे 142 आरक्षियों को, बड़े ही अनुशासित और प्रभावी तरीके से प्रशिक्षण दिया जा रहा है साथ ही साथ अनुचरों को भी बुनियादी प्रशिक्षण दिलाया गया।

(ड़) छत्तीसगढ़ राज्य में ग्रुप केन्द्र बिलासपुर एक मात्र ग्रुप होने के वजह से यहां पर समय-समय पर हव (मं) / आशुलिपिक एवं आरक्षियों/ट्रेडमैन एवं अनुचरों की भर्ती की जाती रही है। जिसमें पूरी पारदर्शिता और निष्पक्षता बनाये रखने के साथ-साथ भर्ती प्रक्रिया को व्यवस्थित तरीके से सफलता तक पहुंचाने का पूरा प्रयास किया आता रहा है।

(च) ग्रुप केन्द्र परिसर में कम्पोजिट अस्पताल, जो कि डा एच डी सोमनाथ, पुलिस उप महानिरीक्षक (चिकित्सा) और उनकी चिकित्सक टीम/स्टाफ भी कार्य कर रही है। मुफ्त दंत जांच चिकित्सा केन्द्र का आयोजन के साथ-साथ जवानों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, एच आई वी एड्स/ संक्रमित बिमारियों के बारे में व्यापक प्रचार प्रसार करते रहते हैं।

(छ) ग्रुप केन्द्र में परिवार कल्याण केद्र भी कार्य कर रहा है जिसमें जवानों की महिलायें सिलाई के साथ-साथ कढाई-बुनाई और अन्य लाभप्रद कार्य कर रही हैं। परिवार कल्याण केंद्र में निहित प्रावधानों को सभी महिलाओं तक पहुचाने का प्रयास किया जाता रहता है , संगोष्ठियों और बैठकों का आयोजन किया जाता रहा है और समिति द्वारा समय-समय पर इसकी समीक्षा की जाती है।

(ज) क्षेत्रीय कावा ग्रुप केन्द्र बिलासपुर के समिति का भी गठन की गई है जिसकी अध्यक्षा श्रीमति अनिता शर्मा, पत्नि श्री प्रवीण कुमार शर्मा पुलिस उप महानिरीक्षक हैं,। अध्यक्षा द्वारा सामयिक बैठक, महिलाओं की समस्याओं उनके स्वास्थ्य सहित उनके हित और लाभ के बारे में विभिन्न योजनाओं और परियोजनाओं पर चर्चा की जाती है।

(झ) ग्रुप केन्द्र में विभिन्न कार्यक्रमों के साथ-साथ दिवसों का आयोजन पूरी निष्ठा और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। हाल ही में 23 नवंबर 2008 को वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जो कि पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाने के उद्देश्य से था। ग्रुप केन्द्र के अधिकारियों, जवानों और आसपास के गांव के पंचायत के सरपंच, वरिष्ठ ग्राम-वासियों के द्वारा कैम्प के नजदीक लगभग 1000 पौधों का रोपण किया गया। इस अवसर पर दैनिक समाचार पत्रों में इसे प्राथमिकता दी गई और प्रशासन द्वारा इस कार्य की सराहना की गई।

ग्रुप केन्द्र काठगोदाम का शिलान्यास

मनोज कुमार दूबे
पुलिस उप महानिरीक्षक

ग्रुप केन्द्र काठगोदाम

गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा उत्तराखंड राज्य में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का एक ग्रुप केन्द्र व पुलिस उप महानिरीक्षक रेंज कार्यालय को स्थापित करने की स्वीकृति प्रदान करने के उपरांत इस ग्रुप का सर्वप्रथम रामपुर ग्रुप केन्द्र से 1 जुलाई 2007 से स्थापना करते हुए कार्य आरंभ किया परंतु पर्याप्त जगह की कमी के कारण इसे 13 नवंबर 2007 को मेरठ शिफ्ट किया गया एवं उत्तराखण्ड राज्य में भूमि की तलाश जोर शोर से जारी रखी गयी। इस दौरान वन विभाग द्वारा इस ग्रुप केन्द्र को हल्द्वानी में स्थापित करने हेतु गौलापार क्षेत्र काठगोदाम में 160 एकड़ भूमि देने पर सहमति व्यक्त की गयी। वन विभाग की सहमति के उपरांत भूमि हस्तांतरण की प्रक्रिया को स्थानीय अधिकारियों के साथ मिलकर आगे बढ़ाने के लिए ग्रुप केन्द्र एवं रेन्ज कार्यालय को सिंचाई विभाग की अनुमति के उपरांत अमृतपुर काठगोदाम स्थित पड़ी खाली कालोनी में मेरठ से शिफ्ट कर 1 अक्टूबर 2008 आंशिक रूप तथा 13 अक्टूबर 2008 पूर्ण से काठगोदाम में अपना कार्य करना प्रारम्भ किया एवं हल्द्वानी सितारगंज बाईपास के किमी संख्या 13 काठगोदाम में प्रस्तावित भूमि की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया गया। इस दौरान बल के श्री नगेन्द्र सिंह, महानिरीक्षक, मध्य सैक्टर, लखनऊ एवं श्री आर पी सिंह, महानिरीक्षक (प्रशा एवं निर्माण), महानिदेशालय, नई दिल्ली ने वन भूमि अधिग्रहण हेतु पूर्ण मार्गदर्शन एवं आवश्यक दिशा निर्देश जारी किये। जिसके फलस्वरूप श्री मनोज कुमार दूबे पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र के सफल मार्गदर्शन एवं नेतृत्व में केरिपुबल के कर्मचारियों ने वन विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ वन भूमि अधिग्रहण हेतु सभी औपचारिकताओं को लगातार 4-5 महीने के अथक प्रयास के उपरांत पूरा कर दिखाया। इस अधिग्रहरण की प्रक्रिया में वन विभाग के हल्द्वानी, नैनीताल, देहरादून स्थित अधिकारियों एवं कार्यालयों द्वारा प्रस्तावित भूमि को आगे बढ़ाने में भरपूर सहयोग किया। वन विभाग से सहयोग एवं राज्य सरकार से अनुमोदन मिलने के उपरांत नोडल कार्यालय देहरादून द्वारा की गयी त्वरित कार्यवाही के उपरांत भूमि अधिग्रहण संबधी प्रस्ताव को वन एवं पर्यावरण मंत्रालय, भारत सरकार को स्वीकृति हेतु भेजा गया। वन एवं पर्यावरण मंत्रालय, भारत सरकार ने हल्द्वानी बाईपास के किमी संख्या 13 काठगोदाम पर 160 एकड़ वन भूमि पर केन्द्रीय पुलिस बल के रेंज कार्यालय एवं ग्रुप केन्द्र को स्थापित करने की स्वीकृति प्रदान कर दी गयी है। इसी अवसर पर 22 फरवरी 2009 को बल के महानिदेशक श्री विनीत कुमार जोशी, आई पी एस द्वारा भूमि पूजन एवं शिलान्यास किया गया।

वर्तमान में रेंज कार्यालय एवं ग्रुप केन्द्र में तैनात दो पुलिस उप महानिरीक्षक क्रमशः श्री मनमोहन डबराल एवं श्री मनोज कुमार दुबे के नेतृत्व में लगभग 500 कार्मिक एवं अधिकारी कार्यरत् है। यहा पर कार्यरत् कार्मिक देश के विभिन्न भागों में तैनात इस ग्रुप केन्द्र के लगभग 5500 कार्मिकों हेतु सभी सामानों की खरीद एवं प्रशासनिक कार्यो का निर्वाह कर रहे हैं।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के ग्रुप केन्द्र को उपरोक्त स्थान पर स्थापना होने पर इसके अंतर्गत इसकी 05 बटालियनें संलग्न रहेंगी जो कि वर्तमान में देश के विभिन्न आतंकग्रस्त एवं नक्सलवाद राज्यों में तैनात रहते हुए आंतरिक सुरक्षा की जिम्मेदारी संभाल रही है। इन अधिकारियों एवं कार्मिकों के परिवार ग्रुप केन्द्र स्थापित होने पर यहा के पारिवारिक आवासों में रहेंगे। ग्रुप केन्द्र के पूर्ण रूप से स्थापित होने से मुख्य रूप से उत्तराखंड के स्थानीय लोगों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से अवश्य ही लाभ होगा। जिसमें निर्माण के समय रोजगार केरिपुबल में समय-समय पर होने वाली भर्ती, आपदा प्रबंधन के समय राहत कार्य, रक्तदान, एडस के प्रति जागरूकता एवं अन्य सामाजिक कार्यकलापों से निश्चित ही लाभ मिलता रहेगा।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल विश्व का सबसे बड़ा अर्द्धसैनिक बल है एवं इसकी ख्याति, चाहे सीमा पर आतंकवाद हो या, आंतरिक सुरक्षा की जिम्मेदारी हो या सामाजिक कार्य कलाप हो या आपदा प्रबंधन का कार्य हो, विश्व प्रसिद्ध है। इस अर्द्ध सैनिक बल में देश के विभिन्न क्षेत्रों में काफी महिला कार्मिक भी तैनात हैं जो कि पुरूष कार्मिकों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अपनी जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा से पूरा कर रही हैं।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के उत्तराखंड राज्य के काठगोदाम में गौलापार, हल्द्वानी सितारगंज बाईपास के किमी संख्या 13 पर ग्रुप केन्द्र स्थापित होने के उपरांत यहा कैम्पस में केन्द्रीय विद्यालय, अस्पताल, स्टेडियम, केन्द्रीय पुलिस कैन्टीन, प्रशिक्षण क्षेत्र इत्यादि का निर्माण होगा। जिससे कि स्थानीय लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक क्षेत्र में उन्नत में काफी मदद मिलेगी। केरिपुबल के इतनी संख्या में जवान एवं इनके परिवारों के एक स्थान पर रहने से स्थानीय बाजार की अर्थव्यवस्था को भी निशिचत रूप से लाभ होगा। बल का कैम्प खुलने से क्षेत्र एवं राज्य की आंतरकि सुरक्षा मजबूत करने में राज्य सरकार को अवश्य ही मदद मिलेगी।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का यह ग्रुप केन्द्र राज्य सरकार के वन विभाग एवं सिचाई विभाग का आभारी है। जिन्होंने इतने बड़े बल के एक ग्रुप केन्द्र एवं रेंज कार्यालय को अपनी भूमि में स्थापित करने एवं अपने भवनों में अस्थायी रूप से स्थापित होने में भरपूर मदद की। केरिपुबल उपरोक्त विभागों से भविष्य में भी अपना स्थायी कैम्पस बनने तक पूर्ण सहयोग करने की अपेक्षा करती रहेगी।

हर कार्य की शुरूआत एक बिंदु से होती है वही बिंदु धीरे-धीरे एक कदम बन जाता है। यही कदम हम आज राज्य की जनता, राज्य एवं देश की सुरक्षा एवं समृद्धि के लिए राज्य में केरिपुबल के एक ग्रुप केन्द्र को स्थापित करने के प्रयास के रूप में बढाने जा रहे हैं।

सहारा

दुर्गा प्रसाद शेरसिया,
द्वि.क.अधि., 70 बटालियन

अपने ही गम को, खुद छिपा रहा है,
अजीब दौर है, हर शख्स मुस्कुरा रहा है।
गमों के सागर में डूबा हिचकोले गम के लिये
गमों के संग जीवन जिया,
गमों को सीने में सिया
गम जीवन का हिस्सा हो गया
इसके बिना जीना दुश्वार हो गया
हंसने की चाह में मुस्कुराना भूल गया,
हर वक्त गम में होता हूं
मानस पटल पर गम छा गया,
भोर से संध्या तक मेरे साथ
अब गम आ गया
गमों ने बस्ती बसां ली है
खुशियों में भी गमों को
अब साथी बना लिया है।
वर्षों से गमों का साथ है।
कैसे गमों को छोड़ दूं
गम ही अब सहारा है।
अब यह डर सताता है
बस दिन गमहीन ना हो,
नही तो जीवन का अर्थ नही होता
अनर्थ ना हो
इसलिये अब गम को साथ रखता हूं।
अब तुम्हारे लिये नही
बल्कि मेरी जिन्दा लाश को,

गमों को आत्मा को लिये फिरता हूं
इसलिये अब गमों के साये में
अपनी जिन्दा लाश लिये फिरता हूं



करवा-चौथ

दुर्गा प्रसाद शेरसिया
द्वितीय कमान अधिकारी 70 बटालियन

अजमेर स्टेशन पर प्लेटफार्म नं. 2 पर पैसेन्जर का इन्तजार यात्री कर रहे थे, अचानक रेलवे की घोषणा की ध्वनि सुनाई दी-"अजमेर से चलकर जयपुर तक जाने वाली गाड़ी कुछ समय में प्लेटफार्म नं. 2 पर आ रही है। घोषणा सुनते ही सभी यात्री गण सामान हाथों में लेकर रण क्षेत्र में जाने की भांति तैयार हो गये, तभी छुक-छुक करती हार्न बजाती हुई। पेसेन्जर स्टेशन का सीना चीरते हुए धड़ाधड़ करके प्लेटफार्म पर रूकी, धक्का मुक्की के मध्य सभी गाडी में सवार हो गये। जहां जिसको जगह मिली बैठ गए, कुछ क्षणों में गाड़ी ने चलने का हार्न बजाया और गंतव्य स्थान से चल पड़ी।

नसीराबाद स्टेशन पर जब गाड़ी रूकी तो एक महिला जो किसी ओहदेदार की पत्नी प्रतीत हो रही थी साथ में दो तीन देश के फौजी जवान भी थे, गाड़ी में जगह करवा बिठा कर मैडम को नमस्ते कह कर बाहर स्टेशन पर खड़े हो गये दो मिनट बाद गाड़ी पुनः चल पडी।

यात्रा की अवधि 3 घण्टे जयपुर जाने मे लगता है। इंसानी जीव कब चुप रहता है। उच्च स्तरीय दिखने वालो पड़ोस में दिखने में एक साधारण महिला खडी थी, आखिरकार मनःस्थिति की पेशोपेश में उच्चस्तरीय महिला से पूछा तुम कहा तक जाओगी।

साधारण महिला – जी मुझे दूदू तक जाना है।

आप कहां तक जाओगी?

उच्चस्तरीय महिला – मुझे तो जयपुर जाना है।

साधारण महिला – आपके साथ दो तीन सैनिक कौन थे।

उच्चस्तरीय महिला - गर्व से - मेरे पति CRPF में कमान्डेन्ट है।

साधारण महिला – जी "कमान्डेंट" क्या होता है।

उच्चस्तरीय महिला – झुंझलाती हुई 1000 आदमियों पर हुक्म चलाने वाला

साधारण महिला – जी, आप क्या नसीराबाद में पति के साथ रहती है।

उच्चस्तरीय महिला - नही वो आजकल असम में है।

साधारण महिला – जी क्या आप जानती है कि कल करवा चौथ है फिर कैसे क्या करती हो।

उच्चस्तरीय महिला - (मध्यम दबी आवाज़ में) क्या करे नौकरी ही ऐसी है।

साधारण महिला – शायद दूदू स्टेशन आने वाला है। चलते चलते कहने लगी जी मेरे पति मामूली इन्सान है, किन्तु ये मेरा सौभाग्य है कि सदैव करवा चौथ पर उनके दर्शन करती हू यह सब मेरे पिछले जन्मों का फल है

अच्छा "जी नमस्कार" मेरा स्टेशन आ गया है

उच्चस्तरीय महिला - "निशब्द, निस्तब्ध हो अवाक देखती रही, और मन के किसी कोने में पद की गरिमा को टटोलती रही।"

सी आर पी एफ की आरती उतारता

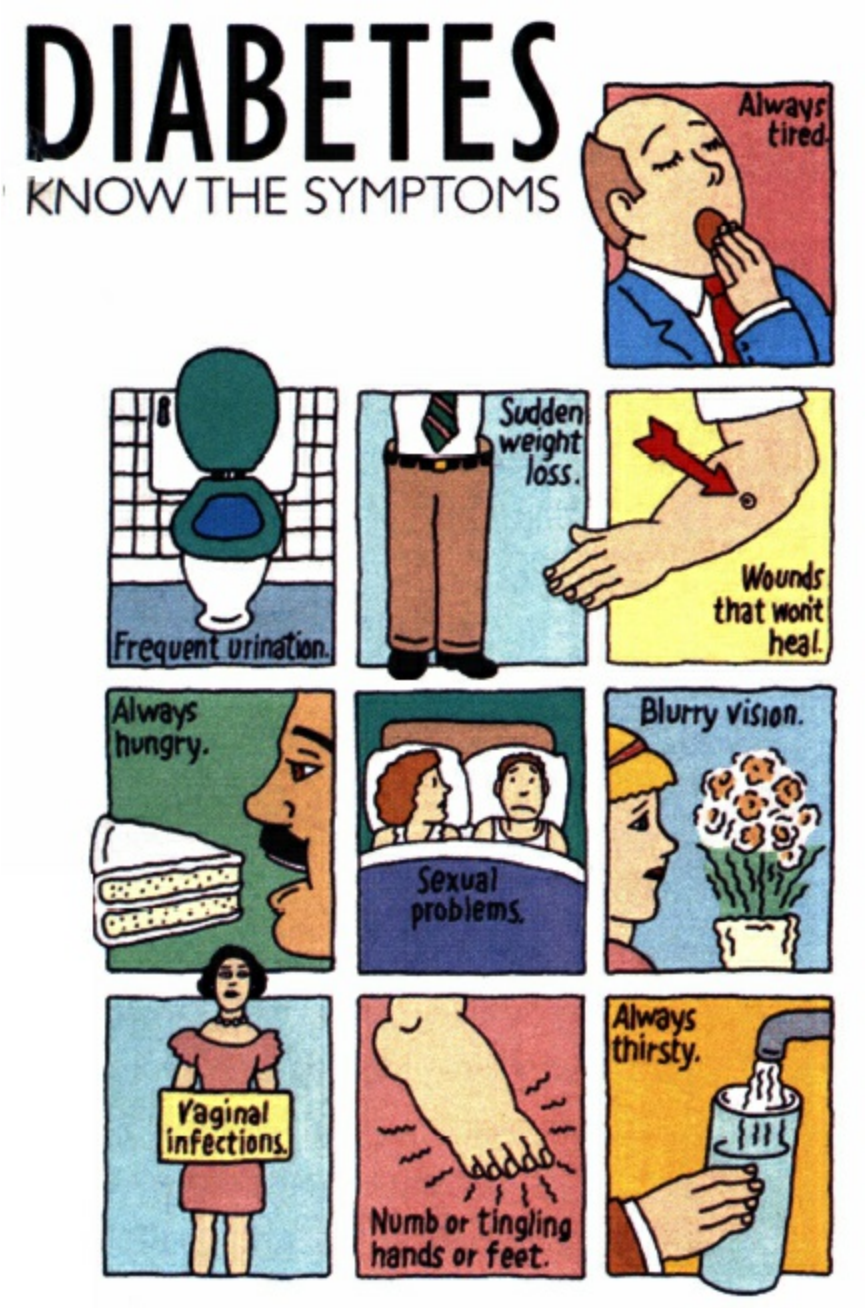
देश के जवान की, पराक्रमी महान की
अमित गुणों के खान की, मान और शान की।
तन बदन को वारता, विजय-विजय पुकारता,
समस्त देश सीआरपीएफ की आरती उतारता।

सतलुज ब्यास बह रही, चिनाब यमुना कह रही,
सदैव अग्रसर रहो, यह यह रावी कहती बह रही।
देश की धरा का ऋण वीर है उतारता,
समस्त देश सीआरपीएफ की आरती उतारता।

देश से बड़ा नही है जो किसी को मानते,
जान से महान है जो देश को ही जानते।
विपत्ति के समुद्र से, जो देश को उबारता
समस्त देश सीआरपीएफ की आरती उतारता।

अधिकतर जन्म भूमि का है, प्रथम इस शरीर पर,
गर्व होता देश को है, देश के ही वीर पर।
देश है तो लोग है यह लहू पुकारता,
समस्त देश सीआरपीएफ की आरती उतारता।

सि/जीडी जयपाल कपूर
84 बटालियन



मधुमेह

निरीक्षक डी0 के0 उपाध्याय
ग्रुप केंद्र, अवाडी

मधुमेह रोग पूरे विश्व में बहुत तेजी से फैल रहा है। आंकड़ों के अनुसार विश्व में मधुमेह के सबसे अधिक रोगी भारत में हैं। इस रोग में खान-पान और रहन-

सहन का बहुत प्रभाव पड़ता है, जिसमें थोड़े से परिवर्तन से इस रोग से बचा जा सकता है। इस लेख के माध्यम से जीवन शैली में परिवर्तन के सुझाव दिए गए हैं।

देश की आबादी के शहरीकरण व इसकी अर्थव्यवस्था के विकास के साथ देश एक "महामारी के संक्रमण" से भी गुजर रहा है। संक्रामक रोग जो कि भारत के लिए विनाश का कारण थे, उनका स्थान "जीवनशैली संबंधी रोगों" का नया समूह ले रहा है। मधुमेह इन में सबसे आगे है। अपनी जीवन शैली में स्वास्थ्य संबंध परिवर्तनों पर ध्यान केंद्रित करने का यह सही समय है। मधुमेह का रोग गलत रहन-सहन से आता है। भारत में मधुमेह के तेजी से हो रहे विस्तार को मान लिया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी यह तेजी से फैल रहा है। तेजी से हो रहा विस्तार चिन्ता का कारण है। एक पुराना रोग, मधुमेह शरीर के लगभग प्रत्येक भाग पर आक्रमण कर सकता है, जिससे हृदयघात, अंधता, गुर्दो का काम न करना, और अंगोच्छेदन हो सकता है। यह रोग युवा व्यक्तियों को लग जाता है, जिसका परिणाम होता है कि मधुमेह के अधिकांश रोगी उपयोगी आयु वर्ग के होते हैं, इसका गंभीर अप्रत्यक्ष प्रभाव परिवार व देश पर होता है।

जीन निश्चय ही एक भूमिका अदा करते हैं। तथापि मधुमेह महामारी के कारणों का खुलासा केवल जीन से नहीं हो सकता है। दोनो शहरी व ग्रामीण भारतीयों के जीन एक समान हैं फिर भी ग्रामीणों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में मधुमेह की व्यापकता काफी अधिक है। इससे यही संकेत मिलता है कि पर्यावरण व जीवन शैली में परिवर्तन इसमें बड़ी भूमिका निभाते हैं। "अफ्लूएंजा" (Affluenza) और "स्थानबद्धता" (Sedentariarism) 21वीं सदी के प्रमुख रोग हैं। ये दो सिंड्रोम (Syndromes) मधुमेह महामारी के मुख्य कारण हैं। जीवन शैली संबंधी रोगों में मधुमेह सबसे अग्रणी है अर्थात् ऐसा रोग जो पूर्णतया अथवा आंशिक रूप से मानवीय पैटर्न का हिस्सा हैं। खान-पान व व्यायाम के बिना मधुमेह के इलाज की योजना बनाना निरर्थक है। मधुमेह से संबंधित खुराक सामान्य खुराक से बहुत अलग हटकर नहीं होती है। किसी भी खुराक की योजना बनाने का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है ऊर्जा के बीच संतुलन बनाए रखने का अनुमान लगाना अर्थात् किसी व्यक्ति के द्वारा ऊर्जा ग्रहण करने व उसके व्यय के बीच का संबंध। व्यय से अधिक ऊर्जा ग्रहण करने से मोटापा, इन्सुलिन प्रतिरोध पैदा होता है, जिसके कारण मधुमेह पर नियंत्रण करना अधिक मुश्किल हो जाता है। वज़न बढ़ने का रक्त कोलेस्ट्रोल और रक्तचाप पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। बच्चों में मोटापे को रोकने से भविश्य में उनमें मधुमेह विकसित होने व अन्य समस्याओं में कमी लाने में सहायता मिलेगी।

स्वीकार करें

1. लाल चावल, सम्पूर्ण आटे की ब्रेड, दालें और फलियां।
2. मूंगफली का तेल, चावल की भूसी का तेल, सरसों का तेल।

3. कम चिकनाइ युक्त दूध/दूध के उत्पाद, मछली और बिना चरबी वाला मांस।

4. पपीता और अमरुद

5. अल्कोहल का संयमित प्रयोग हानिकारक नहीं है (अगर रक्त शर्करा अनियंत्रित न हो अथवा जिगर की

बीमारी न हो तो)

बचकर रहें

चीनी, शहद, गुड़ और मिठाइयां, रिफाइन, संसाधित आहार

मक्खन, घी, नारियल का तेल, खजूर के तेल का प्रयोग सीमित करना चाहिए।

हाइड्रोजनेटेड वनस्पति तेलों का उपयोग न करें।

बेहतर होगा कि आम/मीठे फलों को न खाएं।

धूम्रपान से बचना चाहिए।

व्यायाम, इन्सुलिन के लिए ज्ञात सबसे प्रभावशाली संवेदितावर्धक (Sensitiser) है। नियमित व्यायाम करने से हमारे शरीर में इन्सुलिन की कम मात्रा में जरुरत होती है। कम से कम 30 से 45 मिनट तक व्यायाम करने का परामर्श दिया जाता है। तेज चलना, पैदल सैर करना, दौड़ना, धीरे-धीरे चलना (Jogging) तैरना, खेल-कूद भी समान रूप से लाभदायक है। इनकी, विशेषकर उच्च सहनशक्ति वाले व्यायामों की शुरुआत चिकित्सक के परामर्श से करनी चाहिए। गरमाहट लाने से प्रारंभ करके समापन के लिए शीतल होने का समय दें। बढ़ी हुई मधुमेह, आंखों के रोग अथवा हृदय रोग से ग्रस्त व्यक्तियों को कठोर व्यायाम नहीं करना चाहिए। न केवल मधुमेह रोगी, बल्कि हम में से अधिकांश "बहानेबाजी" के रोग से ग्रस्त हैं जो हमें अपने दैनिक व्यायाम को छोड़ने के बहाने ढूंढने के लिए मजबूर करता है। दैनिक व्यायाम से रक्तशर्करा, रक्तचाप, वज़न और शरीर की चर्बी, और एल डी एल (LDL) कोलेस्ट्रॉल में कमी आती है तथा एच डी एल (HDL) कोलेस्ट्रॉल में वृद्धि होती है, मांसपेशियां सुदृढ़ होती हैं, हृदय और रक्त संचालन को शक्ति प्रदान करता है। मधुमेह के सफल इलाज का दारोमदार दोशों के यथा शीघ्र पूरे तौर पर निवारण करने पर है। इससे एक मधुमेह रोगी को अपनी रक्तशर्करा के स्तर को यथा शक्ति समान्य स्तर के निकटतम बनाए रखने के लिए सहायता प्राप्त होगी तथा वह जीवन को जोखिम में डालने वाली समस्याओं से बचेगा और मधुमेह रहित लम्बे जीवन का आनन्द उठाएगा।



सीआरपीएफ द्वारा समय-समय पर रक्तदान कैम्पों का आयोजन कर बड़ी मात्रा में रक्तदान किया जाता है। इन कैम्पों में अधिकारी एवं अन्य रैंकों के सदस्य बड़ी संख्या में भाग लेकर स्वैच्छिक रक्तदान करते हैं।

रक्तदान करने का बल का उद्देश्य न केवल मानवीय है अपितु इसलिए भी रक्तदान किया जाता है कि जम्मू-कश्मीर एवं देश के अन्य भागों में जहां भी कार्मिक घायल होते हैं व रक्त की आवश्यकता होती है तो उन्हें संस्थाओं द्वारा रक्त उपलब्ध कराया जाता है।



तनाव का सामना करने के लिए अपनी भावनाओं की साम्यावस्था को पूर्ण रूप से समझें

डा. (श्रीमती) एस. के ढिल्लन
मु.चि.अ., ग्रुप केन्द्र, जालंधर

समकालीन सामाजिक नाटकीय रूप रेखा में, कुछ व्यवसायों से अधिक अपेक्षाएं रखी जाती हैं, और पुलिस कार्य उनमें से एक है, क्योंकि यह एक भारी कार्य है, इसमें पुलिस की वर्दीधारी, किसी व्यक्ति के ज्ञानात्मक, मनःप्रेरित और भावनात्मक घटक सम्मिलित होते हैं। अतिशय मांग के कारण शारीरिक व भावनात्मक शक्ति का क्षय होता है और इससे तनाव पैदा होता है, जो कि किसी व्यक्ति की, दैनिक कार्यों का सामना करने की क्षमताओं व अनुभवों को बुरी तरह प्रभावित करने वाली शारीरिक और/ अथवा मानसिक थकान है। तनाव को एक सतत् भावनात्मक अनुभव समझा जाता है, जो कि भय, दुःख, चिंता, उतेजना, गुस्सा, उदासी और अवसाद जैसे कई

घटकों को साझेदार बना लेता है। यह एक प्रसुप्त ज्वालामुखी की भांति कार्य करता है जो कि मामूली सी प्रेरणा से भड़क उठता है, और बुनियादी तनाव, संचित तनाव (अत्यधिक काम अथवा तनाव के कारण शारीरिक अथवा भावनात्मक थकान और असफलता सहित) अभिघातज (Traumatic) तनाव, अभिघात के बाद विकार (PTSD) और अखिरकार गंभीर मनस्तापी (Psychotic) अथवा तंत्रिकाशोथज़ (Neurotic) मानसिक रोगों के विनाशकारी आयामों में विस्फोट करता है, जो कि अनुशासन हीनता, आत्महत्या, टूटन (fragging) अथवा साथियों की हत्या (fratricide) की सीमा तक व्यवहार के कुसमायोजन का प्रतिबिम्ब दिखाते हैं। तनाव की घटनाओं का मूल्यांकन, हिंसा, अपराध, वैवाहिक कलह, तलाक, यौन अपराध, मद्यव्यसनता, मादक द्रव्यों का दुरुपयोग, किशोर अपराध और मनः शरीरिक स्वास्थ्य विकार (Psychosomatic health disorder), OTT कि युवा पीढ़ी में स्पष्ट रूप से बढ़ रहे हैं, जैसे विभिन्न सामाजिक पैरामीटरों से किया जा सकता है।

अतः भावनात्मक संतुलन का एक बार बिगड़ना, किसी व्यक्ति को सामान्य तौर पर वास्तविक रूप से रखने में एक दूसरे को प्रभावित करने वाले व कमी को पूरा करने वाले, भौतिक, मानसिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, व्यावसायिक और स्थिर बुद्धि जैसे सभी आयामों को प्रभावित करता है।

असीम मानवीय दुःखों के लिए जिम्मेदार तनाव, आधुनिक जीवन की व्यापक और सामान्य सार्वभौम समस्या है जो कि अधिक भीषण और पहले की तुलना में कम स्वाभाविक होता जा रहा है।

मानसिक तनाव के मामले, संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देश में अनुमानतः 30: के आस-पास हैं, जबकि भारत में कुछ कम हैं। तनाव ने मर्त्यता (Mortality) के दस शीर्ष कारणों में प्रमुख होने की संदिग्ध उपाधि अर्जित करली है। तनाव, मानवीय सहनशक्ति, मानसिक संतुलन और आध्यात्मिक शान्ति के लिए एक बड़ी चुनौती बन गया है। उतावलापन, कढ़ी और चिंता, जीवन के हर क्षेत्र में सर्व व्यापक हैं। हमारे तनावग्रस्त सामाजिक रिश्ते आंतरिक अशांति व तनाव को दर्शाते हैं। पारिवारिक संबंधों तथा समाज सांस्कृतिक लोकाचार के अभाव में भीड़ से घिरे होने के बावजूद, भावनात्मक अवलम्बन तथा पारिवारिक हमदर्दी के अभाव के कारण मनुष्य एकांकी महसूस कर रहा है।

हम सूचना, ज्ञान, प्रौद्योगिकी के जबरदस्त विकास व उसके परिणामस्वरूप हो रहे सामाजिक बदलाव के दौर से गुजर रहे हैं। प्रतिक्रियास्वरूप यह भौतिकवाद के संबद्ध में हमारी मान्यताओं को प्रभावित कर रहा है। वर्तमान में हम जीन, इलेक्ट्रोन और एटम बम के संबंध में बहुत कुछ जानते हैं परन्तु शांतिपूर्ण व सद्भावपूर्ण जीवन के स्तंभों, परस्पर समझ, सहानुभूति और समायोजन के संबंध में बहुत कम जानकारी रखते हैं। धर्म संघों की आकस्मिक वृद्धि, बढ़-चढ़ कर त्यौहार मनाना भी सामूहिक साम्प्रदायिक जोश का प्रदर्शन है, जहां व्यक्ति धार्मिक आस्था के बजाए जन समूह से शक्ति प्राप्त करना चाह रहा है तथा यह उपासना से अधिक पुरातन के

प्रांते लोकाचार का हिस्सा है।

विपत्ती की एक ही परिस्थिति के प्रति, भिन्न-भिन्न लोग अपने भावनात्मक संतुलन के अनुसार अलग-अलग प्रकार से प्रतिक्रिया कर सकते हैं। समाजार्थिक और स्वास्थ्य विकारों के बजाए भावनात्मक बाधाएं ज्यादा लोगों को अक्षम बनाती हैं। यहां तक अच्छे स्वास्थ्य, सामाजिक उपलब्धियों और पर्याप्त आर्थिक संसाधनों के स्वामी भी केवल अपनी भावनाओं को वशीभूत न रख पाने के कारण या तो असंतुष्ट हैं अथवा अप्रसन्न हैं। अपने परिवार, समाज और जीवन से तसल्ली प्राप्त करने के बजाए हमारा ध्यान भौतिकवाद और अमीरी में खुशी ढूंढने की मृगतष्णा का पीछा करने पर केन्द्रित हो गया है।

आधुनिक औषधि पर अक्सर यह दोषारोपण किया जाता है कि यह स्वास्थ्य पर ध्यान केन्द्रित करने के बजाए रोग के अध्ययन की ज्यादा चिन्ता करती है। चिकित्सा ज्ञान के क्षेत्र में हाल के वर्षों में हुई जबरदस्त तरक्की भी, अस्वस्थता से वास्तविक स्वास्थ्य के विषय में, स्वास्थ्य के प्रतिमानों में कोई सार्थक उपाय नहीं निकाल सकी है। बुनियादी तौर पर स्वास्थ्य का अनुरक्षण स्थिर संतुलन द्वारा किया जाता है, जैसे कि किसी पशु अथवा जीव की प्रवृति होती है बाह्य परिस्थितियों की चिन्ता किए बिना आंतरिक वातावरण को सतत् बनाए रखना। जब यह संतुलन अस्थिर होता है और वैशमय आरंभ होता है, तभी यह रोग भी विकसित हो सकता है। वर्तमान में पहला उद्देश्य होना चाहिए वास्तविक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए भावनात्मक मूल्यों को सुदृढ़ करना।

सदियों से, एक स्वस्थ शरीर में स्वस्थ बुद्धि होने की पहचान, एक सामाजिक आदर्श के रूप में की गई है। किसी व्यक्ति में व्यक्तित्व व भावनात्मक आचार-व्यवहार के संतुलित विकास के द्वारा ही, मनुश्य प्रसन्नता, स्थायित्व और सुरक्षा का स्वाद लेने के लिए समाज में सुव्यवस्थित ढंग से रह सकता है। भारत के मनीषियों और ऋषियों ने, आत्म संयम के उच्चतम स्तर को प्राप्त करने के लिए भावनाओं को नियंत्रित करने की कला विकसित की थी। मानसिक व व्यावहारिक अव्यवस्थाए नैदानिक तौर पर महत्वपूर्ण स्थितियां हैं जिनका विशिष्टिकरण भावनाओं, विचार प्रक्रिया, विकृत कार्य क्षमता व व्यवहार के साथ-साथ वैयक्तिक दुःख में परिवर्तन से किया जाता है।

मानसिक मतिभ्रंश एक महत्वपूर्ण विशय है, जो कि अपनी सीमाओं में व्यापक व ठीक-ठीक परिभाषित करने में मुश्किल है। बड़ी व छोटी बीमारियां होती हैं। छोटी बीमारियां दो समूहों की होती हैं अर्थात् मनस्तंत्रिका ताप (Psychoneurosis) और व्यक्तित्व विकार। मनस्तंत्रिका ताप से ग्रस्त व्यक्ति जीवन की परिस्थितियों के प्रति सामान्य प्रतिक्रिया नहीं कर पाता है तथा कुछ असाधारण लक्षणों जैसे है वीभत्स डर, मजबूरियां और सनक को प्रकट करता है। जबकि दूसरी तरफ व्यक्तित्व विकार बचपन के खेदजनक अनुभव व अवबोधन होते हैं।

बड़े मानसिक रोगों को मनोविक्षिप्ति कहा जाता है तथा रोगी वास्तविकताओं से

अनाभेज्ञ होता है। इसमें तीन बड़ी बीमारियां होती हैं। 1) Schizophrenia अथवा खंडित मानसिकता, जिसमें व्यक्ति अपने निज ख्यालों में रहता है। 2) Manic Depressive Psychoses (MDP) - जहां लक्षण उत्तेजना की ऊंचाइयों से लेकर अवसाद की गहराइयों तक परिवर्तित होते हैं। 3) संविभ्रम (Paranoia) - यह अत्यधिक संदेह से सम्बद्ध होता है तथा पूरे संसार को भ्रम का ढांचा मानने की क्रमिक प्रवृति होती है।

मानसिक बुद्धि भ्रंश बहु क्रम गुणित (Multicfactorial) होते हैं। ज्ञात कारकों में हैं- वंशानुगत, कायिक स्वास्थ्य विकार, विषाक्त पदार्थों सहित पर्यावरणीय कारक, दिमाग व व्यवहार को प्रभावित करने वाली औषधियां (Psychotropicdrugs), पौषणिक कारक (विटामिन बी की कमी), खनिज की कमी (आयोडिन), विषाणुक संक्रमण (Viral infections), अभिघातज कारक और विकिरण। असामाजिक व्यवहार (Socio-Pathological Canges) से संबंधित किसी भी व्यक्तित्व संबंधी गड़बड़ के कारणों की अधिकतम घटनाएं होती हैं, और इनमें सम्मिलित हैं- अनुपयुक्त विवाह, गरीबी, विघटित परिवार, उपेक्षा, क्रूरता, बहिष्करण, आर्थिक असुरक्षा, आबादी की गतिशीलता (Population Mobility), शहरीकरण, औद्योगिकीकरण, टी.वी व मीडिया तथा बदलता पारिवारिक ढांचा।

मनुष्य के जीवन चक्र के सभी निर्णायक बिंदुओं के लिए विशेष आवश्यकताएं अपेक्षित हैं। प्रसवपूर्व अवधि के दौरान भावनात्मक जरुरतें, बचपन के प्रारंभिक दिनों के दौरान माता-पिता की ओर से सतत् आत्मीय संबंध, स्कूल अवधि के दौरान ठीक गुरु-शिष्य संबंध, किशोरावस्था के दौरान स्वतंत्रता व विपरीत लिंग के साथ सामंजस्य, व्यस्कता के दौरान सफलता का बोध व सामाजिक पहचान, अधेड़ावस्था के दौरान वैयक्तिक योग्यता और वृद्धावस्था के दौरान समाजार्थिक सुरक्षा तथा आत्म कार्यान्वयन (Self-actualization)। ये आवश्यकताएं, आयु के विभिन्न पड़ावों पर केवल अच्छे स्वास्थ्य और संतुलित विकास संबंधी अनुरूपता प्रदान करने के लिए मात्रा तथा गणवाचक महत्व (qualitative importance) के आधार पर भिन्न हैं।

एक भावनात्मक रूप से संतुलित व्यक्ति की तीन मुख्य विशेषताएं होती हैं-

1) वह जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होता है तथा स्वयं के भावात्मक भय, क्रोध, अपराध अथवा प्यार से नहीं घबराता है।

2) वह दूसरे के प्रति सहानुभूतिपूर्ण सोच रखता है, विश्वास करता है जिम्मेदारी का वहन करता है।

3) वह स्वयं के संबद्ध में सुरक्षित, पर्याप्त और सुखी अनुभव करता है, स्वयं की कमियों को स्वीकारता है तथा आत्म सम्मान की चिंता करता है।

अतः निम्नांकित पैरामीटरों से कोई भी व्यक्ति अपने भावनात्मक संतुलन का आंकलन कर सकता है।

1) क्या आप लोगों के साथ रहने को निरंतर नापसन्द करते हो?

2) क्या आप, अपनी दिनचर्या में व्यवधान उत्पन्न होने से अशान्त होते हैं?

3) क्या आप 'थके/हारे' और सतत् रूप से दुःखी हैं?

4) क्या आप बिना किसी वास्तविक कारण के भयभीत रहते हैं?

5) क्या आप बिना किसी उचित कारण के निरंतर असंतुष्ट रहते हैं?

6) क्या आप आसानी से व अक्सर झल्लाते हैं?

7) क्या आप हमेशा चिंता करते रहते हैं?

8) क्या आप निरन्तर अनिद्रा से परेशान रहते हैं?

9) क्या आप अनभिज्ञात कारणों से एकाग्रचित नहीं हो पा रहे हैं?

10) क्या आप अपनी मनोदशा में व्यापक उतार-चढ़ाव का अनुभव करते हैं?

11) क्या आपके साथी आपके धैर्य की निरंतर आलोचना करते हैं?

12) क्या आप हमेशा सही व दूसरे गलत होते हैं?

13) क्या बिना किसी चिकित्सकीय कारण (बीमारी) के आप को बहुत सी पीड़ा और दर्द होते हैं?

क्र. सं	पैरामीटर	कभी नहीं (1)	कभी–कभी (2)	अक्सर (3)
1	सोने में कठिनाई			
2	थोड़े से शोर से घबराहट/उतेजना			
3	काम में अरुचि			
4	अशुभ आशंकाओं के प्रति सतर्क रहना			
5	अधीर, चिड़चिड़ा और उतेजित अनुभव करना			
6	साथियों से बचना और दूर रहना			
7	शारीरिक दृष्टि व बौद्धिक रूप से अत्यधिक थकान महसूस करना			
8	किसी अभिघातज घटना को ख्यालों, चिंतन और दुःस्वप्नों में फिर से जीना			
9	सुविचारित जोखिम उठाना, आवेश में आकर काम करना, अति उतेजित महसूस करना			
10	पसीने–पसीने होने, धकधकी, सिर चक्कर और घुटन के हमले अनुभव करना अथवा किसी अभिघातज घटना का स्मरण करना।			

ये स्थितियां कमज़ोर भावात्मक संतुलन के संबंध में चेतावनी के बड़े संकेत देती हैं। यदि इन में से किन्हीं प्रश्नों के उत्तर "हां" में हैं तो सहायता की जरुरत है।

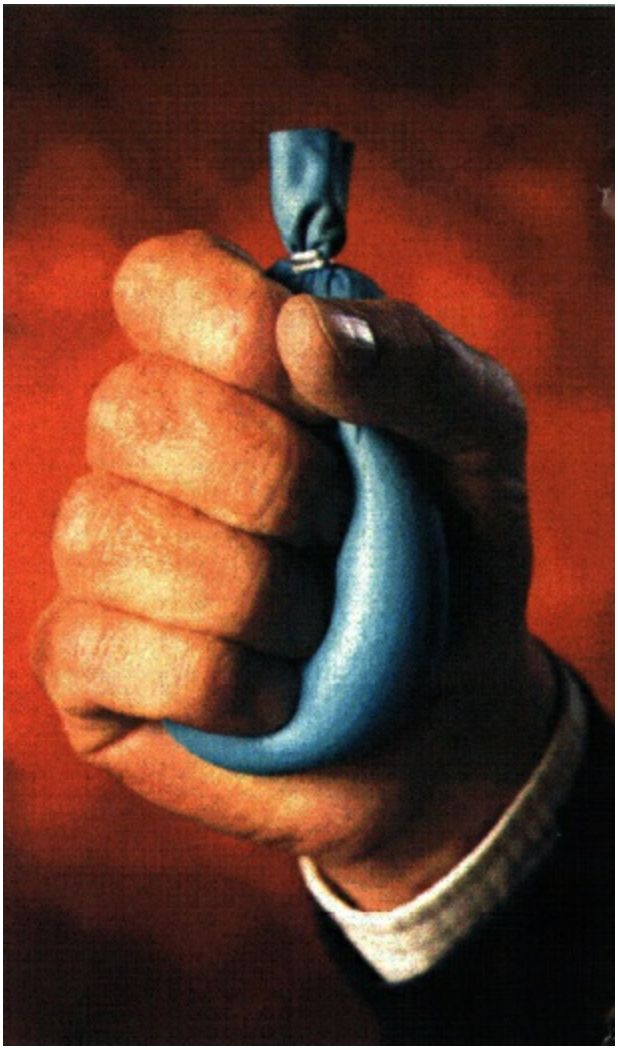
इस पृष्ठभूमि के आधार पर कोई भी व्यक्ति आगे अपने तनाव के स्तरों की संगत बाक्स में सही का निशान लगाकर तथा नियत अंकों को जोड़ कर स्वमूल्यांकन द्वारा जांच कर सकता है व परिणाम प्राप्त कर सकता है।

यदि आप का स्कोर 15 से कम है तो निर्णायक रूप से आप सामान्य श्रेणी में हैं, यदि स्कोर 15-25 के बीच है तो आप औसत तनाव की श्रेणी में आते हैं और यदि स्कोर 26-30 के बीच रहता है तो आप गंभीर तनाव के शिकार हैं तथा आपको पेशेवर सहायता की जरुरत है।

कोई भी व्यक्ति तनाव का मुकाबला, गोलियों और डाक्टरी नुस्खों द्वारा नहीं कर सकता है, बल्कि मनोभावों पर नियंत्रण करके, एकदम मानवोचित बना रहकर, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आध्यात्मक, दार्शनिक स्थितियों का आदर्श स्वामी बनकर और वास्तविक स्वास्थ्य के व्यावसायिक आयामों वाला बनकर कर सकता है।

भगवान श्री कृष्ण ने भगवद् गीता के छठे अध्याय में भावात्मक रूप से संतुलित मनुष्य का वर्णन किया है जिसका अर्थ है "आत्मसंयम, जो विशाद को वश में रखता

है, केवल वही कुशल/पारंगत है जो, आहार-विहार में, कार्य निष्पादन में नियंत्रित है, सोने व जागने में नियमित है और वह जो अपने मनोभावों की बागडोर को थाम कर रखता है।”





संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप-समिति के समक्ष निरीक्षण हेतु उपस्थित दक्षिण सेक्टर के अधिकारीगण

लेख



महिलाएं घरेलू हिंसा से कैसे बचें

के.के. पाण्डेय
द्वितीय कमान अधिकारी
196 बटालियन, केरिपुबल

शुरूआत में ही यह बताना उचित समझता हूँ कि यह लेख “Prevention is better

than cure" को फिलॉस्फी पर आधारित है। यह न समझा जाय कि नारी को कमतर आंक कर यह लेख लिखा गया है। ऐसा कोई सोच भी कैसे सकता है क्यों कि हम सभी जानते है:-

"नारी पहले भी भारी थी, आज भी भारी है।
पुरूष पहले भी आभारी था, आज भी आभारी है"

तथा इन्हे Better half की उपाधि से भी नवाजा गया है। अतः इस लेख को सही परिपेक्ष्य में लिया जाए।

हिंसा हमेशा से ही निंदनीय रही है तथा इसका रूप डरावना एवं वीभत्स। हिंसा चाहे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हो या घरेलू स्तर पर, इसका परिणाम बेहद खौफनाक, हानिकारक एवं प्रगति में बाधक होता है। अतः इससे बचने के उपाय ढूंढना हम सबका नैतिक कर्तव्य है ताकि परिवार, समाज, देश एवं विश्व का विकास तीव्र गति से हो सके।

यहां घरेलू हिंसा से तात्पर्य महिलाओं के ऊपर परिवार के सदस्यों चाहे वह पति/पिता/भाई/देवर/सास/बहू/ननद किसी भी रिश्ते से संबंध रखती हो, के द्वारा किए जानेवाले मानसिक एवं शारीरिक प्रताड़ना से है। परिवार के अन्दर इसका जन्म आपसी मतभेद, अहम् की टकराहट, असहनशीलता, मानसिक तनाव, परिवार के सदस्यों के बीच अविश्वास, आपसी सामंजस्य की कमी व संवादहीनता, एक दूसरे की भावनाओं का अनादर, कटुवचन आदि कारणों से होता है।

घरेलू हिंसा से बचने के चंद उपायों के बारे में यहां जिक्र करना चाहता हूँ जिसकी शुरूआत परिवार से ही होती है:-

(1) मीठे बोल बदले जीवन:-

प्रिय व मधुर वचन सभी को सुहावने लगते हैं। प्रियवचन के प्रवाह का परिणाम यह होता है कि इससे लोगों में प्रिय वचन बोलनेवाले के प्रति आकर्षण हो जाता है। यह पारस्परिक सौहार्द्र एवं मृदुता का संचार करने में सहायक होता है। यह मान-मर्यादा, प्रतिष्ठा श्रद्धा और विश्वास की बढात्तरी में भी सहायक होता है। वाणी की मृदुता का महत्व सबने स्वीकार किया है:-

"ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोए
औरन को शीतल करे आपहूँ शीतल होय,

इस संबंध में महात्मा गॉधी का यह कथन सर्वथा उपयुक्त है-

"सुन्दर वाणी से आप अपने शत्रु पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं'।

अतः परिवार के प्रत्येक सदस्य को नारी अपने मीठे बोल के जादू से मोह सकती है तथा पारिवारिक वातावरण को सरस व मोहक बना सकती है।

(2) विश्वास से मन जीतें:

घरेलू हिंसा का एक मुख्य कारण है परिवार के सदस्यों यहाँ तक कि पति का पत्नी के उपर अविश्वास एवं शक। अतः अपने मधुर वचनों एवं कर्मों से परिवार के सदस्यों के बीच विश्वास स्थापित करना निहायत जरूरी है। विश्वास से ही संबंधो की नीव मजबूत होती है तथा प्रेम में स्थायित्व आता है। किसी ने सही ही कहा है- Love is faith & faith is forever.

(3) समर्पण की भावना:

नारी को ईश्वर ने जितने गुण दिए हैं अगर वह उसका सदुपयोग अपने पूरे मनोयोग से करे तो वह कम से कम घरेलू हिंसा से तो पूर्णतः बच सकती है। समर्पण नारी का अहम् गुण है जिसके बल पर वह परिवार के सदस्यों के मन पर गहरी छाप छोड़ सकती है तथा परिवार के सदस्यों में उसके प्रति श्रद्धा भाव जागृत हो सकता है। जय शंकर प्रसाद जी की यह पंक्तियों नारी को बहुत ही सुन्दर तरीके से बयाँ करती है:-

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत पग तल में
पीयूष श्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में"।

(4) सहनशीलता:

कुछ समस्याएं या झगड़े ऐसे होते हैं जो चुप रहने से अपने आप ही सुलझ जाते हैं। परिवार का कोई सदस्य अगर कोई छोटी-मोटी टेढ़ी बात करता है तो उसका प्रत्युत्तर देना जरूरी नहीं है। उसे टालकर इसे बड़ा रूप लेने से बचा जा सकता है। अतः नारी को सहनशील होना बहुत जरूरी है।

(5) आपसी बातचीतः-

अक्सर देखने में आता है कि परिवार के अन्दर किसी मामूली से मुद्दे पर मतभेद होने पर परिवार के सदस्य एक दूसरे से बात करना बंद कर देते हैं तथा धीरे-धीरे मतभेद गहराने लगता है। यहां तक नौबत आती है कि घर की बात बाहर पहुंच जाती है तथा हिंसा का रूप भी लेने लगती है। यहाँ छोटे-बड़े के भेद को भुलाकर आपसी बातचीत से इस तरह से मतभेद एवं उससे उत्पन्न हिंसा से आसानी से बचा जा सकता है।

(6) जीवन शैली में बदलाव:

आज के भौतिकवादी युग में विशेषकर महिलाओं की जीवन शैली भी कुछ ऐसी हो गई है जिसमें हमारी भारतीय संस्कृति लुप्त होती जा रही है। परिणामस्वरूप महिलाओं का मानसिक संतुलन, जो कि कई दबावों से ग्रसित रहती है, बिगड़ता जा रहा है। जिसके कारण महिलाओं के प्रकृतिदत्त गुण सहनशीलता में कमी आ रही है तथा परिवार के छोटे-छोटे मुद्दे भी विकराल रूप धारण कर हिंसा में तब्दील हो रहे

है। अतः हमें हमारी जीवनशैली में भारतीय संस्कृति का पुट अपनाना होगा।

(7) महिलाओं की भूमिकाः-

भारतीय समाज में विशेषकर महिलाओं पर घरेलू हिंसा में महिलाओं की ही मुख्य भूमिका होती है, जो किसी छोटे से मुद्दे को विकराल रूप दे देती है। किसी ने सही ही कहा है कि 'सास भी कभी बहू थी'। हमें इस बात को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि जिस प्रकार से हम प्रताड़ित हुए है उसकी पुनरावृत्ति घर की अन्य महिलाओं पर न होने दें।

(8) आर्थिक निर्भरता:-

आज के इस भौतिकवादी युग में आवश्यकताएं अनंत हो गई हैं जिनका अंत कहीं नहीं है। आज हम जो वस्तुएँ आवश्यक नहीं है उनकी पूर्ति के लिए भी प्रयासरत रहते हैं तथा मानसिक रूप से परेशान रहते है। इस समस्या से निपटने के लिए महिलाओं को भी आर्थिक रूप से सक्षम बनना होगा जिसके लिए उनका शिक्षित होना अति आवश्यक है। ताकि वे भी पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर परिवार की आजिविका में अहम भूमिक निभा सके।

आखिर में यहां यह वर्णित करना उचित होगा कि सृष्टि की रचना में अहम भूमिका निभाने वाली नारी का हमें आदर करना चाहिए। सामाजिक ताना बाना को संतुलित बनाए रखने के लिए हम सबकी सामाजिक एवं नैतिक जिम्मेवारी बनती है कि जो तत्व महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा के लिए जिम्मेवार हैं उन्हें समझा बुझाकर एवं कानूनी सहायता लेकर रोका जाय तथा उन्हें सुधारने का प्रयास किया जाय। साथ ही महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक बनाया जाय तथा उनके शिक्षा एवं प्रगति के लिए आवश्यक उपाय हर स्तर पर किया जाय। हमें पूरी उम्मीद है कि अगर हर स्तर पर प्रयास किया जाय तो घरेलू हिंसा जैसे बदनुमा दाग को समाज से अवश्य मिटाया जा सकता है तथा एक समरस समाज की रचना की जा सकती है जिसमें महिलाएँ अपने को महफूज एवं खुशहाल महसूस करेंगी।

प्रेरक

सफलता के लिए



1. विचारक शिव खेड़ा का कहना है कि सफल व्यक्ति कुछ खास नहीं करते है। बल्कि वे किसी भी काम को एक खास अंदाज में करते है। सफल व्यक्ति काम के इंतजार में नहीं बैठे रहते है बल्कि वे किसी भी काम को करने में शर्माते नहीं हैं।
2. सफलता का मूढ मंत्र है कि सबसे पहले स्वंय पर विश्वास करना सीखे। आस-पास की बातो में अपना ध्यान कम रखें।
3. जीवन में सफल होना चाहते है तो अपनी कमियों को पूरी तरह स्वीकार करे। श्री श्री रविशंकर मानते हैं कि वही व्यक्ति जीवन में सफल हो सकता है जो अपनी कमियों को स्वीकार करने के साथ अपने गुणों को भी विकसित करे।
4. सभी काम मस्तिष्क के सहयोग से पूरे होते हैं इसलिए उसे शांत रखना बेहद

जरूरी है गुस्से और जल्दबाजी से अक्सर काम बिगड़ जाता है।

5. खुद का डिफेंस करना सीखे। न तो किसी पर बेवजह हावी होने का प्रयास करें और न ही दूसरे व्यक्ति को इतना महत्व दें कि आप उसके सामने खुद को लाचार समझे।

6. अच्छा वक्ता होने के साथ अच्छा श्रोता होना भी जरूरी है। कभी-कभी ऐसी गलती के लिए भी डांट सुननी पड़ती है जो आपसे न हुई हो लेकिन उसे अपने काम का एक हिस्सा मानकर भूल जाइए। प्रख्यात दीपक चोपड़ा के अनुसार, सपनों को पूरा करने के लिए सहनशीलता का भाव होना बहुत जरूरी है तभी आप अपने उद्देश्य में पूरी तरह सफल हो जाएंगे।

7. सफलता में कई बार आपकी निजी जिंदगी भी हावी होने लगती है कभी दूसरों की वजह से। इसके लिए घर और आफिस के बीच तालमेल बिठाने का प्रयास करें और घ्यान रखे कि आपको मेहनताना काम करने के लिए मिलता है, न कि फिजूल बातों के लिए।

8. अपना लक्ष्य हमेशा तय करके रखें। उसी कैरियर में हाथ आजमाने का प्रयास करें जिसमें आपकी रूचि हो और जिसे आप ज्यादा बेहतरी के साथ कर पाएं। एयरहोस्टेस की नौकरी छोड़ सुनीता मेनन ने अपनी योग्यता को पहचाना और आज वह टेरोकार्ड रीडर के रूप में स्थापित है।

9. यदि मनपसंद नौकरी या कैरियर चुनने के बावजूद उससे मोह भंग होने लगे तो बोरियत दूर करने के लिए उसमें मौलिकता लाने का प्रयास करें। अन्यथा उस नौकरी या क्षेत्र को बदल देना ही आपके लिए बेहतर होगा

10. इस बात को हमेशा ध्यान में रखें कि गलती पहली या दूसरी नहीं होती, गलती गलती होती है।



हम भूल गये...हँसना

बल की इस समाचार पत्रिका के माध्यम से बल के सभी सदस्यों का स्वागत करना चाहता हूँ। बल की बढ़ती उपयोगिता। मांग के कारण जहां बटालियन की संख्या में वृद्धि हुई वही हमारी जिम्मेदारियों में बढ़ोत्तरी हुई है नयी-नयी समस्याएं भारत को चुनौतियां देता है, तो हम वीर सपूत समस्या के निदान हेतु सदैव तत्पर रहते हैं इस तत्परता में कई बार तरह तरह की कुर्बानी देनी पड़ती है। कई बार पारिवारिक परेशानियां बहुत बढ़ जाती हैं। ऐसे में ड्यूटी पर तैनाती के दौरान वाकी टाकी सैट का एकस्ट्रा एलर्ट की चेतावनी हमें सब भूलने पर मजबूर कर देता है। यहां तक कि हम स्वभाविक जीवन के मूल (हंसना) भी भूल जाते हैं जब कि:-

1. मुस्कराना शुद्व हृदय का स्वभाव है यही रस एवं आनन्द की ज्योर्तिमय रेखा है।
2. स्वभाविक मुस्कान अलौकिक आनन्द का संचार करती है।
3. हंसते समय सब कुछ भूल जाता है।
4. सभी भाव हंसी में दब जाते हैं।

5. हंसने से थकान कम हो जाती है जो आगे चलने को प्रेरणा देती है।

6. हंसी सर्वत्र उत्साह का वातावरण बना देती है।

7. प्रसन्नता आंतरिक संवेदना है।

8. खिल-खिलाकर हंसना सबसे अच्छा व्यायाम है।

9. खुल कर हंसने पर द्वेश या कलेश नही पनपता

10. मुस्कुराहट का संबंध मित्रों, प्रेमियों, दंपति की वार्तालाप भी है।

परन्तु कृत्रिम हंसी का संबध हृदय से नहीं होता
कई बार हंसी पर भी हंसी आ जाती है।
वैसे हंसना एक कला है।
हंसना भी अपने आप में एक कला है क्योंकि हंसने पर जीवन की सफलता निर्भर है।
इसलिए हसी हमारे जीवन की दिशा को मोड़ने वाली, सूखी जीवन की कसौटी है अतः व्यस्त रहो, मस्त रहो मुस्कराते रहो।

लेख

आतंकवाद एक परिवेश प्रक्रिया एवं समाधान

सिपाही बिरेन्द्र कुमार सिंह
115 बटालियन केरिपुबल



आतंकवाद की समस्या से आज हमारे भारत देश ही नहीं बल्कि विश्व के कई देश इस समस्या से पीड़ित है। आतंकवाद के बदले स्वरूप से निपटने के लिए आवश्यक है कि पारंपरिक तरीकों के साथ-साथ आधुनिक व अधिक कारगर तरीकों को आजमाकर समस्या से निपटा जाए।

वर्तमान समय में आतंकवाद रूपी नासूर जो कि हमारी सम्प्रभुता व अखंण्डता पर बार-बार कुठाराघात करता है। इस आतंकवाद जैसे नासूर को जड़ से समाप्त/नष्ट करने की जिम्मेदारी भारत सरकार के द्वारा इस केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को सौंपी गई है जो कि आज तक जम्मू व कश्मीर, पूर्वांचल, छत्तीसगढ़, झारखंड जैसे आतंकवाद एवं नक्सल प्रभावित क्षेत्र में तैनात रहकर ने इस मुहिम में काफी सफलता से पूरा किया है और भविष्य में पूरा करती रहेगी। यही कारण है कि विश्व का कोई भी देश इस देश की तरफ आँख नहीं उठा कर देख पाता है।

आतंकवाद विदेशी शक्तियों को एक ऐसी सोची समझी नीति है जिसके द्वारा किसी भी राष्ट्र की सार्वभौमिक सम्प्रभुता पर चोट की जा सके। चाहे वह धार्मिक कटुता या साम्प्रदायिक तनाव दंगे करवाकर ही क्यों न हो, आज भारत ही नहीं लगभग विश्व के अधिकांश देश में आये दिन कई प्रकार के आतंकवादी व धार्मिक दंगों को फैलाकर अशांति फैलायी जाती है और आतंकवादी तत्वों के द्वारा अपनी बात मनवाने का प्रयास किया जाता है। आज क्या हम इतने लाचार है कि इतनी वीभत्स-वीभत्स घटना होने के बावजूद अपनी आँख मूंदे हुए है, ऐसी खूनी मंजर को जहां व्यक्ति-व्यक्ति का रक्त बहा रहा है, क्या वाकई में हम आतंकवाद के प्रति गंभीर है यदि हां तो हम सभी बल के कार्मिकों को शपथ लेना चाहिए कि हम बल की कार्यवाइयों व प्रशिक्षण से हटकर कुछ ऐसा कार्य करेंगे जिससे हम आज का वातावरण के प्रति गंभीर रहेगें। अगर आज इस केरिपुबल का प्रत्येक सदस्य अपनी जिम्मेदारी के प्रति गंभीर रहेगा तो कोई भी आतंकवादी तत्व किसी भी प्रकार की आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम नहीं दे सकेगा, और इस प्रकार हम काफी हद तक इस आतंकवादी नासूर से जूझने में सफल रहेंगे।

“आतंकवाद का अंत आतंकी को मारने से नहीं बल्कि आतंकवाद को खत्म करने से होगा”

वर्तमान समय में बल का प्रयास यह आतंकवाद को रोकथाम को रोकने के साथ ही इस समस्या को जड़ से समाप्त करने का है। आज एक आतंकी मारा जायेगा तो कल एक नया आतंकवादी पैदा होगा और जो और भी गंभीर तरीके से हमारे ऊपर वार करेगा इसलिए हमें जहां तक संभव हो यह प्रयास करना है कि किसी आतंकी को समाप्त करने के बजाए, हमारा यह पूर्ण प्रयास करना चाहिए कि हम आतंकी के मन में बैठे देश विरोधी भावना को समाप्त करें। इससे न केवल आतंकी ही सुधरेगा बल्कि वह अन्य किसी को आतंकी बनने व देश विरोधी कार्रवाई करने से रोकेगा। यहाँ पर मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि बूंद-बूंद से सागर भरता है उसी प्रकार से यदि हम कम से कम एक आतंकी के मन में यह बात बैठाने में कामयाब हो जाते हैं कि आतंकवाद से न केवल खुद के परिवार का बल्कि पूरे देश एवं विश्व की हानि होती है, तो वह कभी भी आतंकवाद की शरण नहीं लेगा और न ही किसी को उक्त के तरह अग्रसर ही होने देगा। यदि ऐसा होता है तो अच्छी तरह से समझना चाहिए कि हमने आतंकवाद पर विजय प्राप्त कर लिया है।

घाटी में आतंकवाद के शुरू के दिनों में लगभग 1999 से पहले के समय में यह कोई एक छोटी सी घटना होती थी तो घाटी के अवाम सड़कों पर इकट्ठा होकर बिना कुछ सोचे विचारे अन्यत्र ही पथराव व ग्रेनेड फेकते थे जिसके कारण से न केवल उनके स्वयं के घर व कारोबार का नुकसान होता है बल्कि सारी संपत्ति की भी क्षति होती थी लेकिन आज हम यह कह सकते हैं कि आज घाटी में आतंकवाद आपने अंतिम चरण में है क्योंकि आज यह देखा जाता है कि घाटी के छोटे-छोटे बच्चा भी समझदार हो चुके हैं और इस बात से अच्छी तरह से वाकिफ है कि पथराव गुटबाजी

से कोइ फायदा नहीं है इससे केवल अपना और देश का नुकसान ही होता है और वह गुटबाजी व आतंकवादी तत्वों के बहकावे में नहीं आता है। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि हम अपने प्रयास में काफी हद तक सफल रहे हैं और थोड़ी से प्रयास और करने हैं।

लेकिन इसके विपरीत आतंकियों का वर्तमान अपनी कार्यवाही व कार्यक्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन करता है। यह दर्शाता है कि जम्मू व काश्मीर पूर्वांचल, छत्तीसगढ़, झारखंड जैसे क्षेत्र में आतंकवाद की कमर टूट रही है।

ग्रेनेड फेंकने के लिए आतंकी को सस्ते में व आम नागरिक आसानी से मिल जाते हैं व बिना पूर्ण प्रशिक्षित आतंकी भी ग्रेनेड फेंक सकता है।

ग्रेनेड का खर्च कम व नुकसान ज्यादा है जिसमें सुरक्षा बलों का व आम जनता का नुकसान होता है, जिस कारण आम नागरिकों का प्रतिरोध सुरक्षा बलों के विरूद्ध प्रदर्शित होता है।

शांति व मानवीय आवश्यकताएँ

विश्व में मानव की तीन आवश्यकताएं हैं-शांति, सद्भाव, कानून व्यवस्था व रोटी। पर इसके विपरीत अलगाव पंथी गुटों का उद्देश्य-युद्ध, धर्म या जाति के नाम पर हिंसा फैलाना व रोज दर रोज मानवता का खून। आज भारतवर्ष में आतंकी व अलगावादी असम, त्रिपुरा, नागालैण्ड, जम्मू व काश्मीर, मध्य भारत व उत्तरी पूर्वी राज्यों में तीन उद्देश्यों को चरितार्थ करता है व इसके साथ ही विश्व स्तर पर फिलस्तीन, इजराईल, लेबनान, गाजापट्टी, अफगानिस्तान व कोसोवो में अपने उचित व अनुचित हक के लिए। सामाजिक, राजनैतिक प्रक्रिया है, जो लोकतांत्रिक सरकारों के विरुद्ध, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी शक्ति का प्रदर्शन व अन्य सरकारों/राष्ट्रों द्वारा दूसरे राष्ट्रों की उन्नति में बाधा उत्पन्न हेतु इस्तेमाल किया जाता है।

आज विश्व स्तर पर श्रीलंका, इंग्लैण्ड, दक्षिण अफ्रीका, रूस व अमेरिका देशों सहित अनेक देश इससे प्रभावित है। घाटी में आतंकवाद अपने अंतिम चरण पर होने के फलस्वरूप वर्ष 2008 में विधान सभा चुनाव को शांति पूर्वक सम्पन्न कराने में इस बल की एक अहम भूमिका रही है।

आतंकवादी गतिविधियों का दूसरा, पहलू इसका सीधा संबंध संगठित अपराध से है विश्व स्तर पर जिस रूप में संगठित अपराध व्यापक रूप से फैला है। उसमें सीधा संबंध उजागर होता है, भारतवर्ष की व्यापारिक राजधानी 'मुम्बई' विश्व के सबसे बड़े संगठित अपराध से ग्रस्त हैं, जिसकी जड़े 'काश्मीर से कन्याकुमारी व नागालैण्ड से द्वारिका तक फैली है। हर आतंकी घटना के पीछे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से अपराध का संबंध रहता है। भारत में आतंकवाद प्रायोजित हैं और यह 'छद्म युद्ध' एक सोची समझी साजिश का हिस्सा है।

क्या हम इतने लाचार हैं कि सब कुछ जानते हुए भी आखें बन्द किए देखते रहे, हमारी कानून व्यवस्था इतनी लाचार है कि कुछ न कर सकें, क्या इस देश के नेताओं

व जनता की वह दृढ़ निश्चयता व इच्छा शक्ति क्षीण हो चुकी है, यह मनन का विषय है। हमारे देश की पहचान है “विभिन्नता में एकता”।

रिपोर्ट

23 बटालियन को बेस्ट कास्ट इफेक्टिव और फाइनेंसियल डिसिप्लीन ट्राफी

23 बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को वर्ष 2008 में मणिपुर एवं नागालैण्ड सैक्टर की सर्वोत्तम कॉस्ट इफेक्टिवनेस और फाइनेंसियल डिसिप्लीन ट्राफी से नवाजा गया। यह ट्राफी श्री वी०पी०एस० पवार, पुलिस महानिरीक्षक, मणिपुर एवं नागालैण्ड सैक्टर के द्वारा 15 जनवरी 2009 को श्री एस०के०मिश्रा, कमाण्डेंट-23 बटालियन को समुह केन्द्र इम्फाल में एक भव्य समारोह में प्रदान की गई इससे पूर्व बटालियन को वर्ष 2006 व 2007 में लगातार दो बार मणिपुर एवं नागालैण्ड सैक्टर की सर्वोत्तम प्रशासनिक बटालियन ट्राफी प्रदान की गई थी।

23 बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में 15 मई 1967 को अस्तित्व में आई तथा देश के विभिन्न भूभाग में प्रतिविद्रोहात्मक व कानून व्यवस्था हेतु तैनात रह चुकी है। 13 दिसम्बर 2001 का दिन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा गया। उस दिन लश्कर-ए-तोइबा के पांच आतंकवादियों ने संसद भवन पर हमला कर दिया जिसे बटालियन के कार्मिकों ने अपनी जान की परवाह किये बगैर मुंह-तोड़ जवाब देते हुए उन पांचों उग्रवादियों को मार गिराया। इस पराक्रम के लिए वाहिनी के तीन जवानों को शौर्य चक्र प्रदान किया गया। बटालियन के अन्य सराहनीय कार्य के लिए अनेकों पदक से नवाजा गया।

1. शौर्य चक्र	03
2. राष्ट्रपति पुलिस वीरता पदक	04
3. वीरता पदक	10
4. विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक	05
5. सराहनीय सेवाओं के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक	11
6. अर्जुन अवार्ड	01
7. विशिष्ट सेवा पदक महानिदेशक डिस्क	10

त्रिपुरा में तैनाती के दौरान बटालियन को राष्ट्रीय राजमार्ग की सुरक्षा का कार्यभार

सौपा गया था। बटालियन ने अपने इस तैनाती को अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से निभाया जिसके कारण किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना नहीं घटी। तैनाती के दौरान इस बटालियन ने कई उग्रवादी, हथियार पकड़े व 14 कट्टर उग्रवादियों को हथियार सहित आत्मसर्मपण करवाया। वर्तमान समय में बटालियन के इतिहास को देखते हुए श्रीनगर (जम्मू व कश्मीर) के नया सचिवालय, हाई कोर्ट आदि महत्वपूर्ण स्थानों की सुरक्षा की जिम्मेवारी मई 2008 बटालियन के वर्ष 2005 से 2008 में में दी गई।



श्री वी०पी०एस० पवार, पुलिस महानिरीक्षक, मणिपुर एवं नागालैण्ड सैक्टर के द्वारा श्री एस०के०मिश्रा, कमाण्डेंट-*23* बटालियन को बेस्ट कास्ट इफिक्टिव व फाइनेंसियल डिसिप्लीन ट्राफी प्रदान करते हुए।



बल कार्मिकों के लिए एक नई उम्मीद

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल भारत सरकार की ही नहीं बल्कि विश्व की सबसे बड़ी अर्धसैनिक बल है, जिसमें आज करीब 201 बटालियनें देश के विभिन्न क्षेत्रों में तैनात है। जिसमें बल का अधिकतम भाग जम्मू व कश्मीर तथा पूर्वोत्तर राज्यों तथा भारत के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में तैनात किया गया है जहाँ उग्रवाद, नक्सलवाद और आतंकवाद भौगोलिक और संख्यात्मक तौर पर बढ़ा है। ऐसी स्थिति में हमारे बल के जवानों को अपने देश की आन्तरिक सुरक्षा व्यवस्था कायम रखने में कभी-कभी भारी शारीरिक नुकसान भी उठाना पड़ता है।

105 बटालियन द्रुत कार्य बल/केरिपुबल में दिनांक 03 फरवरी 09 को शरीर के बनावटी अंग से संबंधित एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। यह बड़े ही सौभाग्य की बात है कि हमारे सम्पूर्ण केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों को रोटरी क्लब के द्वारा शरीर के बनावटी अंगों को निःशुल्क प्रदान किये जाने के बारे में सुविधा प्राप्त हुई। रोटरी क्लब द्वारा यह सुविधा 105 बटालियन के जवानों एवं बटालियन द्वारा किये गये अच्छे कार्यों को ध्यान में रखकर सम्पूर्ण केरिपुबल के जवानों को निःशुल्क आर्टीफिशयल लिंबस मुहैय्या कराने के बारे में क्लब ने अपना विचार किया है।

जैसा कि अभी 105 बटालियन में दिनांक 03 फरवरी 09 को लांस नायक पवित्र नाथ यादव जो कि ग्रुप केन्द्र केरिपुबल इलाहाबाद में तैनात है इस बटालियन में

बुलाया गया और उसका बाया पैर (आर्टीफिशेयल लिम्बस) लगाया गया। लांस नायक पवित्र नाथ यादव 33 बटालियन केरिपुबल में तैनात था। 33 बटालियन त्रिपुरा से कश्मीर के लिए जा रही थी बीच में कुछ आतंकवादी पहले से ही घात लगाकर 33 बटालियन पर गोली बारी किया उस दौरान लांस नायक पवित्र नाथ यादव को अपना बांया पैर गवाना पड़ा। लेकिन आर्टीफिशियल लिम्बस ने इस दिशा में एक नई किरण हमारे बल के लिए जगा दी है जो कि आपके समक्ष एक उदाहरण पवित्र नाथ यादव को बांया पैर लगाया गया जो जवान अपने पैरों से चल नहीं सकता है वह आज अपने पैरों से चलना शुरू कर दिया।

इस कार्यक्रम के अवसर पर 105 बटालियन के कमाण्डेन्ट श्री महेन्द्र कुमार, द्वितीय कमान अधिकारी श्री बी.ए.के. चौरसिया, उप कमाण्डेन्ट श्री एरिक गिलबर्ट जोश, उप कमाण्डेन्ट श्री रवि शंकर कुमार, श्री हीरेन देसाई, अध्यक्ष रोटरी क्लब मिडटाउन, कोयम्बटूर भूतपूर्व कैप्टन मैथ्यू (गर्वनर रोटरी क्लब), श्री कन्नन प्रोग्राम चेयरमैन आदि लोग इस विशेष अवसर पर उपस्थित थे एवं भाग लेकर कार्यक्रम को इस मुकाम तक पहुँचाया।

इस प्रकार के आर्टीफिशियल लिम्बस की जरूरत केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के किसी भी कार्मिक जो नौकरी में है या सेवा के अयोग्य घोषित कर घर भेज दिये गये हो तो इस बटालियन को अवगत कराया जाए एवं इसका प्रचार-प्रसार पूरे बल में किया जाए जिससे कि इस समस्या से निजात पाने के लिए हमारे बल के जवानों के जीवन में एक नई किरण पैदा हो सके और वे अपना जीवन सुखमय व्यतीत कर सकें।

परिचय



श्री अमरजोत सिंह गिल

नए महानिदेशक का संक्षिप्त परिचय

1972 बैच के राजस्थान कैडर के भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी श्री अमरजोत सिंह गिल ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के नए महानिदेशक का कार्यभार ग्रहण किया। इससे पूर्व श्री गिल ने 1991 से 1995 तक सीआईएसएफ में उप महानिरीक्षक के तौर पर कार्य किया। श्री गिल ने 1995 से 1997 तक सीआरपीएफ में तैनाती के दौरान श्रीनगर में महानिरीक्षक परिचालन और 1999 तक कार्मिक एवं प्रशासन के तौर पर कार्य किया। अपने कैडर राजस्थान में वे एन्टी करप्शन ब्यूरो के आईजी, अपर महानिदेशक, एसीबी और अपर महानिदेशक क्राईम के तौर पर तैनात रहे व तत्पश्चात् राजस्थान के पुलिस प्रमुख के तौर पर तैनात रहे। श्री गिल को 1988 में

सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक से और 1995 में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक से सम्मानित किया गया।

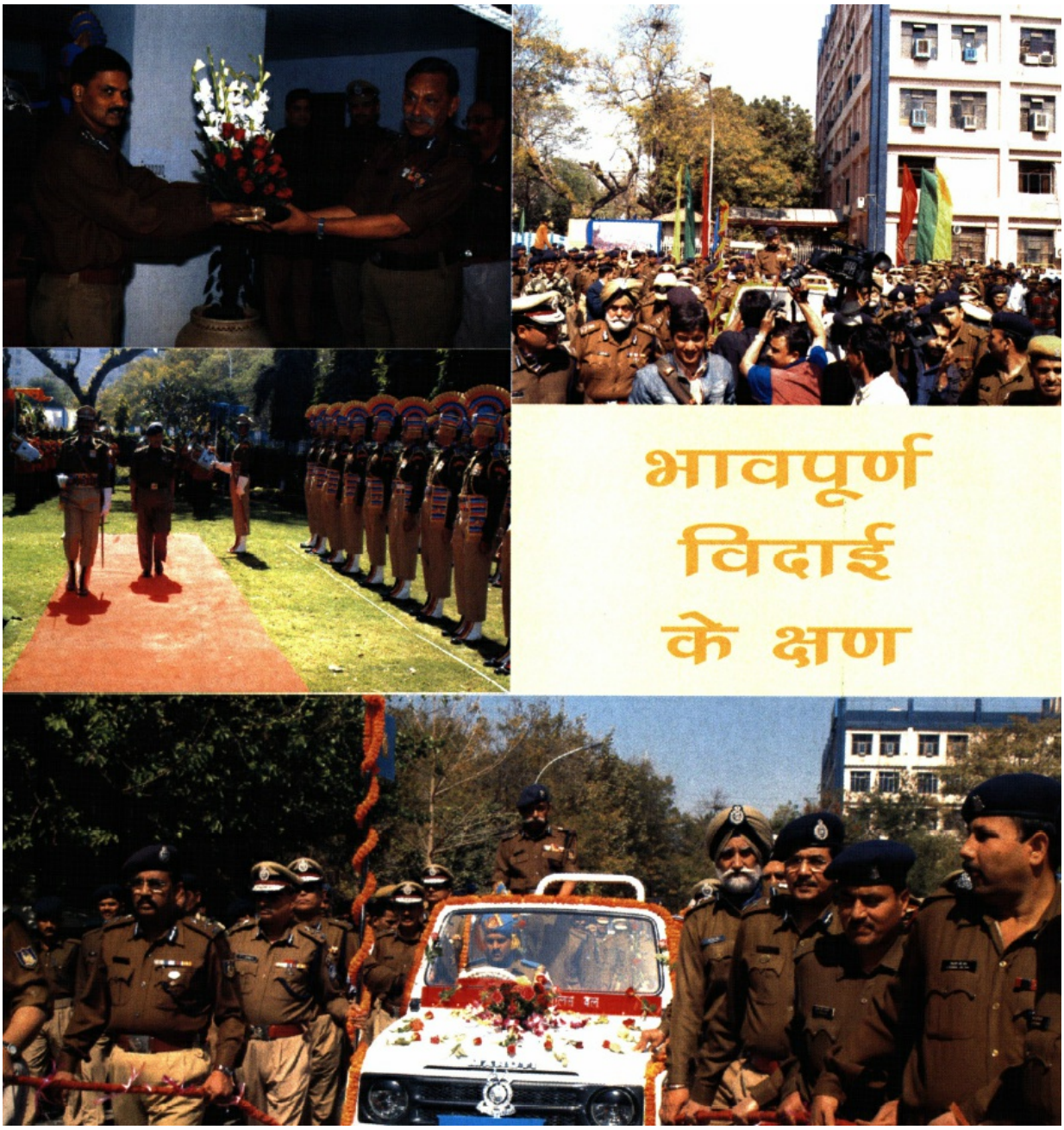
कार्यग्रहण के पश्चात् श्री गिल ने कहा कि सीआरपीएफ 203 बटालियनों के साथ देश का सबसे बड़ा अर्धसैनिक बल है और पूर्वोत्तर, जम्मू और कश्मीर और नक्सल प्रभावित जिलों में अलगाववादियों की विरूद्ध कार्रवाई में मुख्य भूमिका निभा रहा है। उन्होंने विश्वास जताया कि बल अपनी व्यवसायिक और लोकमित्र छवि का इतिहास बनाए रखेगा और अलगाववादियों और आतंकवादियों द्वारा उत्पन्न सभी चुनौतियों का सफलतापूर्वक मुकाबला करेगा।

आँखों देखी

महानिदेशक की सेवानिवृत्त

श्री वी.के. जोशी, भा.पु.से., 28 फरवरी 2009 को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक के पद से सेवानिवृत्त हुए। महानिदेशालय में उन्हें ससम्मान व भावपूर्ण विदाई दी गई। उन क्षणों की आँखों देखी रिपोर्ट।





नए महानिदेशक द्वारा कार्यभार ग्रहण


CENTRAL RESERVE POLICE FORCE
DIRECTOR GENERAL
NAME
FROM
TO
A S GILL

रिपोर्ट

पश्चिमी सेक्टर मुख्यालय नवी मुंबई ने जीती राजभाषा शील्ड



गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय पश्चिम व मध्य क्षेत्रों द्वारा दिनांक 28 फरवरी, 2009 को बड़ौदा में आयोजित संयुक्त राजभाषा सम्मेलन में इस कार्यालय को वर्ष 2007-08 के लिए भारत सरकार की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन एवं हिन्दी में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु प्रथम पुरस्कार के तौर पर 'राजभाषा शील्ड' व प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया है। कार्यालय की ओर से श्री अरूण कुमार, पुलिस उप महानिरीक्षक ने राजभाषा शील्ड तथा श्री नागराज द्विवेदी, निरीक्षक ने प्रमाण पत्र सम्मेलन के मुख्य अतिथि प्रो. रमेश के. गोयल, कुलपति, सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ोदरा के कर कमलों से ग्रहण किया। इस अवसर पर डॉ. प्रदीप कुमार, सचिव व संयुक्त सचिव, भारत सरकार भी उपस्थित थे। इस पुरस्कार से इस सेक्टर का मान बढ़ा है तथा भविष्य में और अधिक उत्साह से कार्य करने की प्रेरणा मिली है।

राजभाषा कार्यान्वयन के मामले में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल अपनी व्यस्तताओं और पारिचालनिक कार्य प्रतिबद्धताओं के बावजूद सदैव प्रयत्नशील रहा है एवं सराहनीय प्रदर्शन किया है। राजभाषा संबंधी संवैधानिक मूल भावना के अनुरूप इस कार्यालय द्वारा हिन्दी के प्रचार-प्रसार तथा उसके प्रयोग में गति लाने के लिए कई रोचक व अनूठे प्रयास किए गए हैं। जैसे, मनोरंजक तरीके से कर्मचारियों का भाषा

ज्ञान बढ़ाने के लिए पर्यायवाची सीढ़ी, विलोम सीढ़ी, ज्ञान तंबोला प्रतियोगिता, प्रश्नमंच, साप्ताहिक 'संवाद' कार्यक्रम आदि सृजित व आयोजित किए जाते हैं। भाषा का व्याकारणिक ज्ञान बढ़ाने के लिए इस कार्यालय द्वारा एक 'सुभाषिनी' नामक पुस्तिका का भी सृजन किया गया है। कार्यालय में सकारात्मक वातावरण के निर्माण के लिए विभाग प्रमुख श्री ई. राधाकृष्णा, भा.पु.से., पुलिस महानिरीक्षक, स्वयं प्रयत्नशील रहते हैं तथा प्रत्येक माह किसी न किसी इन कार्यक्रमों में स्वयं उपस्थित होकर अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रेरित व प्रोत्साहित करते हैं।

विविध समाचार

100 बटालियन आर.ए.एफ.में महिला बैरक का अनावरण



100 बटालियन द्रुत कार्य बल के 60 न. 1 महिला बैरक का आज श्री टी चन्द्रशेखरन के करकमलों द्वारा किया गया मौके पर बटालियन के कमाण्डेन्ट श्री आर जी भट व केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के कई अधिकारी भी उपस्थित थे।

आरएएफ बटालियन में 97 की संख्या का एक महिला दस्ता भी ड्यूटी के दौरान

अहम भूमिका निभाता है। महिलाओं को हर क्षेत्र में महारत हासिल है। विभिन्न हथियारों, गोला बारूद व अन्य इक्यूपमेन्ट से सुसज्जित अनुभवी महिला कार्मिकों को सभी सुविधाऐं बटालियन मुख्यालय पर उपलब्ध कराई जाती हैं।

अपने दौरे के दौरान श्री चन्द्रशेखरन ने बटालियन के कार्य का जायजा लिया व चलने वाले हर गतिविधि का रूचिपूर्वक निरीक्षण किया। उन्होने पदोन्नति हेतु चल रहे एसएससी क्रम संख्या 42 के कार्मिकों की ट्रेनिंग को भी चेक किया व भविष्य के लिये सुझाव दिया। उन्होंने आरएएफ के कार्मिकों को हमेशा सतर्क चौकन्ना होकर सूझ-बूझ से ड्यूटी करने पर बल दिया व हमेशा हर चुनौती का सामना करने को तत्पर रहने को कहा।

जल संरक्षण अभियान में केरिपुबल का योगदान

इठलाती लहरों और अपार जलसंरक्षण के रूप में पहचान बनाने वाली भोपाल शहर की शहर की शान बड़ी झील इस वर्ष अल्प वर्षा के कारण सूखी काया के रूप में परिवर्तित हो चुकी है। 71 वर्ग किमी क्षेत्र में फैली हुई भोपाल की लाइफलाइन लगभग तीन-चौथाई हिस्सा मिट्टी में तब्दील हो चुकी है। पानी के नाम पर झील में जो कुछ बचा है उससे भोपाल की आबादी का प्यास बुझाने का इंतजाम नही हो पा रहा है। पर्यावरण के गहराते संकट के मद्देनजर सरकार द्वारा जनसाधारण से बड़ी झील के अस्तित्व को बचाने के लिए सक्रिय सहयोग की अपेक्षा की गई है।



श्री पी के पाण्डे, पुलिस उप महानिरीक्षक भोपाल रेंज के नेतृत्व में पर्यावरण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को प्रतिबिंबित करते हुए ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, भोपाल, 195

बटालियन एवं 107 द्रुत कार्य बल द्वारा ताल संरक्षण एवं संवारने की महासंकल्प योजना में संयुक्त रूप से भागीदारी की गई एवं बल के अधिकारियों एवं जवानों द्वारा 8 फरवरी 2009 (रविवार) को झील को नवजीवन देने में योगदान दिया। इस दौरान केरिपुबल एवं द्रुत कार्य बल, के जवानों में पर्यावरण के प्रति जोश, जुनून और जज़्बे की अद्भुत मिसाल दिखाई दी।

सिविक एक्शन प्रोग्राम 46 बटालियन



46 वाहिनी केरिपुबल ने 7 फरवरी 2009 को चार कम्प्युटर, प्रिन्टर युक्त कम्प्युटर लैब, रैनावाड़ी (श्रीनगर) स्थित विश्व कन्या महाविधालय को सिविक एक्शन के तहत भेंट किया।

उक्त कम्प्युटर लैब का उद्घाटन कमाण्डेन्ट-46 वाहिनी द्वारा किया गया तथा उन्होंने आशा व्यक्त किया कि इससे बालिका शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा। इस अवसर पर महाविधालय के प्राचार्य ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल तथा विशेश तौर पर 46 वीं, वाहिनी के प्रति अपना आभार व्यक्त किया। उक्त अवसर पर पुलिस अधीक्षक(उत्तरी) भी उपस्थित थे।

संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति द्वारा ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम का निरीक्षण



संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति के 31 अक्तूबर 2008 के कार्यालय ज्ञापन के अनुसार संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति द्वारा 4 दिसंबर 2008 को तिरूवनतपुरम स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के साथ ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम का निरीक्षण किया गया तथा ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम द्वारा किये जा रहे हिन्दी कार्यों की सराहना की गई।

43 बटालियन ने आईईडी बरामद की



2 फरवरी, 2009 को डी/43 बटालियन की दो प्लाटूनों ने उपनिरीक्षक मो० नसीरूद्दीन की कमान में छत्तीसगढ़ के जिला नारायणपुर के थाना बेनुर के अंतर्गत चौरांग और बोतीपारा के जंगली क्षेत्र में स्थानीय पुलिस के साथ की गई पेट्रोलिंग/सर्च डयूटी के दौरान पाया कि सड़क की तरफ एक बिजली का तार निकला हुआ है। तुरन्त पूरे क्षेत्र को घेर लिया गया और श्वान दस्ते की मदद से जाँच करने पर पाया कि कोंडागांव-नारायणपुर सड़क मार्ग के बीच में आईईडी लगाया गया है। सिपाही बी.के. सेनापति और सिपाही एस.भोई को सड़क खोदने के लिए लगाया गया। खुदाई करने के उपरांत इसमें से लगभग 40 किलोग्राम की आईईडी, 6 डेटोनेटर, 150 मीटर बिजली की तार बरामद की गई।

सीआरपीएफ की केन्द्रीय एथलेटिक्स टीम चैंपियन

लखनऊ, उत्तर प्रदेश में 10 फरवरी से 14 फरवरी तक आयोजित 57वीं अखिल

भारतीय पुलिस एथलेटिक्स चैंपियनशिप में सीआरपीएफ की महिला सेन्ट्रल एथलेटिक्स टीम ने भाग लिया और प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता के समापन पर उत्तर प्रदेश के माननीय महामहिम राज्यपाल श्री राजेश्वर ने चैंपियनशिप की ट्रॉफी प्रदान की। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश पुलिस के प्रमुख श्री विक्रम सिंह भी उपस्थित थे।



मुफ्त नेत्र एवं मधुमेह चिकित्सा जाँच शिविर आयोजित



ग्रुप केन्द्र, पल्लीपुरम में 15 फरवरी, 2009 को चैतन्य नेत्र अस्पताल, त्रिवेन्द्रम एवं विश्व मधुमेह संगठन, त्रिवेन्द्रम के सहयोग से एक मुफ्त नेत्र एवं मधुमेह चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें ग्रुप केन्द्र में रह रहे लगभग 200 कार्मिकों एवं उनके परिवारों ने कैंप की सुविधा का लाभ उठाया।



मिड डे मील एवं पिकनिक का आयोजन



ग्रुप केन्द्र, पल्लीपुरम में 06 फरवरी, 2009 को परिवार कल्याण केन्द्र, कावा के तत्वाधान में ग्रुप केन्द्र परिसर में स्थित मोंटेसरी स्कूल में बच्चों के लिए मिड डे मील का आयोजन किया गया जिसमें केन्द्र की महिलाओं द्वारा बच्चों को खाना खिलाया गया।

14 फरवरी, 2009 को परिवार कल्याण केन्द्र, कावा के तत्वाधान में ग्रुप केन्द्र के 150 परिवारों के सदस्यों एवं बच्चों को प्रसिद्ध नैय्यर डैम और अन्य पर्यावरण स्थलों का दौरा करवाया गया और पिकनिक का आयोजन किया गया। जिसमें परिवार के सभी सदस्यों ने उत्साह से भाग लिया।

ग्रुप केन्द्र जालंधर को राजभाषा शील्ड से सम्मानित



राजभाषा के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट प्रयास करने के लिए ग्रुप केन्द्र जालंधर को वर्ष 2007-08 के लिए “ख” क्षेत्र के सभी केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों में से सर्वश्रेष्ठ चुना गया और प्रथम पुरस्कार/शील्ड प्रदान की गई। ग्रुप केन्द्र द्वारा यह शील्ड/पुरस्कार लगातार तीसरी बार जीता है।

सीआरपीएफ के कांस्टेबल की ईमानदारी



इम्फाल, मणीपुर में बी/143 बटालियन की एक कंपनी भारतीय स्टेट बैंक की मुख्य शाखा की सुरक्षा हेतु तैनात है। 11 फरवरी, 2009 को सुबह बैंक के प्रवेश द्वार पर संतरी डयूटी कर रहे बल संख्या 031433745 सिपाही/जीडी पूर्णचन्द्र खोरा ने एक लावारिस बैग पड़ा हुआ देखा। यह सुनिश्चित करने के बाद की बैग में विस्फोटक नहीं है, उसने इसकी सूचना कंपनी कमांडर को दी। जाँच करने पर बैग में 11,085 रूपये

नगद और 50,000 रूपये के गहने और एक पैन कार्ड पाए गए जिसे स्थानीय पुलिस को सौंप दिया गया। जिसे आगे इसकी स्वामी को सौंप दिया गया। कांस्टेबल के इस अनुकरणीय कृत्य की स्थानीय लोगों एवं अखबारों में इसकी प्रशंसा की गई।

ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम में नये एटीएम काउन्टर का उद्घाटन



18 फरवरी, 2009 को ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम में श्री टी शेखर द्वारा एटीएम काउन्टर का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर एसबीआई के स्थानीय मुख्यालय तिरूवनंतपुरम के उपशाखा प्रबन्धक भी उपस्थित थे। इस एटीएम से ग्रुप केन्द्र कार्मिकों को लाभ होगा।



ग्रुप केन्द्र सिन्दरी में कावा द्वारा परिवार कल्याण केन्द्र में बल कार्मिकों की महिला सदस्यों के लिए मोमबत्ती बनाने का व्यवसायिक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य कल्याण केन्द्र की महिला सदस्यों को न केवल कुछ नया सीखने के लिए प्रेरित करना है, अपितु उन्हें स्वावलम्बी बनाने की दिशा में एक छोटा सा प्रयास है।

कविता

एड्स

लाखों डाक्टर करोड़ दवाई सारे हो गये फेल।
एड्स दुनिया में आके करा रहा है खून-खराबी खेल।
अमीर-गरीब छोटा बड़ा सबका बराबर सम्मान।

HIV+ हो गया तो मृत्यु के साथ बदनाम।
सुख-दुख बीमार लगा रहता ये इन्सान।
नहीं कोई प्रोटेक्शन न कोई बुद्धि विचार।
शरीर में नहीं ताकत एड्स हो गया सवार।
पति-पत्नी एक दूसरे को रखना दृढ़ विश्वास।
एड्स से दूर रहो तो मिलेगा जिन्दगी भर श्वास।
मच्छर-मक्खी काटने से नहीं होता यह रोग।
केवल फैल रहा है खून-सिरिंज, गुदा और यौन सम्भोग।
सिफलिस, गनेरिया जैसा बहुत यौन रोग है।
एड्स की तरह भय रस खून में नहीं है।
खून टेस्ट करके जब खून लेता विन्डो पोजीशन।
भगवान उसको मरने के लिए देता फुल प्रमोशन।
सर्दी-खांसी, डायरिया जैसा छोटा-छोटा रोग।
दवाई में ठीक नहीं होता जितना करो भोग।
एड्स नहीं कर सकता खत्म, रख सकता थोड़ा दूर।
उचित कदम रखने पर देह रहेगा भरपूर।
सुबह व्यायाम पुष्ट भोजन दिल खुश आराम।
सुबह शाम टेबलेट खाओ ART का नाम।
एक बर्तन में खाना खाओ, एक प्याले में चाय।
एक बिस्तर में लेटने की डाक्टर देता राय।
माऊथ-किस, हैण्ड-शेक करने मिलने चेस्ट।
टायलेट, बाथरूम, खेल-कूद में नहीं लगता एड्स।
एक धार में काट ले बाल, नहीं बनाना दाढ़ी।
घूमते रहो विश्व में साथ में लेकर एक गाड़ी।
पूजा-पाठ करले साथ बात करके, खोल के हांस।
घृणा नहीं करना अपना बनाओ जाके पास।
शादी-ब्याह करने से पहले करा लो HIV जांच।
सेक्स करने अच्छा लगता जब नहीं रहेगा एड्स।
मामला नहीं चल सकता कितना भी करो केस।
एक दूसरे को नज़र छुपाके नही करना गलत धन्धा।
एड्स एक दिन खड़ा होगा लेके मौत का फन्दा।

जिन्दगी में जितना खाया पिया दिनो-दिन वजन होता कम।
घटती जाती उम्र कम होता फेफड़े का दम।
विश्व में चल रहा रिसर्च और है एड्स आरगनाईजेश्न।
एड्स खत्म हेतु नहीं निकल पाया एक इन्जेक्शन।
कैसे तुझे समझूं कौन प्राणी से आया।
दुश्मनी घात लगाके जान मेरा ले गया।
यमराज को बोलता हूं, नहीं जाऊंगा दुनिया छोड़के।
एड्स आकर धक्का मारके ले आता दिल तोड़के।
जो मैं गलती किया आप न करना यार।
दुनिया में आके एड्स छोड़के सबको मेरा प्यार।
हे अल्लाह, हे भगवान रक्षा करो यह इन्सान।
एड्स दुनिया से मिटाके बचा दो सबका प्राण।

सिपाही प्रदीप कुमार दास, 14 बटालियन



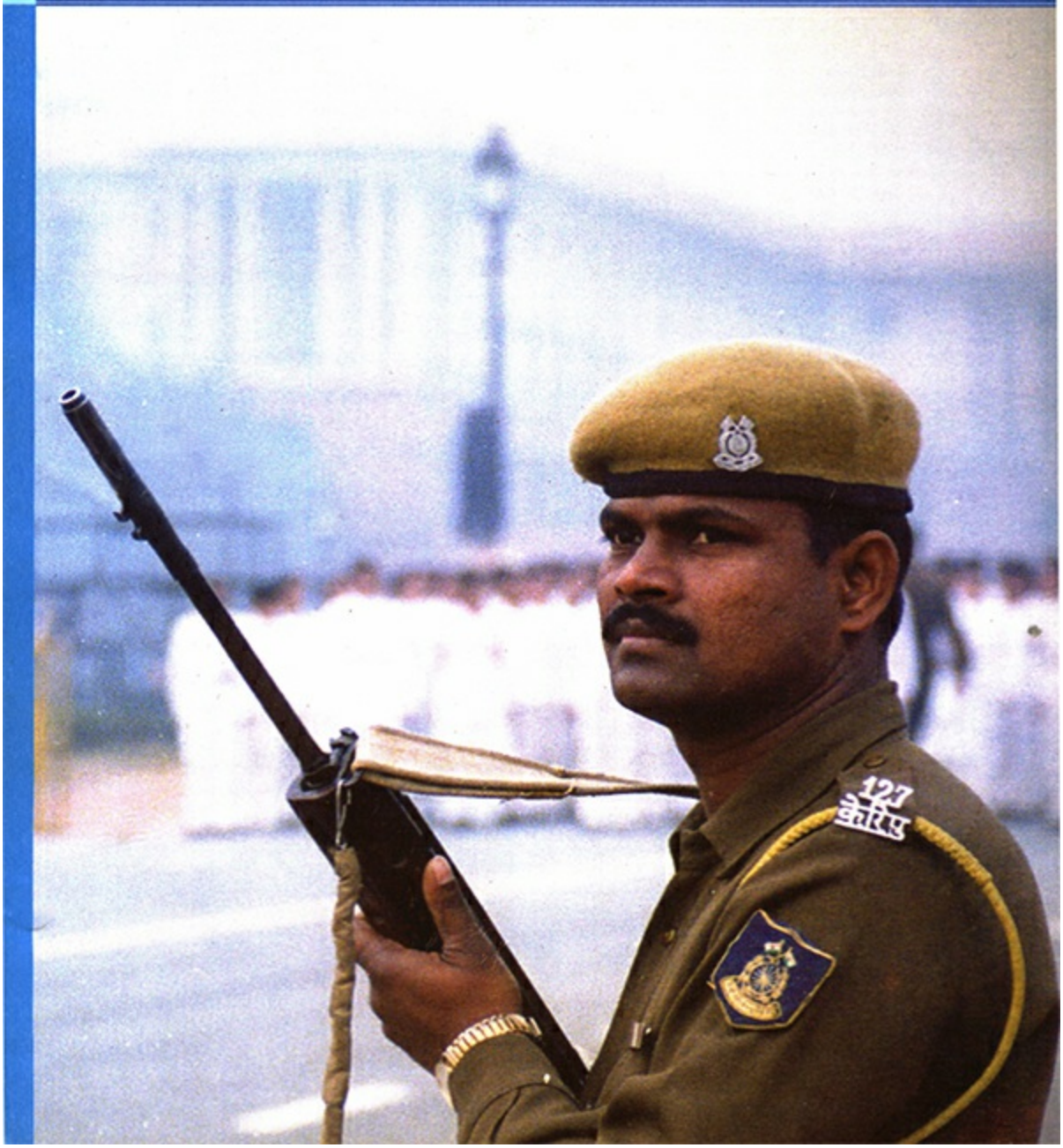
सर्वश्रेष्ठ मार्चिंग दस्ते की ट्रॉफी के साथ बल महानिदेशक श्री वी.के. जोशी, महानिरीक्षक श्री महबूब आलम, श्री एम.एस. रावत, उप महानिरीक्षक श्री पी.पी. सिंह एवं परेड कमांडर श्री संजीव चौधरी, सहा. कमांडेंट



संसदीय राजभाषा समिती की पहली उप समिती के सदस्यों के समक्ष निरीक्षण हेतु रिपोर्ट प्रस्तुत करते सीआरपीएफ अधिकारी



सी.आर.पी.एफ. समाचार





होली के अवसर पर महानिदेशक बल के जवानों के साथ पुष्प होली खेलते हुए



ग्रुप केन्द्र सिलीगुड़ी में राजपत्रित अधिकारी निवास के उद्घाटन अवसर पर अधिकारीगण

सीआरपीएफ सामाचार

Vol.21 No.8
मार्च 2009

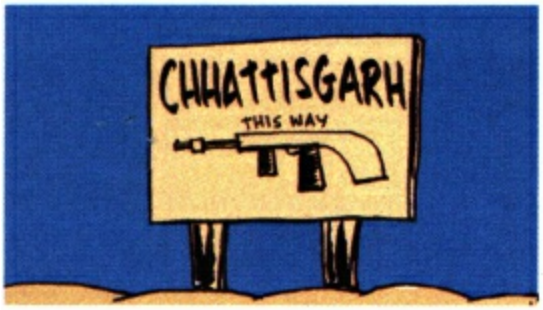
मुख्य संपादक: अजय चतुर्वेदी, **संपादक:** पंकज गुप्ता, **चित्र:** जनसंपर्क फोटो सेल, महानिदेशालय और सीआरपीएफ यूनिट्स, **संपादकीय कार्यालय:** महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, ब्लॉक-1, केन्द्रीय कार्यालय परिसर, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003, **दूरभाष:** 24360649, **महानिदेशक सीआरपीएफ की ओर से मुद्रित और प्रकाशित:** विबा प्रेस प्रा. लि., सी-66/3, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली-110020, दूरभाष: 41611300-31, 9810049515

संपादकीय सलाहकार समिति

अध्यक्ष: विजय रमन, अपर महानिदेशक (मुख्यालय), **सदस्य:** एस.के. सिंह, महानिरीक्षक (कार्मिक), डी.सी.डे., महानिरीक्षक (संभरण), एस.आर.ओझा, उपमहानिरीक्षक (प्रशासन), रमेश चन्द्र, उपमहानिरीक्षक (कार्मिक), एल.आर.सिधरा, उपमहानिरीक्षक (परिचालन), पी.पी. सिंह, उपमहानिरीक्षक (प्रशिक्षण), जी.डी. पेवाल, उपमहानिरीक्षक (संभरण), रोज़ी अग्रवाल, उप वित्तीय सलाहकार

सीआरपीएफ समाचार मासिक पत्रिका है जिसमें प्रकाशित किये जाने वाले विचार लेखकों के व्यक्तिगत विचार हैं। विभाग की नीति से इसका कोई संबंध नहीं है।

मुख्य संपादक



दहकते जंगलों की कहानी....

छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद की समीक्षा



तनाव एक समस्या



बहुत कन्फ्यूजन है



हृदय रोग

क्या है
क्यों होता है
और कैसे बचें

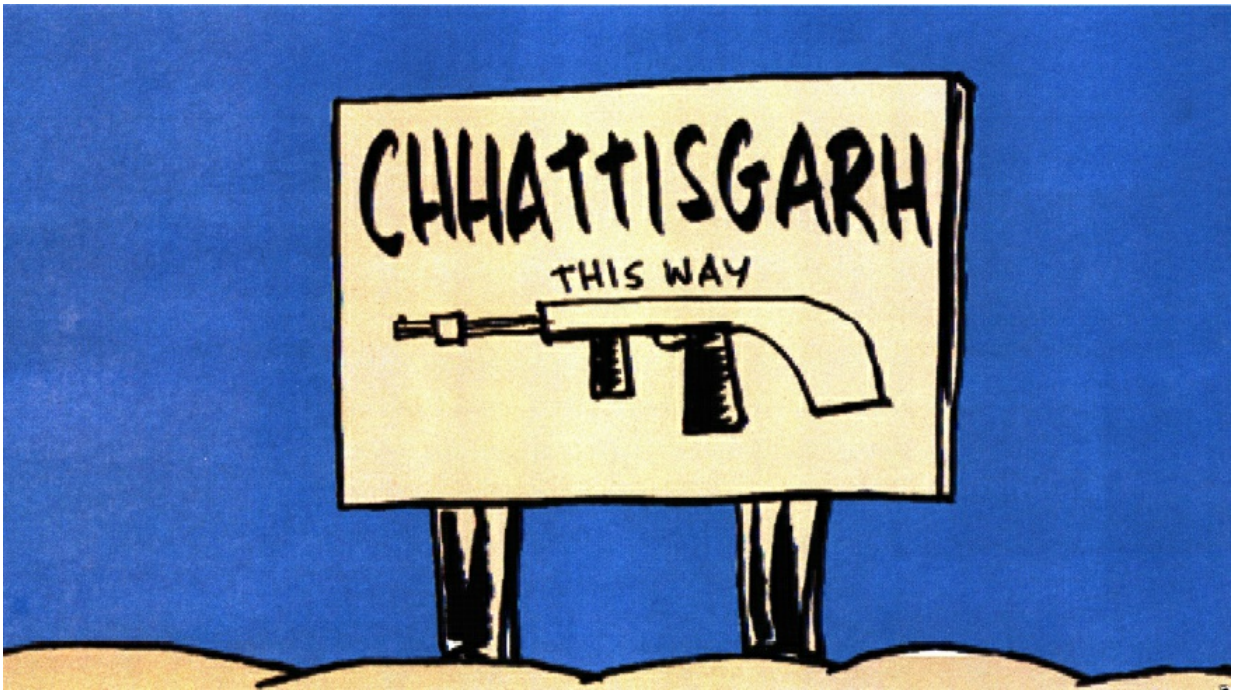
विषय सूची

विषय सूची

दहकते जंगलों की कहानी.... छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद की समीक्षा
हमें कलाम जैसे वैज्ञानिक पैदा करने होंगे
बात कंधमाल की
ड्यूटी का बदलता परिदृश्य
साम्प्रदायिक सौहार्द की ऐतिहासिक नगरी - अजमेर
तनाव एक समस्या
चरित्र निर्माण एवं उसका महत्व
वर्तमान की खिड़की
मुझे याद रखने के लिए
पेन्सिल
बहुत कन्फ्यूजन है
हृदय रोग
रिपोर्ट
ग्रुप केन्द्र इम्फाल की ब्रज जैसी रंगीली होली
महानिदेशालय में होली
धूम्रपान रहित 182 वीं बटालियन
पारस्परिक प्रेम और सौहार्द का परिचायक होली

102 बटालियन का स्थापना दिवस
विविध समाचार
कविता

लेख



दहकते जंगलों की कहानी.... छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद की समीक्षा

राकेश कुमार सिंह,
द्वितीय कमान अधिकारी, 81 बटालियन

धंसो इसमें डर नहीं है
मौत का यह घर नहीं है
उतर कर बहते अनेकों
कल कथा कहते अनेकों
नदी, निर्झर और नाले
इन वनों ने गोद में पाले
लाख पंछी सौ हिरण दल
चांद के कितने किरण दल
लताओं के बने जंगल

सतपुड़ा के घने जंगल...

उपरोक्त पंक्तियां पंडित भवानी प्रसाद मिश्र ने सतपुड़ा के जंगल के बारे में कोई आधी सदी पहले कही थी। तब से लेकर अब तक जंगलो का सौंदर्य और इनका परिदृश्य ही नहीं बदला है अपितु उनके भीतर की सुगबुगाहट और उनके अंतर में पनपती गतिविधियों ने राष्ट्रीय परिदृश्य को ही बदलना आरम्भ करना शुरू कर दिया है। कभी "धान के कटोरे" के रूप में विख्यात रहा छत्तीसगढ़ "बारूद के कटोरे" में बदलता चला गया।

छत्तीसगढ़ नक्सलियों की रणनीति का एक अहम हिस्सा है। इस राज्य के दक्षिणी भाग के बस्तर संभाग में नक्सलियों द्वारा अनेक हिंसात्मक कार्यवाईयों को अंजाम देकर सुरक्षा बलों को काफी नुकसान पहुंचाया है। नक्सलियों के सैन्यीकरण एवं युद्ध रणनीति ने सुरक्षा बलों के पराक्रम को चुनौती दी जिसे एक समेकित योजनाबद्ध तरीके से नाकामयाब करने की जरूरत है। नक्सलियों द्वारा की गई वारदातों के संख्या में वर्ष-2008 में 2007 की तुलना में कमी हुई हैं, लेकिन इन वारदातों में गुणात्मक वृद्धि हुई जिसके कारण सुरक्षा बलों एवं नागरिकों के हताहतों की संख्या बढ़ी है। अगर राष्ट्रीय स्तर पर नक्सली समस्या की विवेचना करे तो एक सितम्बर, 2008 तक 993 वारदातें हुई, जिसमें 175 सुरक्षाकर्मी शहीद हुए एवं 310 अन्य नागरिकों की हत्या कर दी गई। कुल नक्सली वारदातों का लगभग 68 प्रतिशत सिर्फ छत्तीसगढ़ एवं झारखण्ड में होती है तथा इनमें कुल का लगभग 59 प्रतिशत मृत्यु इन घटनाओं में होती है। इनमें छत्तीसगढ़ में 363 वारदातें हुई जिसमे 49 सुरक्षाकर्मी शहीद हुए एवं 95 अन्य नागरिकों की हत्या हुई। यह आवश्यक है इन प्रभावित राज्यों में नक्सलियों द्वारा अपनाई जा रही रणनीति की गहन समीक्षा की जाए तथा उपयुक्त Counter Strategy हेतु बल के कार्मिकों को संवेदनशील बनाया जाए।

राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में नक्सलवाद लगातार बढ़ रहा है। अपुष्ट अनुमानों के अनुसार इनका विस्तार एवं प्रभाव देश के 22 राज्यों के 220 जिलों में हो गया है। इनमें से सिर्फ 62 जिलों को ही बुरी तरह प्रभावित माना गया है। मध्य 1980 में सिर्फ सात राज्यों के 31 जिलों में प्रभाव एवं 2003 में नौ राज्यों के 55 जिलों में प्रभाव के बाद 2008 में 220 जिलों में प्रभाव नक्सलियों की सफल रणनीति का द्योतक है। नक्सलियों की विस्तार योजना की समीक्षा करना इसलिए भी आवश्यक है कि ये अपने विस्तार एवं प्रभाव के लिए उपयुक्त राजनैतिक माहौल बनाते हैं। लोगों की समस्याओं से जुड़ने की कोशिश करते हैं तथा उसके लिए आंदोलन करते हैं। तदोपरांत योग्य कर्मी को सक्रिय संगठनात्मक कार्य में लगाते हैं एवं योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ते हुए हिंसात्मक मंसूबों को अंजाम देते हैं जिससे एक भय एवं दहशत का वातावरण पैदा होता है और अनेक लोगों को जबरन नक्सलियों द्वारा अपने आंदोलन में शामिल कर लिया जाता है। राजनैतिक एवं संगठनात्मक पहलुओं को मजबूत कर सुरक्षा बलों के विरूद्ध छापामार युद्ध शुरू करते हैं।

छापामार युद्ध की रणनीति में लोगों को समर्थन या जबरन समर्थन हासिल करने

के अलावा अनेक भौगोलिक, सामाजिक पारिस्थितियों के अलावा स्थानीय राजनैतिक एवं भू-क्षेत्र की भी अहम भूमिका होती है। बस्तर क्षेत्र में नक्सलियों द्वारा इन परिस्थितियों का अपने तथाकथित क्रांतिकारी संघर्ष के लिए गुणात्मक उपयोग किया है। नक्सलियों के रेड कॉरिडोर में छत्तीसगढ़ की खासकर अबुझमाड क्षेत्र का सामरिक महत्व है। अतः इस क्षेत्र में सुरक्षा बलों के साथ होने वाली किसी भी मुठभेड़ में बल की हानि नक्सलियों के इरादों को मजबूत करेगी। अतएव छत्तीसगढ़ मे सुरक्षा बलों द्वारा चलाये जा रहे परिचालनों में गुणात्मक बदलाव की आवश्यकता है जो नक्सलवादियों को शारीरिक रूप से खत्म करें तथा सामरिक तौर पर उनके सैन्य शक्ति का विनाश करे। साथ ही साथ विकास के कार्यों में समन्वय स्थापित कर क्षेत्र के आर्थिक एवं समाजिक उत्थान के लिए सकारात्मक भूमिका निभाये। चूंकि सुरक्षा बलों के रूप में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की सबसे ज्यादा पदस्थापना है एवं नक्सली विरोधी अभियानों की नेतृत्व एवं कार्यनीतियों की महती जिम्मेवारी भी है अतः बल को अपने व्यवसायिक दक्षता को निखारने का सुंदर अवसर है।

वर्ष	2004	2005	2006	2007	2008 (31.08.2008) तक
घटनाओं की संख्या	352	385	715	582	363
सुरक्षाकर्मियों की हत्या	08	47	84	198	49
अन्य नागरिकों की हत्या	75	121	304	171	95
नक्सली मारे गये	15	32	74	66	45

छत्तीसगढ़ राज्य में अब तक के नक्सलियों द्वारा की गई घटनाओं का वर्षवार ब्यौरा निम्न है:—

राज्य में हो रहे घटनाओं की विवेचना करने से नक्सलियों की रणनीतियों का स्पष्ट पता चलता है। ये लोग शासन के हरेक पहलुओं, जिनसे इनके कार्यक्षेत्र मे प्रभाव पड़ता है, का अध्ययन करते है एवं उसके अनरूप ही स्थानीय लोगों को भड़काते हैं। ये सुरक्षा बलों के कार्यशैली एवं कार्यनीति की समग्रता से विवेचना कर अपनी युद्ध नीति को कार्यान्वित करते है। फलतः जब I.E.D. से होते हुए नुकसानों को देखकर सुरक्षा बलों ने जंगल एवं पहाड़ियों में पैदल चलना शुरू किया तो पुनः नक्सलियों ने घात लगाकर स्वचालित हथियारों के इस्तेमाल से नुकसान पहुंचाने की रणनीति बनायी। I.E.D. के प्रभावी इस्तेमाल द्वारा नक्सलियों ने पिछले कुछ महीनों से सुरक्षा बलों के परिचालन को धीमा कर दिया है क्योंकि कहीं भी मूवमेंट करने के लिए गाड़ियों का इस्तेमाल न के बराबर किया जाता है। इसके लिए बल के पास पर्याप्त संख्या में एंटी लैण्ड माइन गाड़ियों की जरूरत पड़ेगी। इन क्षेत्रों में विस्फोटकों की बहुतायात ने यह आवश्यक कर दिया है कि बल के कार्मिक I.E.D. के खतरों का

सामना करने के लिए पूर्ण रूप से प्रशिक्षित रहे।

हाल ही में छत्तीसगढ़ में नक्सलियों से जब्त साहित्यों की विवेचना से यह निष्कर्ष निकलता है कि वे लोग सुरक्षा बलों द्वारा समन्वित संयुक्त परिचालनों एवं संगठित सूचनातंत्र द्वारा सूचनाओं के आदान-प्रदान से खासे चिंतित है एवं अपने कैडर को सावधानियां बरतने को कह रहे है। सुरक्षा बलों द्वारा विशेष प्रशिक्षित दस्ते द्वारा अभियान, टैक्टीकल संचालन एवं सीमावर्ती क्षेत्रों में समन्वय से नक्सलियों की युद्ध नीति प्रभावित हो रही है। वे इसका समाधान ढूंढने का प्रयास कर रहे है। हालांकि उपर्युक्त वर्णित कदमों से सुरक्षा बलों को काफी फायदा होता है लेकिन सीमावर्ती क्षेत्रों में समन्वय एवं विशेष प्रशिक्षण की कमी ही नक्सलियों के विरूद्ध अभियान की सबसे बड़ी चुनौती है।

अगर नक्सलियों से चुनौती की बात करे तो आसूचना का अभाव ही सबसे बड़ी चुनौती है। नक्सलियों ने गुरिल्ला युद्ध पद्धति अपनायी है तथा ऐसे भू-क्षेत्र को चुना जहां पर बिना एक्सपोज हुए आसूचना एकत्र करना बहुत ही कठिन है। जंगलों के बीच गांव के पास घात लगाना एवं पहाड़ों पर पनाह लेने के कारण सुरक्षा बलों को लगातार छापा मारते रहने पर भी सफलता नहीं मिलती फिर नक्सलियों द्वारा ग्रामीणों को डरा-धमकाकर बड़े क्षेत्रों में प्रभाव होने के कारण सुरक्षा बलों के जिम्मेवारी का इलाका बहुत बड़ा होता है जिससे परिचालनिक प्रभाव में कमी होती है। नक्सली इसी का फायदा उठाते हैं। ऐसी परिस्थितियों में सटीक सूचनाओं के आधार पर नक्सलियों के स्थिति एवं छापामारी के बारे में जानकारी इकट्ठा करना नितान्त आवश्यक है। इसके लिये उपयुक्त रणनीति सिर्फ अपने ही सूचनातंत्र को मजबूत करने से नही होगा बल्कि नक्सलियों के सूचनातंत्र को तोड़ने की भी आवश्यकता है। नक्सली संघम सदस्यों, ग्रामीणों एवं अपने दस्तों के सदस्यों द्वारा सुरक्षा बलों के बारे में जानकारी इकट्ठा कर लेता है। हालांकि यह तंत्र असंगठित है लेकिन उनके अनुसार स्वतः स्फूर्तता से भरे पड़े हैं। परन्तु जन अदालतों द्वारा जिस प्रकार का भय का माहौल बनाया गया है इसके कारण यह सूचनातंत्र असंगठित होने के बावजूद कमजोर नहीं है। नक्सलियों द्वारा बल के विरूद्ध अभियान करने से पहले जगह का रैकी किया जाता है एवं नक्शा एवं रिपोर्ट तैयार करता है। इसके उपरांत बल के गतिविधि, संख्या, हथियार इत्यादि के बारे में अपने सक्रिय कैडरों द्वारा पता लगाते है। सुरक्षा बल के आसूचना तंत्र को ग्रामीणों एवं अपने गुप्तचरों के जाल से इस तरह के सूचनाओं को दुश्मनों के पास पहुंचने से रोकना होगा। आसूचना तंत्र को विकसित एवं मजबूत करना नक्सलियों के विरूद्ध अभियानों की सबसे प्राथमिक आवश्यकता है। इसके लिए स्थानीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियां राज्य पुलिस के आसूचना तंत्र को फौरी तौर पर संगठित कर इसको प्रभावी बनाने की पहल आवश्यक है।

आसूचना सटीक परिचालनिक रणनीति के कार्यान्वन में मदद पहुंचाती है। इसके बाद आवश्यकता होती है प्रशिक्षित रणबांकुरों की जो नक्सलियों के सैन्य योजनाओं

को विफल कर दे। नक्सालेयों द्वारा जंगल में छापामार युद्ध से लड़ने के लिए विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है जो सामान्य तौर पर राज्य पुलिस के कर्मियों को नहीं दी जाती है तथा प्रशिक्षित अर्धसैनिक बलों के लिए नक्सली से युद्ध की क्षमता नाकाफी सिद्ध रही है। अतः पुलिस एवं अर्धसैनिक कर्मियों को प्रशिक्षित करने की विशेष आवश्यकता है। नक्सलियों द्वारा चलायमान युद्ध कौशल में अपने को परिवर्तित करने का निश्चय उनके बढ़ते हौसले एवं विश्वास को दर्शाता है। चलायमान या छापामारी युद्ध को विफल करने के संगठित एवं प्रशिक्षित पुलिसकर्मियों द्वारा ही किया जा सकता हैं। हाल के दिनों में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के "कोबरा बल" के विशेष दस्ता द्वारा की कार्रवाईयों में सफलता इस बात का परिचायक है। नक्सल विरोधी अभियान हेतु कार्मिकों में प्रशिक्षण हेतु केन्द्रीय सरकार द्वारा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कमाण्ड में नये प्रशिक्षण स्कूल खोलना एक अच्छा कदम है।

जनता एवं जनमिलिशिया की सक्रिय भागीदारी के बगैर नक्सलियों द्वारा अपना आंदोलन नहीं चलाया जा सकता हैं। इसके लिए वे सरकार के खिलाफ जनता में दुष्प्रचार कर आक्रोश पैदा करते है। वे जनता के पिछले वर्ग के लोगों को पूरा महत्व दे कर उनके सशक्तिकरण की बात करते है। जनमिलिशिया को संगठित करते है और प्रशिक्षण कैम्प चलाते है। तथाकथित तौर पर वे इन मासूम लोगों को सरकारी दमनकारी नीतियों से बचाने की बात करते हैं। नक्सली जनमिलिशिया द्वारा सुरक्षा बलों के विरूद्ध अभियानों में आसूचना एकत्रित करवाने, अभियान में शामिल होने के अलावा बल को हैरान-परेशान करने वाली अनेक गतिविधियों को अंजाम दिलवाते हैं। गौरतलब यह है कि इन दुष्प्रचारों से ये लोगों को फुसला लेने में सफल होते हैं या जन अदालतों द्वारा लोगों को प्रताड़ित कर भयभीत करते हैं तथा उन्हें अपने अभियान में शामिल होने के लिए विवश करते हैं। इन दुष्प्रचारों के विरूद्ध सरकारी तंत्र एवं प्रचार तंत्र को सक्रिय होने की आवश्यकता है। नक्सलियों के असली चेहरों को बेनकाब करना होगा तथा लोगों के बीच यह जागरूकता पैदा करनी होगी कि इन लोगों का मकसद अपनी राजनैतिक आकांक्षायें पूरी करना है न कि किसी के राजनैतिक और सामाजिक उत्थान के लिए कोई काम करना। लोगो को बताना होगा कि इनके प्रभाव वाले इलाकों में विकास का काम इन्होंने रोक रखा है क्योंकि ये काम करने वालों से चन्दा वसूलते हैं और नाहक ही परेशान करते हैं तथा इन क्षेत्रों में सरकारी कर्मचारी, पुलिसकर्मियों इत्यादि को उनके जनता के लिए किए गए कार्यो में बाधा पहुंचाने के उद्देश्य से हत्या कर देते है। नक्सलियों द्वारा बार-बार बिजली व्यवस्था को बाधित करना, बंद का आह्वान करना, रेल को रोकना एवं मोबाईल टावर को उड़ाना इत्यादि किस प्रकार वहां की जनता को लाभ पहुचायेगी नक्सली इस तरह के जन विरोधी कार्य अपने स्वार्थ के लिये करते है तथा दोष सरकार के ऊपर मढ़ देते हैं। सरकार एवं सुरक्षा बलों को जनता को जागरूक बनाकर नक्सल विरोधी अभियान में शामिल करना एक चुनौती पूर्ण कार्य तो है लेकिन सफलता के लिए बहुत ही आवश्यक है।

नक्सलियों की युद्धनीति मे विस्फोटकों का खूब इस्तेमाल होता है। विस्फोटको की सही सुरक्षा एवं इसे गलत हाथों में जाने से रोकने हेतु प्रभावी कदम उठाना

आतेआवश्यक है। छत्तीसगढ़ में नक्सालेयों ने माइन प्रूफ गाड़ेयों को भी विस्फोटकों से उड़ा सुरक्षाबल को नुकसान पहुंचाया है। उनसे जब्त साहित्यों से यह पता चलता है कि सही तकनीक अपनाते हुए माइन प्रूफ गाड़ियों को उड़ाकर वे सुरक्षा बलों द्वारा उनके क्षेत्र में निडर होकर प्रवेश करते जवानों को रोकना चाहते हैं। उनका विचार है कि ऐसे गाड़ी में अक्सर ऑफिसर चलते है। अतः ऐसे काफिला पर हमला करने से अगर अधिकारी सुरक्षित रहते एवं जवान उनके निशाना बने तो जवानों और अधिकारियों के बीच एक अंतर विरोध पैदा होगा। हालांकि उनके ऐसे किसी भी सोच का बल के जवानों एवं अधिकारियों के बीच के संबंधों पर प्रभाव नहीं डाल सकता लेकिन माइन प्रूफ गाड़ियों को असुरक्षा के घेरे में ले लेने से बल की मारक क्षमता एवं संचलन में अवश्य कठिनाइयां होगी। अत: इसके मूल में विस्फोटकों के गलत हाथों में जाने से रोकने का सफल प्रयास अति आवश्यक है।

नक्सलियों ने लैंड प्रूफ गाड़ियों के अलावा 2008 के उत्तरार्ध मे ही 41वीं वाहिनी एवं 43वीं वाहिनी की गाड़ी को विस्फोट से उड़ाकर अपनी नृशंसता एवं हिंसक रणनीति को पुनः दोहराया है। गाड़ियों को विस्फोट करने के अलावा प्रेशर बम एवं अम्बुश लगाने में भी ये विस्फोटकों का भरपूर इस्तेमाल कर रहे है। अतः बम निरोधक दस्तों का वाहिनी के साथ संवेदनशील इलाकों में परिचालन के लिए होना जरूरी है। बमों को पहचानने में Sniffer Dogs की तैनाती एक कारगर नीति साबित हो सकती है।

सीमावर्ती क्षेत्रों में राज्यों की अपने-अपने क्षेत्रों में ही जिम्मेवारी की प्राथमिकता के कारण नक्सली अपनी गतिविधियों को एक राज्य में योजना बनाकर दूसरे राज्य में वारदात करते हैं तथा कहीं अन्य जगह पनाह ले लेते हैं। खासकर झारखण्ड से सटे छत्तीसगढ़ के सरगुजा क्षेत्र में नक्सली समस्या का मूल कारण इसका सीमावर्ती क्षेत्र होना है। अन्यथा सरक्षाबलों की प्रभावी कार्रवाई से उनका उन्मूलन संभव है। इस क्षेत्र के स्थानीय लोगों का नक्सली का समर्थन प्राप्त नहीं है अतः केन्द्रीयकृत संयुक्त टास्क फोर्स या नियमित परिचालनिक समन्वय की नीति नक्सली विरोधी अभियानों के लिए सफल साबित होगी। हाल के दिनों में चार सितम्बर 2008 को चुनचुना-पुंदाग मे सरगुजा क्षेत्र में पहली बड़ी घटना को अंजाम देते हुए नक्सलियों ने केरिपुबल की टुकड़ी पर हमला किया जिसमें तीन कार्मिक शहीद हो गये एवं पांच घायल हुए। कुछ दिनों बाद ही पुनः राज्य पुलिस के महानिरीक्षक पर घात लगाकर हमला किया तथा उन्हें घायल कर दिया।

नक्सलियों द्वारा लगातार वारदात करने एवं सुरक्षा बलों के लोगों के हताहत होने के कारण छत्तीसगढ़ के दंण्डकारण्य में नक्सली समझते हैं कि उनका एकछत्र राज है। 29 अगस्त से 22 अक्टूबर तक सिर्फ केरिपुबल के खिलाफ ही चार बड़ी घटनाओं को अंजाम दिया जिसमें लगभग 25 कार्मिक शहीद हो गये। इन घटनाओं से निःसंदेह नक्सलियों के एक 'अपराजेय' की छवि बनती है। लेकिन अगर समुचित बलों की उपस्थिति रहे एवं प्रभावी परिचालनों का संचालन किया जाए तो स्थिति कुछ अलग ही

रहती है। इसी नवम्बर में तमाम आशंकाओं के बावजूद राज्य विधानसभा के चुनाव में किसी प्रकार की कोई बड़ी घटना नहीं हुई। बाद मे प्राप्त आसूचनाओं से भी स्पष्ट होता है कि नक्सलियों द्वारा हर जगह तमाम तैयारियों एवं कोशिशों के बावजूद सुरक्षा बलों की तैनाती ने कुछ नहीं होने दिया।

प्रभावी परिचालन एवं तैनाती से सुरक्षाबल बहुत हद तक नक्सली हिंसा पर काबू पा सकते है। हालांकि नक्सलवाद के खात्मे के लिए क्षेत्र का समग्र विकास, भू-सुधार नीति एवं राजनितिक निर्णयों की आवश्यकता है। लेकिन अगर हम सुरक्षाबलों की भूमिका की बात करें तो उनके लिये एक प्रभावी और प्रेरणादायक नेतृत्व एवं नीति की आवश्यकता हैं। प्रायः नेतृत्व अक्रामक परिचालनों से बचना चाहता है एवं नई परिचालनिक पहल की कमी है। कर्मियों द्वारा लगातार एक परिचालनिक क्षेत्र से दूसरे परिचालनिक क्षेत्रों में पदस्थापना होते रहने से जोश की कमी है। इस क्षेत्र मे तैनाती पर कोई विशेष प्रोत्साहन भी नहीं दिया जा रहा है न ही कार्मिकों को छत्तीसगढ़ पदस्थापना के बाद किसी प्रकार का लाभ उत्तरोत्तर पदस्थापना इत्यादि में दिया जा रहा है। जवानों एवं अधिकारियों के मनोबल को ऊँचा रखने के लिए सुरक्षाबलों के कार्मिक प्रबंधकों की भी महती भूमिका है जिसे संगठन को जल्द ही आत्मसात करने की जरूरत है। नक्सल विरोधी अभियान के लिए यह प्रेरणादायक सिद्ध होगी और प्रेरणा नई साहस का संचार करेगी।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि नक्सलियों द्वारा घृणित हिंसा के तांडव के कारण “धान का कटोरा” कहे जाने वाले छत्तीसगढ़ आज “बारूद का कटोरा” कहा जाने लगा है, जो बस्तर “दशहरा” के उत्सव को मनाने के लिए प्रसिद्ध था आज दहशत में है, बस्तर में कला, जंगल एवं आदिवासियों की संस्कृति के सौंदर्य से ज्यादा “लाल सलाम” के राजनैतिक दुष्प्रचार एवं जनविरोधी कार्यों के लिए चर्चा में है। लेकिन यहां के स्थानीय लोगों में नैतिक साहस एवं संकल्प है कि वे नक्सलियों का उन्मूलन कर सकते है। सलवा जुडूम आंदोलन उनका ऐसा ही एक प्रयास है। इस समय सुरक्षाबलों द्वारा प्रभावी परिचालन काफी कारगर सिद्ध हो सकता है। केरिपुबल की पदस्थापना के बाद काफी मार्गों को खोला गया है तथा आर्थिक विकास की गतिविधियों के लिए सुरक्षा प्रदान कर एक नये आयाम की तरफ इस क्षेत्र की दिशा को मोड़ दिया है। सुरक्षा हेतु भी समग्र नीतियों की आवश्यकता है। जैसे राज्य सरकार में आसूचना तंत्र का विकास एवं सुरक्षा बलों के साथ समन्वय, विस्फोटकों पर नियंत्रण, नक्सली दुष्प्रचार के खिलाफ जनता को जागरूक करना इत्यादि शामिल है। यह क्षेत्र अभी भी असीम संभावनाओं से भरा-पड़ा है एवं लोगों में सफलताओं को छूने की इच्छा है। सुरक्षा बल भी इस क्षेत्र की कानून व्यवस्था को चुनौती मान नक्सलियों की हिंसा पर काबू पाने को तैयार है। समग्र विकास, समग्र सुरक्षा एवं जागरूक जनता छत्तीसगढ़ को पुनः खोयी हुई शांति, सम्पूर्ण सौंदर्य एवं सम्पन्नता के साथ लौटा सकती है।

परिचालनिक उपलब्धियां

मार्च माह के दौरान कुल 18 मुठभेड़ों में केन्द्रिय रिजर्व पुलिस बल ने 8 आतंकवादियों को मार गिराया, संदिग्धों सहित 161 को गिरफ्तार किया, 21 आतंकवादियों ने आत्मसमर्पण किया। इन घटनाओं में 66 हथियार, 386 गोली बारूद, 72 ग्रेनेड बम 120 किलो ग्राम विस्फोटक बरामद किये।

इसके अतिरिक्त 530 डेटोनेटर, 42.700 किलोग्राम गांजा और 1.8 किलोग्राम चरस भी बरामद किये।



“हमें कलाम जैसे वैज्ञानिक पैदा करने

होगें।”

बी एन सिंह
कमाण्डेन्ट, 191 बटालियन

26 नवंबर 2008 को रात्रि के लगभग 09.30 बजे आतंकियों ने ताज होटल, ओबराय होटल, नरीमन, मैट्रोस्टेशन, अस्पताल तथा कई स्थानों पर गोलियां तथा ग्रेनेडों से हमला किया। इस घटना में अधिकारी मिलाकर 183 लोग आतंकियों द्वारा मारे गये और लगभग 300 नागरिक घायल हुए।

यह तीन दिन मुम्बई वासियों के लिए वास्तविकता के दिन रहे, तीन दिन की घटना का पूर्ण विवरण टी.वी. चैनलों के द्वारा भारत के सभी प्रदेशों में दिखाया गया। इस हमले से पहले भारत की जनता को मालूम ही नहीं था कि हमला क्या होता है, आतंकवादी क्या होते हैं?

इस घटना से पहले बैंगलोर, अहमदाबाद, दिल्ली, बनारस और जयपुर में आतंकवादियों द्वारा बम विस्फोट की घटना घटी, लेकिन जनता में जागरूकता दिखाई नहीं दी। लेकिन जब मुम्बई में आतंकवादियों द्वारा बेगुनाह लोगो को मारने की घटना को देखा तो भारत की जनता को महसूस हुआ कि आतंकवादी क्या होते है। यह भी सही है कि जब अमीर लोग मारे जाते हैं, तभी जागरूकता आती है, जबकि इससे पहले जो घटना घटीं, उसमें गरीब इन्सान मारा गया किसी ने भी जागरूकता नहीं दिखाई, क्योंकि गरीब इन्सान के शरीर में खून और आत्मा नहीं होती है, उसे तो बस मिट्टी का पुतला समझा जाता है।

शान्ति का माहौल बना, चारों तरफ अमीर लोग, सामाजिक संगठन हाय हाय करने लगे, नेताओं ने देश को डुबो दिया, नेताओं ने अपनी सुरक्षा में ही पुलिस लगा रखी है, सरकार कुछ नहीं करती है, पाकिस्तान पर हमला करो, मुम्बई के साथ-साथ चारो तरफ गर्मा-गर्मी का माहौल बढ़ता गया, आत्मा की शान्ति के लिए ताज के आस-पास मोमबत्तियां व अगरबत्तियां जलाई जाने लगीं और शान्ति के लिए प्रार्थना की जाने लगीं।

खासकर भारत की जनता की विचार धारा बन गई है कि जो सरकार वर्तमान में है, उसी की पूरी जिम्मेदारी है कि प्रत्येक इन्सान की सुरक्षा की जिम्मेदारी सरकार की है। यदि इस तरह जनता सरकार के भरोसे रही तो जनता के क्या कर्तव्य हैं। क्या जिम्मेदारियां है, इसके बारे में कौन सोचेगा- कन्फ्यूशियस ने कहा था कि “जनता की सुरक्षा व भलाई के लिए कार्य करना सरकार का ही उत्तरदायित्व नहीं है बल्कि जनता को स्वयं ही अपनी सामाजिक सुरक्षा व जीवन का ढंग बदलने का प्रयत्न करना चाहिए” ।

भारत में कहीं भी देखिए, उद्योगपति कितना भी बडा करोड़पति हो, वह अपने

उद्योग में सुरक्षा के प्रांते प्राथामेकता नहो देता है। आप देख सकते है, ाके मेरठ का नुमाइश काण्ड, दिल्ली का उपहार सिनेमा काण्ड, इस तरह के छोटे-बड़े काण्ड रहते हैं, जहां सुरक्षा प्रबन्ध वालों, नेताओं व सरकार को दोष देते हैं।

यह थी एक सामान्य जानकारी, यदि आपको अपना देश सुरक्षित रखना है तो इस देश के माता-पिता को डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जैसे वैज्ञानिक पैदा करने होंगे और कलाम जैसे वैज्ञानिक पैदा करने के लिए प्रत्येक माता-पिता को चाणक्य व द्रोणाचार्य की तरह कड़ी मेहनत व बचपन से लेकर बुढापे तक पुस्तकों का अध्ययन करना होगा। प्रत्येक बच्चे में विज्ञान के प्रति इच्छा शक्ति जागरूक करनी होगी, तभी विज्ञान के द्वारा प्रकृति को जी सकते हों।

इस समय भारत में सवा सौ करोड़ इन्सान हैं, क्या एक करोड़ इन्सानों में एक कलाम जैसा वैज्ञानिक पैदा नही कर सकते? क्या हिन्दु इन्सानों मे दिमाग नहीं या इस धरती पर जो इन्सान पैदा किये, वे बिना दिमाग के पैदा कियें, क्या यहां का इन्सान कड़ी मेहनत से घबराता है, हमेशा ही ईश्या, जलन के सागर में डूबा रहता है और आलस्य के शैतान को अपने घर पर बैठा कर रखता है।

भारत का युवा इन्सान अपने बुजुर्गों की तरह ही गलती करता रहता है। जब उसके बुजुर्गों ने उसे नही सिखाया तो वह अपनी आने वाली पीढ़ी को क्या सिखायेगा, न खुद सीखा और न ही अपने बच्चों को सिखाया कि विज्ञान की क्या भाषा है, युवा वर्ग ने भी बुजुर्गों की तरह ही एक ही लकीर पकड़ रखी है, वह धर्म की लकीर, शान्ति से जीवन कट जाये और मोक्ष प्राप्ति मिल जाये।

यदि इन्सान अपने को सुरक्षित चाहता है तो राष्ट्र को सुरक्षित रखने के लिए विज्ञान को जीतना है, तो इन्सान को चाहिए कि अपने चारों तरफ फैला हुआ जगत, फैला हुआ वातावरण, फैली हुई प्रकृति को जीते। इस विज्ञान को जीतने के लिए प्रत्येक माता-पिता को चाहिए कि बच्चों को बचपन से ही विज्ञान के प्रति प्रेरित करें, विज्ञान से संबधित पुस्तकें उसके चारों तरफ फैला दें, माता-पिता भी हर पल विज्ञान की बातें करें, बच्चों से कड़ी मेंहनत करवायें।

एडिसन को देख सकते हो, जिसने कड़ी मेहनत करके विभिन्न प्रकार के अविष्कार किये, कलाम ने 20-20 घंटे कड़ी मेहनत की, चिन्तन किया फिर मिसाइल बनायीं, लेकिन भारत की सवा सौ करोड़ जनता विज्ञान के प्रति चिन्तन नहीं करेगी, क्योंकि विज्ञान में कर्म करना पड़ता है, कड़ी मेहनत करनी पड़ती है, बारीकी से सोचना पड़ता है, लेकिन भारत के इन्सान में विज्ञान को जीतने के इस तरह के गुण है ही नहीं।

जब आप के पास कलाम जैसे हजारों वैज्ञानिक नहीं हैं तो विज्ञान की खोज कौन करेगा, नये-नये अविष्कार कौन खोजेगा, नये-नये हथियार कौन बनायेगा, तो आप सुरक्षित राष्ट्र कैसे बना सकते है, इसका जवाब आप स्वयं अपने मस्तिष्क से पूछें।

अतः इन्सान को विज्ञान न बनाने का जिम्मेवार कौन है, आपके पूर्वज, बुजुर्ग, माता-पिता, आने वाली पीढ़ी, केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार, इसका जवाब

आपको खुद ही खोजना होगा।

यह व्यक्ति कौन है?

खड़ा है सीना ताने कर्तव्य पथ पर,
यह कौन है?
चिलचिलाती धूप है, फिर भी डटा
यह कौन है?
वर्षा से भीगता नहीं, अटल
ये व्यक्ति कौन है?
बर्फ की चादर फैली, खडा
ये व्यक्ति कौन है?
दनदनाती गोलियां, निडर
ये व्यक्ति कौन है?
देशभक्ति का जज्बा लिये, तना
ये व्यक्ति कौन है?
सोने पर सबके जागता ये, दृढ
ये व्यक्ति कौन है?
समर्पित हम सब, गर्व है इस पर
मेरे बल का ये “जवान” है।

नीरज सिंह राठौर
उप कमाण्डेन्ट 192 बटालियन



बात कन्धमाल की

पीर मोहम्मद
(सहा कमा) 199 बटालियन

उडीसा राज्य में एक दुर्गम पहाड़ियों से घिरा हुआ यह जिला कन्ध और कुई जातियों का निवास स्थान रहा हैं यहां की प्राकृतिक सौंदर्यता देखने योग्य है। यह राजधानी भुवनेश्वर से 220 कि०मी० सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है, ब्रहमपुर यहां से 165 किमी दूरी पर है, यहा के लोग ज्यादा तर खेती पर निर्भर है।

सन 1991 के आंकड़े देखें तो यहां पर 8,63,903 लोग 11,070 स्कायर किमी क्षेत्रफल में निवास करते थे। यहां शिक्षित लोग मात्र 31.69 प्रतिशत है। जन संख्या घनत्व 78 व्यक्ति प्रतिवर्ग स्कायर किमी, यहां के लोग बोल-चाल में उड़िया भाषा का प्रयोग करते है।

कन्धमाल जिला पूर्व में फुलबानी जिला के नाम से जाना जाता था। परन्तु यहाँ पर

चूंके कन्ध जाति ज्यादा संगाठेत रूप में निवास करती है इसलिए उनके अनुरोध पर सरकार ने इस जिले का नाम बदल कर कन्धमाल रख दिया। इस के मुख्य कस्बे, बालीगुडा, रैकिया, जी उदयगिरी और नुआगाम है।

इस अनछुए जिला कन्धमाल को शायद ही कोई जानता हो, परन्तु कुछ समय पूर्व यहां के जातीय दंगो ने सिर्फ भारत में ही नही दुनियां के पटल पर लाकर रख दिया।

कन्धमाल जिला मलेरिया बहुल जिला है यहां के मच्छरों में मलेरिया की बीमारी बहुत ज्यादा होती है और यह सीधे दिमाग पर असर करता है और प्राण जाने का भी बहुत खतरा बना रहता है। इसलिए यहा पर तैनात सभी जवानों द्वारा मलेरिया रोधी दवाई खाना अनिवार्य है, ताकि इस बीमारी की रोकथाम पहले से की जा सके।

1. पूर्व की महत्वपूर्ण घटनाएं :—

23 अगस्त 2008 की रात को स्वामी लक्षमणानन्द के आश्रम पर लगभग 25-30 अज्ञात हमलावरों ने हमला कर दिया। वहां पर उपस्थित स्वामी लक्ष्मणानन्द व उनके चार अनुयायों को मौत के घाट उतार दिया। इस घटना से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, बजरंगदल विश्व हिन्दू परिषद तथा स्वामी जी के समर्थकों ने जिले में जगह-जगह पर कठोर प्रक्रिया आरम्भ कर दिया। 24 अगस्त 2008 को लगभग 11 बजे जलेशपाटा, जो कि स्वामी लक्षमणानन्दा का आश्रम था वहा पर एक भरी भीड़ इकट्ठा हो गयी थी वहां से पार्थिव शरीर को लेकर यह जुलूश, तुमडीबन्धा, बालीगुडा, के आुआगांव, जी उदयगिरी, पाबुरिया सारगडा फिरगिया होते हए फुलबानी आया, इस दौरान जुलूस के सदस्यों के द्वारा काफी कुछ घटनाए जगह-जगह पर घटित किये। विभिन्न राजनैतिक पार्टियों और स्वामी लक्षमणानन्द समर्थकों के द्वारा 25 अगस्त 2008 को स्वामीजी के हत्या के विरोध में उड़ीसा बन्द का एलान किया।

25 अगस्त 2008 को लगभग 10 बजे चकपाड़ा आश्रम में अन्तिम बिदाई की रस्म अदा करने विश्व हिन्दू परिषद के नायक परवीन तोगड़िया भी आये थे, उनके जोशीले भाषण से इकट्ठा हुए भीड़ पर काफी प्रभाव पड़ा जब स्वामी लक्षमणानन्द का पार्थिव शरीर का अन्तिम बिदाई के उपरान्त लोगों ने समूहों में इधर-उधर जाकर काफी अप्रिय घटनाओं को अन्जाम दिया, जैसे रोड ब्लाक करना, इसाईयों के घरों पर चर्च को लूटना, जलाना तोड़-फोड़ करना।

यहां तक बात समाप्त नहीं हुई जब अन्तिम बिदाई के बाद लोग समूहों में आश्रम से जाते समय रास्ते में आने वाले तमाम ईसाई घरों, चर्चों, पेमर हाउस को तबाह बर्बाद किया गया, बहुत सारे लोगों को जान से मार दिया गया।

प्रथम दृष्टि में उड़ीसा सरकार ने कानून व्यवस्था को काबू करने के लिए राज्य में उपलब्ध सिविल पुलिस के अलावा 24 प्लाटून ओएसएपी, 03 प्लाटून एपीआर, 03 एसओजी टीम पार्टी, 02 अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, 06 डीएसपी, 29 निरी०, 26 उपनिरी, 3 सउनि, और 22 एक्ज़िक्यूटिव मजिस्ट्रेट कानून व्यवस्था को बहाल करने में लगे थे।

2. केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की भूमिका

बात जब, उड़ीसा राज्य के हाथ से निकली तो भारत ही नही सम्पूर्ण विश्व में चर्चा का विषय बन गयी।

विश्व समुदाय ने हमारे प्रधान मन्त्री जी मनमोहन सिंह पर बहुत दबाव बनाया और पूछ-ताछ की, इसी के परिपेक्ष में गृह मन्त्री ने कन्धमाल जिले का दौरा किया और स्थिति की गम्भीरता को महसूस किया और वहीं से आदेश जारी कर दिया कि तुरन्त रातों-रात केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की तैनाती सुनिश्चित की जाये।

सुबह होते-होते केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की कई कम्पनियां भारत के विभिन्न स्थानों से हवाई व रेल मार्ग से कन्धमाल के लिए रवाना हो चुकी थी।

यथास्थिति को ध्यान में रखते हुए इस जिले में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल व रैपिड एक्शन फोर्स की 53 कम्पनियों को जिले में तैनात होना पड़ा।

इन 53 कम्पनियों की जिम्मेदारी श्री मोहम्मद रफीक हुसैन, कमाण्डेन्ट-199 बटालियन, केरिपुबल को सौंपी गयी।

3. घटनाओं की एफ आई आर—

जिले में विभिन्न स्थानों पर ईसाईयों को लूटा गया, मारा गया एवं घरों को जलाकर तबाह/बर्बाद किया गया तथा चर्चों को जलाया गया। इस सन्दर्भ में जिले को विभिन्न थानों में 81 मामले दर्ज हुए हैं।

4. गिरफ्तारी:—

विभिन्न मामलों में सम्पूर्ण जिले में 86 दोषियों को गिरफ्तार किया गया, जिन्हे न्यायालय के हवाले कर दिया गया। इस के अलावा 100 लोगों को एहतियाती तौर पर गिरफ्तार किया गया।

5. रिलीफ कैम्प:—

जब इसाईयों के घरों को जलाकर राख कर दिया गया तो वह भय और विवशता के कारण, सरकार द्वारा मदद मुहैया को गये, स्कूल, कालेजों को रिलीफ कैम्प बना दिया गया, जिले मे विभिन्न स्थानों में रिलीफ कैम्प बनाये जिस की सुरक्षा में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को तैनात किया गया है और वह सुरक्षित महसूस कर रहा है।

6. शान्ति सभा:—

शान्ति बहाली के लिए विभिन्न 41 जगहो पर शान्ति सभाएं आयोजित की गयी, जिस में दोनों समुदायों के लोगों ने भाग लिया। नियमित रूप से गावों का दौरा किया गया ताकि किसी प्रकार की अनहोनी को तुरन्त ही टाला जा सके।

7. वर्तमान स्थिति:—

वर्तमान में इस जिले में हालात काफी ठीक है। लोग रिलीफ कैम्पों से अपने घरों में रहना पसंद करने लगे हैं और लोग काम धन्धों में लग गये है। फिर भी दोनों समुदायों के दिलो-दिमाग में नफरत अभी भी मौजूद है।

उक्त के मध्यनजर सरकार ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की कम्पनियों को अपने पूर्ण ड्यूटी स्थान पर भेजने का कार्य शुरू कर दिया है और मौके का लिहाज रखते हुए कुछ कम्पनियों को स्थाई रूप से इस जिले में तैनात रखने की भी बात है। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने वर्तमान स्थिति को बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया और हर परिस्थतियों में प्रशासन के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम किया।

8. उपसंहार :—

देश के सभी धर्मों को समान अधिकार संविधान द्वारा प्रदान किया गया है। दूसरे धर्मों को तथा उनके विविधता को एकता के सूत्र में बांधा रखा जा सके। हमेशा याद रखना चाहिए कि दूसरो के सम्मान में स्वयं का सम्मान दिया है और देश हित मे रहकर सकारात्मक रवैया अपनाना चाहिए ताकि देश में शान्ति और खुशहाली होने लगे। एक दूसरे से प्रेम करें और एक दूसरे के सुख-दुख में काम आए जिस से राम राज्य को कायम रखा जा सके ।

केरिपुबल की इस जिले में तैनाती, शान्ति के लिए वरदान साबित हुए है। जिला-कन्धमाल के अफसर कमाण्डर श्री एम आर हुसैन जिन्होने मेहनत व माहौल की पेचीदगी को सुलझाते हुए जगह-जगह बल की तैनाती की वह काबिले तारीफ है, जिसमें केरिपुबल को विभिन्न प्रकार की ड्यूटी करनी पड़ी जैसे जगह-जगह नाका, मोबाइल नाका, एरिया डोमिनेशन, रिलीफ कैम्प सुरक्षा, चर्च व स्कूल की सुरक्षा पेट्रोलिंग, थानों की सुरक्षा इत्यादि ड्यूटियां शामिल है।

इस जिले की भयंकर परिस्थतियों को निपटाने में आपने जिले में तैनात केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 53 कम्पनियों का मार्ग दर्शन के अलावा, जगह-जगह जाकर समयानुसार वहां की परिस्थितियों का मुकाबला किया और उन पर काबू पाने में कामयाब हुए।

ड्यूटी का बदलता परिदृश्य

नीरज सिंह राठौर
उप कमाण्डेन्ट, 192 बटा.

शुरूआती दौर से आज हम के.रि.पु. बल की ड्यूटी की तुलना करें तो लगातार हम परिवर्तन देखते हैं।

यूं तो आतंरिक सुरक्षा के हर क्षेत्र की जिम्मेदारी चाहे वह चुनाव, उपद्रव, सुरक्षा, राहत इत्यादि कार्य हो या पृथक स्थानों के गार्ड की।

ड्यूटी में दिक्कतें तब आती है जब मौका शहर में भीड़ में गलियों में डयूटी करने का आता है।

मुम्बई के हालात ही लीजिए भीड़ भरी जगहों को महत्वपूर्ण स्थानों को निशाना बनाया गया आतंकवादियों के शहरों में काम करने के अपने फायदे है जैसे

- सुविधाएं
- भीड़ भरी जगहों में टारगेट आसान
- छुपना आसान
- भागना आसान आधुनिक गाड़ियों, मोटर साईकिल, बोट आदि
- मीडिया में खबर बनना

वहीं सुरक्षा बलों को आने वाली दिक्कतें आती हैं

- भीड़ के कारण पहचान मुश्किल
- ढूंढना मुश्किल
- बल आसान टारगेट
- लोगों का आक्रोश
- जनता का सहयोग ना मिलना आदि
- मानव अधिकारों का बीच में आना।

मुश्किल एवं विपरीत परिस्थितियों में काम करें तो कैसे करें बहुत सामान्य बातें है जिन्हें इस्तेमाल में लाने से हम कुछ हद तक इससे निपट सकते हैं

- मजबूत आसूचना तंत्र
- हल्के हथियार एवं उपकरण वाहन
- IED ढूढने के साधन सदा साथ हो
- शहरी आपरेशन का प्रशिक्षण
- संदिग्ध को पहचानना
- अकेले ना पड़ना (जवान या समूह)
- संचार तंत्र
- आपसी सहयोग

यहां पर सहयोग बहुत महत्वपूर्ण है जिसे हम सब ध्यान रखें तो बेहतर है और वो

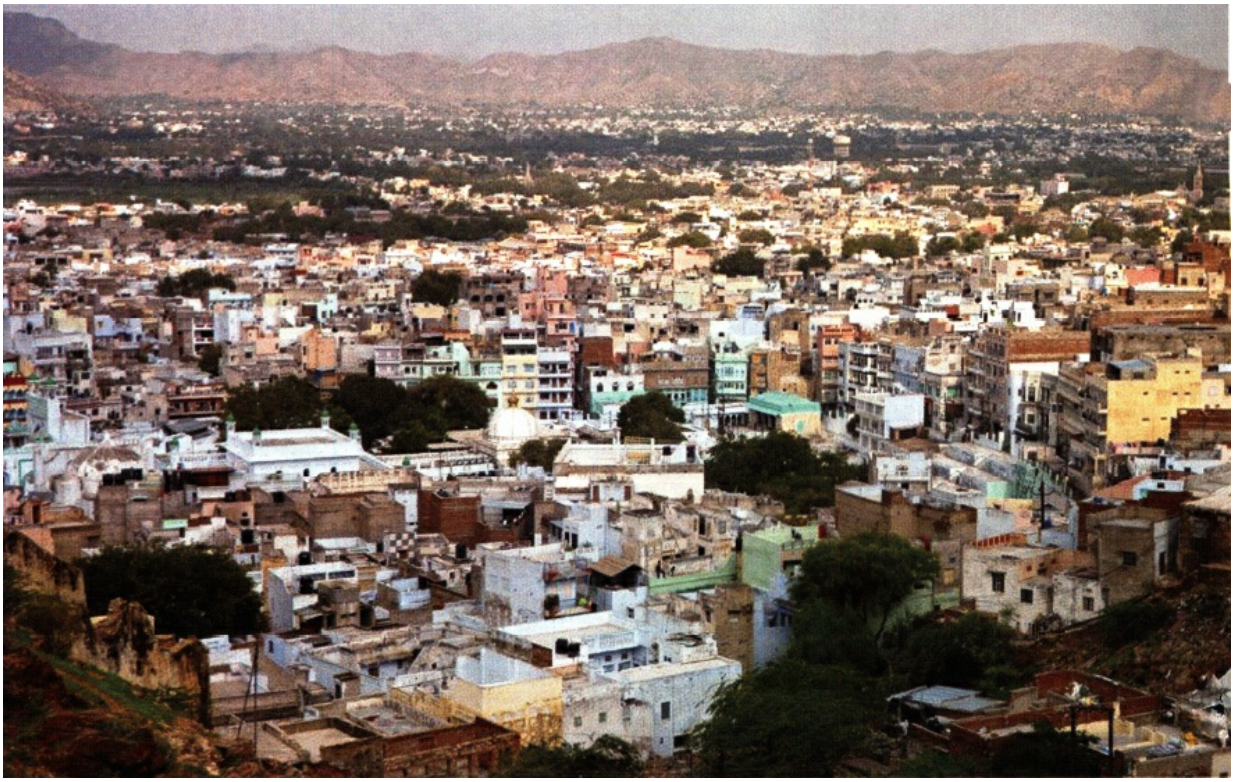
पा सकते हैं सही व्यवहार से इस कांठेन दौर में न केवल आपस में, बाल्के आमजनों के साथ।

केरिपु बल हमारा घर है और इसके सदस्य हमारा परिवार, केवल अच्छे वातावरण में ही हम संगठित हो अच्छा परिणाम दे सकते है वैसे ही आम जनों से भी अच्छा सहयोग पा सकते हैं, सही व्यवहार एवं लगातार सम्पर्क एक अचूक हथियार है क्योंकि हर आम नागरिक आंतकवादियों का सहयोगी नहीं होता इन्हें हम तीन बड़े भागों में बांट सकते हैं। पहले ज्यादातर लोग जो सही है मुख्यधारा में है सहयोगी नहीं है, दूसरा जो न पक्ष में न विपक्ष, तीसरे भाग में वे कुछ लोग जो आतंकवादियों/ उग्रवादियों के सहयोगी है।

हमारा हर कदम इस समीकरण को लगातार बदलता रहता है क्योंकि हमारे व्यवहार पर ही एक समूह से लोग दूसरे समूह में जा सकते हैं यदि हमे सहयोग करने वाले अधिक हुए तो हमारी जीत निश्चित है इसलिए सतर्क होकर दृढ़ता से मानवीय पहलुओं को ध्यान रखते ड्यूटी करें तो परिणाम अच्छे से और अच्छे आ सकते हैं।



हम मानते है उपरोक्त बातें कहने सुनने में अच्छी लगती हैं करना आसान नहीं लेकिन सदस्य ऊँचे मनोबल वाले हैं तो असंभव भी नहीं, एक बहुत बड़ा पहलू मनोबल बनाने में सामने आ रहा है हमारे सदस्य कैसी स्थिति में रहते है यदि यह रहन सहन बेहतर हो सके तो मनोबल पर सीधा प्रभाव पड़ता है जोश से व्यक्ति कार्य करता है इसके लिए हमारे सिविल प्राधिकरणों से न केवल अच्छे बल्कि प्रभावशाली होने जरूरी है जिससे बल के अधिकारी द्वारा कही बात सिविल प्राधिकारी माने एवं अमल करें तो बेहतर सहयोग से बल के सदस्यों का मनोबल बनाये रखने में सहयोग दे।



साम्प्रदायिक सौहार्द की ऐतिहासिक नगरी - अजमेर

संकलनकर्ताः गुरदीप सिंह, पु०उ०म०नि०
रचनाकार : अजय कुमार थापा, नि०/मं०
विनोद कुमार राणा,नि०/हि०अ०

आरती और अजान की संस्कृतियों का मेल अगर कहीं है तो वह है साम्प्रदायिक सौहार्द की नगरी "अजमेर"

अजमेर शहर अरावली पर्वत श्रृंखलाओं की घाटियों से घिरा हुआ है जिसे राजस्थान का 'दिल' कहा जाता है। यह शहर राजस्थान की राजधानी जयपुर से लगभग 130 किलोमीटर पश्चिम दिशा की ओर स्थित है। अगर हम इतिहास के पन्ने पलटें, तो पता चलता है कि यह शहर बहुत से महान राजाओं और बादशाहों के उत्थान और पतन का साक्षी रहा है। इस शहर की स्थापना 7वीं सदी में राजा अजयपाल चौहान के द्वारा की गई थी तथा इतिहास मे इसका नाम अजयमेरू था, जो बाद में अजमेर के नाम से

प्रसिद्ध हुआ। अजमेर शरीफ आज मुस्लिम धमावलंबियों का एक पवित्र तीर्थ स्थल है। यहां सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिस्ती की दरगाह है। लगभग 800 वर्ष पूर्व इस्लाम धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए ईरान से एक महान सूफी संत हजरत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती हिंदुस्तान आए जिन्होंने अजमेर शहर की सुन्दर वादियों में शहर के बीचों-बीच अपना डेरा डाला जहां आज भी उनकी दरगाह विश्व की सबसे पवित्र और बड़ी दरगाह मानी जाती है। उन्होने हिंदु-मुस्लिम एकता के लिए जीवन पर्यन्त दोनों धर्मों के लोगों की भलाई के लिए कार्य किया। आज सभी धर्मों के लोग उनकी पवित्र दरगाह की जियारत के लिए आते हैं। मुस्लिम धर्मावलंबी तो पवित्र मक्का-मदीना के बाद ख्वाजा साहब के ज़ियारत करने पर ही हज यात्रा को पूर्ण समझते है।

अजमेर शहर पर चौहान वंश के राजाओं ने काफी लम्बे समय तक राज किया। इस वंश का पतन 12वीं सदी में चौहान वंश के अंतिम सम्राट पृथ्वीराज चौहान की मृत्यु के बाद माना जाता है। अंतिम सम्राट पृथ्वीराज चौहान की मृत्यु मौहम्मद गौरी से युद्ध करते-करते हुई थी। सम्राट पृथ्वीराज चौहान ने जीवन पर्यन्त मुगलों से हार नहीं मानी और अंतिम समय तक मुगलों से लड़ते रहे। उनकी मृत्यु के पश्चात् अजमेर शहर पर मुगल शासकों का शासन आरंभ हुआ और अजमेर शहर दिल्ली के सुल्तान के अधीन आ गया। इतिहास में सम्राट पृथ्वीराज चौहान एक महान और वीर राजा के तौर पर जाने जाते हैं जिन्होने अपने जीते-जी अंतिम समय तक मुगलों को इस शहर के नजदीक भी नहीं आने दिया। पृथ्वीराज चौहान ने तारागढ़ की पहाड़ियों में अपना किला स्थापित किया था, जो आज भी वहां पर इस वंश के शासकों की गाथाओं की एक निशानी के रूप में स्थित हैं।

सन् 1818 ईस्वी के बाद यह शहर अंग्रेजी हुकूमत के अधीन आ गया। आज यह शहर राजस्थान ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में धार्मिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के लिए जाना जाता है।

अजमेर शहर में मुख्य रूप से निम्नलिखित प्रसिद्ध धार्मिक और ऐतिहासिक दर्शनीय स्थल हैं :—

1. ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह (अजमेर शरीफ)
2. आना सागर झील
3. पृथ्वीराज चौहान का किला (तारागढ़ किला)
4. तारागढ़ स्थित मीरा सैयद हुसैन साहब की दरगाह
5. अढ़ाई दिन का झोपड़ा
6. मेयो कॉलेज
7. पुरातत्व संग्रहालय (पुराना किला)
8. पुष्कर जी

1. ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती साहब की दरगाह (अजमेर शरीफ):— मोइनुद्दीन चिश्ती साहब की दरगाह पुराने अजमेर शहर में स्थित है। यहां पर हर वर्ष माह जुलाई- अगस्त में ख्वाजा साहब की उर्स हेतु दुनियां भर से लोग जियारत करने आते हैं। यह दरगाह लगभग 800 वर्ष पुरानी है। दरगाह का मुख्य दरवाजा निजाम गेट के नाम से प्रसिद्ध है, जिसे हैदराबाद के निजाम ने बनवाया था। इसके अलावा दरगाह में जाने के लिए तीन अन्य और रास्ते हैं। यहां एक बड़ी और एक छोटी देग हैं जिनकी गहराई लगभग 10 फीट एवं चौड़ाई 20 फीट हैं, जिसमें जायरीन हेतु मीठी खीर आदि बनाई जाती है। इसमें लगभग एक हजार आदमी के लिए एक बार मे मीठी खीर या तर्बरूफ तैयार की जा सकती है। इस डेग में बने हुए तर्बरूफ को उर्स के दौरान लूटने की प्रथा है। इस डेग में बनी मीठी खीर के अंदर कूदकर 3 से 4 मिनट में सारी मीठी खीर को जायरीन में बांट दिया जाता है। इस डेग का निर्माण बादशाह अकबर के द्वारा करवाया गया था।



अजमेर दरगाह

2. आना सागर झील:- यह अजमेर शहर के बीचों बीच स्थित एक सुन्दर और विशाल झील है। इसका निर्माण 1150 ईस्वी में राजा अन्नाजी ने करवाया था। यहां पर

इस झील के बीचों बीच चिल्ला ख्वाजा साहब स्थित है। इसके पास ही मुगल सम्राट शाहजहां के द्वारा बनवाया गया संगमरमर से निर्मित विशाल और सुन्दर बारादरी है जहां से अन्ना सागर का सुन्दर नजारा देखा जा सकता है।

3. तारागढ़ का किला:- तारागढ़ के किले का निर्माण पृथ्वीराज चौहान ने करवाया था। तारागढ का ऐतिहासिक किला चारों ओर से मजबूत ऊँची दीवारों से निर्मित है। इसकी बनावट देखकर लगता है कि इस किले तक पहुंचना किसी भी सेना के लिए अत्यंत ही मुश्किल था। यह दुर्गम पहाड़ी की चोटी पर स्थित है। इसमें तीनो दिशाओं में मजबूत स्तंभ बनाये गये हैं जो अब खंडहर में तब्दील हो चुके है। सामरिक दृष्टिकोण से उस समय यह अत्यंत महत्वपूर्ण किला था। आज भी यह दर्शनीय है।

4. दरगाह मीरा सैयद हुसैन:- हज़रत मीरा सैयद हुसैन असगर खानस्वर की दरगाह तारागढ़ की चोटी पर स्थित है। यहां पर अधिकतर शिया समुदाय के लोग रहते है। यह दरगाह मुस्लिम धर्मावलंबियों का एक पवित्र और प्रसिद्ध दरगाह है।

5. अढाई दिन का झोपड़ा:- अढ़ाई दिन के झोंपड़े का निर्माण 1193 ईस्वी में मोहम्मद गोरी ने एक हिंदू संस्कृत महाविद्यालय को तोड़कर ढाई दिन में मस्जिद में तब्दील किया था। यह मस्जिद आज अढ़ाई दिन के झोपड़ा के नाम से विश्व प्रसिद्ध है। यह आज भी हिंदू मुस्लिम शिल्पकला का एक अदुभत नमूना है।

6. मेयो कॉलेज:- अजमेर शहर में स्थित मेयो कॉलेज पूरे भारतवर्ष में शिक्षा का एक महत्वपूर्ण और उत्तम विद्यालय है। इसकी स्थापना ब्रिटिश शासन काल के दौरान की गई थी।

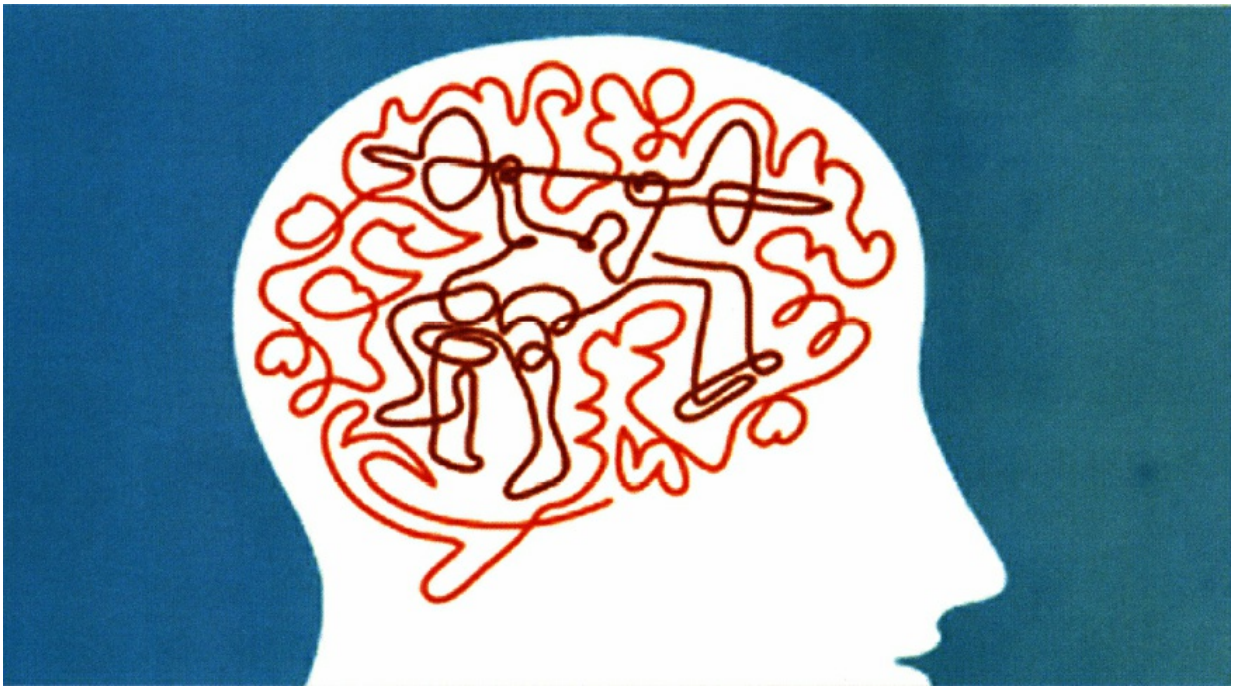
7. म्यूजियम (पुरातत्व संग्राहलय):— शहर में बीचों-बीच स्थित इस संग्रहालय का विशेष ऐतिहासिक महत्व है, क्योंकि मुगल काल में बादशाह अकबर ने अजमेर शहर में प्रवास हेतु इस किले का निर्माण करवाया था। यह एक मजबूत और मुगलकालीन शिल्पकला का अदभुत नमूना है। बादशाह अकबर के अजमेर आगमन पर वह और उनकी सेना इसी किले में रहा करते थे। आज यह किला संग्रहालय के रूप में तब्दील हो चुका है जहां मुगलकालीन तथा चौहान वंश की महत्वपूर्ण वस्तुओं तथा हथियार आदि का अनुकरणीय संग्रहण है।



8. पुष्कर:- अजमेर शहर से लगभग 11 किलोमीटर की दूरी पर हिंदू धर्मावलंबियों का महत्वपूर्ण तीर्थस्थल पुष्कर जी स्थित है। पुष्कर में लगभग 500 मंदिर हैं। यहां पर विश्व में एकमात्र पवित्र ब्रह्मा जी का मन्दिर है। कहा जाता है कि ब्रह्मा जी यज्ञ हेतु एक पवित्र स्थल की खोज में निकले तो उनके हाथ से कमल का एक फूल इसी घाटी में इस स्थान पर गिरा था। उसी स्थान पर आज पवित्र सरोवर है। यहीं पर ब्रह्मा जी ने घोर तपस्या की थी। पुष्कर में स्थित नाग पहाड़ी पर साधु संतों द्वारा तपस्या की जाती थी। इसी पहाड़ी पर पंचकुण्ड स्थित है जहां पर महान अगस्थ मुनि ने तपस्या की थी। यह भी कहा जाता है कि चौथी सदी में महाकवि कालीदास ने इसी स्थान पर "अभिज्ञान शाकुन्तलम" नामक प्रसिद्ध ग्रंथ की रचना की थी। आज भी यहां हिंदू धर्म के धर्मावलंबी हजारों की संख्या में प्रतिदिन सरोबर पूजा और ब्रह्मा जी के दर्शन के लिए आते हैं। यह एक अद्भुत संयोग है कि पुष्कर जी में हिंदू धर्मावलंबियों के अलावा विदेशी पर्यटक भी न सिर्फ अत्यधिक संख्या में आते हैं बल्कि बहुत से पर्यटक यहां के मनमोहक वातावरण से मोहित होकर यहीं के हो जाते हैं।

यहां पर प्रतिवर्ष पुष्कर मेले का आयोजन किया जाता है, जो हिंदुस्तान में सबसे बड़े पशु मेले के रूप में जाना जाता है। इस मेले में ऊँट, गाय और बैल आदि की दौड़ प्रतियोगिता आयोजित की जाती है। पुष्कर के पास ही आमेर के राजा मानसिंह का 'मनमहल' स्थित है इसे वर्तमान में आई.टी.डी.सी. सरोबर टूरिज्म बंगला के रूप में तब्दील कर दिया गया है। इस शहर के साम्प्रदायिक सौहार्द और भाईचारे के बारे में किसी शायर ने कहा है :—

“मैं तुम्हे अपने उसूलो की कसम देता हूँ,
मुझको मजहब के तराजू में न तौला जाए।
मैने इन्सान ही रहने की कसम खाई है।
मुझको हिन्दू या मुसलमान ना समझा जाए।”



तनाव एक समस्या

हुकम सिंह
निरीक्षक (मंत्रालय), 23 बटालियन

तनाव आज आरोग्य शास्त्र के सामने एक बड़ी समस्या है जो पैदा तो बहुत आसानी से होता है मगर जाता बहुत मुश्किल से है। तनाव कई सारी बीमारियों को बुलावा देता है। सबसे ज्यादा फोर्स के लोग ही इसके शिकार होते हैं।

तनाव का वैसे मतलब तान (Stretch) जो मन की अस्थिरता से पैदा होता है। जब कोई आवश्यकता पूरी नहीं हो पाती है तब मानव के मस्तिष्क में तनाव पैदा होता है। ज्यादातर मानसिक बीमारियां तो मानव के कारण ही पैदा होती हैं।

तनाव के कारण:—

1. खराब माहौल जगह, प्रांतेयोगी, पयावरण।
2. **सामाजिक कारण:**- अपने-अपने तौर तरीके से पालन पोषण, समाज की जरूरतें, उसकी पूर्णता।
3. **मानसिक कारण:**- रहन-सहन, आदतें, सोच या कोई हादसा भी कारण बन सकता है।
4. **आनुवांशिक:**- कई बिमारियां आनुवांशिक होती है वैसे ही तनाव भी हो सकता है।
5. **आर्थिक कारण:**- पैसे की कमी तथा जरूरतों का पूरा न होना।
6. **व्यवसाय/नौकरी :**- फोर्स के लोगों में नौकरी व्यवसाय के कारण भी तनाव अधिक पाया जाता हैं। नौकरी की जरूरतें पूरी करने में असमर्थ होने से कार्मिक तनाव ग्रस्त होते हैं। फोर्स के कार्मिकों में जो बातें तनाव पैदा करती है यह सभी भली-भाँति जानते हैं, फिर भी कुछ मुख्य बातें निम्न हैं:—

बहुत लम्बे समय तक सतर्कतापूर्वक ड्यूटी पर तैनाती, कठिन जगहों पर तैनाती तथा अस्थिरता, अपनों से दूर, अर्थात घर परिवार से दूरी, खराब तथा कठिन कार्य की स्थिति, छुट्टी समय पर न मिलना, बच्चों की शिक्षा में अस्थिरता।

तनाव के परिणाम:—

तनाव मनुष्य के पूरे शरीर पर असर करता है जिससे बहुत सी बिमारियाँ जन्म लेती हैं जैसे हाईपरटेन्सन, मधुमेह, हृदय रोग, डिप्रेशन एनक्सिटी, उदर की बिमारियां इत्यादि। तनाव से मनुश्य के व्यवहार में भी परिवर्तन हो सकता है जैसे गुस्सा आना, बुरी आदतें, लगन एवं निष्ठा में कमी, एकाग्रता में कमी आदि।

तनाव प्रबंधन:—

तनाव एक अपने आप में बीमारी है जो अन्य कई बीमारियों को पैदा करता है। इसलिए तनाव मुक्त रहना जरूरी है।

तनाव मुक्त होने के लिए कई तरीके बताये गये है जैसे योगा, जिसमें प्राणायाम व श्वसन या कोई मंत्र का जप करना, मनुष्य व्यवहार में बदलाव लाना एवं खेलकूद। कई बड़ी कंपनियां तो अपने कर्मचारियों के लिए अलग से तनाव मुक्ति के लिए पाठ शुरू कर चुकी हैं।

तनाव से पीड़ित व्यक्ति को स्वयं ही तनाव के कारणों का खुलासा तथा उसका समाधान खोजने की कोशिश करनी चाहिए। समय-समय पर अपने स्वास्थ्य की एक योग्य चिकित्सक से जांच करा लेना भी आवश्यक है।

अंत में यहां यह भी जानना जरूरी है कि तनाव को बुलावा देने वाले आप खुद है। और आप खुद ही इसका हल खोज सकते है, क्योंकि अगर तनाव से मुक्ति पानी है तो उसका जड़ निकालना जरूरी है। सदैव, सतचित, हर्षोल्लास, शुभ विचार,

नियमित नित क्रियायें कर्तव्यनिष्ठा, वरिष्ठों का आदर सत्कार, आज्ञाकारिता, आत्म सम्मान की भावना, मित्रवत व्यवहार रखने से ही व्यक्ति तनाव मुक्त होकर स्वस्थ एवं दीर्घायु तक आनंदमय जीवन व्यतीत कर सकता है।

तनाव कम करना-I - अपने व्यवहार को बदलें

सुख-शांति की कला सीखें

आर के सिंह
द्वितीय कमान अधिकारी, 81 बटा०, के०रि०पु०बल

तनाव का सामना करने के लिए प्रयास करना एक सतत् प्रक्रिया है तथा इसका परिणाम धीरे-धीरे दिखाई देता है। तनाव मुक्ति के उपायों को अपनाने के लिए धैर्य और दृढ़ता की जरुरत होती है। और यदि किसी व्यक्ति को इसके परिणाम स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देते हैं, तो इसके कारण तनाव में बढ़ोत्तरी होती है। अतः यदि तनाव कम करने के किसी उपाय को चरणबद्ध रूप से और वास्तविक अभिप्राय के साथ नहीं अपनाया जाता है तो यह स्वयं तनाव कारक बन जाता है। फिर भी, यदि कोई शुरू में तनाव को कम करना चाहता है तथा बाद में इसे पूरी तरह समाप्त करना चाहता है, तो तनाव को पहले दिन से ही पर्यात रूप से निष्प्रभावी किया जा सकता है।

तनाव को कम करने के लिए, हमें जीवन के उद्देश्य के संबंध में चिंतन करना चाहिए। इस चिन्तन का सबसे सामान्य उत्तर होगा "प्रत्येक मनुश्य जीवन में सुख-शांति चाहता है।" तथापि इस सुख-शांति को प्राप्त करने के लिए लोग हमेशा मानसिक पीड़ा और दुःख उठाते हैं। कोई भी व्यक्ति सुख-शांति प्राप्त करने व इसे सुरक्षित रखने के लिए धार्मिक से लेकर भौतिक तक के सभी साधनों को अपनाता है। वे अपनी ऊर्जा को सुख-शांति के लिए केंद्रित करते हैं और अगर यह सुलभ नहीं होती है तो वे तनावग्रस्त व असंतुष्ट अनुभव करते हैं। परन्तु सुख-शांति के संबंध में यथार्थ चिंतन वांछनीय और निश्पाद्य है। साधारण सा नियम है उन कारकों, जो आपको तनावग्रस्त करते हैं, की पहचान करना व तदुनसार अपने रवैये में परिवर्तन करना। सुख-शांति की कला सीखें और भावनात्मक रूप से समझदार बनें।

साधारण शब्दों में वर्णन करें तो, अपने जीवन में सामान्य और नेमी कार्यों की सीमा के बाहर किसी चीज़ का सामना करने पर शरीर और मन पर पड़ने वाले भार

को, तनाव कहते हैं। असामान्य अथवा नाजुक चीजों में या फिर जहाँ चुनौतियों का सामना करने की क्षमता बहुत कम हो जैसी स्थितियों में गंभीरता बहुत अधिक होती है। तनाव हम पर तब प्रहार करता है जब हम किसी चीज़ की कल्पना और आशा करते हैं परन्तु उसे प्राप्त करने में असफल हो जाते हैं। तनाव हमें तब प्रभावित करता है जब हमें किन्हीं असामान्य परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है तथा हमारे भीतर उन परिस्थितियों से निपटने के लिए पर्याप्त मनोबल नहीं होता है। कई बार हम अति महत्वाकांक्षी बनकर अथवा अपनी क्षमता और योग्यता में वृद्धि किए बिना बहुत ऊँचे लक्ष्य रखकर, अपने तनाव के स्तरों को बढ़ा देते हैं।

इसका अर्थ है व्यावसायिकता सीखना, व्यक्तिगत जीवन को संतुलित रखना और इन सबसे ऊपर जीवन व जीविका के प्रति अपने व्यवहार को रुपान्तरित करना । दलाई लामा ने इसे "मन का प्रशिक्षण" के रूप में परिभाषित किया है। उनका कहना है कि 'मन के प्रशिक्षण' से आशय किसी की मात्र ज्ञानात्मक योग्यता अथवा विचार शक्ति से नहीं है। बल्कि, उनके अनुसार उनके द्वारा इस शब्द का प्रयोग तिब्बती शब्द सेम (Sem) के अर्थ में हुआ है, जिसका मोटे तौर पर अर्थ "आत्मा" (Psyche) अथवा "मनोवृत्ति" (Spirit) के निकट है, इसमें बुद्धि और भावुकता, दिल और दिमाग शामिल हैं। कुछ आत्मानुशासन लाकर कोई भी व्यक्ति अपने व्यवहार, सम्पूर्ण दृष्टिकोण और जीवन पद्धति में कायापलट का अनुभव कर सकता है।

प्रत्येक व्यक्ति को खुश रहने के लिए सकारात्मक रूप से संभावनाओं की खोज करनी चाहिए। अपना आध्यात्मिक दृष्टिकोण विकसित करके इसे आसानी से हासिल किया जा सकता है। हमारे स्वयं सर्जित कष्टों और व्यथा की संकीर्णता पर प्रज्ञा और आत्मा को प्रभावी बनाने की जरूरत है। हम यह स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं कि 'कष्ट जीवन का स्वाभाविक अंग हैं। जब ये अपरिहार्य हो जाएं तो हमें इनका समाना करना चाहिए, और जैसे ही हम इनसे छुटकारा पा लेते हैं तो हमें इनको भुलाकर के आगे बढ़ना चाहिए। तथापि, इसके उलट, हम इनके बारे में हर एक व्यक्ति के साथ बार-बार चर्चा करके अपनी व्यथा को जारी रखने में विश्वास रखते हैं। हम अक्सर अपने द्वारा भोगे गए उस बुरे वक्त को याद करते रहते हैं। इन सबसे ऊपर हम प्रत्येक कष्टप्रद परिस्थिति को व्यक्तिगत बना लेने की आदत भी विकसित कर लेते हैं। यह स्वयं पर थोपी गई व्यथा मददगार नहीं होती है। यह हमारे दर्द को कम करने के बजाए हमारी बैचेनी को बढ़ाती है। लम्बी अवधि के दौरान यह हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। इस प्रकार, जैसा कि दलाई लामा का कथन है कि, हमें अपने दुःखों का रूपान्तरण करना चाहिए। यह एक सुन्दर अनुभव होगा। हम अपने जीवन के स्वस्थ और उल्लसित क्षणों को याद रखते हैं। हमें अपने दुःखों को भुलाना चाहिए, उन लोगों को, जो हमारे प्रति ईर्ष्यालु हैं और आलोचक हैं, को क्षमा करें, हमारी गलतियां और कमियां बताने वालो की प्रशंसा करें तथा जरुरत मंदों की सहायता करें।

इस प्रकार के आत्म संयम और तुलना से हमारी आत्मा का कायाकल्प होगा। हम

स्वयं में व साथ ही साथ उन लोगों में जो हमारे साथ हैं, खुशियाँ भर देंगे। चारों ओर मुस्कान बिखर जाएगी। खुशी के द्वारा मित्रता के बंधन स्थापित होंगे। ये सभी कारक तनाव को कम करेंगे। विशेषकर ऐसे संगठनों में, जहाँ लोगों में तनाव के लिए बहुत से कारण हैं। हमारे व्यवहार को बदलकर सुख शांति की कला सीखने से, न केवल तनाव उत्पन्न करने वाले प्रभावों में कमी आएगी वरन् लोगों में तनाव की कमी होने से संगठन के व्यावसायिक दृष्टिकोण में भी सुधार होगा।

(प्रेरणा प्राप्त की - "सुख-शांति की कला" लेखक पर श्रद्धेय दलाई लामा व हावर्ड सी कल्टर)

तनाव कम करना-II अपना व्यवहार बदलें

भावात्मक रूप से बुद्धिमान बनें

तनाव आप पर तब हावी होता है जब आप असंतुष्ट, अप्रसन्न हों तथा किसी परिस्थिति का सामना करने के लिए तैयार न हों। तनाव हम पर तब आधिपत्य जमाता है जब हम स्वयं को समझ नहीं पाते हैं अथवा यों कहें कि जब हम व्यावसायिक या निजी कारणों से किसी के संपर्क में आते हैं। इस प्रकार अपने सामाजिक स्वरूप को ना समझ पाने से भी तनाव उत्पन्न होता है। अतः बहुत कुछ इस पर निर्भर करता है कि हम विभिन्न परिस्थितियों को किस दृष्टिकोण से देखते हैं, तथा उनका कैसे सामना करते हैं, तथा हम जो कुछ प्राप्त करते हैं उससे कितने संतुष्ट हैं।

तनाव कम करने के लिए, हमें मानसिक शांति की जरुरत होती है। यह तभी प्राप्त होगी जब हम अपने नकारात्मक व्यवहार पर नियंत्रण कर लेंगे तथा अपनी भावनाओं को समझेंगे। भावनाओं को समझने के लिए हमें अपने आस-पास के व्यक्तियों और वातावरण को समझना होगा। इसे प्राप्त करना बहुत आसान है। इसके लिए हमें भावात्मक रूप से बुद्धिमान होने की जरुरत है। यह बहुत सरल है। किसी भी व्यक्ति को केवल अपनी व दूसरों की भावनाओं की जानकारी होनी चाहिए।

भावनात्मक बुद्धिमता क्या है? इसका अर्थ है मनोभावों की अन्तर्निहित प्रज्ञा को सम्मान, मान्यता और महत्व प्रदान करना। इसे हृदय की प्रज्ञा भी कहते है। अर्थात् मन और मस्तिश्क को संतुलित और संघटित करना। संवेदनाओं को संभालना और तनाव को वश में रखना, ये भावात्मक बुद्धिमता के अनिवार्य पहलू हैं। भावात्मक बुद्धिमता स्वयं व हमारे आस-पास के लोगों के संबंध में गहरी ओर अच्छी समझ उपलब्ध कराती है। भावात्मक रूप से बुद्धिमान बनने के आपके प्रयास आपको, भावनाओं तथा अभिव्यक्तता के संबंध में अवगत कराएंगे। आप यह समझने का

प्रयास करोगे कि, जब लोगों को किसी निश्चित तरीके से काम करने के लिए मार्गदर्शन/निदेश/आदेश दिया जाता है, तब कैसा लगता है? जब किसी व्यक्ति के साथ एक विशिष्ट ढंग से व्यवहार किया जाता है तब उसकी मानसिक प्रतिक्रिया कैसी होती है? ये सरल से विश्लेषण अथवा कहें कि दूसरों की भावनाओं की चिंता करने से आपको अच्छे और स्वीकार्य ढंग से व्यवहार करने में सहायता प्राप्त होगी। इससे परिपक्व व्यवहार तथा परस्पर सहयोग को बढ़ाने में सहायता प्राप्त होगी। एक प्रकार से यह कुछ उत्पादक कारकों, जो कि साधारणतया परिहार्य तनाव पैदा करते हैं, को कम/समाप्त करेगा। प्रश्न यह है कि, यह भावात्मक बुद्धिमता तनाव को कम करने अथवा समाप्त करने में, किस प्रकार हमारी सहायता करती है।

भावात्मक बुद्धिमता (E.I), के कुछ उपयोग, जिनकी सहायता के द्वारा तनाव में कमी लाई जा सकती है:—

- भावात्मक बुद्धिमता मैत्रीपूर्ण संबंधों के प्रबंधन के संबंध में हमारा मार्गदर्शन करती है।
- भावात्मक बुद्धिमता के द्वारा समानुभूतिक (empathetic) व्यवहार उत्पन्न होता है। इसकी सहायता से हम परिदृष्य की कल्पना कर सकते हैं तथा दूसरों की भावनाओं को अच्छी तरह समझ सकते हैं।
- समाजिक निपुणता को भली प्रकार सीखा जा सकता है तथा भावात्मक रूप से बुद्धिमान होकर इनका अच्छी प्रकार उपयोग किया जा सकता है।
- यह कार्य संपादन प्रेरणा और पहल शक्ति को बढ़ाती है।
- यह द्वंद प्रबंधन की मनोवृत्ति को विकसित करती है।
- भावात्मक बुद्धिमता आपको संपर्क बनाने के लिए प्रेरित करती है। यह निश्चयात्मकता, तनाव को कम करती है, क्योंकि व्यक्ति परस्पर विरोधी परिस्थितियों के बजाए मित्रता व विश्वास को महत्व देने लगता है।
- भावात्मक बुद्धिमता मिलकर कार्य करने और सहयोग में समन्वय करती है। इस सामाजिक तंत्र द्वारा परस्पर निर्भरता में बढ़ोत्तरी होती है, और इस कारण संबंधों का आदर किया जाता है तथा यह तनाव कारकों को हटाती है।
- भावात्मक बुद्धिमता आपको, विश्वास की जटिल प्रक्रिया को पहचानने और उसकी व्याख्या करने, नैतिक मूल्यों, मानवीय व्यवहार को शासित करने वाले विचारों तक अभिगम और उनकी भविष्यवाणी करना, स्वयं व दूसरों के व्यवहार को संचालित व प्रभावित करने में समर्थ बनाती है।
- यह व्यक्ति को नेतृत्व करने में कुशल बनाने के साथ-साथ अच्छा अनुयायी भी बनाती है। यह हमारे जीवन की कई जटिलताओं को समाप्त करती है। और इस प्रकार तनाव को कम करती है।
- भावात्मक बुद्धिमता हमें संवाद और अनकूलन क्षमता का प्रभावशाली तरीका सिखलाती है। इस क्षमता के द्वारा व्यक्ति को कई कठिनाइयों जैसे अस्तव्यस्तता, भ्रम और मानसिक यंत्रणा का मुकाबला करने में सहायता प्राप्त होती है और इस

प्रकार तनाव ग्रस्त पारेदृष्य को हलका कर दिया जाता है।

इस प्रकार भावात्मक बुद्धिमता हमें समानुभूतिक, सहानुभूतिशील और अतिसंवेदनशील बनाकर हमें तनाव कम करने में सहायता प्रदान करती है। हलांकि इस धारणा की संकल्पना, मूल रूप से उत्पादन वृद्धि करने तथा सद्भावनापूर्ण कार्य वातावरण बनाए रखने के उद्देश्यों के लिए कारपोरेट संबंधों की देखरेख करने हेतु की गई थी, तथापि मेरे अभिमत में, यदि इस संकल्पना की लोक नीति को व्यक्तिगत और सामाजिक संबंधों में भी लागू किया जाता है तो प्रत्यक्ष ज्ञान बोध को भली प्रकार समझने में इसके चमत्कारिक परिणाम हो सकते हैं। यह सकारात्मक संबंध के प्रबंधन के लिए हमारे सामाजिक कौशल में वृद्धि करती है। यह जीवन से चिंता, असंवेदनशीलता और जटिलताओं को मिटाकर सुख-शांति और खुशी लाती है। भावात्मक बुद्धिमता मूल्यों और आत्म विश्वास को मन में बैठाती हैं, जो किसी व्यक्ति को समस्याओं का सामना करने के लिए सक्षम बनाता है इस प्रकार तनाव का मुकाबला करने की क्षमता विकसित होती है।



चरित्र निर्माण एवं उसका महत्व

उप निरीक्षक/मं केदार सिंह

कार्यालय पुलिस उप महानिरीक्षक, कोरेपुबल, रामपुर

प्राचीन काल से ही भारत में चरित्र निर्माण पर बहुत जोर दिया गया जिसके अनेकों उदाहरण हमारे इतिहास में उपलब्ध है। भारतीय इतिहास भगवान श्रीराम से लेकर महात्मा गांधी तक ऐसे महापुरूषों के गुणगान से भरा पड़ा है जिन्होंने चरित्र के ऊचे मानदण्डों को स्थापित किया। चरित्र के विषय में बहुत पुरानी लोकोक्ति हैः।

IF WEALTH IS LOST, NOTHING IS LOST

IF HEALTH IS LOST, SOMETHING IS LOST

IF CHARACTER IS LOST, EVERYTHING IS LOST.

यदि आपके धन-सम्पत्ति की हानि हो जाती है तो आपका कुछ नहीं खोया, यदि आपका स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है तो आपकी थोड़ी सी हानि हुई है लेकिन यदि आपका चरित्र चला गया तो आपका सब कुछ चला जाता है।

स्पष्ट है कि चरित्र का व्यक्ति के जीवन में कितना महत्व है। महात्मा गाँधी की मान्यता थी कि चरित्र की शुद्धि जीवन का ध्येय होना चाहिए इसलिए उन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन को अहिंसक बनाए रखा। चरित्र का संबंध धन-सम्पत्ति से ना होकर मानव के जीवन मूल्यों से होता है। उत्तम चरित्र ही सबसे बड़ा धन है।

महान जर्मन दार्शनिक गेटे ने कहा था कि "चरित्र का निर्माण संसार के संघर्ष के मध्य होता है"। चरित्र हमारा स्थायी स्वभाव है, हमें अपनी इस स्थायी सम्पत्ति की रक्षा हर प्रकार, हर कीमत पर करनी चाहिए। चरित्र की रक्षा करने का तात्पर्य यह है कि हमें अपनी स्वाभाविक प्रेरणाओं के अनुसार कार्य करना चाहिए अर्थात् हमें अपनी आत्मा की आवाज के अनुसार या स्वधर्मानुसार कार्य करना चाहिए। आज समाज में हमें अनेकों ऐसे व्यक्ति मिल जायेगें जो छोटे-छोटे स्वार्थ के कारण अपने स्वाभिमान एवं आचरण के विपरीत समझौता कर लेते हैं। हम यह भूल जाते है कि हमारे समाज का निर्माण ऐसे समझौतों से नहीं हुआ बल्कि गुरूगोविन्द सिंह, महाराणा प्रताप, रानी लक्ष्मीबाई, चन्द्रशेखर आजाद, सरदार भगत सिंह एवं अशफाक उल्ला खाँ जैसी महान विभूतियों की चारित्रिक दृढ़ता से हुआ है जिन्होंने बड़े प्रलोभनों से समझौता नहीं किया।

आज से हजारों वर्ष पूर्व ही हमने नैतिक शिक्षा का महत्व जान लिया था जिसका प्रथम उद्देश्य ही था समाज में चरित्रवान् नागरिकों का निर्माण करना। आज विडम्बना है कि हम अपने बच्चों को महंगे से महंगे स्कूलों में पढ़ा रहे है लेकिन इन तथाकथित शिक्षा के मंदिरों से नैतिक शिक्षा गायब है। आये दिन हमें छात्रों द्वारा की जाने वाली हिंसक वारदातों के बारे में सुनने एवं पढ़ने को मिल रहा है।

व्यक्ति की सफलता में तीन गुणों का प्रमुख स्थान है– व्यक्ति चरित्रवान होना चाहिए, ईमानदार होना चाहिए तथा परिश्रमी होना चाहिए। यदि किसी मनुष्य में यह

तीन गुण उपलब्ध है तो कोइ कारण नहीं की वह सफलता को प्राप्त नहीं कर पाये। इन तीनों गुणों में भी चरित्र प्रथम गुण माना गया है। आज समाज के हर क्षेत्र में चाहे वह राजनैतिक हो या व्यवसायिक या सामाजिक सभी में चारित्रिक गिरावट के समाचार सुनने को मिल रहे हैं।

हमें अच्छे चरित्र निर्माण के लिए निम्नलिखित छ: प्रमुख स्तम्भों का पालन करना चाहिए जिससे ना केवल हम अपने समाज बल्कि अपने परिवार के समक्ष भी एक आदर्श प्रस्तुत कर सके:–

1. **विश्वस्तता**– हमें ईमानदार होना चाहिए। हमें अच्छे कार्य करने के लिए साहसी होना चाहिए। हम जो कहें उसे करने में यकीन करें।
2. **सम्मान**– हमें दूसरों का सम्मान करना चाहिए। हमें मतभेदों को सहन करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए। असहमति एवं गुस्से को शांतिपूर्ण तरीके से हल करना चाहिए।
3. **उत्तरदायित्व**– जो तुम करना चाहते हो, करो लेकिन हमेशा अच्छा करो। अपने क्रिया-कलापों के प्रति जवाबदेह रहो।
4. **स्पष्टता**– नियमों के अनुसार कार्य करो। गैर जिम्मेदाराना तरीके से दूसरों पर दोषारोपण मत करो। दूसरों को सुना और अपना मस्तिष्क खुला रखो।
5. **दूसरों की चिन्ता करना**– दयालु बनो। आवश्यकता के समय लोगों की सहायता करो। दूसरों को क्षमा करो। दूसरों का धन्यवाद करो।
6. **नागरिकता**– अपने समुदाय को अच्छा बनाने के लिए प्रयासरत् रहो।

पर्यावरण की रक्षा करो। अच्छे पड़ोसी बनो।

हम सभी चाहते है कि हमारे समुदाय, व्यापारिक संस्थान, घर तथा स्कूल अच्छे चरित्र के स्थान हों, लेकिन अच्छा चरित्र ऐसा सोचने से संभव नहीं। हम सभी का दायित्व है कि हम गलत बातों में से अच्छी बातों को ढूंढे और सार्थक आदर्श प्रस्तुत करें। हमारी सफलताऐं एवं असफलताऐं हमारे चरित्र पर निर्भर करती है। हमे अच्छे आचरण को पुरस्कृत करना चाहिए तथा दूसरों को ऐसा करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। चरित्रवान नागरिकों के निर्माण से ही हम अच्छे नेतृत्व पैदा कर सकते है जिससे देश प्रत्येक क्षेत्र में ऊचे मानदण्ड स्थापित कर सकता है।

हिन्दी को अपनाना होगा

हिन्दी दिवस मना रही है, जनता हिन्दोस्तान की।
जिनको अब तक पता नही है, हिन्दी के सम्मान की।

सुबह से लेकर शाम तक जिनपे, अंग्रेजो को साया है।
हिन्दी की बागडोर हमने, उन्हीं को थमाया हैं।
विद्यालय से दफ्तर तक, बस अंग्रेजी की माया हैं।
राजनीति के दांव पेंच ने, हिन्दी को भुलाया हैं।
64 वर्षों की आजादी में, हिन्दी बनी गुलाम है।
अंग्रेजी मिली विरासत में, तब भारत बना महान है।
जब अंग्रेजी भरती किलकारी, व हिन्दी रोया करती हैं।
तब भारत मां के सीने से, आहें निकला करती हैं।
बचाना हिन्दोस्तान है तो, हिन्दी को अपनाना होगा।
कुछ कानून बनाने होंगे, और कुछ को हटाना होगा।

उप निरी (मं) गोपाल सिंह
72 बटालियन



वर्तमान की खिड़की

भूत और भविष्य की खिडकी के बीच एक और खिड़की है, जिसे वर्तमान की खिड़की कहते हैं। उस खिड़की के ऊपर एक चाबी टंगी हुई है, जिससे भविष्य का ताला खुल सकता है।

इंसान से यह गलती होती है कि वह भविष्य की खिड़की के ताले की चाबी भविष्य की खिड़की पर ही ढूँढता है यानी वह भविष्य के विचारों में कलाबाजियां लगाता रहता है। वह भविष्य की चाबी वर्तमान को छोड़कर यहां-वहां टटोलते रहता है। अगर इंसान को पता चल जाए कि भविष्य की चाबी वर्तमान की खिड़की पर रखी है तो वह

वर्तमान को खिड़की पर ही चाबी ढूंढेगा, वहां उसे चाबी मिल जायेगी और उसके सामने जीवन का दूसरा महान रहस्य खुल जायेगा।

जीवन का दूसरा महान रहस्य जानने के बाद हमारा जीवन नया, तेज, ताजा, बनेगा। जब भी नया साल आता है तो लोगों को बहुत जोश आता है। कई लोग प्रतिज्ञाएं लेते है कि नये साल में हम यह करेंगे..... वह करेंगे और बड़े जोश से शुरूआत होती है मगर कुछ ही दिनों के बाद वे ढीले पड़ जाते हैं। वे वर्तमान दिवस को नया साल नही समझते। हर दिन नया साल है। हर दिन हमारी बची हुई जिंदगी का पहला दिन हैं, इस सोच के साथ वर्तमान में जीयें।

लोग नये साल में सारे नये काम एक दिन में करने की कोशिश करते हैं। इस तरह किये गये काम दो या तीन दिन तक ही चलते हैं और चौथे दिन से वे फिर नये साल (भविष्य) का इंतजार करना शुरू करते हैं।

वर्तमान को स्वीकार करने की चाबी इस्तेमाल करें, समस्याओं से न घबरायें। हर दिन स्वीकार की शक्ति का परीक्षण करें। अपने धैर्य का भी परीक्षण करें। हर घटना में स्वीकार भाव से कार्य करें। स्वीकार की चाबी यानी हाँ की चाबी।

पिछले वर्ष हम ने बहुत कुछ पाया जिसके लिए हमें बलिदान भी देना पड़ा। इस वर्ष हम अपने व्यक्तिगत एवं यूनिट के लक्ष्य तय करेंगे तथा उसे हासिल करने के लिए भरसक प्रयास करेंगे। यह सब हम मिल-जुल कर करेंगे। इस वर्ष का नारा होगा 'TEAM TOGETHER EVERY ONE ACHIEVEMORE'.

मुझे याद रखने के लिए

रॉबर्ट एन. टेस्ट द्वारा –जोगीन्दर सिंह
कमांडेण्ट–72 बटा०

क) मेरी आंखें उस आदमी को दे देना जिसने कभी उगता हुआ सूरज न देखा हो, और न ही किसी नन्हें-मुन्ने का मासूम चेहरा, या फिर नारी की आंखो में अगाध प्रेम।

ख) मेरा दिल उसे देना जिसके दिल ने उसको सिवाय पीड़ा के और कुछ न दिया हो।

ग) मेरा खून उस नौजवान को देना जिसे जख्मी हालत में उसकी गाड़ी के मलबे में से निकाला गया हो, ताकि उम्र पाकर वह अपने पोते-पोतियों को खेलता देख सके।

घ) मेरे गुर्दे उसे देना जो हफ्ते दर हफ्ते मशीन के आधार पर ही जिन्दा रह रहा हो।

ड.) मेरा मांस, मेरे शरीर की हर हड्डी, हर रेशा, हर नाड़ी निकाल लो लेकिन कोई

ऐसा तरीका खोज निकालो जिससे एक अपाहिज बच्चा चल सके।

च) मेरे दिमाग का हर कोना खोज लो, जरूरत पड़े तो मेरी कोशिकायें भी ले लो और उन्हें पनपने दो ताकि किसी दिन कोई गूंगा बच्चा पक्षी की आवाज सुनकर खुशी से चिल्ला उठे और बहरी बच्ची खिड़की पर टपकती वर्षा की बूंदों की टप-टप सुन सके।

छ) मेरे बचे-खुचे शरीर को जलाकर उसकी राख हवा में बिखेर देना ताकि उस राख से फूल खिल सकें।

ज) अगर तुम्हें कुछ दफनाना ही है तो दफना देना मेरी कमियाँ, मेरी कमज़ोरियाँ और दूसरों के लिए मेरे दिल में बसी तमाम रंजिशें।

झ) मेरे पाप शैतान को दे देना।

ट) मेरी आत्मा परमात्मा को दे देना।

ठ) अगर कभी मुझे याद करना चाहो तो किसी जरूरतमन्द को अपने दो मीठे बोलों और मदद का सहारा दे देना।

ढ) अगर तुम वही करोगे जो मैंने कहा है तो मैं अमर हो जाऊँगा।

प्रहरी देश के

दुःख सहकर लक्ष्य की तरफ बढ़ना
है यही बहादुरों की निशानी,
फौलादी शरीर में भी बसता है कोमल दिल,
बताता है यह आखों का पानी,
दुःख सहकर लक्ष्य की तरफ बढ़ना,
यही है बहादुरों की निशानी।

दूर नहीं रह सकता तुमसे कभी भी,
प्रियजनों की ममता का दामन,
बरसता रहे भले ही कितना
कष्टों का तुम पर सावन,
नजर आती है पत्थरों से भी तुमको

दुआओं की निशानी
दुःख सहकर लक्ष्य की तरफ बढ़ना,
यही बहादुरों की निशानी।
तुम वो पेड़ हो जो धूप सहकर
छांव करते हो प्रदान
तुम वो दिया हो जो खुद जलकर
हरते हो अंधेरे का अभिमान
व्यर्थ भला जा सकती है कैसे
परोपकारिता की तुम्हारी कुर्बानी
दुःख सहकर लक्ष्य की तरफ बढ़ना
यही बहादुरों की निशानी।
कर्तव्य के आगोश में,
छिपाकर दिल के सारे अरमान
करते रहो अर्ज सदा बस,
देश का ध्यान,
यही है तपस्या उस मालिक की
और यही है सच्चे साधक की कहानी
दुःख सहकर आगे बढ़ना,
यही है बहादुरों की निशानी।

सिपाही, पंकज कुमार सैनी
123 बटालियन

पेन्सिल

जोगीन्दर सिंह
कमांडेण्ट–72 वाहिन

पेन्सिल बनाने वाले ने पेन्सिल को बॉक्स में डालने से पहले उसे किनारे पर रखा और उसने पेन्सिल से कहा कि तुम्हें दुनियां में भेजने से पहले, तुम्हे पांच चीजें

जाननी होगी और उन्हें हमेशा याद रखना होगा तथा उन्हे कभी भूलना नही, तभी तुम अच्छी पेन्सिल बन पाओगी।

एक: तुम बहुत सारे काम कर सकती हो यदि तुम अपने आप को किसी के हाथ में दोगी।

दो : तुम्हें इसका अनुभव होगा कि तुम्हें समय-समय पर तीखा छीला जाएगा लेकिन इससे तुम और भी अच्छी पेन्सिल बन पाओगी।

तीन : तुमसे गलती भी होगी लेकिन तुम अपनी क्षमता से उसे सुधार सकोगी।

चार : तुममे सबसे बड़ी खूबी यह है कि तुम्हारे अन्दर क्या है।

पांच : जहां कहीं भी तुम्हें उपयोग किया जाए वहां पर अपनी छवि छोड़ते रहना चाहे।

जैसी भी परिस्थितियां हों। तुम्हे लिखते रहना है।

पेन्सिल ने समझा और वादा किया कि वह इसे याद रखेगी और यही बातें दिल में रखते हुए बॉक्स में चली गई।

पेन्सिल की तरह आप सब भी इन्हे हमेशा याद रखना और कभी भूलना मत और इसी तरह आप भी एक सर्वश्रेष्ठ इन्सान बनोगे।

एक : आप बहुत कुछ कर सकते हो लेकिन तुम्हें अपने-आप को भगवान को समर्पित करना होगा। अपने राष्ट्र को समर्पित करना होगा तथा दूसरों को आप तक पहुँचने की इजाजत दो ताकि आप के अन्दर मौजूद अनगिनत सौगातों से वे लाभान्वित हो सकें।

दो : जीवन दुःखों का पहाड हैं जिसका तुम्हें समय-समय पर कड़वा अनुभव हुआ होगा, यही सब तुम्हें और मजबूत बनाएगा।

तीन : आप जो भी गलतियां करेंगें उन्हें सुधारने के लिए तुम्हारे पास क्षमता हैं। उन गलतियों को ठीक करना होगा।

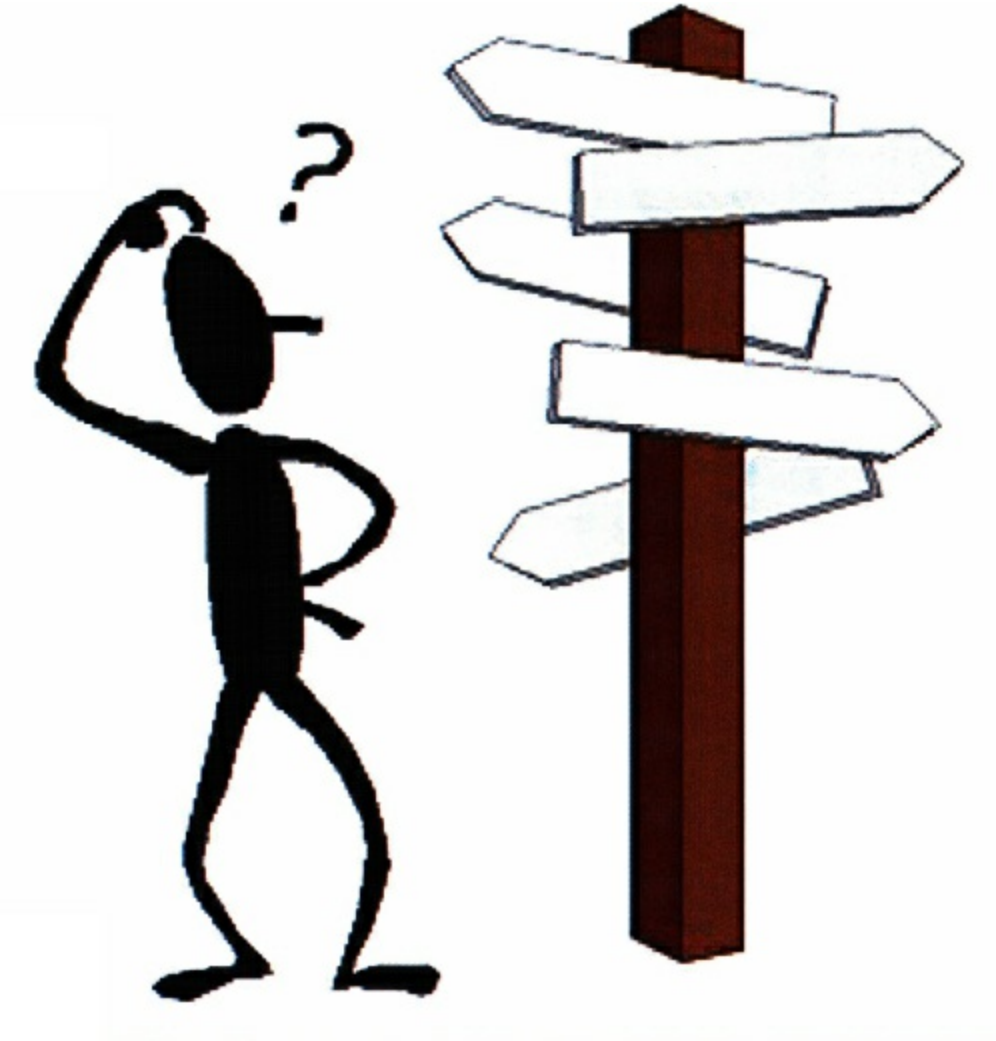
चार : तुममे महत्वपूर्ण भाग यह है कि तुम्हारे अन्दर क्या है।

पाँच : तुम जहां भी चलो वहां अपनी छवि छोड़ो, चाहे परिस्थितियां कैसी भी हो। तुम्हे अपने कर्तव्य की ओर अग्रसर रहना है।

यही कहावत आप पेन्सिल की तरह याद रखो जिससे तुम्हारा साहस बढ़ेगा कि तुम एक विशेष व्यक्ति हो और तुम अपने दायित्वों को पूरा करोगें, जिस कार्य के लिए तुमने जन्म लिया है। कभी भी अपने आप को निरूत्साह न होने दो और सोचो कि तुम्हारा जीवन महत्वहीन नहीं है तथा उसे कोई परिवर्तित नहीं कर सकता।



व्यंग्य



बहुत कन्फ्यूजन है

अनिल गुप्ता, उप कमाण्डेन्ट,
99 बटालियन आर ए एफ

उस दिन तो गजब हो गया। आई जी साहब का इंस्पेक्शन था। शाम को कमाण्डेन्ट साहब ने मुझे कहा कि आई जी साहब के कमरे में कुछ मैगजीन रखवा देना। शाम का वक्त था, बाजार से नई मैगजीन मंगवाना सम्भव नहीं था, कमाण्डेन्ट साहब ने कहा कि मेरे घर से मंगवा लो। मैंने एक लड़के को कमांडेंट साहब के घर मैगजीन लाने भेजा और निश्चिंत हो गया।

अगले दिन मुझे पता चला कि वह लड़का मैगजीन लाया ही नहीं। मैंने मार्कर में उसे बुला कर वजह पूछी, तो बोला, “साहब का सिक्योरिटी एड कह रहा था कि वह

साहब से पूछ कर देगा।"

"मुझे गुस्सा तो बहुत आया मगर फिर मैंने सोचा कमांडेंट साहब का सिक्योरिटी एड हैं, साहब से बिना पूछे कैसे दे सकता है। कमांडेंट साहब मार्कर में ही मौजूद थे, मैंने उनसे पूछ कर लड़के को फिर उनके घर भेज दिया।

मगर सिक्योरिटी एड इतना वफादार था कि उसने मैगजीन फिर भी नहीं दी। बोला, "जब तक कमांडेंट साहब मुझे नही बोलेंगे मैं नहीं दूंगा।"

साढ़े नौ बजे कमांडेंट साहब कार्यालय में आए तो मैंने उन्हें फिर कहा, तो वह हैरान परेशान से बोले "तुमने मेरे घर से क्या मंगवाया था।

मैंने कहा, "सर मैगजीन"।

वो बोले, "और मेरा लड़का, मेरे पिस्टल की दोनों मैगजीन निकाल कर, मेरा इंतजार कर रहा था कि मैं आऊंगा तो मुझ से पूछ कर देगा।"

मैं वाकई सिक्योरिटी एड की वफादारी का कायल हो गया। अगर कहीं उस ने पिस्टल की मैगजीन दे दी होती और दूसरा लड़का जा कर उन्हे आई जी साहब के कमरे में रख आया होता, तो क्या स्थिति पैदा होती, सोच कर ही मुझे घबराहट होने लगी।

मैंने दोनों लड़कों को अपने पास बुलवाया। दोनों आकर मेरे सामने खड़े हो गए, "सर आप को बताना चाहिए था कि पढ़ने वाली मैगजीन चाहिए कि हथियार मैं लगाने वाली। अब हमें कैसे पता चलेगा कि आप कौन से मैगजीन मांग रहे हैं ?"

मैं समझ गया, गलती मेरी ही हैं। मैंने उन्हें समझाया, "मैगजीन जिसके अंदर छपा होता हैं, कहानियां, खबरें और बाहर का पेज रंगीन होता हैं, और जो कागज की होती है वो वाली मैगजीन।"

'सर वो तो बहुत सारी पड़ी हैं, कितनी दे दूं।'

"बहुत सारी नहीं, जो कल आयी है, और जो अंग्रेजी में है, वो वाली दे दो।"

"सर अगर पहले ऐसे बता देते तो दिक्कत क्यों होती?"

मैं समझ गया सारी गलती मेरी ही हैं, मैं यह भी समझ गया कि वो लड़का कमरे से बाहर निकल कर क्या कह रहा होगा।

"ये साहब लोग भी इतना कन्फ्यूजन करते हैं, पहले कोई काम ठीक से बताएंगे नहीं, और बाद में गलती हो जाएगी तो हमीं को डाटेंगे।"

अभी मैं अपने सहयोगी अफसरो को यह वाकया सुना ही रहा था कि एक और वारदात हो गयी।

कमांडेंट साहब और हम सब लोगों ने मिल कर बहुत मेहनत से यूनिट की एक अपनी त्रैमासिक पत्रिका 'उद्भव' का प्रकाशन किया था। जवानों को रचनात्मक कार्यो में शामिल करने के लिए कमांडेंट साहब का यह एक ड्रीम प्रोजेक्ट था। पत्रिका का विमोचन आई जी साहब के सैनिक सम्मेलन के दौरान होना था, उस के लिए पत्रिका

को अच्छी तरह रंगीन कागज में लिपटवा कर लाया गया था, और वह हमारे द्वितीय कमान अधिकारी साहब के रूम में रखी थी।

सैनिक सम्मेलन से ऐन पहले मैंने देखा कि पत्रिका वहां नहीं है। मैंने द्वितीय कमान अधिकारी साहब के ड्राईवर को बुलाया और बताया कि द्वितीय कमान अधिकारी साहब के रूम में बायीं दराज में नीले रंग के कागज में लिपटी मैगजीन पड़ी है उसे उठा लाओ।

ड्राईवर चला तो गया, मगर उसकी वापसी के कोई आसार नहीं दिखाई दे रहे थे। हम सब लोग परेशान हो गये। एक दूसरे लड़के को भेजा गया। जो साईकिल से गया और पत्रिका उठा कर ले आया। मगर ड्राईवर जिप्सी ले कर गया था और उसका कुछ पता नहीं था। थोड़ी देर बाद द्वितीय कमान अधिकारी साहब का फोन बजने लगा। उन की मैडम का फोन था, उन्होंने सिक्योरिटी एड के साथ मिल कर पूरे घर को छान मारा था, मगर वहां कोई पत्रिका नहीं थी। द्वितीय कमान अधिकारी साहब मुझसे बोले, "अरे तुमने मेरे ड्राईवर को वहां भेज दिया। वो पता नहीं मेरे घर मैं क्या तलाशी करवा रहा है।"

बाद में ड्राईवर से पूछा, तो वो बड़ा मासूम बन कर बोला, "साहब इसमें मेरी क्या गलती हैं, आपने ही तो कहा था कि द्वितीय कमान अधिकारी साहब के रूम में मैगजीन रखी है, अगर आफिस में से मैगजीन लानी थी, तो आप को आफिस कहना चाहिए था।"

मैंने अपना सिर पीट लिया, और सोचने लगा कि ऐसा मेरे साथ ही क्यों होता हैं? मगर दो दिन पहले का एक किस्सा जब एडजुटेंट साहब ने मुझे सुनाया तो मैं समझ गया इस कन्फ्यूजन का शिकार सिर्फ मैं ही नहीं बाकी अफसर भी होते रहते हैं।

हुआ यों कि आई जी साहब का इंस्पेक्शन नोट दिल्ली जाना था। एक लड़का दिल्ली जाने के लिए डिटेल कर दिया गया। उसे अच्छी तरह ब्रीफ कर दिया गया। उस ने सारी डाक ले ली।

कंट्रोल रूम को बता दिया गया की इंस्पेक्शन नोट तैयार हो रहा है। तैयार होने पर आपके पास भेज दिया जायेगा। जाने से पहले उस लड़के को सौंप दिया जाए। एडजुटेंट साहब ने रात ढाई बजे तक कम्प्यूटर पर बैठ कर नोट तैयार किया और कंट्रोल रूम को सौंप कर चले गये।

सुबह मार्कर के समय कंट्रोल रूम से पूछा तो पता चला कि डाक कंट्रोल रूम में ही पड़ी है और वह लड़का सुबह चार बजे स्टेशन बस पकड़ कर निकल गया है और दिल्ली वाली ट्रेन में बैठकर कूच भी कर चुका है।

कंट्रोल रूम से जवाब तलब किया गया तो जवाब मिला कि वो लड़का सुबह कंट्रोल रूम में आया ही नहीं। वह रात को आया था तब कोई डाक नहीं थी।

"डाक तो रखी थी, अगर वो आता तो उसे दे देते।"

"लेकिन जब तुम लोगो को बता दिया गया था कि जरूरी डाक है, तो सुबह स्टेशन

बस से पहले उसे बुलाकर क्यों नहीं दी?”

“सर आपने ये थोड़ी कहा था कि उसे बुला कर देना। आपने कहा था कि वो आएगा और ले जाएगा। वो आया ही नही तो हम क्या कर सकते हैं।”

उस लड़के की ट्रेन हैदराबाद से बाहर निकल चुकी थी। उसे फोन कर वापस बुलाया गया। जाहिर है वापस आकर जाने में उसे परेशानी हुई। मगर उसका जवाब भी यही था, “साहब आपने यह कहा था कि सुबह जाने से पहले कंट्रोल रूम में आना। मैं रात में कंट्रोल रूम में आया था, तब कोई डाक नहीं थी। तो मैंने सोचा कि जो डाक मुझे मिल गयी है वही होगी।

डांट-डपट तो जो होनी थी हो गई, मगर लड़कों के चेहरों पर स्पष्ट छपा था, “कन्फ्यूजन तो साहब लोग खुद पैदा करते हैं, डांट हम लोगों को पड़ती हैं।”

मैंने घटना से सबक लिया। अगली बार एक जरूरी डाक जानी थी, समयबद्ध थी। मैंने लड़के को बुलाया, कंट्रोल रूम वाले को भी बुलाया। दोनो को एक साथ समझाया।

“देखो ये एक डाक दिल्ली जानी है, मैं इसे तैयार कर रहा हूं, रात मुझे फोन से बता भी देना।”

मैंने तीन बार दोनों से दोहरवाया कि उन्हें क्या करना है और रात लगभग डेढ़ बजे डाक कंट्रोल रूम में छोड़ कर चला गया। घर सोते-सोते ढ़ाई बज गये। अभी आंख लगी ही थी कि फोन की घंटी बज गयी। देखा तो तीन बज रहे थे।

फोन उठाया तो दूसरी तरफ वो लड़का था। बोला, “साहब मैंने डाक ले ली है।” मैंने कहा, “ठीक है।” और सो गया।

अभी मेरी आंख लगी भी नही थी कि है फिर फोन बज उठा, “मैंने आंख उठा कर देखा तो साढ़े तीन बज रहे थे। फोन उठाया तो कंट्रोल रूम था। बोला, “साहब वो लड़का डाक ले गया।”

मैंने उसे ‘थैक्यू’ बोला और एक गहरी सांस लेकर चादर सिर तक खींच ली। इतनी गहरी नींद आ रही थी कि अचानक लगा कि कहीं आग लग गई है और फायर ब्रिगेड की घंटी बज रही है। घबरा कर आँख खोली तो सिरहाने रखा फोन बज रहा था। सामने देखा तो चार बज रहे थे। फोन उठाया तो बीएचएम लाईन पर था। बोला, “साहब लड़के को डाक दिला कर स्टेशन बस में बिठा दिया है।”

मैने कहा, “ठीक है” और बिस्तर पर लुढ़क गया। गहरी नींद में मेरी आंखों के सामने कार्टून नेटवर्क का टाम एंड जैरी शो चल रहा था। जैरी चूहा गहरी नींद में सो रहे टाम बिल्ले के गले में घंटी बांधने के लिए दबे पांव उस की तरफ बढ़ रहा था कि अचानक बिल्ले ने हाथ बढ़ा कर उसकी गर्दन दबोच ली और उसके सिर के आगे घंटी बजाने लगा। नींद में मेरा दम घुटने लगा और सिर में जोर की घंटियां बजने लगी। मैंने नींद से बोझिल पलकों को बड़ी मुश्किल से ऊपर उठाया। आंखों में ऐसे जलन हो रही थी मानों किसी ने मुट्ठी भर मिर्च डाल दी हों। सिरहाने रखा फोन ऐसे बज रहा

था मानो फोन नहीं खतरे का सायरन बज रहा हो। मैंने हाथ बढ़ा कर फोन उठाया तो उस में तीन नंबर गेट का संतरी था। बोला, “साहब स्टेशन बस चली गयी और उसमें दिल्ली जाने वाला लड़का भी चला गया।”

मैंने अपना सिर पकड़ लिया। मगर यूनिट में सब खुश थे। चर्चा थी साहब बिल्कुल स्पष्ट आदेश देते हैं और उस की अनुपालना सुनिश्चित करते हैं। कोई कन्फ्यूजन नहीं रहता।

तू वीर सिपाही बढ़ता चल

चाह रहा है देश आज, जन-जन के दुःख मिटाता चल
तू वीर सिपाही बढ़ता चल, तू वीर सिपाही बढ़ता चल

भारत मां के वीर लाडले, तेरा नाम अमर है
जब-जब पड़ी देश पर विपदा तूने कसी कमर है
विश्व शांति के दूत, शांति का शीतल स्त्रोत बहाता चल
तू वीर सिपाही बढ़ता चल, तू वीर सिपाही बढ़ता चल

शौर्य-शक्ति के वीर पुजारी, मरना हमें सिखा दे
भाई-भाई लड़े न ऐसा-नैतिक पाठ पढ़ा दे
सह-अस्तित्व की मधुर ज्योति से, जग को मोहित करता चल
तू वीर सिपाही बढ़ता चल, तू वीर सिपाही बढ़ता चल

अपना सब-कुछ वार देश को, बंधन मुक्त कराया
जीने का अभिमान जगाकर, मानव-धर्म बताया
तू सुख स्नेह, सत्य के पथ में, सबको गले लगाता चल
तू वीर सिपाही बढ़ता चल, तू वीर सिपाही बढ़ता चल

श्री घीसालाल जिन्दल
भू.पू. सू.मे. (मंत्रा)
नीमच (म प्र)

स्वास्थ्य



हृदय रोग

क्या है
क्यों होता है
और कैसे बचें

बल के जवानों को स्वास्थ्य संबंधी सलाह

प्रदीप कुमार जोशी, उप निरीक्षक/म,

पाश्चात्य देशों में प्रतिवर्श होने वाली मौतों में सबसे अधिक संख्या हृदयघात अर्थात् दिल के दौरे से मरने वालों की रहती है। अमेरिका में प्रति वर्ष लगभग ढाई लाख लोग दिल के दौरे के शिकार हो जाते हैं। भारत में भी हृदय-रोगियों की संख्या पिछले कुछ सालों में लगातार बढ़ रही है। लगभग 24 लाख हिन्दुस्तानी प्रतिवर्ष हृदय रोगों के कारण काल के ग्रास बन जाते हैं। यदि जनचेतना के माध्यम से हृदय रोगों की रोकथाम के सतत् उपाय तुरन्त ही प्रारम्भ नहीं किए गए, तो इक्कीसवीं सदी में दिल की बीमारी निश्चय ही भारत में महामारी का रूप धारण कर लेगी।

हृदय रोग का मुख्य कारण होता है रक्तवाहिनी धमनियों का लचीलापन समाप्त होकर उनमें कड़ापन आ जाना एवं उनकी भीतर की परत पर चर्बी जैसे पदार्थों कोलस्ट्रोल का जमा हो जाना। विज्ञान ने लगभग उन सभी कारणों का पता लगा लिया है जो इस जमाव प्रक्रिया को बढ़ाते हैं अर्थात् गति देते हैं। यदि कोई व्यक्ति सदैव ही अधिक वसायुक्त भोजन करता है, व्यायाम नहीं करता, अधिक मोटा है, धूम्रपान व मदिरापान करता है, किसी न किसी कारण से मानसिक तनाव में रहता है तो समझ लीजिए कि उसकी धमनियों में उपरोक्त चीजों से बचने वाले मनुष्य की तुलना में धमनियों के कड़ा होने तथा उनके भीतर कोलस्ट्रोल के जमाव की गति तीन-चार गुना अधिक हो जाएगी। अतः सही जीवन पद्धति अपनाई जाए एवं खानपान के सम्बन्ध में चली जा रही कुछ सामाजिक व पारम्परिक भ्रांतियों को दूर करके सही जीवन पद्धति के सम्बन्ध में जागरूकता पैदा की जाए।

3. अब तक हुए शोध से यह लगभग प्रमाणित हो चुका है कि निम्नलिखित कारक धमनियों में जमाव की प्रक्रिया को गतिमान करते हैं :–

(क) खून में अधिक कोलस्ट्रोल एवं चर्बी का होना।

(ख) मोटापा

(ग) धूम्रपान

(ध) उच्च रक्तचाप

(ड) मधुमेह

(च) निष्क्रिय जीवन अर्थात व्यायाम की कमी

(छ) मानसिक तनाव

(ज) आनुवांशिक कारण

(झ) अन्य कारण जैसे पुरूष होना एवं शराब पीना आदि।

कोलस्ट्रोल और वसा की मात्रा घटाने के उपाय

(1) खान पान में संशोधन:– कोलस्ट्रोल की दैनिक आवश्यकता 150-200 मिलीग्राम होती है। जब लगातार इससे अधिक कोलस्ट्रोल शरीर को प्राप्त होता है तो हमारे शरीर का संतुलन तंत्र गड़बड़ा जाएगा। अतः यदि आप मांसाहारी हैं तो पहला काम यह करना है कि किसी भी जानवर का आंगिक मांस खाना बिल्कुल बन्द कर दें और यदि आप दूध के शौकीन हैं तो इसमें भी कुछ कटौती करनी होगी।

(2) केला एवं सेब में कोलस्ट्रोल घटाने की विशेष गुण होता है। अतः इसका प्रयोग भोजन में नियमित रूप से किया जाना चाहिए एवं सलाद बिना नमक के भोजन का अभिन्न अंग होना चाहिए।

(3) कच्चा लहसुन की एक दो फांकें/कच्चे प्याज/शहद एक दो चम्मच/चार या पांच बादाम के दाने/दही का नियमित सेवन कोलस्ट्रोल को घटाता है।

(4) मोटापा हृदय के लिए हानिकारक हैं अतः आदर्श वजन होना अति आवश्यक है। आदर्श वजन देखने के लिए पैरों को जोड़कर सीधे तन कर खड़े हो जाएं। अब गर्दन नीचे करके पैरों की उंगलियां देखें, ध्यान रहे, है आगे की तरफ झुकें नहीं, केवल गर्दन झुकाएं। इस प्रकार गर्दन झुकाने से यदि पैरों की उंगलियां दिख जाती हैं तो आप मोटे नहीं है।

(5) लौह तत्व वाले भोजन के अधिक प्रयोग से भी हृदय को हानि हो सकती है। जो लोग रक्त दान करते हैं उनमें हृदयघात कम होता है क्योंकि उनके शरीर में अधिक लौह तत्व जमा नहीं हो पाता।

(6) सभी तरह के मौसमी फलों का भरपूर उपयोग करें तथा भोजन में हरी तथा पत्तेदार सब्जियों जैसे लौकी, तुरई, पालक, बथुआ, चौलाई, मेथी का अधिक से अधिक उपयोग करें क्योंकि इसमें कैलोरी बहुत कम होती है और रेशा अधिक होता है। टिंडा, बैंगन, गोभी, गाजर, मूली एव सभी प्रकार की फली की सब्जियाँ अत्यन्त गुणकारी हैं।

(7) शराब में भी शक्कर की तरह कैलोरी होती है। अतः उसका प्रयोग न करें। जल से ही जीवन है। पानी में कोई कैलोरी नहीं होती। अतः पानी खूब पीएं।

सौ दवाओं की एक दवा : व्यायाम

मॉर्टन वांकर ने अपनी पुस्तक टोटल हैल्थ में व्यायाम को एक चिकित्सा पद्धति मानते हुए उसके तीस लाभ गिनाए हैं। नियमित व्यायाम से होने वाले लाभों का उल्लेख निम्न प्रकार किया जा रहा है :–

(1) हृदय की मांसपेशियां सशक्त होती है, जिससे उनकी कार्यक्षमता बढ़ती है एवं अचानक दिल का दौरान पड़ने की सम्भावना कम हो जाती है।

(2) हृदय की मांसपेशियों में रक्त संचार में वृद्धि होती है, जिससे उन्हें अधिक आक्सीजन प्राप्त होती है एवं शरीर के वजन को नियन्त्रण में रखना आसान होता

है।

(3) बुरे कोलस्ट्रोल की मात्रा घटती है, खून में थक्का बनने की क्रिया शिथिल पड़ जाती है, मधुमेह का खतरा कम हो जाता है साथ ही मानसिक तनाव एवं मानसिक अवसाद कम होता है। धूम्रपान करने एवं शराब पीने की तलब में कमी आती है। हड्डियों में पाई जाने वाली मज्जा अधिक कार्यशील हो जाती है जिससे खून के लाल कणों का उत्पादन बढ़ जाता है जिससे खून की आक्सीजन को वहन करने की क्षमता बढ़ती है साथ ही बुढ़ापा आने की क्रिया शिथिल हो जाती है।

किसी ने सत्य ही कहा है कि यदि ऐसी कोई दवा बाजार में उपलब्ध हो जो एक साल इतने सब फायदे देती हो तो लाखों रूपयों की कीमत देकर भी लोग उसे खरीदना चाहेंगे। हृदय रोगियों के लिए घूमना सबसे उत्तम व्यायाम है। अतः घूमने को अपनी दिनचर्या का अंग बना लें।

बल के कार्मिकों का हृदय रोग से बचने के उपाय :–तत्व बिन्दु

1. अच्छे स्वास्थ्य के लिए मोटापे की नींव बचपन में ही पड़ जाती है। इसलिए बच्चों को प्रारम्भ से ही अधिक वसा वाले भोजन नहीं खिलाएं।
2. अपने भोजन के लिए निम्नलिखित बातों के प्रति जागरूक रहें :–
    1. भोजन में वसा कम होनी चाहिए, विशेषकर संतृत्व वसा।
    2. चीनी का उपयोग अधिक नहीं हो।
    3. मौसमी फल एवं हरी पत्तेदार सब्जियां अधिक से अधिक खाई जाएं, जिससे पर्याप्त रेशा व खनिज प्राप्त होते रहें।
    4. मैदा, डिब्बाबन्द खाद्य पदार्थ एवं रिफाइन्ड तेलों का उपयोग कम से कम हो।
    5. कोलस्ट्रोलयुक्त पदार्थो का कम उपयोग करें।
    6. मोटापा न होने दें।
    7. नियमित व्यायाम करें।
    8. धूम्रपान नहीं करें, करते हों तो छोड़ दें।
    9. मदिरापान नहीं करें और करना ही हो तो सीमित मात्रा में।
    10. सदा शांत एवं प्रसन्नचित रहने का प्रयास करें। अकेले रहने के बचाय लोगों से घुलमिल कर रहने का प्रयास करें, दूसरों का भला चाहें एवं निस्वार्थ भाव से लोगों की मदद करें।
    11. अचानक दौड़ लगाने की स्थितियों से बचें। जैसे बस या गाड़ी पकड़ने के लिए जल्दबाजी न करें।

रिपोर्ट

ग्रुप केन्द्र इम्फाल की ब्रज जैसी रंगीली होली

अनुपम शर्मा
द्वि० कमांडर अधिकारी
पु०उ० महानिरी० ग्रु०के० के०रि०पु० बल, इंफाल मणिपुर

रंगों का त्योहार होली फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस रंगों के पर्व होली का पौराणिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से विशेष महत्व है। एक पौराणिक आख्यान के अनुसार हिरण्यकश्यप नामक दैत्यराज हुआ करते थे। वह अत्यंत अत्याचारी एवं क्रूर प्रवृति का था। उसने भक्त स्वभाव के अपने पुत्र प्रहलाद पर अनेक अत्याचार किए। हिरण्यकश्यप चाहता था कि उनका पुत्र प्रहलाद अपने पिता को ही भगवान मानें इसलिए वह ईश्वर भक्त प्रहलाद से सदैव क्रुद्ध रहता था। अनेक अत्याचारों के असफल होने पर उसने एक अंतिम उपाय किया। हिरण्यकश्यप की एक होलिका नाम की बहन थी जिसे भगवान की कृपा से वरदान में एक विशेष प्रकार का अग्नि रोधक दुपट्टा मिला था। उस दुपट्टे को धारण करने पर अग्नि होलिका को जला नहीं सकती थी। हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन होलिका के सहयोग से प्रहलाद को जलाने की बात सोची। होलिका दुपट्टा ओढ़ कर प्रहलाद को गोद में लेकर आग में बैठ गई। भगवान् की कृपा से हवा का तेज झोंका आया जिसके कारण दुपट्टा उढ़ कर प्रहलाद पर जा गिरा जिससे होलिका तो जल गई परन्तु प्रहलाद सकुशल बच गया। इस प्रकार धर्म की अधर्म पर विजय होने पर लोगों ने एक दूसरे को गुलाल एवं रंग इत्यादि लगाकर खुशी मनाई थी। कहते है कि तभी से हर वर्ष परम्परागत इस दिन होलिका का दहन करके होली मनाई जाती रही है।

इसी परम्परा को कायम रखते हुए ग्रुप केन्द्र केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल इम्फाल कैम्पस में 10 मार्च 2009 को 1845 बजे होली का त्योहार बड़ी धूम-धाम से समारोह स्वरूप मनाया गया। जिसमें होली स्थल पर हवन का आयोजन किया गया। श्री अनिल दुग्गल पुलिस उप महानिरीक्षक ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल इंफाल द्वारा सभी ग्रहों एवं देवी देवताओं को श्रद्वा पुष्प अर्पित किए गए। पूजा अर्चना के पश्चात श्री अनिल दुग्गल, पुलिस उप महानिरीक्षक ग्रुप केन्द्र, इंफाल द्वारा विधिवत होलिकादहन की परम्पराओं के अनुरूप मंत्रोच्चारण के बीच होली मण्डप के पांच चक्कर लगाकर

होली में अग्नि प्रज्जवालित कर होली दहन की रस्म पूरी की। होली दहन जल-पूजन की रस्म श्री अनुपम शर्मा द्वितीय कमान अधिकारी द्वारा गंगाजल कलश होली मण्डप परिक्रमा की रस्म निरीक्षक/हिंदी अनुवादक कृष्ण कुमार शर्मा द्वारा पूरी की गई। इसके पश्चात् समारोह में उपस्थित अधिकारीगण अधीनस्थ अधिकारीगण सभी जवान एवं उपस्थित केरिपुबल परिवार सदस्यों ने होली की पवित्र फेरी लगाई तथा सभी ढोलक और तबले की ताल पर होली है के नारे लगाते हुए खुशी से झूम उठे। इस अवसर पर समारोह में उपस्थित तमाम सदस्यों को प्रसाद वितरित किया गया।

होली के अगले दिन 11 मार्च 2009 को सुबह ग्रुप केन्द्र फुटबाल मैदान में फाग खेलने के लिए समस्त राजपत्रित अधिकारी, अधीनस्थ अधिकारीगण एवं जवान उपस्थित हुए। रंगों के त्योहार होली को मनाने के क्रम में फाग खेलने की शुरूआत श्री अनिल दुग्गल, पुलिस उप महानिरीक्षक ग्रुप केन्द्र, इंफाल द्वारा जवानों को रंग एवं गुलाल लगाकर की गई। समारोह में उपस्थित श्री जगमोहन सिंह, उप कमाण्डेन्ट, श्री बी० आर० यादव सहा०कमा०, श्री लियाकत हुसैन सहायक कमाण्डेन्ट एवं एस.एम.ओ.एस. ईश्वर चन्द शर्मा, एस.एस.ओ.एस. जगदीश चन्द्र पूनीया तथा उपनिरीक्षक एल.सी. दोरहा हरमोनियम की धुन और तबले की ताल पर जवानों के साथ थिरकते नजर आए। हट जा ताऊ पाछेने का गाना बजते ही समारोह में उपस्थित सभी जवान एवं बच्चों ने खूब जमकर नृत्य किया तथा रंग एवं गुलाल की वर्षा की। इस प्रकार ग्रुप केन्द्र इम्फाल की होली भी ब्रज की होली से कम नहीं लग रही थी। गाने-बजाने और नृत्य के पश्चात समारोह में उपस्थित सभी सदस्यों को जलपान कराया गया। बाद में सभापति महोदय की अनुमति से होली फाग समारोह के समापन की घोषणा की गई।

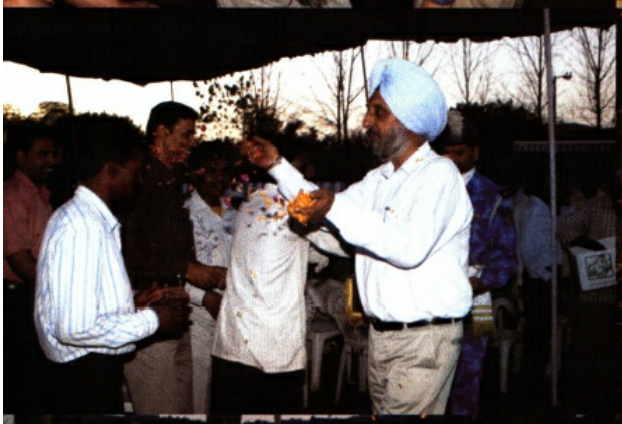




महानिदेशालय में होली













धूम्रपान रहित 182 वी बटालियन

कृष्ण गोपाल शर्मा
कमाण्डेन्ट 182 बटालियन

182 बटालियन को धूम्रपान रहित बटालियन के रूप में तैयार करने के आशय से इस बटालियन में 31 दिसंबर 2007 से एक विशेष अभियान चलाया गया जिसके तहत सर्वप्रथम कम्पनीवार धूम्रपान करने वाले कार्मिकों की सूची तैयार करके उन्हें इससे होने वाले प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष नुकसान, इससे उत्पन्न होने वाले परिवारिक एवं सामाजिक विकार से भलीभांति एवं गहराई से अवगत कराया गया। सर्वप्रथम प्रथम चरण के अन्तर्गत उनसे धूम्रपान को कम से कम करने के लिए कहा गया तथा अन्य कुछ अपेक्षित मार्गदर्शन दिया गया। तद्उपरान्त कम्पनीवार कार्मिकों को काउंसलिंग की सहायता से उनके अन्दर मानवीय गुणों के विकास का प्रयास किया गया तथा सभी स्तर पर उन्हें भावनात्मक सहारा प्रदान करते हुए उनकी अन्तः शक्ति को बढाने के लिए अपेक्षित सहयोग एवं मार्गदर्शन दिया जाता रहा। साथ ही साथ कम्पनी एवं हैडक्वार्टर स्तर पर होने वाले सभी सम्मेलन तथा बैठकों में लगातार इस विषय पर सार्थक विचार विमर्श किया जाता रहा। 31 दिसंबर 2007 से लगातार एवं निरन्तर प्रयास, सभी अधिकारियों, कम्पनी कमाण्डर के अप्रतिम सहयोग के फलस्वरूप यह सम्भव हुआ है कि 31 दिसम्बर 2007 को धूम्रपान करने वाले 320 कर्मचारियों में से 297 कर्मचारी इस बुराई को सदा के लिए छोड़ चुके है तथा शेष 23 कर्मचारी भी स्तरवार धूम्रपान कम से कम कर रहे है जिससे कि एकाएक धूम्रपान छोड़ने से कोई परेशानी नहीं हो तथापि शेष 23 कर्मचारियों पर सतर्कतापूर्वक पैनी निगाह रखी जा रही है और निकट भविष्य में शेष 23 कर्मचारी भी धूम्रपान न करने के लिए कटिबद्ध है और यह सम्भव है कि 182 बटालियन अपने बल की प्रथम धूम्रपान रहित बटालियन होने का अविस्मरणीय गौरव प्राप्त कर सके जिसके जवान अपने अन्तकरण की आवाज एवं गजब की जीजिविषा का परिचय देते हुए एकल कमान के सफल नेतृत्व से धूम्रपान की बुराई से बाहर निकल चुके हैं जो कि साधुवाद के पात्र हैं।





“सिगरेट”

सिगरट से धुआं मत निकाल दोस्त
ये तेरी जिंदगी बर्बाद कर देगी।
तेरे होठों की हंसी छीन लेगी,
तेरे फेफड़ों को खराब कर देगी,
तेरे नाजुक कोमल अंगो को ये कमजोर बना देगी।
अब तक तेरे दीवाने लाखों हैं
पर पीता रहा यूँ ही तो ये तेरा बाजा बजा देगी।
ये दोस्त देता है मशवरा तुझे
अगर ना पीयेगा ये ‘सिगरेट’
तो ये जिन्दगी तुझमें चार चांद लगा देगी।
सिगरेट से धुआं मत निकाल दोस्त
ये तेरी जिन्दगी बर्बाद कर देगी।

सिपाही, आदित्य कुमार जाट
72 बटालियन

पारस्परिक प्रेम और सौहार्द का परिचायक होली

कृष्ण कुमार शर्मा
निरीक्षक/हिंदी अनुवादक
ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, इंफाल।

रंगों का त्यौहार होली हर वर्ष फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। रंगों के इस त्यौहार का धार्मिक और सामाजिक स्वरूप काफी व्यापक है। हमारे समाज में इस पर्व को मनाने की अनेक अवधारणाएं मौजूद हैं। वैसे तो इस रंगों के पर्व होली के त्यौहार का पौराणिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भी विशेष महत्व है। एक

पौराणिक आख्यान के अनुसार हिरण्यकश्यप नामक एक दैत्यराज हुआ करते थे। वह अत्यंत अत्याचारी एवं क्रूर प्रवृति का था। वह स्वयं को भगवान मानता था उसने भक्त स्वभाव के अपने ही पुत्र प्रहलाद पर अनेक अत्याचार किए। हिरण्यकश्यप चाहता था कि उनका पुत्र प्रहलाद अपने पिता को ही भगवान मानें इसलिए वह ईश्वर भक्त प्रहलाद से सदैव क्रुद्ध रहता था। उसने अत्याचारों के असफल होने पर एक अंतिम उपाय किया। हिरण्यकश्यप की एक होलिका नाम की बहन थी जिसे वरदान में एक विशेष प्रकार का अग्निरोधक दुपट्टा मिला था। उस दुपट्टे को धारण करने पर अग्नि होलिका को जला नहीं सकती थी। हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन होलिका के सहयोग से प्रहलाद को जलाने की बात सोची। होलिका दुपट्टा ओढ़ कर प्रहलाद को गोद में लेकर आग में बैठ गई। भगवान् की कृपा से हवा का तेज झोंका आया और दुपट्टा उडकर प्रहलाद के ऊपर जा गिरा जिससे होलिका तो जल गई परन्तु प्रहलाद बच गया। इस प्रकार देवों की दैत्यों पर धर्म की अधर्म पर विजय होने पर लोगों ने एक दूसरे को गुलाल एवं रंग इत्यादि लगाकर खुशी मनाई थी। कहते है कि तभी से हर वर्ष परम्परागत इस दिन होलिका दहन करके होली का त्यौहार मनाया जाता है।

दूसरी ओर रंगो के इस त्यौहार को मनाने के लिए समाज में अनेक लोक कथाएँ प्रचलित है। भारत को ऋतुओं का देश कहा जाता है तथा ऋतओं में बसंत को ऋतुराज की संज्ञा दी जाती है। होली ऋतुराज बसंत के आने का सूचक है। शीत ऋतु के उपरांत वसंत में प्रकृति अनगिनत रंगों के फूलों से सज जाती है। सर्वत्र प्रकृति के रंग-बिरंगे सौन्दर्य का ही साम्राज्य होता है। रंग-बिरंगे पुष्प एवं सरसों के पीले पुष्पों को देखकर मन प्रसन्न हो जाता है और इस प्रकार किसान अपने लहलहाते खेतों को देखकर मस्ती से झूम उठते हैं तथा वे एक दूसरे के गले मिलकर खुशी का इजहार करते थे और इस प्रकार समय बीतते-बीतते गले मिल कर खुशी मनाने की परमपरा को होली के नाम से जाना जाने लगा। समाज की एक अन्य अवधारणा यह है कि एक दूसरे को गुलाल एवं रंग लगाकर गले लग कर मिलने से पुराने सभी भेद-भाव एवं द्वेष इत्यादि मिट जाते है तथा समाज में भाईचारे को बढ़ावा मिलता है। कुछ असामाजिक तत्व होली के नाम पर इस दिन शराब पीकर हा हुल्लड़ मचाकर रंग में भंग डालने की कोशिश करते है जोकि हमारी संस्कृति एवं मान्यताओं के विरूद्व है तथा एक सामाजिक बुराई है। भले ही रंगो के इस त्यौहार को मनाने के लिए हमारे समाज में चाहे कितनी ही अवधारणाएं मौजूद हो और कितनी ही लोक कथाएँ प्रचलित हो किन्तु रंगों का यह त्यौहार वास्तव में पारस्परिक प्रेम और सौहार्द का परिचायक है।



102 बटालियन का स्थापना दिवस

01 मार्च 2009 को 102 बटालियन द्रुत कार्य बल का 18 वां स्थापना दिवस मनाया गया जिसमें सर्व प्रथम श्री ई. राधाकृष्णा, भा पु से पुलिस महानिरीक्षक केरिपुबल प. क्षेत्र द्वारा गार्ड की सलामी स्वीकार कर सभी अधिकारियों एवं जवानों को स्थापना दिवस के अवसर पर बधाई दी। इस उपलक्ष्य में टाटा कैंसर अस्पताल एवं एमजीएम अस्पताल कलंबोली को बल के करीब 69 जवानों द्वारा रक्तदान किया गया।

बल के प्रांगण में वृक्षारोपण का कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसके तहत करीब 70 पौधे लगाये गये जिसमें नारियल, जामुन, व आंवला के फलदायी पौधे लगाये गये। मिना बाजार और आनंद मेले का उद्घाटन के बाद श्री ई. राधाकृष्णा, भा पु सेवा पुलिस महानिरीक्षक केरिपुबल पश्चिमी क्षेत्र, और श्री टी चन्द्रशेखर पुलिस उप महानिरीक्षक द्रुत कार्य बल मुंबई द्वारा प्रेस कांफ्रेंस लेकर द्रुत कार्य बल द्वारा वर्ष

2008 में किये गये कार्य जैसे ठाणे, धुले, जलगांव, एवं मुंबई में हुए जातीय दंगों तथा 26 नवंबर 2008 को मुंबई में हुए आतंकवादी हमले में बल द्वारा लगातार 60 से 80 घंटे तक जो वहां पर अहम भूमिका निभाई है इसके बारे में विस्तृत जानकारी दी तथा यह भी बताया की इस आपरेशन में शामिल बल के 10 अधिकारियों को पुलिस महानिदेशक केरिपुबल द्वारा डी.जी. कमेंडेशन डिस्क द्वारा सम्मानित किया गया और करीब 150 जवानों को पुरस्कार घोषित किया गया।





इस शुभ अवसर पर शाम को सिने/टीवी कलाकारों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया इस कार्यक्रम में श्री ई. राधाकृष्णा, पुलिस महानिरीक्षक केरिपुबल, श्री टी. चन्द्रशेखर पुलिस उप महानिरीक्षक द्रुत कार्य बल मुंबई रेंज व श्री एस के मिश्र कमाण्डेन्ट 102 बटालियन द्रुत कार्य बल द्वारा उपस्थित रहकर कार्यक्रम की शोभा बढाई है। इस कार्यक्रम में 102 बटालियन के सभी जवानों के परिवार भी बडे उत्साह से उपस्थित थे इस कार्यक्रम को सफल बनाने में बटालियन के सभी अधिकारी एवं जवानों ने अपना योगदान दिया।

बटालियन द्रुत कार्य बल द्वारा उपस्थित रहकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई है। इस कार्यक्रम में 102 बटालियन के सभी जवानों के परिवार भी बड़े उत्साह से उपस्थित थें इस कार्यक्रम को सफल बनाने में बटालियन के सभी अधिकारी एवं जवानों ने अपना योगदान दिया।

विविध समाचार

ग्रुप सेन्टर बनतलाब में मनाया गया महिला दिवस

जम्मू , 9 मार्च। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में आज केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ग्रुप सेंटर बनतलाब में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमे मुख्य अतिथि अधिवक्ता रमेश अरोड़ा थे।

इस मौके पर जवानों की पत्नियों ने अपने विचार प्रकट किए तथा एक नाच का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर खास बात यह रही कि इन महिलाओं ने रंगोली का खास आयोजन किया था जिसको आए हुए अतिथियों ने काफी सराहा।

कार्यक्रम में अपने विचार प्रकट करते हुए रमेश अरोड़ा ने कहा कि महिलाओं को अपना हक पाने के लिये आगे आना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज महिलाएं भी पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही हैं।

भारतीय इतिहास में महिलाओं द्वारा किए गए कार्यों का जिक्र करते हुए उन्होंने बहादुर नारियों के बारे में बहुत सारी जानकारी दी। इस मौके पर सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती स्नेह बाला ने महिला सशक्तिकरण पर विचार प्रकट किए। कार्यक्रम में सीआरपीएफ वॉइव्स वैलफेयर एसोसिएशन की चेयरपर्सन श्रीमती इंदरजीत कौर पंथी ने वहां पर आए सभी अतिथियों तथा सभागार में बैठी महिलाओं का स्वागत करते हुए कहा कि आज दुनिया में महिलाएं हर क्षेत्र में पुरूषों के मुकाबले में आगे चल रही हैं और उनको हर स्तर पर आगे आने के लिए प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि देश के उत्थान में महिला वर्ग का अहम योगदान रहा है। उन्होनें कहा कि आज नारी अबला नहीं सबला है। इस अवसर पर प्रतिभागी महिलाओं को पुरस्कृत किया गया।

अग्निशमन प्रशिक्षण का आयोजन

केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थान (सूचना एवं प्रौधोगिकी), सी०आर०पी०एफ०. रांची (झारखण्ड) में स्थित है जहाँ पर संचार एवं तकनीक संबंधी विविध प्रकार के कोर्सों का आयोजन किया जाता हैं। इसमें सी०आर०पी०एफ०. ही नहीं अपितु राज्य पुलिस के प्रशिक्षु भी बुनियादी प्रशिक्षण हेतु इस संस्थान में आते हैं।

इस कार्य हेतु प्रशिक्षण में उपयोग लाए जाने वाली प्रशिक्षण सामग्री जिसमें कि अत्यन्त आधुनिक इलैक्ट्रोनिक एक्यूपमेन्ट्स एवं प्रचुर मात्रा में उपलब्ध कम्प्यूटर तथा उनकी प्रयोगशालाएं कार्यरत हैं। ये सभी उपलब्ध प्रशिक्षण सामाग्री विद्युयत द्वारा ही संचालित होती है एवं इनमें एक शोधित मात्रा में विद्युयत संचार सुनिश्चित किया जाता है ताकि इनको किसी प्रकार की हानि वस्तुतः आग आदि से बचा जा सके।



यद्धपि इस कार्य हेतु समुचित सुरक्षा संबंधी उपाय किए गए हैं कि आग आदि से प्रशिक्षण संस्थान एवं सम्पूर्ण संस्थान की अन्य इमारतों को बचाया जा सके तथापि गत माह 7 दिसंबर 2008 को झारखण्ड अग्निशमन प्रशिक्षण संस्थान की एक कुशल प्रशिक्षक की टीम द्वारा संस्थान में एक गोष्ठी आयोजित की गई तथा बाद में एक प्रदर्शन भी आयोजन किया गया जिसमें कि संस्थान के सभी कार्मिक एवं प्रशिक्षु उपलब्ध थे।

गोष्ठी एवं प्रदर्शन के माध्यम से सभी को आग के प्रकार एवं उस पर नियंत्रण करने के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले अग्निशमन यंत्रों की बृहद जानकारी दी गई ताकि समय पड़ने पर उचित यंत्र को भलीभांति प्रयोग किया जा सके। उक्त गोष्ठी एवं प्रदर्शन से सभी कार्मिक एवं प्रशिक्षु अत्यन्त लाभान्वित हुए।

जम्मू में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

ग्रुप केन्द्र केरिपुबल जम्मू में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 09 मार्च 2009 को बड़े उत्साहपूर्वक ढंग से मनाया गया। विभिन्न कार्यक्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए इस स्टेशन में रहने वाली महिलाओं को प्रेरित व प्रोत्साहित करने के लिए पहले ही काफी कदम उठाए गए हैं। यहां के परिवार कल्याण केन्द्र में हमेशा तरह-तरह के क्रियाकलाप होते ही रहते हैं और यह नये-नये क्रियाकलापों की सृजनात्मकता में सदैव प्रयासरत रहा है। इस तरह यह समारोह ग्रुप केन्द्र की महिलाओं के लिए एक विशेष सुअवसर था।

सीआरपीएफ वॉइव्स एसोसिएशन की अध्यक्षा श्रीमती इंदरजीत कौर पंथी ने इस समारोह में उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों व महिलाओं का बहुमूल्य योगदान रहा है और आज की महिला हर क्षेत्र में पुरूषों के मुकाबले में आगे चल रही है तथा

उनको हर स्तर पर आगे के लिए प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। भविष्य की गंभीर चुनौतियों का कड़ाई से सामना करने के लिए उन्होंने महिलाओं से अपने अथक प्रयास निरंतर जारी रखने का आवाहन किया।

श्री रमेश अरोड़ा, वरिष्ठ एडवोकेट एवं प्रख्यात समाज सेवक इस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान थे। उनकी उपस्थिति ने इस समारोह की शोभा में चार चांद लगा दिए।

रंगोली और मेहंदी जैसी भिन्न-भिन्न प्रकार की महिला प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया और अंत में इस स्टेशन की महिलाओं ने एक भव्य लोक सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलक प्रस्तुत की। स्थानीय प्रिंट और ऑडियो एवं विजुअल मीडिया द्वारा इस कार्यक्रम का व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार किया गया।



ग्रुप केन्द्र सिन्दरी में बच्चों के लिए मिड डे मिलकाआयोजन

रिजनल कावा की उपाध्यक्षा श्रीमति सुखपाल कौर एवं कावा के तमाम सदस्यों की ओर से ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, सिन्दरी के परिवार कल्याण केन्द्र में 21 मार्च 2009 को सुबह 1100 बजे बच्चों के लिए मिड डे मिल का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 200 बच्चों ने भाग लिया। इस अवसर पर रिजनल कावा की उपाध्यक्षा श्रीमती

सुखपाल कौर, श्रीमती अर्चना कुमारी, श्रीमती नीतू सिंह एवं रिजनल कावा के सभी सदस्य उपस्थित थे।



ग्रुप केन्द्र सिन्दरी में व्यवसायिक प्रशिक्षण कोर्स का आयोजन

ग्रुप केन्द्र सिन्दरी, धनबाद के परिवार कल्याण केन्द्र में सिलाई के अलावा महिलाओं के कल्याण हेतु व्यवसायिक प्रशिक्षण ग्लास पेंटिंग कोसे 17 मार्च 2009 से 19 मार्च 2009 तक चलाया गया। यह कोर्स रिजनल कावा अध्यक्षा श्रीमति सुखपाल कौर के नेतृत्व में आयोजित किया गया। उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में परिवार कल्याण केन्द्र सिन्दरी की कुशल प्रशिक्षिका श्रीमति नीतू चौधरी द्वारा प्रशिक्षण दिया गया जिसमें ग्रुप केन्द्र सिन्दरी की कुल 55 महिलाओं ने भाग लिया।

कोर्स के समापन समारोह के अवसर पर अपने अभिभाषण में बोलते हुए रिजनल कावा अध्यक्षा श्रीमति सुखपाल कौर ने उपस्थित सभी महिलाओं का आभार व्यक्त किया एवं कोर्स को सुचारू रूप से सम्पन्न करने में उनके सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।



19 मार्च 2009 को परिवार कल्याण केन्द्र के प्रागंण में कार्ड मेंकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में रीजनल कावा अध्यक्षा श्रीमती सुखपाल कौर एवं रीजनल कावा के सभी पदाधिकारीगण एवं परिवार कल्याण केन्द्र में कार्यरत महिलाओं तथा ग्रुप केन्द्र सिन्दरी के अन्य सैनिकों के परिवार के सदस्यों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया रीजनल कावा अध्यक्षा के नेतृत्व में तीन सदस्यों की एक जजेज कमेटी गठित की गई जो निरीक्षण के बाद प्रतियोगिता में से तीन प्रतियोगियों के कार्यो का चयन किया जिसका विवरण निम्न प्रकार है:–

प्रथम स्थान	टी०/नं० 46	लीला देवी
द्वितीय स्थान	टी०/नं० 59	पूजा सिंह
तृतीय स्थान	टी०/नं० 63	सरोज झा

इस अवसर पर चयनित प्रतियोगियों को रीजनल कावा के विशेष समारोह में पुरस्कृत किया जायेगा अपने भाषण के दौरान कावा अध्यक्षा ने उपस्थित महिलाओं को प्रेरित करते हुए उन्हें समाज से ऊपर उठकर काम करने के लिए प्रेरित किया।

पुलिस महानिरीक्षक, पूर्वी सेक्टर, केरिपुबल कोलकाता द्वारा समूह केन्द्र, सिलीगुडी का द्विवार्शिक निरीक्षण

श्री एम नागेश्वर राव, भा पु से, पुलिस महानिरीक्षक, पूर्वी सैक्टर, केरिपुबल द्वारा समूह

केन्द्र, सिलीगुडी का द्विवार्षिक निरीक्षण 17 मार्च 2009 एवं 18 मार्च 2009 को किया गया। पुलिस महानिरीक्षक द्वारा इस निरीक्षण के दौरान रिकार्ड की चैकिंग एवं संस्थान के विभिन्न स्थानों के विजिट के अलावा सैरेमोनियल परेड का भी निरीक्षण किया गया। सैनिक सम्मेलन का आयोजन करके उन्होंने जवानों को सम्बोधित किया। समूह केन्द्र में चल रहे विभिन्न निर्माण कार्यों की प्रगति की भी उनके द्वारा समीक्षा की गयी। इस दौरान उन्होंने राजपत्रित अधिकारियों व अधिनस्थ अधिकारियों के साथ अनौपचारिक वार्तालाप के दौरान ग्रुप केन्द्र के कार्यकलाप व असुविधाओं के बारे में चर्चा की व उन्हें दूर करने का विश्वास दिलाया। उन्होंने सभी अधिकारियों, अधिनस्थ अधिकारियों व अन्य सैनिकों को बल की बढोत्तरी के दौरान प्रस्तुत आने वाली कठिनाइयों के मध्यनजर सकारात्मक भूमिका निभाने व जिम्मेदारियों का पूर्णतः निर्वाह करने हेतु प्रेरित किया।

आन्तरिक सुरक्षा अकादमी में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

आंतरिक सुरक्षा अकादमी में 7 मार्च 2009 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री इंद्र सिंह यादव पुलिस उपमहानिरीक्षक की पत्नी श्रीमती संतोष यादव ने मिटिंग की अध्यक्षता की तथा उपस्थित समुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा कि आजकल महिलाएं हर क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। यहां तक की देश की आन्तरिक सुरक्षा को बनाए रखने के लिए जम्मू एवं कश्मीर के आतंकवादग्रस्त इलाकों में भी वे ड्यूटी कर रही है तथा विदेश में भी शांति सेना में कार्यरत हैं।

उन्होंने आगे कहा कि कार्यक्षेत्र के साथ-साथ महिलाएं परिवार में भी अपनी पारम्परिक भूमिका बहुत अच्छी तरह से निभा रही हैं। वे अपने बच्चों को अच्छी परवरिश एवं शिक्षा देकर देश के विकास में अप्रत्यक्ष रूप से योगदान दे रही हैं। इसी के साथ-साथ देश के कुछ हिस्सों में अभी भी महिलाओं के विकास के लिए बहुत कुछ किया जाना है। श्रीमती यादव ने उपस्थित समुदाय को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि वे महिलाओं के उत्थान के लिए अपने स्तर पर कार्य करते रहें। साथ-साथ समाज में चली आ रही दहेज एवं लडके-लडकी के बीच भेदभाव जैसी कुप्रथाओं को समाप्त करने हेतु कदम बढाने चाहिए।

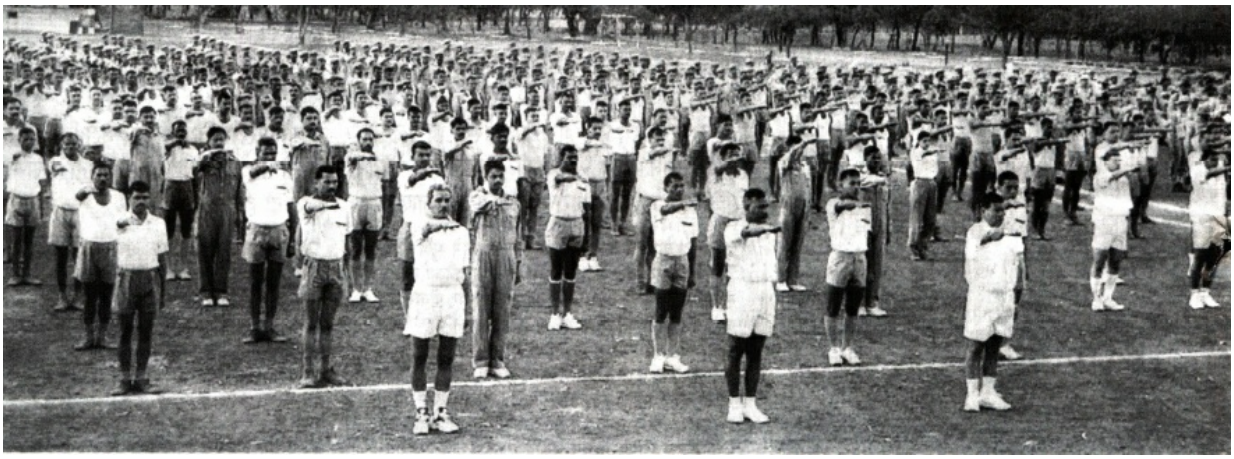


ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम में महिला दिवस के अवसर पर नृत्य प्रस्तुत करती बालिकाएं।

सीआरपीएफ के जवानों ने ली तिलक होली की शपथ

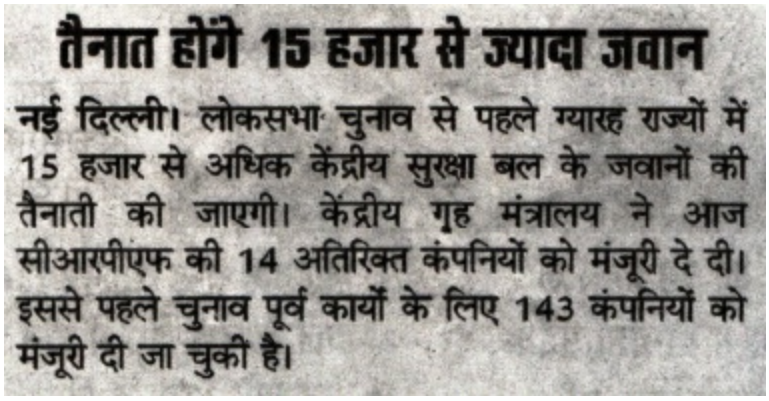
नीमच में देश सेवा का हुनर सीखने के लिए भारत के कोने-कोने से आए हजारों जवानों ने सोमवार को यहां तिलक होली का संकल्प लिया। सीआरपीएफ के फिजिकल ट्रेनिंग ग्राउंड में सुबह साढ़े छह बजे इन जवानों को सेंट्रल ट्रेनिंग कॉलेज के कमांडेंट दिनेश उनियाल ने शपथ दिलाई। मुहिम में रिक्रुट ट्रेनिंग सेंटर, ग्रुप सेंटर व फोर सिग्नल के 10 हजार जवानों ने पानी बचत के लिए यह संकल्प लिया।

कपिल नामदा



तैनात होंगे 15 हजार से ज्यादा जवान

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव से पहले ग्यारह राज्यों में 15 हजार से अधिक केंद्रीय सुरक्षा बल के जवानों की तैनाती की जाएगी। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने आज सीआरपीएफ की 14 अतिरिक्त कंपनियों को मंजूरी दे दी। इससे पहले चुनाव पूर्व कार्यो के लिए 143 कंपनियों को मंजूरी दी जा चुकी है।


तैनात होंगे 15 हजार से ज्यादा जवान

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव से पहले ग्यारह राज्यों में 15 हजार से अधिक केंद्रीय सुरक्षा बल के जवानों की तैनाती की जाएगी। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने आज सीआरपीएफ की 14 अतिरिक्त कंपनियों को मंजूरी दे दी। इससे पहले चुनाव पूर्व कार्यों के लिए 143 कंपनियों को मंजूरी दी जा चुकी है।


गढ़चिरौली में 12 नक्सली गिरफ्तार किए गए

नागपुर। महाराष्ट्र के गढ़चिरोली में पुलिस और सीआरपीएफ की संयुक्त कार्रवाई में 12 नक्सलियों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने बताया कि यह गिरफ्तारियां कोइंदुर और आसावांडी वन क्षेत्र से की गई। नक्सलियों के पास से एक राइफल, दो किलोग्राम जिलेटीन, पांच किलोग्राम विस्फोटक और छह डेटोनेटर बरामद किए गए।

गढ़चिरौली में 12 नक्सली गिरफ्तार किए गए

नागपुर। महाराष्ट्र के गढ़चिरौली में पुलिस और सीआरपीएफ की संयुक्त कार्यवाई में 12 नक्सलियों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने बताया कि यह गिरफ्तारियां कोइंदुर और आसावांडी वन क्षेत्र से की गई। नक्सलियों के पास से एक राइफल, दो किलोग्राम जिलेटीन, पांच किलोग्राम विस्फोटक और छह डेटोनेटर बरामद किए गए।

बरेली में बलवा, एक की मौत

धार्मिक जुलूस को लेकर भिड़े दो पक्ष, कई दुकानों में आग लगाई

लखनऊ/बरेली। ईद-ए-मिलादुल नबी के जुलूस को लेकर मंगलवार को उत्तर प्रदेश के लखनऊ और बरेली में हालात बिगड़ गए। बरेली जिले के फरीदपुर क्षेत्र में जुलूस के मार्ग को लेकर दो समुदाय के लोग आमने-सामने आ गए। इस दौरान जमकर पथराव हुआ, जिसमें सात लोग घायल हो गए। कई दुकानें और करीब दो दर्जन वाहन आग के हवाले कर दिए गए। इस दौरान एक व्यक्ति की गोली लगने से मौत हो गई।

दंगा निरोधक दल तथा रैपिड एक्शन फोर्स ने वहां पहुंचकर हालात को काबू में किया। इसी तरह, राजधानी लखनऊ में भी कथित रूप से जिला प्रशासन की अनुमति के बिना जुलूस निकालने पर आमादा एक समुदाय विशेष के लोगों को तितर-बितर करने के लिए पुराने शहर में पुलिस को बल प्रयोग करना पड़ा, जिसमें पांच लोग घायल हो गए।


बरेली में बलवा, एक की मौत

■ धार्मिक जुलूस को लेकर भिड़े दो पक्ष, कई दुकानों में आग लगाई

बरेली से मिले समाचार के मुताबिक जिला मुख्यालय से 35 किमी दूर फरीदपुर इलाके में बरेली-लखनऊ हाईवे पर जुलूस के मार्ग को लेकर पैदा हुए भ्रम के दौरान दो पक्षों के लोग आमने-सामने आ गए। पथराव हुआ और कुछ दुकानों में आग लगा दी गई। सूत्रों ने बताया कि इस दौरान पुलिस और उपद्रवियों के बीच फायरिंग भी हुई तथा भीड़ ने फरीदपुर थाने पर पथराव किया। झड़प में सात लोग घायल हो गए। घायलों में से दो को गंभीर अवस्था में जिला अस्पताल दाखिल कराया गया है। बरेली रेंज के पुलिस महानिरीक्षक जावेद अख्तर ने कहा कि एक मकान की छत पर खड़े विनोद नामक व्यक्ति की गोली लगने से मौत हो गई। उन्होंने कहा कि विनोद की मौत पुलिस फायरिंग से नहीं, बल्कि समुदाय के लोगों के बीच हुई फायरिंग में हुई।

तनाव को देखते हुए प्रभावित क्षेत्र में पीएसी, दंगा निरोधक दल तथा रैपिड एक्शन फोर्स तैनात किया गया है। प्रशासन तथा पुलिस के वरिश्ठ अधिकारी इलाके में कैंप कर रहे हैं। दूसरी तरफ, पुराने लखनऊ में कुछ लोगों ने शाहमीना शाह की दरगाह से हजरतगंज स्थित दादा मियां की दरगाह तक जुलूस-ए-मोहम्मदी निकालना चाहा।

बताया जाता है कि इस जुलूस के लिए प्रशासन से अनुमति नहीं ली गई थी।

पुलिस ने जब जुलूस को आगे बढ़ने से रोकने की कोशिश की तो पथराव शुरू हो गया। लोगों को तितर-बितर करने के लिए पुलिस को रबर की गोलियां चलानी पड़ी और आंसू गैस के गोले दागने पड़े। सूत्रों ने बताया है कि इस संघर्ष में पांच लोग घायल हो गये, जिनमें से दो को ट्रामा सेंटर में भर्ती कराना पड़ा।

विविध समाचार / कविता

मेंहदी प्रतियोगिता

23 फरवरी 2009 को परिवार कल्याण केन्द्र के प्रागण में मेंहदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में रिजनल कावा अध्यक्षा श्रीमती सुखपाल कौर एवं रिजनल कावा के सभी पदाधिकारीगण सदस्यों एवं परिवार कल्याण केन्द्र में कार्यरत महिलाओं तथा ग्रुप केन्द्र, सिन्दरी के अन्य सैनिकों के परिवार के सदस्यों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। रिजनल कावा अध्यक्षा के नेतृत्व में तीन सदस्यों की एक जजेज कमेटी गठित की गई जो निरीक्षण के बाद प्रतियोगिता में से तीन प्रतियोगियों के कार्यों का चयन किया जिसका विवरण निम्न प्रकार है:–

प्रथम स्थान	-	टी/नं०–22 आशा सिंह
द्वितीय स्थान	-	टी/नं०–46 लीला देवी
तृतीय स्थान	-	टी/नं०–53 आशा देवी



केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल,
...फिर भी नई जवानी है।

सन् 1939 में खड़ी हुई है,
गाथा बहुत पुरानी है।
हो सेवा–भक्ति, देश सुरक्षित
इसने मन में ठानी है।
कुर्बानी और वीरता जैसी,
इसकी कई कहानी है।
70 साल की हो गई है।
फिर भी नई जवानी है।

अपना झंडा, देश का झंडा,
इसको बड़ा ही प्यारा है।
आतंकवाद और भ्रष्टाचार,
इसको नही गंवारा है।
देश के लिए जो काम न आए,
खून नही वो पानी है।
70 साल की हो गई है,
फिर भी नई जवानी है।

सरदार पोस्ट और लेह युद्ध में,
इसने बढ़ाई शान है।
अक्षर-धाम और सांसद में भी,
कइयों ने गवाई जान है।
सबने कहा फिर के रि पु बल,
बड़ी ही दिवानी है।
70 साल की हो गई है,
फिर भी नई जवानी है।

देश नहीं विदेशों में भी,
इसनें गाड़ दिये है झंडे।
ड्यूटी इसको जान से प्यारी,
चाहे संडे हो या मंडे।

सेवा भक्ति करते-करते,
जीवन यही बितानी है।
70 साल की हो गई है,
फिर भी नई जवानी है।

सि/जीडी कमलेश कुमार
75 बटालियन

“शहीद की चाह”

मैं भारत मां का प्रहरी हूं
घायल हूं पर तुम मत रोना
साथी घर जाकर मत कहना
संकेतों में बतला देना।
यदि हाल पिताजी पूछे तो
खाली पिंजरा दिखला देना
इतने पर भी वह न माने
तो होनी का मर्म समझा देना।
यदि हाल मेरी माता जी पूछें तो
मुरझाया फूल दिखा देना
इतने पर भी वह न मानें तो
आंसू दो बूंद बहा देना।
यदि हाल मेरी पत्नी पूछे तो
जलता दीपक बुझा देना
इतने पर भी वह न माने तो
सिंदूर मांग का मिटा देना।
यदि हाल मेरा बेटा पूछे तो
मां का प्यार जता देना
इतने पर भी न माने तो
सैनिक धर्म बतला देना।

सि/जीडी बाबूलाल
92 बटालियन

जवानों की ओर से

स्वतंत्रता से सर पीट रहें है
कश्मीर को पाने को।
इस लिए हरकत करते हैं
हिन्दुस्तान दबाने को।
सज़दे ऋंगार जवानों के
नस-नस में दहकता शोला है।
भारत का बच्चा, बच्चा नहीं
वो भी आग का गोला है।
गम के तूफान आये हज़ार
हम उसको हवा समझ लेंगें।
गर बम-सुलगती फट जाये
जख्मों की दवा समझ लेंगे।
आ-आगे बढ़कर देख जरा
अजगर है हिन्दुस्तान मेरा।
एक सांस अगर जो खींच-लिया
तो खा जायेगा 'पाक' तेरा ।
ऐ 'पाक' हिन्दुस्तान से मत टकरा
वरना हलचल मच जायेगी।
एक देश नहीं, दो देश नहीं
दुनियां दलदल बन जायेगी।

सि/जीडी रतनेश कुमार श्रीवास्तव
117 बटालियन

मुम्बई के तीन दिन

बी एन सिंह
कमाण्डेंट-191 बटालियन

ऐ इंसानो देखो मुम्बई के तीन दिन,
आतंकियों ने इंसानो को ए के-47 से भूना,
ग्रेनेडों से भूना, ताज को भूना,
नरीमन को भूना, ओबेराय को भूना,
मुम्बई पिटती रही, मुम्बई पिटती रही,
चारों तरफ हाहाकार मची थी,
टीवी चैनलों पर दौड़ लगी थी,
सुरक्षा की दौड़ में सरकार को कोस रहे थे।

ऐ इंसानो देखो मुम्बई के तीन दिन,
पुलिस आई, शहीद होकर चली गई,
दुनियां देख रही थी आतंकियों को,
सुरक्षा की धज्जियां उड रही थी,
सरकार हाथ पर हाथ धरे बैठी,
ईश्वर को याद कर रही थी,
हे ईश्वर हमें भी बचाओ,
ईश्वर भी परेशान है, किस-किस को बचाएं।

ऐ इंसानो देखो मुम्बई के तीन दिन,
ईश्वर ने कहा हे, मानव अपने इतिहास हो पहचान,
अपने राष्ट्र को पहचान,
राष्ट्र भी चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा हें,
मैं हजारों सालों से पिटता रहा,
कभी सिकन्दर ने तो कभी गज़नबी ने पीटा,
कभी मुगलों ने तो कभी अंग्रेजों ने पीटा।

वर्तमान में दिल्ली, जयपुर, बनारस,
अहमदाबाद में बम धमाकों ने पीटा,
मुझे कहां-कहां तक पीट पाओगे,
युवा खून कहीं नजर नहीं आता,
विज्ञान कही नजर नही आता,
मुम्बई भी लहू-लुहान हुआ।

ऐ इंसानो देखो मुम्बई के तीन दिन,
उठ हे मानव अपने मस्तिष्क को पहचान,
मेरा अंश ही तुम्हारा मस्तिष्क है,
मस्तिष्क ही ईश्वर का ब्रम्हाण्ड है,
कड़ी मेहनत कर बस पुस्तकों से दोस्ती कर,
ईश्वरी सोच से मस्तिष्क का विकास कर,
हे युवा नव विज्ञान का विकास कर,
नये अविष्कार, नये हथियार का विकास कर,
क्योंकि बारूद ही देश की सुरक्षा है,

ऐ इंसानो देखो मुम्बई के तीन दिन,
ईश्वर भी चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा है,
कि मुझे प्रसन्नता तभी मिलेगी,
जब मन्दिर के साथ-साथ,
हर गली मोहल्ले में एक पुस्तकालय होगा,
हर बच्चा, हर युवा व हर बूढा बचपन से लेकर बुढापे तक,
पुस्तकों का अध्ययन करेगा, तभी राष्ट्र का कल्याण होगा।

ऐ इंसानो देखो मुम्बई के तीन दिन,
उठ मानव उठ शान्ति की परिभाषा छोड़,
युद्ध की परिभाषा सीख,
नव राष्ट्र के लिए कड़ी मेहनत कर,
पुस्तक, मस्तिष्क व विज्ञान से दोस्ती कर,

नये शस्त्रों से आतंकेयों का नाश कर,
जग में रहकर अपना नाम रोशन कर,
तभी राष्ट्र का सम्मान होगा,
तभी विश्व में तेरा नाम होगा,
खुद भी खुश रहे और मुझे भी खुशी होगी,
यही तेरा लक्ष्य हे, यही तेरी मोक्ष प्राप्ति है।
ऐ इंसानो देखो मुम्बई के तीन दिन,
अपने इतिहास को पहचानो,
युवा खून का दौर लाओ,
अपने देश को बचाओ,
यही राष्ट्र की पुकार है,
ऐ इंसानो देखो मुम्बई के तीन दिन।



अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम में मिस इंडिया कार्यक्रम का उद्घाटन करती हुई।

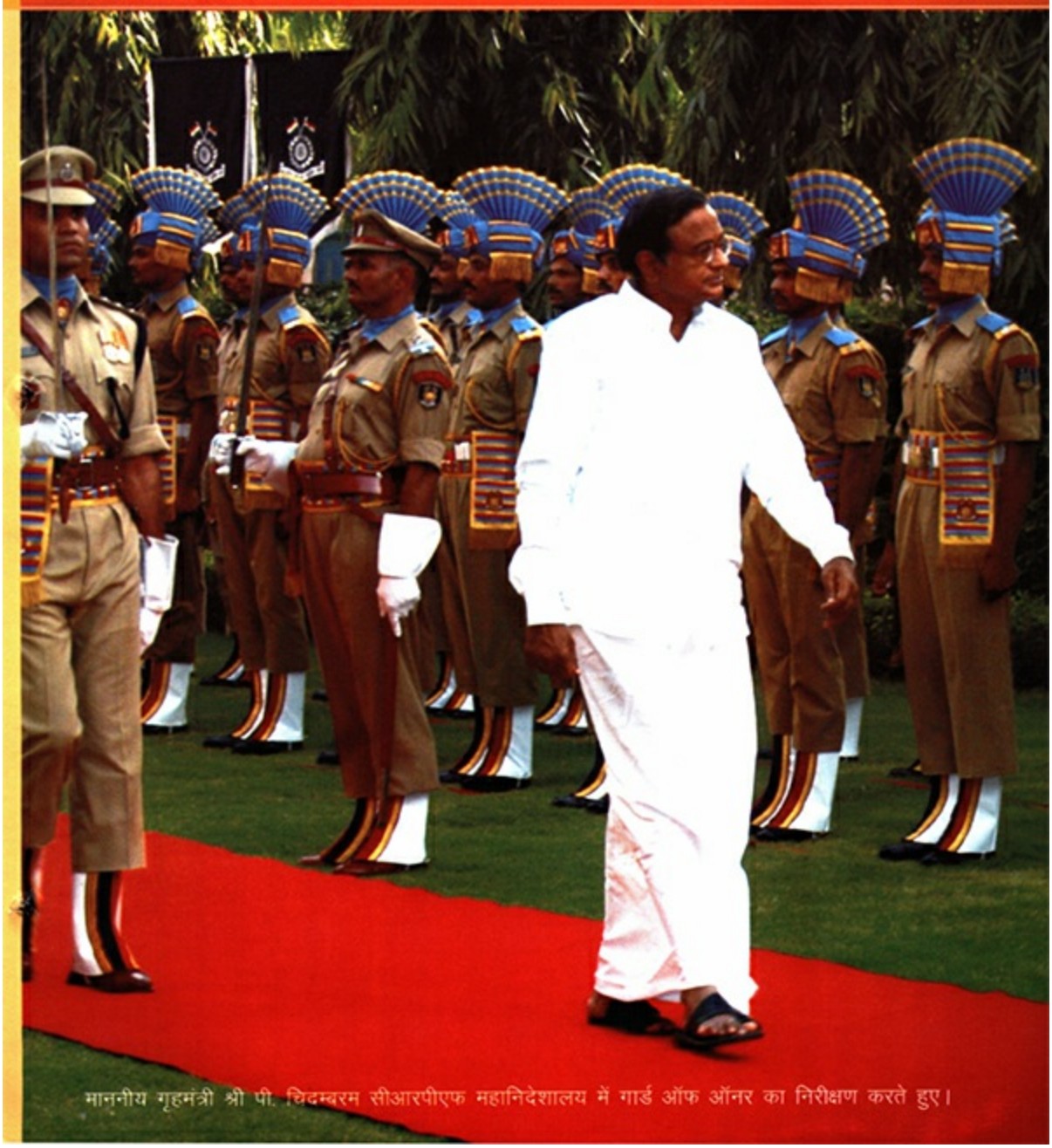


ग्रुप केन्द्र सिलीगुड़ी में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के आयोजन अवसर पर उपस्थित कावा सदस्याएं



आंतरिक सुरक्षा अकादमी, कादरपुर गुड़गांव में प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए अधिकारी

सी.आर.पी.एफ. समाचार



माननीय गृहमंत्री श्री पी. चिदम्बरम सीआरपीएफ महानिदेशालय में गार्ड ऑफ ऑनर का निरीक्षण करते हुए।



माननीय गृहमंत्री श्री पी. चिदम्बरम का केरिपुबल महानिदेशालय में स्वागत करते हुए बल महानिदेशक श्री ए.एस. गिल



माननीय गृहमंत्री को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए सीआरपीएफ बल महानिदेशक

सीआरपीएफ समाचार

Vol. 21 No.9
मई 2009

मुख्य संपादक: अजय चतुर्वेदी, **संपादक:** पंकज गुप्ता, **चित्र:** जनसंपर्क फोटो सेल, महानिदेशालय और सीआरपीएफ यूनिट्स, **संपादकीय कार्यालय:** महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, ब्लॉक-1, केन्द्रीय कार्यालय परिसर, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003, **दूरभाष:** 24360649, **महानिदेशक सीआरपीएफ की ओर से मुद्रित और प्रकाशित:** विबा प्रेस प्रा. लि., सी-66/3, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली-110020, दूरभाष: 41611300-31, 9810049515

संपादकीय सलाहकार समिति

अध्यक्ष: विजय रमन, अपर महानिदेशक (मुख्यालय), **सदस्य:** एस.के. सिंह, महानिरीक्षक (कार्मिक), डी.सी.डे., महानिरीक्षक (संभरण), एस.आर.ओझा, उपमहानिरीक्षक (प्रशासन), रमेश चन्द्र, उपमहानिरीक्षक (कार्मिक), एल.आर.सिधरा, उपमहानिरीक्षक (परिचालन), पी.पी. सिंह, उपमहानिरीक्षक (प्रशिक्षण), जी.डी. पेवाल, उपमहानिरीक्षक (संभरण), रोज़ी अग्रवाल, उप वित्तीय सलाहकार

सीआरपीएफ समाचार मासिक पत्रिका है जिसमें प्रकाशित किये जाने वाले विचार लेखकों के व्यक्तिगत विचार हैं। विभाग की नीति से इसका कोई संबंध नहीं है।

मुख्य संपादक



राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन
सीआरपीएफ
की भूमिका

परिवर्तन
एक चुनौती



वार्ब हाउसिंग





इन्टेलिजेन्ट

विषय सूची

राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन-सीआरपीएफ की भूमिका
बटालियनों के माध्यम से आपदा प्रतिक्रिया का विकास
राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन
आपदा एवं राष्ट्रीय आपदा प्रतिवाद बल
परिवर्तन - एक चुनौती
आपदा एवं स्वास्थ्य परिसेवा
वार्ब हाउसिंग
सी आर पी का एड्म
गृहमंत्री का महानिदेशालय दौरा
आत्म विश्वास व दृढ़ता के साथ सदैव अग्रसर
इन्टेलिजेन्ट
रिपोर्ट
मणिपुर वृद्ध नागरिको का सीआरपीएफ प्रायोजित धार्मिक स्थलों का दौरा
23 वाहिनी, केरिपु बल द्वारा वाहिनी का स्थापना दिवस मनाया गया
जिम्नास्टिक व केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल
महानिदेशक का गुवाहाटी दौरा
विविध समाचार
खबरों में
कविता



राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन सीआरपीएफ की भूमिका

श्री बी एस गिल
पुलिस उप महानिरीक्षक
ग्रुप केन्द्र जालंधर

आपदा प्रबंधन अर्थात् आपदाओं के दौरान होने वाली धन, जन की हानि को बचाने, सुरक्षित रखने एवं राहत पहुंचाने के लिए जो व्यवस्था/प्रबंध की जाती हैं उसे आपदा प्रबंधन कहते हैं। हालांकि, विभिन्न विद्वानों के आपदा तथा प्रबंधन के बारे में भिन्न-भिन्न मत एवं भिन्न-भिन्न परिभाषाएं दी हैं। कुछ विद्वानों ने आपदा प्रबंधन की परिभाषा इस प्रकार से दी है:- "किसी आपदा के बाद अस्त-व्यस्त हुई व्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए किए गए उपाय ही आपदा प्रबंधन है। एक अन्य विद्वान ने आपदा प्रबंधन को इस प्रकार से परिभाषित किया है प्रकृति अथवा मानव द्वारा अपने कुकृत्यों से धवस्त की गई संरचनाओं को पुनः सुव्यवस्थित करना ही आपदा प्रबंधन

है।" कहने का तात्पर्य यह है कि त्रासदी चाहे प्रकृति की देन हो या फिर मानव द्वारा अपनी महत्वकांक्षाओं को पूरा करने के लिए स्वयं के हाथों से पैदा की गई त्रासदी, दोनों ही तरह से आपदा हैं, जिससे हमारी सभ्यता एवं संस्कृति तो नष्ट होती ही है, उस क्षेत्र का विकास काम भी रूक जाता हैं और वह क्षेत्र या देश दशकों पीछे चला जाता है जहां यह त्रासदी हुई होती है।

आपदा प्रबंधन के संबंध में चर्चा करने से पूर्व हमें पहले आपदा तथा प्रबंधन दोनों ही शब्दों का अर्थ समझ लेना चाहिए, फिर एक-एक करके विश्लेषण करेंगे कि आपदा प्रबंधन सही मामले में क्या विधा हैं?

आपदा शब्द का अर्थ त्रासदी, मुसीबत, परेशानी, कठिनाई आदि माना जा सकता है। यह आपदा किसी भी क्षेत्र, राज्य, देश आदि के किसी भी भाग में कभी भी आ सकती है, इसका कोई समय तथा जगह निश्चित नहीं है। वैसे हमारे वैज्ञानिक तथा ज्योतिषी पुर्वानुमान/ भविष्यवाणी जरूर करते हैं लेकिन यह शायद ही सही एवं सत्य सिद्ध होते हों लेकिन, फिर भी ऐसी मान्यताएं है कि जिस क्षेत्र में यह आपदाएं या त्रासदी आती है उस क्षेत्र में रहने वाले प्राकृतिक प्राणी अर्थात् जीव-जन्तुओं को इसका आभास जरूर हो जाता है और वह ऐसी कुछ आश्चर्यचकित हरकतें करते हैं जिससे इस बात का संकेत मिलता है कि आने वाले समय में कुछ अशुभ घटित होने वाला है, फिर भी हम इसे नजरअंदाज कर देते हैं।

आपदाएं दो तरह से आती है, एक प्रकृति की देन है तो दूसरी मानवकृत। दोनों ही तरह की यह आपदाएं बहुत भयावय होती हैं और जिस क्षेत्र में घटित होती हैं वहां की संरचनाओं को पूर्ण रूप से ध्वस्त कर देती है और अपने पीछे छोड़ती है मौत का सन्नाटा, खामोशी और खंडहर। जहां तक प्राकृतिक आपदाओं का अभिप्राय हैं, हम उन प्राकृतिक आपदाओं को प्राकृतिक आपदाएं कहते हैं जिसमें प्रकृति अपना भयानक रूप दिखाते हुए अचानक उथल-पुथल पैदा कर देती हैं और शुरू होता है आकस्मिक मौत का तांडव जैसे–भूकम्प, ज्वालामुखी विस्फोट, बाढ़ सुनामी, आइला इत्यादि। इस प्राकृतिक आपदाओं के लिए भी कहीं तक हम ही जिम्मेदार है क्योंकि हमने विज्ञान एवं तकनीक के बल पर बड़ी-बड़ी संरचनाएं स्थापित कर ली और अपनी सुख-सुविधा के लिए प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को ही बदलने की चेष्टा की है, इसी के परिणामस्वरूप प्रकृति अपना संतुलन बनाए रखने के लिए अक्सर इस प्रकार की त्रासदियां अलग-अलग क्षेत्रों में होती रहती हैं।

दूसरी प्रकार की आपदाएं वो होती है जिनके लिए मानव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से स्वयं जिम्मेदार है और उन्हें स्वयं अंजाम देता है। मानवकृत आपदाएं भी प्राकृतिक आपदाओं की तरह दिल दहलाने वाली, अत्यंत विनाशकारी होती हैं। मानवकृत आपदाएं भी दो तरह से घटित होती है, एक तो हम जानबूझकर किसी घटना को अंजाम देते हैं और कुछ घटनाएं हमारी भूलवश या अज्ञानतावश हो जाती हैं। हिरोशिमा, नागासाकी (जापान) द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान क्रमशः 6 अगस्त तथा 9 अगस्त 1945 को गिराए गए परमाणु बम मानवकृत त्रासदी का सबसे ज्वलंत

उदाहरण है। आज हर मुल्क अपने विकास एवं ताकत को बढ़ाने के लिए अपने परमाणु, आणविक एवं जैविक हथियारों का निर्माण एवं विकास कर रहा है और जब इनका विकास एवं निर्माण हो जाएगा तो स्वाभाविक है कि इनका प्रयोग भी कहीं न कहीं होगा ही। अतः मनुष्य ने स्वयं ही अपने मौत का सामान खुद ही तैयार कर लिया है। आतंकवादियों द्वारा अमेरिका में स्थित वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर 11 सितम्बर 2001 दूसरा मानवकृत त्रासदी का उदाहरण है। कुछ मानवकृत त्रासदी जानबूझकर की जाती है तो कुछ लापरवाही के फलस्वरूप घटित हो जाती है। भोपाल गैस त्रासदी की घटना लापरवाही त्रासदी का ही एक उदाहरण है, लेकिन कालिंदरी मेल रेलगाड़ी की आमने सामने से हुई टक्कर सिग्नल आपरेटर की चूक का ही परिणाम था, जिसे हम लापरवाही के फलस्वरूप होने वाली त्रासदी में ही रख सकते हैं।

ऊपर हमने आपदाओं के बारे में चर्चा की, लेकिन आपदाओं के बाद होने वाली तबाही और नुकसान से बचाव व राहत कार्य के लिए अपनाए जाने वाली क्रियाविधी/पद्धति को प्रबंधन कहते हैं। हम यहां प्रबंधन की चर्चा केवल आपदा के दौरान अस्त-व्यस्त हुए मानव जीवन एवं संरचनाओं के रख-रखाव के संबंध में कर रहे हैं न कि किसी कार्यालय और संस्थान के प्रबंधन के संबंध में। प्राकृतिक आपदाओं से उत्पन्न संकट के दौरान जितना अच्छा प्रबंधन होगा उतनी ही जल्दी उससे प्रभावित लोगों को राहत के साथ-साथ उनके पुर्नवास की प्रक्रिया भी आरंभ हो जाएगी। आपदा के दौरान लोगों का जीवन ही अस्त -व्यस्त नहीं होता बल्कि वे अपने सगे संबंधियों, परिवार के सदस्यों से अलग-थलग हो जाते हैं। इस प्रकार की अव्यवस्थित एवं कष्टदायी स्थिति में एक आदर्श प्रबंधन अपनाना ही आपदा प्रबंधन है। जिससे अधिक से अधिक लोगों को समय पर राहत पहुंचाकर उनके जीवन को बचाया जा सकता है। आपदा के बाद प्रबंधन में एहतियात के तौर पर हमें निम्नांकित व्यवस्थाएं करनी चाहिए:—

(क) चिकित्सा प्रबंधनः- किसी भी प्रकार की आपदा आने पर सबसे पहले अभियान की शुरूआत करते हुए पीड़ित एवं घायलों के प्राथमिक उपचार और तत्पश्चात गहन उपचार की व्यस्था की जानी चाहिए। इस कार्य के लिए हमें पर्याप्त विशेषज्ञ चिकित्सक, पैरा मेडिकल स्टाफ और दवाईयों की व्यवस्था करनी होगी। इस महत्वपूर्ण कार्यों के प्रबंधन में विभिन्न सरकारी, स्थानीय, गैर सरकारी संगठनों में आपसी तालमेल रखना सबसे महत्वपूर्ण है। घायलों एवं पीड़ितों को इलाज हेतु स्थायी/अस्थायी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों, अस्पतालों में पहुंचाने की व्यवस्था करना ही आपदा प्रबंधन का अनिवार्य पहलू है। इस कार्य में सेनाएं, अर्द्धसैनिक बल, स्थानीय पुलिस, सामाजिक संस्थाएं एवं स्वयंसेवी संगठनों की सहायता लेना चाहिए ताकि प्रबंधन की व्यवस्था कुशलतापूर्वक की जा सके।

(ख) पूछताछ एवं पंजीकरण केन्द्र स्थापना करनाः- किसी भी क्षेत्र में आयी त्रासदी के कारण वहां का जनजीवन अस्त-व्यस्त हो आता है और लोग अपने सगे संबधियों से बिछड़ जाते हैं। प्रभावित लोगों के रिश्तेदार व सगे संबंधी/मित्र उनका

हालचाल पूछने/ जानकारी लेने के लिए आते हैं और उन्हें सही एवं प्रमाणित जानकारी सूचना न मिलने के कारण उनमें चिंता व व्याकुलता उत्पन्न होने लगती है। इस कारण कभी-कभी विवाद भी हो जाता है और ऐसी अव्यवस्थित स्थिति से निपटने के लिए कुशल आपदा प्रबंधन हेतु यह जरूरी है कि एक पंजीकरण एवं पूछताछ सूचना केन्द्र स्थापित किया जाए जहां विभिन्न स्त्रोतों से विश्वसनीय सूचनाएं एकत्रित कर रिकार्ड की जाएं और उन्हें प्रभावित लोगों के बीच प्रसारित की जाएज्ञ। इस केन्द्र का उद्देश्य एवं दायित्व यह होना चाहिए कि जो व्यक्ति आहत हुए हैं उनके बारे में उनके रिश्तेदारों से सम्पर्क स्थापित किया जाए। बिछड़े हुए परिवारों को मिलाने में सहायता की जाए। मृतकों की जानकारी उनके सगे-संम्बधियों को दी जाए। पीड़ितों के सगे-संम्बधियों को दी जाने वाली सहायता एवं उनके कल्याण के संबंध में चलाई जा रही योजनाओं के बारे में बताई जाए। इस केन्द्र का गठन करते समय स्थानीय स्वयंसेवकों की भी सहायता ली जानी चाहिए, ताकि वे घायल व मृतक स्थानीय लोगों की पहचान कर सकें। इस केन्द्र का पहला कार्य घायलों तथा मृतकों की पहचान सुनिश्चित कर उनका पंजीकरण करना और उनके सगे- संम्बधियों को इस सम्बंध में जानकारी देना है। इस संगठन का दूसरा कार्य राहत कार्यो में लगी विभिन्न सरकारी, गैर सरकारी संस्थाओं के बीच सूचनाओं का आदान-प्रदान करना एवं समन्वय स्थापित करना भी है। इस केन्द्र का अगला कार्य प्रभावित क्षेत्रों में कार्यरत विभिन्न नागरिक सुरक्षा राहत संस्थाओं से प्राप्त सूचनाओं अर्थात् पुलिस, आपात अस्पताल, शवगृह तथा शव अन्त्येष्टि मैदान आदि की जानकारी राहत शिविरों या अस्थाई शेल्टरों में जमा लोगों को देना है ताकि लोगों को इस संम्बध में होने वाली परेशानी से बचाया जा सके। इसके अलावा विभिन्न अस्थाई शेल्टरों व राहत शिविरों में दी जा रही राहत सुविधाओं की जानकारी प्राप्त करके इन्हें त्रासदी से प्रभावित लोगों में प्रचारित करना और यदि आवश्यक हो तो इन्हें प्रेस को प्रकाशन के लिए उपलब्ध करवाना भी इस संगठन का महत्वपूर्ण कार्य हैं। इस संगठन का यह दायित्व भी है कि वह जगह-जगह पर स्थापित किए गए विभिन्न अस्थाई पंजीकरण संस्थाओं में पंजीकरण आदि कार्यो में एक समान क्रियाविधि अपनाने के लिए सहायता करे और इन कार्यों में उपयोग होने वाले फार्म आदि निर्धारित करके उपलब्ध करवायें ताकि विभिन्न अस्थाई शेल्टरों व राहत शिविरों में पारस्परिक समन्वय व सहयोग करने में आसानी हो सके।

(ग) जलपान एवं स्वच्छता प्रबंधन:— किसी भी त्रासदी के बाद प्रभावित पीड़ित लोगों को राहत शिविरों में लाया जाता हैं, जहां पर उनकी तात्कालिक जरूरतों अर्थात् आश्रय, भोजन, पानी, कपड़ा व अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती हैं। यहीं पर लोग अपने बिछड़े हुए मित्रों व रिश्तेदारों के बारे में पूछताछ के लिए आते हैं। इस प्रकार इन स्थानों पर अपार जन-समूह एकत्रित हो जाता है। अतः ऐसे स्थानों पर भोजन की स्वच्छता पर ध्यान नहीं दिया गया है। बहुत से संक्रामक रोगों के फैलने का खतरा उत्पन्न हो सकता है और पहले से ही त्रासदी से पीड़ित लोगों को एक और विपत्ति का सामना करना पड़ सकता है। जहां पर जन-समूह को भोजन करवाना हो, वहां पर सभी साफ-सफाई की आदतों का पालन जब तक नहीं किया जाता जब तक

कि उन पर सख्त निगरानी नहीं रखी जाए। किसी भी प्रकार की त्रासदी के बाद जन-समूह को भोजन करवाते समय प्रतिकूल व कठिन परिस्थितियों के बावजूद भी भोजन की स्वच्छता के सिद्धांतों का पालन करना आदर्श आपदा प्रबंधन के तहत अनिवार्य होता है। भोजन बनाने व वितरित करने के लिए कार्यरत सभी लोगों व स्वयंसेवकों को भोजन व रसोई की स्वच्छता के सिद्वांतो के बारे में जानकारी एवं निपुणता होनी आवश्यक है।

राहत शिविरों एवं अस्थाई कैंपों में जलपान की स्वच्छता के मुख्य सिद्धांत:—

(1) कच्चा भोजन अर्थात् पकाने से पहले सभी वस्तुओं आटा, चावल, दाल, डिब्बा बंद दूध, ताजा दूध, फल सब्जियां, मसाले आदि सभी वस्तुओं का बारीकी से निरीक्षण करना अनिवार्य है। इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाए कि कच्ची सामग्री में किसी प्रकार की दुर्गन्ध या सड़न तो नहीं आ रही है, और उनमें झींगुर, फफूंदी या अन्य कीड़े-मकौडों का संक्रमण तो नहीं है।

(2) रसोई घर की स्वच्छता और भोजन तैयार करते समय कार्यरत व्यक्तियों, बर्तनों व आस-पास के क्षेत्रों की साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। रसोई घर में कार्यरत सभी रसोईयों व उनके सहायकों की चिकित्सा अधिकारी से जांच करवाकर यह सुनिश्चित कर लेना आवश्यक है कि वे किसी भी प्रकार के संक्रामक रोग से पीड़ित नहीं है। उनके नाखूनों आदि की नियमित जांच करवाते हुए उन्हें रसोई घर में पहनने के लिए अलग कपड़े उपलब्ध करवाये जाने चाहिए। भोजन पकाने के बाद, बांटने से पहले, इसे दूषित होने से हर हालत में बचाया जाना चाहिए। पके हुए भोजन के दूषित होने का मुख्य खतरा मक्खियों व धूल कणों से रहता है। इस प्रकार आपदा के समय मच्छरदानियों का उपयोग करने से मक्खियों से पूर्ण बचाव तथा धूल से आंशिक बचाव किया जा सकता है। भोजन वितरित करते समय नंगे हाथों के बजाए बड़ी चम्मचों, चिमटों आदि का प्रयोग किया जाना चाहिए।

(3) रसोई घर के आस-पास के क्षेत्रों की सफाई पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। अनुपयोगी भोजन, सब्जियों के छिलके और रसोई के सभी प्रकार के कूडे करकट पर्याप्त दूरी पर गड्ढा खोदकर उसमें डाला जाना चाहिए। रसोई के आस-पास पानी जमा नहीं होने देना चाहिए और पीने के पानी के स्थान, नल की व्यवस्था सुविधाजनक स्थान पर करते हुए मक्खियों, धूल आदि से बचाव किया जाना चाहिए। रसोई घर व भोजन करने के स्थान के चारों ओर कीटनाशकों अर्थात डी डी टी, गैमेक्सीन, चूना आदि का नियमित छिड़काव करते हुए कीड़े-मकौडों व मक्खियां से बचाव किया जाना चाहिए।

(घ) स्वच्छ जल की व्यवस्था:- पानी जीने के लिए अनिवार्य है। इसलिए आपात राहत के लिए स्थापित किसी भी राहत शिविर में साफ व सुरक्षित पीने के पानी की

आपूर्ति करना नितांत आवश्यक है। यदि जल के परिशोधन में पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया तो दूषित जल से उत्पन्न होने वाले संक्रामक रोगों जैसे हैजा, टाईफाइड, बुखार आदि से राहत शिविरों में रह रहे इतने अधिक लोगों की जानें जा सकती हैं, जितनी की उस त्रासदी के कारण भी नहीं गई होगी। आपात राहत के लिए तैनात सभी लोगों को इस बात की पर्याप्त जानकारी दी जानी चाहिए कि पानी किन कारणों से दूषित होता है और इसे उपयोग के लिए कैसे साफ व सुरक्षित रखा जा सकता है। राहत शिविरों में जल की आपूर्ति के लिए सामान्यतः कुओं, ट्यूबवेल, नदियों, झीलों व तालाबों आदि स्रोतों का सहारा लिया जाता है। अतः इस बात की भलीभांति जांच-पड़ताल कर लेनी चाहिए कि स्रोत स्थल पर पानी को कोई दूषित तो नहीं करता है। ट्रांजिट के दौरान अर्थात् खुली नहरों, नदियों द्वारा आने वाले पानी को उन लोगों द्वारा गंदा किया जा सकता है जो बीच में इसका उपयोग करते हैं। इसलिए ट्राजिट के दौरान भी जल की स्वच्छता पर निगरानी रखना आवश्यक है। जल का भण्डारण करते समय मिट्टी धूल व कीड़े-मकोड़ों से बचाव करना भी आवश्यक है। जल वितरण के समय रिसाव वाले नलों या दूषित बर्तनों का उपयोग नहीं करना चाहिए। पानी के गंदेपन को दूर करने के लिए निर्धारित मात्रा में फिटकरी का उपयोग करना लाभदायक होगा। इसके अलावा चूने के तत्व अर्थात् कैल्सियम साल्ट रसायनिक तत्वों के कारण पानी में भारीपन होता है। इससे दस्त, बदहजमी आदि रोग उत्पन्न हो सकते हैं। पानी के भारीपन अर्थात कैल्सियम, साल्ट आदि दूषित तत्वों को कम करने के लिए निर्धारित मात्रा में रोगाणु पाउडर(स्टेरलाइजिंग पाउडर) ब्लीचिंग पाउडर आदि से पानी के भारीपन को कम किया जा सकता है। पानी का स्टेरलाइजेशन गरम करके या फिर रासायनिक पदार्थ अर्थात् क्लोरीन, आयोडीन आदि मिलाकर भी किया जा सकता है। इसके अलावा विशेषज्ञ, वैज्ञानिकों की सहायता से क्लोरीनीकरण की विधि से भी पानी को साफ किया जा सकता है। हालांकि किसी भी प्रकार की त्रासदी के बाद राहत शिविरों या अस्थाई शेल्टरों में एकत्रित भारी जन-समूह के कारण पानी की कमी होना स्वाभाविक है, फिर भी स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए प्रतिदिन प्रति व्यक्ति को सभी कार्यों के लिए कम से कम 10 से 12 गैलन पानी आपूर्ति किए जाने का लक्ष्य रखा जाना चाहिए ताकि पानी की कमी के कारण किसी को भी किसी प्रकार का और हानि नहीं पहुंचे।



(च) त्रासदी पीड़ित लोगों की मानसिक शांति के उपाय:- किसी भी प्रकार की त्रासदी के बाद प्रभावित पीड़ितों व उनके सगे-सम्बधियों की मानसिक स्थिति अत्यंत विकृत और असन्तुलित ही जाती है। अतः इस समस्या का निदान करने के लिए राहत शिविरों/अस्थाई शेल्टरों में योगा, आर्ट आफ लिविंग व सर्वे धर्म प्रवचनों की कक्षाओं का आयोजन करना तथा अन्य मनोरंजन की सुविधाओं की व्यवस्था करना लाभदायक होगा। इस प्रकार की व्यवस्थाएं करने से विपत्तियों से पीड़ित लोग अपने दुखों व मानसिक अशांति से उभर कर अपने पुनर्वास की और अपेक्षाकृत कम समय में अग्रसर हो सकते है।

(छ) आपदा पीड़ित लोगों के पुनर्वास की योजनाएं:- किसी भी क्षेत्र में आई प्राकृतिक आपदाओं के कारण शहर व गांव तबाह हो जाते हैं, इन परिस्थितियों में जीवित लोगों को अल्प अवधि तक अस्थाई कैंपों में रखकर तत्कालिक राहत तो पहुंचाई जा सकती है, फिर भी दीर्घ समय के लिए उनका स्थाई पुनर्वास करना आवश्यक है। इस प्रकार एक निश्चित समय के अन्तर्गत योजनाबद्ध तरीके से पीड़ितों का पुनर्वास करने का कार्य भी आपदा प्रबंधन का महत्वपूर्ण पहलू है। किसी भी आपदा के बाद किए जाने वाले पुनर्वास कार्यो में काफी मात्रा में धन की आवश्यकता होती है। हालांकि पेसे पुनर्वास कार्य प्रायः सरकारों द्वारा कि जाते हैं, फिर भी विभिन्न पुनर्वास योजनाओं में गैर सरकारी संगठनों व अन्य सामाजिक संस्थाओं का सहयोग लेने से स्थिति को और जल्दी सामान्य बनाया जा सकता है। अतः आपदा प्रबंधन में सक्रिय रूप से कार्यरत संगठनों का यह दायित्व भी है कि वे तात्कालिक राहत कार्यो

के साथ-साथ विभिन्न सरकारी व गैर-सरकारी संस्थाओं के बीच परस्पर समन्वय कायम करते हुए पुनर्वास योजनाओं को शीघ्र क्रियान्वयित करवायें ताकि प्रभावित लोगों को अस्थाई शिविरों से उनके स्थाई आवासों में जल्दी भेजा जा सके और वे अपनी जीवनचर्या नये सिरे से प्रारम्भ कर सकें।

आपदा प्रबंधन में केरिपुबल की भूमिका

आपदा चाहे दैवीय हो या मानवजनित, प्रकृति का एक ऐसा भयावह व वीभत्स रूप है जिसकी चपेट में आने पर बहुमूल्य जान-माल की अत्यधिक हानि होती है। आपदा किसी भी क्षेत्र में एकाएक व अप्रत्याशित ढंग से आती है और वहां का सामान्य जनजीवन अस्त-व्यस्त कर देती है। आपदा प्रशासन तंत्र को पंगु बनाकर उसे कड़ी चुनौती देती है। ऐसी स्थिति में देशवासी सुरक्षा बलों से मदद एवं पुर्ननिर्माण करते है। इसलिए कोई भी आपदा आने पर सभी देशवासियों का ध्यान सुरक्षा बलों की ओर सहायता के लिए जाता है। केरिपुबल अपने मूल कर्तव्य के लिए भी सदैव तैयार रहता है। पिछले एक दशक में आने वाली सभी छोटी और बड़ी आपदाओं में चाहे वह प्राकृतिक हो या फिर मानवकृत, केरिपुबल ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । 1995 सूरत में प्लेग महामारी तौर पर फैला तो वहां सबसे पहले मदद के तौर पर पहुचने वाली टुकड़ी केरिपुबल की थी। यह एक ऐसा समय था जब सूरत में हाहाकार मच रहा था और नगर के सभी व्यक्ति अपनी जान बचाने के लिए नगर को छोड़-छोड़ कर भाग रहे थे, ऐसे में केरिपुबल के जवानों ने अपनी जान की परवाह न करते हुए जिस तत्परता और मुस्तैदी से आपदा का प्रबंधन किया यह अविस्मरणीय है और आज भी सूरत के लोग याद करते हैं।

(क) केरिपुबल को मिसाल कायम करने का सफर जो सूरत में 1993 में शुरू हुआ वह कदम दर कदम मजबूती से चलता जा रहा है। चाहे वह 1998 के गुजरात और 1999 का उड़ीसा का महाचक्रवात या 2001 का गुजरात का भूकम्प या फिर दिसम्बर 2004 का सुनामी का प्रकोप हो, हर जगह केरिपुबल के जवानों ने आपदा प्रबंधन में अपनी दक्षता का परिचय दिया और हजारों अमूल्य जानों को बचाया।

(ख) हालांकि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का मुख्य कार्य देश के अंदर शांति-व्यवस्था स्थापित कर अमन-चैन कायम करना है, परन्तु इस बल ने बदलती हुई परिस्थितियों के अनुरूप अपनी कार्यशैली में भी अनेक तब्दीलियां की हैं। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों को सुरक्षा ड्यूटियों के साथ-साथ देश के विभिन्न भागों में अचानक घटित होने वाली प्राकृतिक तथा मानवकृत आपदाओं से जानमाल की सुरक्षा एवं आपदा के बाद पैदा होने वाली स्थिति पर नियंत्रण पाने के उपाय तथा जरूरतमंदों को बचाव एवं राहत सहायता पहुंचाने के सम्बंध में भी प्रशिक्षित किया जाता है। बढ़ती हुई प्राकृतिक/मानवकृत आपदाओं को ध्यान में रखते हुए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने अपने प्रशिक्षण में भी भारी बदलाव किया है। देश की सरकार ने भी बल की तत्परता एवं जीरो रेस्पोंस समय में प्रभावित स्थल पर पहुंचकर पीड़ितों को सुरक्षा राहत एवं बचाव कार्य शुरू करने की इसकी कार्यशैली को मद्देनजर रखते हुए

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को महाराष्ट्र के लातूर जिले में आपदा प्रबंधन संस्थान स्थापित करने की अनुमति प्रदान की जा चुकी हैं और इसके साथ-साथ केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के दो बटालियनों क्रमशः 145 तथा 146 बटालियनों को एन डी आर एफ बटालियनें बनाने की अहम जिम्मेदारी सौंपी गई है। इन दोनों बटालियनों के कार्मिकों को प्राकृतिक एवं मानवकृत आपदाओं से निपटने के लिए प्रशिक्षित कि जा रहा है। इसके अलावा बल की 10 आर ए एफ बटालियनों द्वारा आपदा के दौरान मानव जाति को प्रदान की गई सेवाए, देश के हर नागरिक द्वारा सराही जा रही है। इतिहास साक्षी है कि इस बल के जवानों ने जितनी फुर्ती, तत्परता एवं निष्ठा के साथ अलगाववादियों का मुकाबला कि है, उतनी ही निष्ठा एवं गम्भीरता से देश के सामने आने वाली प्राकृतिक एवं मानवकृत आपदारूपी चुनौतियों का सामना अपने मूल सूत्र 'सेवा एवं भक्ति' को ध्यान में रखकर किया ।

(ग) केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने प्राकृतिक एवं मानवकृत आपदाओं से निपटने के लिए एक अपनी ही कार्य योजना तैयार की है, जिसके क्रियान्वित होने से देश के अंदर घटित होने वाली आपदाओं के समय अधिकतम जान-माल की सुरक्षा की जा सकती है। बल द्वारा मूर्त रूप दी जा रही इस योजना के मुख्य पहलू निम्नानुसार हैं:—

01. आपदा प्रबंधन संस्थान की स्थापना।

02. बल की दो बटालियनों को एन डी आर एफ बटालियनों में तब्दील करना।

03. बल कार्मिकों को आपदा प्रबंध में प्रशिक्षित करना।

04. सामान्य जनता के लिए जन-चेतना अभियान चलाना।

05. राज्य पुलिस बल, अन्य अर्द्धसैनिक बल एवं अन्य स्वयंसेवी संगठनों को प्रशिक्षित करना।

(घ) इस बदलते परिवेश में हथियारों के आधुनिकीकरण एवं राजनीतिक विचारधारा में बदलाव में सभी देशों पर आणविक, जैविक और रसायनिक हथियारों द्वारा होने हमले का खतरा बढ़ गया है, यही मानवकृत आपदा है जो कहीं प्राकृतिक आपदा से भी भयानक हो सकती है। अतः ऐसी स्थिति से निपटने के लिए बल को अहम जिम्मेदारी सौंपी गई है । केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने प्राकृतिक तथा मानवकृत आपदाओं से निपटने के लिए जो कार्य योजना बनाई है वह अभी आरम्भिक अवस्था में है, धीरे-धीरे इसे मूर्तरूप देने के लिए बल प्रयासरत है और हमें आशा है कि आने वाले समय में हम देश के विभिन्न भागों में होने वाली इस प्रकार के आपदाओं के दौरान बचाव एवं राहत कार्य को तत्परता से लागू कर सकेंगे। बल के सदस्यों की ही नहीं, अपितु स्थानीय जनता की भी सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए कृतसंकल्प हैं और अपने पूर्व के इतिहास को दोहराते हुए अपने संकल्पों पर सदा खरा उतरने का प्रयास करेंगे।

बटालियनों के माध्यम से आपदा प्रतिक्रिया का विकास

राकेश कुमार सिंह
द्वितीय कमान अधिकारी
81 बटालियन, के०रि०पु०बल



आपदा प्रबंधन संबंधी सार्वजनिक नीति में हाल ही में उल्लेखनीय बदलाव आया है। फोकस अब आपदा के बाद होने वाले क्रिया-कलापों से हटकर आपदा संबंधी तैयारी, रोकथाम संबंधी क्षमता निर्माण तथा प्रभावी प्रतिक्रिया क्षमता विकसित करने पर केन्द्रित हो रहा है। सरकार द्वारा आपदा प्रबंधन अधिनियम बनाया गया है तथा राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) का गठन किया गया है। प्रभावशाली प्रतिक्रिया के लिए, केन्द्रीय अर्ध सैनिक बलों की अत्याधुनिक उपकरणों से सज्जित आठ विशेषज्ञ बटालियने खड़ी की जा रही हैं। यद्यपि, सर्जित प्रक्रिया क्षमताएं बहुत

प्रभावोत्पादक हैं, परन्तु हमारे देश के भौगोलिक विस्तार व परिवहन में लगने वाले समय के कारण आपदा संबंधी प्रत्येक स्थिति में, कदाचित ये समय पर प्रतिक्रिया न कर पाएं। इन परिस्थितियों में पूरे देश में फैली के०रि०पु०बल की 200 बटालियनें, सबसे पहले प्रतिक्रिया करने वालों के रूप में उभर सकती हैं। इस प्रकार हम, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन आधार के लिए संस्थागत प्रबंधों का विस्तार कर सकते हैं और इस तरह प्रतिक्रिया क्षमता को बढ़ा सकते हैं।

ऐसी नीति के प्रभाव की जांच करने के लिए इस धारणा का दो मोर्चों पर आकलन किए जाने की जरूरत है। पहला है आपदा प्रबंधन के लिए मूलभूत साधन, दूसरे, आपदा के संबंध में प्रतिक्रिया करने के लिए के०रि०पु०बल की बटालियनों की क्षमता का मूल्यांकन व जांच । क्र

आपदा प्रबंधन की वर्तमान व्यवस्था के अनुसार, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) व राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (SDMA) द्वारा निर्धारित मार्गदर्शी सिद्धांतों के अनुसार कार्य करने की जिम्मेदारी जिला प्रशासन को सौंपी गई है। जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण से यह अपेक्षा की गई है कि वह आपदा के प्रति संवेदनशील क्षेत्रों की पहचान करे, जिला आपदा प्रबंधन योजना तैयार करे तथा आपदा की रोकथाम के लिए उपाय करे, तथा जिला स्तर पर राज्य सरकार के विभागों व स्थानीय निकायों के मार्फत् इसके प्रभावों के शमन के लिए उपाय करे। इस प्रकार आपदा के प्रभावों को तुरन्त कम करने में जिला प्राधिकरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। NDRF के मार्ग निर्देशन में विभिन्न केंद्रीय अर्ध सैनिक बलों द्वारा खड़ी की गई आठ बटालियनें विशेषज्ञ बल हैं जिन्हें नाभिकीय, जैविकीय, रसायनिक आपदाओं के साथ-साथ क्रमशः पर्वतीय और सामुद्रिक खोज व बचाव आपरेशनों के लिए प्रशिक्षित किया गया है। हालांकि ये अत्यधिक प्रभावशाली हो सकती हैं तो भी इन बटालियनों द्वारा की जाने वाली प्रतिक्रिया में लगने वाले समय के कारण ये बटालियने, सबसे पहले प्रतिक्रिया करने वालों में शायद न हों। इस प्रकार, तुरन्त प्रतिक्रिया करने के लिए यह आवश्यक है कि राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA)। केन्द्रीय सरकार के पास पूरे राष्ट्र में फैले हुए अर्ध शिक्षित व भली-भांति सुसज्जित संस्थाएं हों।

आज की तिथि में, के०रि०पु०बल की बटालियनें कुछ दक्षिण भारतीय राज्यों को छोड़कर लगभग सभी राज्यों में तैनात हैं। जहाँ इनकी बटालियनें तैनात नहीं हैं वहाँ अन्य संस्थान अवस्थित हैं। इन अत्यन्त समर्पित और प्रतिबद्ध लोगों के समूह, संकट की स्थितियों में प्रभावशाली ढंग से प्रतिक्रिया कर सकने में समर्थ होंगे। इस प्रकार इन लोगों की, आपदा प्रबंधन संबंधी योग्यता में थोड़ा सी वृद्धि करने पर, यह अत्यधिक लाभकारी सिद्ध होगी। ऐसी भूमिका की रूप रेखा के साथ-साथ, इसकी दखल देने की रणनीति और आपातिक कमान प्रणाली से जोड़ने का उल्लेख, आपदा प्रबंधन की योजना में करना होगा।

के०रि०पु०बल पूरे भारत में केवल हाजिर ही नहीं है वरन्, कई स्थानों पर आपदाओं

का प्रबंधन करने के पिछले रिकार्ड के साथ यह एक पेशेवर बल है। इनमें से कुछ उल्लेखनीय हैं अक्तूबर 2005 में जम्मू-कश्मीर का भूकंप, जनवरी 2007 का गुजरात भूकंप, उड़ीसा का चक्रवात व अन्य अनेक आपदाएं जिनमें बाढ़, भूस्खलन, आग, चक्रवात व सुनामी शामिल हैं। आपदा की कुछ अत्यधिक विनाशकारी आपदाओं, जिनमें के०रि०पु०बल घटना स्थल पर नहीं था, परन्तु राहत व बचाव कार्यों के लिए दौड़ा चला आया, तथा देरी के बावजूद भी यह बल लगभग सबसे पहले प्रतिक्रिया करने वालों में था।

निम्नांकित पहलुओं को, के०रि०पु०बल की व्यावसायिकता और सकारात्मक संगठनात्मक संस्कृति के रूप में पहचाना जाता है। अगर इनका प्रभावशाली ढंग से गवेशण किया जाए तो ये आपदा प्रबंधन में क्रांतिक साबित हो सकते हैं :

- 2 लाख 50 हजार लोगों का उच्च प्रशिक्षित व अभिप्रेरित समूह।
- गतिशील नेतृत्व तथा कमान्डरों का भाग लेने योग्य अभिगमन।
- आत्म निर्भर आधारभूत संरचना, जो कि बिना समय गवाएं सर्वोत्तम गतिशीलता उपलब्ध कराती है।
- वायरलेस का विभागीय तंत्र, संचार संपक्र सुनिश्चित करता है।
- तैनाती और संगठनात्मक ढांचे के कारण देश के हर कोने में मानव व साज-सामान की उपलब्धता।
- आपदाओं से निपटने का पुराना अनुभव।
- बल के पास कामचलाऊ प्रबंध करने की अच्छी विशेषज्ञता।
- अन्तर्निहित सहायता प्रणाली से सज्जित संगठन, इस प्रकार काम शुरू करने के लिए अधिक सहायता की जरूरत नहीं पड़ती है।
- असैनिक प्रशासन/पुलिस व जनता के साथ मिलकर काम करने के अनुभव के कारण, कार्य करने में आसानी।
- समाज के प्रत्येक स्तर के लोगों का विश्वास व भरोसा प्राप्त।
- घटनाओं के दौरान नेतृत्व की कमान संभालने की योग्यता।
- पीड़ितों को हमारे तम्बुओं में आश्रय प्रदान किया जा सकता है। बचाव व राहत कार्यों के लिए वाहन व एम्बुलेंस उपलब्ध हैं।
- लोगों तक सहायता पहुँचने के समय तक, उन्हें भोजन और पानी उपलब्ध कराया जा सकता है।
- सशस्त्र कार्मिक सुरक्षा आवरण उपलब्ध करा सकते हैं तथा व्यवस्था बनाए रख सकते हैं।
- आवश्यक सेवाओं को पुनः चालू करने में हमारे कार्मिक सहायता प्रदान कर सकते हैं।
- हमारे डाक्टर व पैरा मेडिकल कर्मचारी शीघ्रतापूर्वक जरूरतमंद लोगों तक पहुंच सकते हैं।
- संचार के लिए हमारे नियंत्रण कक्षों/संचार साधनों को आपदा प्रबंधन

प्राधिकारियों के साथ जोड़ा जा सकता है।

चूँकि विश्व बैंक की हाल की रिपोर्ट में यह सुझाव दिया गया है कि भारत में 633 जिलों में से 199 जिले प्राकृतिक आपदाओं से प्रणत (Prone) हैं, अतः के०रि०पु०बल की बटालियनों को आपदा प्रबंधन योजनाओं के साथ संबद्ध करना और अधिक प्रासंगिक है। राजस्थान, तमिलनाडु और मुम्बई जैसे क्षेत्रों, जिनकी गिनती असुरक्षित क्षेत्रों के रूप में नहीं की जाती है में बाढ़ आना, परन्तु इनकी गणना आमतौर पर अतिरिक्त खतरों के रूप में नहीं की जाती है जैसी प्राकृतिक आपदाओं के अलावा प्रत्येक वर्ष कुछ नए क्षेत्र, नई किस्म की अनर्थकारी घटनाओं के कारण खतरे के ज़ोन में आते हैं। विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार, आपदा असुरक्षितता के मामलों में 170 देशों में भारत का 36वाँ स्थान है, तथा असुरक्षित क्षेत्र सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का 49.6 प्रतिशत बैठता है। वर्ष 1984 से 2003 तक हमारे देश में बाढ़ की 85 प्रमुख घटनाएं घटी, 51 चक्रवात, 10 भूकंप जिनमें से 5 की तीव्रता रिक्टर स्केल पर 8 से अधिक थी, आए। यद्यपि, भारत में मानसून, झुलसाने वाली गर्मी से राहत दिलाता है तथा किसानों को कृषि करने का अवसर प्रदान करने के लिए जल स्तर में बढ़ोत्तरी करता है, परन्तु दहलाने वाली बात यह है कि केवल वर्ष 2007 के दौरान मानसून की वर्षा से 3339 लोगों की मौत हो गई व 5 करोड़ 70 लाख से अधिक लोग इससे बुरी तरह प्रभावित हुए।

इस प्रकार राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) के संस्थानों के लिए चुनौतियों का वर्णक्रम (Spectrums) बहुत लम्बा है, तथा इसका प्रबंध केवल विशेषज्ञ बटालियनों की सहायता से ही किया जा सकता है। आपदाओं के खतरों की संख्या के आधार पर यह आवश्यक हो जाता है कि के०रि०पु०बल जैसे संगठनों को अपनी क्षमता व प्रतिबद्धता बढ़ाने के लिए अधिकार प्रदान किया जाए ताकि वे संकटकाल के दौरान आपदा के प्रति बेहतर प्रतिक्रिया कर सके। के०रि०पु०बल के कार्मिकों को बुनियादी प्रशिक्षण से ही आपदाओं के संबंध में जानकारी प्रदान की जानी चाहिए तथा क्षमता का निर्माण किया जाना चाहिए। अल्प अवधि के कोर्स/माड्यूल्स समुचित योग्यता विकसित करने में सहायता कर सकते हैं। संस्थागत क्षमता वृद्धि के लिए, उपकरणों की रूपरेखा बनाना व कामचलाऊ तकनीकों की शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। इन मुददों पर थोड़ा सा ध्यान देने पर, आपदा प्रबंधन के लिए प्रतिक्रिया करने हेतु संस्थागत प्रबंधों का एकीकरण व संवर्धन होगा तथा के०रि०पु०बल, एक संगठन के रूप में राष्ट्र की सेवा के अपने क्षेत्र में विस्तार करेगा।



राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन

शोभा रावत,
सहायक कमाण्डेन्ट,
143 बटालियन

आज भारतीय जनमानस का प्रत्येक व्यक्ति व्यक्ति इस बात से अवगत है कि हमारा

देश विभिन्न प्रकार की आपदाओं से त्रस्त है। प्राकृतिक आपदा का सम्बन्ध मनुष्य से आदिकाल से रहा है , प्रारम्भ में जब मानव के पास संसाधन नही थे तथा विज्ञान अपनी शैशव अवस्था में था तब प्राकृतिक आपदा से बड़े पैमाने पर जन/धन इत्यादि की क्षति होती थी, कालांतर में वैज्ञानिक विकास के साथ मनुष्य ने आपदाओ से निपटने व न्यूनतम नुकसान के कई तरीके ईजाद किए, इसी विकास को एक संगठित संरचनात्मक व्यवस्था के अंदर लाने हेतु, वैश्विक स्तर पर तथा भारत में प्राकृतिक आपदा प्रबन्धन की विचारधारा को प्रोत्साहित किया गया जिसके अंतर्गत वैज्ञानिक एवं प्रबन्धकीय तरीके से आपदाओं का कारगर नियंत्रण किया जा सके।

भारत में पहली बार एकीकृत आपदा प्रबन्धन की आवश्यकता सूनामी प्रकोप के बाद आई, जिसमें राष्ट्रीय स्तर पर प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में 'राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण' तथा 'राष्ट्रीय आपदा कोष' का गठन किया गया। ईससे पहले देश की आकास्मिक निधि से आपदा राहत कार्य या पुनर्नियोजन सम्पन्न होता था। अतः आपदाओं की आकास्मिक चेतावनी व बड़ती तीव्रता को देखते हुए पूर्व सुनियोजित प्रबन्धन की महति आवश्यकता महसूस की गई और राष्ट्रीय स्तर पर इसे नियोजित व्यय की सूची में डाला गया।

आपदा के प्रकार

प्राकृतिक	**मानव जाति**
1. भूकम्प	1. आग
2. भूस्खलन	2. गैस रिसाव
3. बाढ़, सूखा	3. नाभिकीय आपदा
4. चक्रवात	4. तकनीकी विसंगतियां
5. सूनामी इत्यादि,	

देश के अधिकतर भाग अपनी विभिन्न भूगर्भीय संरचनाओं व जलवायुवीय दशाओं के कारण विभिन्न प्रकार की आपदा संभावनाओं से हमेशा सशांकित हैं। यदि हम आपदा को परिभाषित करे तो सामान्य शब्दो में समझा जा सकता है कि, "यह वह प्राकृतिक या व्यक्ति जनित घटना है जो आकास्मिक व त्वरित प्रभाव से जान-माल/सम्पत्ति की क्षति के साथ धरातलीय संरचना में भी परिवर्तन कर देती हैं"।

किसी भी बड़ी आपदा के आने पर न सिर्फ जैविक व भौतिक वस्तुओं का नुकसान होता है अपितु विस्थापन की लम्बी प्रक्रिया व अपनी जगह तथा अपनों से बिछड़ने का मर्म हमेशा साथ रहता है। भारत के अधिकतर हिस्से भूकम्पीय परिधि में हैं अर्थात् भारतीय भू–भाग का 54 प्रतिशत हिस्सा भूकम्प प्रभावित क्षेत्र है इसके अतिरिक्त 4 करोड़ हेक्टेयर भूमि बाढ़, पहाड़ी छोटा भूस्खलन व तटवर्ती प्रदेश चक्रवात तथा सूनामी के खतरे से हमेशा आशंकित है। इसके अतिरिक्त मानवीय त्रुटियों से होनी वाली आपदाएं जैसे-आग, नाभिकीय विस्फोट, गैस रिसाव इत्यादि भी चिंता का विषय

हैं।

आपदा- प्रबन्धन

आपदा के पूर्व, खतरों का आकलन करते हुए किसी बड़े नुकसान को नियोजित प्रकार से कम से कम करने तथा जानमाल के सुरक्षोपाय की 'आपदा प्रबन्धन' है। भारत सरकार के संघीय ढांचे में केन्द्र व राज्यों के कार्यकारी क्षेत्र संविधान की सातवी अनुसूची के अंतर्निहित तीन सूचियों में समावेशित हैं। लेकिन आपदा प्रबन्धन इन तीनो सूचियों किसी का स्पष्ट रूप से विषय नही अतः समग्र रूप से आपदा प्रबन्धन केन्द्र व राज्य की साझी भागीदारी है जिसमें केन्द्र राज्यों को वित्तीय स संस्थागत सहयोग प्रदान करता है।

आपदा प्रबन्धन अधिनियम

भारत सरकार द्वारा पारित 'आपदा प्रबन्धन अधिनिरयम' 26 दिसंबर 2005 को लागू हुआ जिसके अंतर्गत संरचनात्मक सुविधाए मुहैया कराकर देश में संभावित आपदाओं के पूर्व रक्षोपाय तथा आपदा उपरांत बचाव कार्य संगठित तरीके से हो सकें साथ ही सरकार व आमजन के सहयोग से आपदा के नुकसान को न्यूनतम किया जा सके। इसी अधिनियम के तहत प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण' **(NDMA)** तथा राज्यों में 'राज्य आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण' **(SDMA)** मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में, स्थापित किए गए है। इसी की तर्ज पर जिलास्तर में जिलाध्यक्ष की अध्यक्षता में विभिन्न जिलों में जिलास्तरीय आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण गठित हैं। इसके अतिरिक्त देश में आपदा प्रबन्धन के योजनागत स्वरूप के सही अनुपालन हेतु निम्न समितियों का गठन भी किया गया है जिसमें देश के मुख्य सरकारी विभाग व मंत्रालय भी संयुक्त हैं—:

1) राष्ट्रीय क्रियान्वयन समिति (NEC)

2) राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन संस्थान (NIDM)

3) राष्ट्रीय आपदा कार्यवाही बल (NDRF)

राष्ट्रीय स्तर पर गठित समितियों व प्रबन्धन संस्थानों द्वारा विभिन्न आपदाओं से निपटने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ तकनीकी विशेषज्ञों को प्रशिक्षित किया आता है, जैसे चक्रवात का सैटेलाइट के माध्यम से पूर्वानुमान तथा रोकथाम के लिए कारगर उपाय, भूकंप संवेदनशील क्षेत्रों को 5 जोन में बांटकर उन स्थानों पर गृहनिर्माण हेतु भूमि परीक्षण (Soil testing) तथा भूकम्प उपरांत त्वरित सुरक्षा बंदोबस्त आदि शामिल हैं। सूखा/बाढ़ से निपटने के लिए आपदा प्रबन्धन के रूप में नदियों को जोड़ने का प्रावधान तथा वर्षा जल को संरक्षित करना आपदा प्रबन्धन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण शुरूवात हैं।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

भारत सरकार को आपदा क्षेत्र में बचाव व राहत कार्य हेतु विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगठनों का सहयोग प्राप्त है, यह संगठन अग्रलिखित हैं—:

ये बल विकट परिस्थितियों में त्वरित कार्यवाही, अपनी क्षमता तथा संयोजित क्रियान्वयन (Organised action) हेतु विशिष्ट हैं तथा आपदा में सुरक्षोपाय देने वाले प्रथम कर्ता भी। द्रुत कार्य बल (RAF) का आपदा प्रबन्धन में सराहनीय योगदान है, आपदा प्रबन्धन के क्षेत्र में प्रशिक्षण हेतु सी टी सी-2 कोयम्बटूर (तमिलनाडु) केरिपुबल तथा आपदा प्रबन्धन वाहनी, प्रथम पूना (महाराष्ट्र) व द्वितीय गांधीनगर (गुजरात) में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अंतर्गत सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। सेना व सीमा सुरक्षा बल का भी विशिष्ट योगदान है।

बल के सदस्यों की भूमिका को संक्षिप्तः

निम्न बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है—:

- किसी भी राष्ट्रीय संकट या आपदा के समय जीवन रक्षक की भूमिका में।
- जो लोग आपदा में अपनों से अलग हैं, या घायल हैं उन्हें उचित उपचार तथा चिकित्सीय सुविधाए अपलब्ध कराना।
- बाढ़ के समय, विभागीय हेलीकॉप्टर व नावों के प्रयोग से स्थिति का आकलन व बचाव।
- संक्रमित बीमारियों से बचाव ।
- आपदा के बाद की अराजक स्थिति से निपटने में कारगर।
- विस्थापितों को सहायता स्वरूप रहने हेतु टेन्ट या आवास व्यवस्था मुहैया कराना इत्यादि ।

1. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आपदा से निपटने हेतु संयुक्त राष्ट्र सभा (UN, Assembly) के अधीन कार्यरत संयुक्त राष्ट्र का “मानव सहभागिता कार्यालय”।

2. यूनाइटेड नेशनल डेवलेपमेन्ट प्रोग्राम (UNDP)

3. संयुक्त राष्ट्र आकलन व संयोजना तंत्र (UNDAC)

उपयुक्त सहयोग के अलावा संयुक्त राष्ट्र का आपदा प्रबन्धन हेतु बहुआयामी कार्यक्रम “PEER” (Programme for Enhancement of Emergency Response) इस दिशा में मील का पत्थर है। यह क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम है जिसमें एशिया के देशों को, यहां बढ़ती आपदाओ के कारण शामिल किया गया है व उन्हें इन आपदाओं से निपटने के लिए उचित प्रशिक्षण दिया जाता है इसमें भारत, बांग्लादेश, नेपाल, इंडोनेशिया तथा फिलीपीन्स शामिल हैं, पीर (PEER) का प्रथम चरण 1998-2003 तथा द्वितीय चरण 2003-08 में सम्पन्न हुआ।



सशस्त्र बलों की भूमिका

भारतीय सशस्त्र बलों को उन परिस्थितियों में जब राज्य सरकारें स्वयं स्थिति पर काबू न पा सके केन्द्र द्वारा आपदाग्रस्त क्षेत्रों में प्रस्थापित किया जाता है।

उपसंहार (Conclusion)

प्रबन्धन आज के युग की मांग हैं, किसी भी क्षेत्र में, किसी भी विषय से संबंधित कुशल प्रबन्धन अपने आप में एक विशेषता है। देश में आपदा के खतरों को देखते हुए यह जरूरी है कि राष्ट्रीय स्तर पर एक संरचनात्मक प्रभावपूर्ण योजना ही जो पूरे देश को एकीकृत प्रणाली से जोड़ सके। आपदा प्रबन्धन के जो भी तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रयास भारत में किए जा रहें, उन्हें कारगर तभी बनाया जा सकता है जब सभी राज्यों का सुचनातंत्र प्रभावी हो साथ ही दक्ष कार्मिकों की टीम हो जो सीमित संसाधनों में अधिक से अधिक वैज्ञानिक तरीके से कम से कम नुकसान को सुनिचित करें। देश में कार्य करने वालों (सिविल, मिलिट्री) की कमी नहीं है लेकिन अभाव है प्रशिक्षण, कुशल नियोजन व वित्तीय सुविधाओं का अत: बुनियादी स्तर पर आपदा प्रबन्धन के बारे में आम जनजागरूकता बढ़ाई जाय, इस क्षेत्र से जुड़े सशस्त्र बलों को स्तरीय

प्रांशेक्षण दिया जाय ताांके अल्प समय में आपदा के प्रहार से उबारा जा सके।

इसके अतिरिक्त सर्वोपरि आवश्यक है - आम जनसहभागिता व शैक्षिक स्तर पर आपदा प्रबन्धन के प्रचार प्रसार की।

परिचालनिक उपलब्धियां

मई माह के दौरान कुल 25 मुठभेड़ों में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने 15 आतंकवादियों को मार गिराया, संदिग्धों सहित 102 को गिरफ्तार किया व 2 आतंकवादियों ने आत्मसमर्पण किया।

इन घटनाओं में 43 हथियार, 697 गोली बारूद, 43 ग्रेनेड़ बम व 3.25 किलो ग्राम विस्फोटक और 214 डेटोनेटर बरामद किये गए। इस दौरान बल ने अपने 3 वीर जवानों को खोया।



आपदा प्रबन्धन :—

प्राकृतिक आपदाओं या अन्य दुर्घटनाओं के कारण उत्पन्न होने वाली भारी तबाही व नुकसान में किए जाने वाले बचाव या राहत कार्यों में अपनाई जाने वाली पद्धति या क्रिया प्रणाली को आपदा प्रबन्धन कहा जाता है। आपदाओं से उत्पन्न संकट के दौरान जितना अच्छा प्रबन्धन होगा उतनी ही जल्दी प्रभावित लोगों को राहत तथा पुनर्वास की प्रक्रिया प्रारंभ हो पायेगी । आपदा के दौरान लोगों का सामान्य जीवन अस्त व्यस्त हो जाता है तथा वे अपने परिवार से अलग-थलग पड़ जाते हैं एवं उस विशेष क्षेत्र में अव्यवस्था की स्थिति पैदा हो जाती है। इस प्रकार की अव्यवस्थित एवं कष्टकारी स्थिति में आपदा प्रबन्धन के आदर्श तरीकों को अपनाने से ही प्रभावित पीड़ित लोगों को समय पर राहत पहुंचाते हुए उन्हे बचाया जा सकता है। लगातार आपदाओं के उत्पन्न होने से भारी नुकसान होने के साथ ही साथ देश की आर्थिक व्यवस्था बिगड़ जाती है एवं देश का विकास अवरूद्ध हो जाता है। सुव्यवस्थित आपदा प्रबन्धन राष्ट्रीय विकास के लिए बहुत ही अनिवार्य है। आपदा प्रबन्धन में चिकित्सा प्रबंधन, पंजीकरण पूछताछ कार्यालय, जलपान एवं स्वच्छता प्रबन्धन, राहत शिविरों एवं अस्थाई कैम्पों का प्रबंधन, पुनर्वास की योजनाये एवं व्यवस्था व त्रासदी पीड़ित लोगों की मानसिक

शांति के लिए उपाय बहुत ही जरूरी है।

किसी भी प्रकार की आपदा आने पर सबसे पहले बचाव अभियान की शुरूआत करते हुए पीड़ितों / घायलों के प्राथमिक उपचार व उनके गहन उपचार के लिए पर्याप्त विशेषज्ञ चिकित्सकों, पैरा मेडिकल कर्मचारियों और दवाइयों की व्यवस्था करना सबसे पहला कार्य है।

इन महत्वपूर्ण व्यवस्थाओं के प्रबन्धन व प्रभावकारी क्रियान्वयन के लिए स्थानीय सरकारी व गैर सरकारी संगठनो में आपसी समन्वय रखना सबसे महत्वपूर्ण है। त्रासदी से पीड़ितों / घायलों को उपचार के लिए स्थाई / अस्थाई शिविरों एवं चिकित्सालयों में पहुंचाने की व्यवस्था करना आपदा प्रबन्धन का अनिवार्य पहलू है।

कुशल आपदा प्रबन्धन के लिए जरूरी है कि एक पंजीकरण व पूछ ताछ कार्यालय गठित करे जिसका उत्तरदायित्व विभिन्न स्त्रोतों से सही सूचना एकत्रित करके आहत व्यक्तियों के रिश्तेदारों के बीच सम्पर्क स्थापित करना, बिछड़े हुए परिवारों को मिलाने में सहायता करना, मृतकों के बारे में उनके रिश्तेदारों को जानकारी देना, पीड़ितों के सगे संबंधियों की हिफाजत व कल्याण के बारे में कार्यवाई करना, राहत कार्यों में लगे विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं के बीच समन्वय बनाये रखना ताकि लोगों को होने वाली परेशानी व भ्रम की स्थिति से बचाया जा सके। राहत शिविरो में प्रभावित पीडित लोगों से मिलने के लिए अपार जन समूह एकत्रित हो जाता है एवं ऐसे स्थानो में भोजन की स्वच्छता पर ध्यान नही दिया जाता जिससे बहुत से संक्रामक रोगों के फैलने का खतरा उत्पन्न हो सकता है और पहले से ही पीड़ित लोगों को एक और विपत्ति का सामना करना पड़ सकता है अतः प्रतिकुल व कठिन परिस्थितियों में भी भोजन व जलपान की स्वच्छता के सिद्धांतों का पालन करना आदर्श आपदा प्रबन्धन के तहत अनिवार्य होता है।

किसी भी क्षेत्र में आई प्राकृतिक आपदाओं के कारण शहर व गांव के गांव तवाह हो जाते हैं इन परिस्थितियों में पीड़ितों का पुनर्वास करने का कार्य भी आपदा प्रबन्धन का महत्वपूर्ण पहलू है। आपदा प्रबन्धन में सक्रिय रूप से कार्यरत संगठनों का यह दायित्व भी है कि वे तात्कालिक राहत कार्य के साथ ही साथ विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं के बीच परस्पर समन्वय कायम रखते हुए पुनर्वास योजनाओं को शीध्र क्रियान्वित करवायें ताकि प्रभावित लोगों को अस्थाई शिविरों से स्थाई आवासों में जल्दी भेजा जा सके और वे अपनी जीवनचर्या नये सिरे से प्रारम्भ कर सके।

आपदा का अभिप्रायः—

आपदा चाहे वह प्राकृतिक हो या मानव जनित, प्रकृति का एक ऐसा भयावह व वीभत्स रूप है जिसकी चपेट में आने पर बहुमूल्य जान माल की अत्यधिक हानि होती है। यह किसी भी क्षेत्र में एकाएक व अप्रत्याशित ढंग से आती है तथा वहाँ का जन जीवन अस्त-व्यस्त कर देती है। मुख्यतः आपदा दो प्रकार की होती है प्राकृतिक एवं मानव जनित। मानव निर्मित आपदा से लड़ने के लिए मनुष्य ने नियम, कानून, व दण्ड

की नीतियों पर चलकर विनाश को कम करने का प्रयास किया है और बहुत हद तक सफलता भी पाई है। परन्तु प्राकृतिक आपदा, जिसका रूप वृहद्ध है से लगातार संघर्ष करता रहा है और कुछ हद तक प्रकृति के चक्र को समझकर यदि कार्य करता रहा तो जन-धन की हानि को बहुत हद तक कम कर सकता है।

(1) प्राकृतिक आपदाः- इससे संबंधित है भूकम्प, बाढ़, सुनामी, चक्रवात, तूफान, सुनामी एवं लैंड स्लाइड इत्यादि एवं ऐसी स्थिति में मनुष्य को जान-माल की विशेष रूप से बहुत हानि होती है। इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न होने पर मनुष्य कुछ भी करने अथवा सोचने पर मजबूर हो जाता है।

(2) मानव द्वारा निर्मित आपदा : इसका अभिप्राय ऐसी आपदाओं से है जो कि मनुष्य द्वारा सृजित की जाती है। हमारे देश में बाढ़ आने का मुख्य कारण नदियो में बने विशाल बाँधों के टूट जाने से या उनमें अधिक पानी इकटठा हो जाना है जिसके फलस्वरूप भयानक त्रासदी उत्पन्न होती है। नदियों में बने विशाल बाँध उपयोगी होने के साथ ही साथ महान प्रलयंकारी भी हैं। जंगलों को नष्ट कर देने पर बारिस नही होती एवं सूखा पड़ जाता है। रासायनिक फैक्टरियों में जहरीली गैसों का स्त्राव होने पर भी भयावह व जानलेवा आपदा उत्पन्न हो जाती है, भोपाल गैस काण्ड इस आपदा का जीवंत उदाहरण है। इसके अलावा आग, बारूद, परमाणु बम, एवं यातायात संसाधनों से होने वाली दुर्घटनायें भी मानव जनित है।

एन०डी०आर०एफ० की भूमिकाः 2005-2008 :—

आपदाओं एवं अन्य दुर्घटनाओं से होने वाले नुकसान तथा भारी तबाही के मध्यनजर भारत सरकार ने अक्टूबर 2003 में नेशनल डिजास्टर मैनेजमेन्ट अथार्टी (एन०डी०एम०ए) का गठन माननीय प्रधान मंत्री जी की अध्यक्षता में किया गया। इस कमेटी में एक वाइस चेयर मेन तथा 8 सदस्य हैं। देश में आपदा प्रबन्धन से सम्बन्धित नेशनल डिजास्टर मैनेजमेन्ट अथार्टी के आदेशों व योजनाओं के क्रियान्वयन तथा केन्द्रीय सरकार द्वारा जारी निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए नेशनल एक्जेक्यूटिव कमेटी को जवाबदारी सौंपी गई है। यह कमेटी आपदा प्रबन्धन संबंधी राष्ट्रीय योजनाओं को तैयार करती है तथा आपदाओं से निपटने की तैयारी व आपदा शमन हेतु राज्य सरकारों को दिशा निर्देश व टेक्निकल सहायता प्रदान करती है।

आपदाओं से अपार जन व धन की हानि होती है, इसे कैसे रोका जाये अथवा कम किया जाये, इस विषय पर भारत सरकार द्वारा यह निर्णय लिया गया कि अर्द्धसैनिक बलों की टुकड़ियों को प्रशिक्षित कर आपदा प्रबन्धन में प्रवीण बनाया जाए और अर्द्धसैनिक बलों की मदद से देश के आपदा प्रभावित क्षेत्रों के लोगों को आपदा से लड़ने के लिए मानसिक व शारीरिक रूप से भविष्य में तैयार किया जाये। 05 दिसम्बर, 2003 को अर्द्धसैनिक बलों की आठ बटालियनों क्रमशः बी०एस०एफ, सी०आई०एस०एफ, आई०टी०बी०पी० एवं सी०आर०पी०एफ० की प्रत्येक दो बटालियन को क्रमश: एन०बी०सी व नॉन एन०वी०सी बटालियन की मंजूरी दी गयी,

तथा इन बटालियनों को राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण के अधीन सम्पूर्ण भारतवर्ष के आपदा प्रबन्धन की जिम्मेदारी सौपीं गई है ताकि किसी भी प्रकार की आपदा आने पर समय से प्रभावी रूप से निपटा जा सके। सी०आर०पी०एफ० की दोनों बटालियनों क्रमशः 145 तथा 146 को पश्चिमी भारत में आपदा प्रबन्धन की जिम्मेदारी सौंपी गई है। जिसमें 145 बटालियन एन०बी०सी० (न्यूक्लियर, बायोलॉजिकल एवं केमिकल) सम्बन्धित आपदाओं तथा 146 बटालियन नान एन०बी०सी० सम्बन्धित प्राकृतिक एवं अप्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिये क्रमशः पूना एवं गॉधीनगर में तैनात किया गया है। वर्तमान में दोनों बटालियन आपदा प्रबन्धन में अपनी भूमिका सार्थक करने हेतु प्रशिक्षणरत हैं।



146 बटालियन एन.डी.आर.एफ. द्वारा आपदा प्रबन्धन

भारत सरकार के आदेशानुसार हमारी वाहिनी 19 जनवरी, 2006 को

एन०डी०आर०एफ बटालियन में परिवर्तित की गई तथा वर्तमान में वाहिनी अपने निर्दिष्ट उद्देश्यों के अनुसार तैनाती एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग ले रही है। नेशनल डिजास्टर मैनेजमेन्ट अथार्टी भारत सरकार द्वारा इस वाहिनी को तीन प्रांतों क्रमश: गुजरात, राजस्थान व मध्यप्रदेश में आपदा प्रबन्धन की जवाबदारी सौपी गई है। वर्तमान में वाहिनी में बचाव दल के सदस्य 18 टीमों में विभक्त है। अपने इस छोटे से कार्यकाल के दौरान इस वाहिनी ने दिसम्बर 2004 में अण्डमान निकोबार द्वीप समूह में आये भूकम्प तथा सुनामी से तवाह पीड़ित लोगों तक राहत सामग्री ले जाने, चढ़ाने-उतारने, मलवे से जीवितों तथा मृत व्यक्तियों के शवों की तलाश करने तथा राहत शिविरो के निर्माण करने में अहम भूमिका निभाई हैं। इस उल्लेखनीय कार्य को अंडमान -निकोबार द्वीप समूह की जनता तथा प्रशासन ने खूब सराहा है। अगस्त 2005 से लेकर 2008 तक गुजरात प्रांत के विभिन्न जिलों में आई भयानक बाढ़ के दौरान बाढ़ में फसें अनेकों व्यक्तियों की जान बचाकर उन्हें सुरक्षित स्थानो में पहुंचाने का कार्य किया है। राहत एवं बचाव कार्य के साथ पानी, भोजन तथा दवाइयों जैसे आवश्यक सामान पीड़ितों को समय पर वितरित कर भारी संख्या में लोगों की जान बचाई। माननीय राज्यपाल गुजरात सरकार द्वारा 146 आपदा प्रबन्धन वाहिनी द्वारा किए गए बचाव एवं राहत कार्य की बहुत प्रशंसा की गई। फरबरी 2008 में कालूपुर अहमदाबाद स्थिति चार मंजिला होटल साकुंत की इमारत ढह जाने से कई लोग मलबे के नीचे फंसे थे हमारी इस आपदा प्रबन्धन वाहिनी के जवानो ने दिन रात लगातार कठिन परिश्रम के फलस्वरूप मलवे के नीचे दबे 10 व्यक्तियों को सुरक्षित निकाल कर उनकी जान बचाई तथा लापता 06 मृत शरीर ढूंढ कर बाहर निकाले। 2008 में मुम्बई एवं अहमदाबाद में सीरियल बम्व ब्लास्ट में राहत एवं बचाव कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेकर अपनी उपयोगिता सिद्ध की है | जिसकी सभी स्तरों पर सराहनीय कार्यों के लिये भूरी-भूरी प्रशंसा हुई है।

आपदा प्रबन्धन व आपदा शमन हेतु प्रशिक्षण :—

वाहिनी के कार्मिकों को विभिन्न संस्थानों से आपदा प्रबन्धन सम्बन्धी विभिन्न प्रशिक्षण जैसें एम०एफ०आर / सी०एस०एस०आर, हैलीसिलेदरिंग, डीप डाईविंग, फायर फायटिंग, फस्ट ऐड, फ्लड वाटर रेस्क्यू, तथा आपरेटिंग मोटराइज बोट इत्यादि प्रशिक्षणों में उच्च श्रेणी का प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया है।

एन०डी०आर०एफ में तैनाती के लिये महानिदेशालयों द्वारा चुने हुए जवानों एवं अधिकारियों को 05 वर्षों के लिये प्रतिनियुक्ति पर लिया जाता है जिनको वाद में निरन्तर भी रखा जा सकता है। एन०डी०आर०एफ की प्रत्येक वाहिनी को उसका प्राथमिक कार्य क्षेत्र निर्दिष्ट किया जा चुका है ताकि जरूरत पड़ने पर बिना किसी शंका के तैनाती की जा सके। इसकी तैनाती के लिये राज्य के रिलीफ कमिश्नर के द्वारा गृह मंत्रालय / एन०डी०एम०ए० को आवेदन करना होता है | शांति काल में जब टीमें मुख्यालय में होती हैं तो वाहिनी के बचाव दल के कार्मिक विभिन्न प्रकार की आपदाओं से निपटने के लिए भिन्न प्रकार के प्रशिक्षण, डेमोसट्रेशन एवं रिर्हसल के

कार्यों को लगातार जारी रखते हैं।

जन समुदाय आधारित आपदा सचेतना व तैयारी अभियान तथा फेमिलिराइजेशन :—

नेशनल डिजास्टर मैनेजमेंट अथार्टी, भारत सरकार के निर्देशानुसार इस आपदा प्रबन्धन वाहिनी द्वारा आपदा से प्रभावित क्षेत्रों में जन समुदाय आधारित आपदा सचेतना अभियान तथा फैमिलिराइजेशन अभ्यास का आयोजन किया जाता है। इस आयोजन के तहत प्रभावित क्षेत्रों में जन समुदाय को आपदा से पूर्व तैयारी, आपदा से बचने के उपाय , घायलों के प्राथमिक उपचार की विधि व आपदा के बाद कार्यवाई के सम्बन्ध में भाषण, प्रदर्शन व जमीनी प्रशिक्षण के माध्यम से प्रशिक्षित किया जाता है ताकि वे किसी भी तरह की आपदा के दौरान स्वयं तथा अन्य लोगों का बचाव कर सकें। चूंकि आपदाओं को रोका नहीं जा सकता इसलिये इनसे बचाव का सर्वोत्तम उपाय इनके बारें में उचित ज्ञान एवं सही जानकारी प्राप्त करना व सचेत रहना है।

आपदा प्रबन्धन हेतु आवश्यक सामान

आपदा प्रबन्धन वाहिनी के खोज एवं बचाव दल की टीमों के सदस्यों को उच्च प्रशिक्षण उपलब्ध कराने हेतु अत्याधुनिक एवं सोफिस्टीकेटेड ट्रेनिंग उपकरणों से सुसज्जित किया गया है तथा सभी जवानो को सभी प्रकार के उपकरणों को इस्तेमाल करने का नियमित अभ्यास दिया जा रहा है।

एन०डी०आर०एफ की कार्य शैली:—

एन०डी०आर०एफ की टीम तैनाती का आदेश मिलने पर विशेष आपदाओं के अनुसार साजो-सामान लेकर तुरन्त प्रस्थान करती हैं एवं प्रभावित क्षेत्र में पहुँच कर Incident Commander (Collector या समकक्ष) से वस्तुस्थिति की जानकारी लेनी होती है।

हमारी वाहिनी का अब तक का अनुभव अत्यन्त उत्साहवर्धक रहा है। जिसमें विभिन्न आपदाओं के दौरान इसकी तैनाती के उपरान्त राज्य सरकारों एवं सम्बन्धित अधिकारियों द्वारा हमारे कार्यों की प्रशंसा की गई है। वैसे तो यह हमारा कर्तव्य है और किसी व्यक्ति की जान बचाने से महान कार्य कोई नहीं है फिर भी वाहिनी को प्राप्त प्रशस्ति एवं प्रशंसा पत्रों से एन०डी०आर०एफ की सफलता का पता चलता है। हम जानते हैं इससे हमारी जवाबदारी और बढ़ जाती है लेकिन हमारा मनोबल ऊँचा है और पक्के इरादे से यह दावा कर सकते हैं कि कहीं भी आपदाओं से निपटने का वक्त आयेगा तो हम सबसे आगे और तत्पर मिलेंगें। आपदाओं से बचाव के कार्य में एन.डी.आर.एफ. एक नई शुरूआत है आईये सब मिलकर इसे सार्थक बनायें।

आपदायें आती और जाती रहेगीं

आंकड़े इतिहास बनेंगें

बचाव और राहत के अनुभव में
नये आयाम जुड़ते रहेगें
देश और मानवता की सेवा में
हम आगे बढ़ते रहेगें
बढ़ते रहेंगे।

जय हिन्द

जागो बल के वीर जवानों

सि भवंरदान सिंह
120 बटालियन,

जागो बल के वीर जवानों, भारत मां पुकार रही।
साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, नक्सलवाद से कराह रही।
जागो बल के बीर जवानों.....
गुलामी के उन दिनों में, साम्प्रदायिकता जब फैल रही।
जन्म लेकर ऐ! बल तूने, पीड़ा मेरी कुछ सही।
जागो बल के वीर जवानों.....
जब-2 कष्ट पड़े मुझ पर, बल याद तेरी आती रही।
हाट स्प्रिंग और कच्छ के रण में, शान मेरी तुझसे रही।
जागो बल के वीर जवानों.....
जब-2 वार किया शत्रु ने, इतिहास गाथा गा रही।
संसद, अयोध्या, अक्षरधाम में, जीत तेरी सदा रही।
जागो बल के वीर जवानों.....
पंजाब कश्मीर और असम में, त्याग तेरी पहचान रही।
सेवा-भक्ति का ले शपथ, आगे सदा तू बढती गई।
जागो बल के वीर जवानों.....
फैले हो वतन के हर कोने में, चीख-2 पुकार रही।
दूर करो मेरे तन की पीडा, बार-बार विलाप रही।

जागो बल के वीर जवानों.....
सता रही है पीडा मुझको, कष्ट मेरी असहाय रही।
नही भरोसा और किसी का, गाथा तेरी गा रही।
जागो बल के वीर जवानों.....
कहती हूं मैं शपथ खाकर, अतीत तेरी अजय रही।
प्रगति हो ऐसे बल की, आखिर मेरी इच्छा यही।
जागो बल के वीर जवानो, भारत मां पुकार रही।



एक संक्षिप्त रूप

विज्ञान ने आज जो तरक्की की है उसका लोहा सभी मानते हैं जहाँ मनुष्य चॉद पर पहुंचकर गर्व महसूस कर रहा है वहीं दूसरी तरफ मंगल की सतह पर पहुँचने को आतुर हैं। कठिनाइयाँ मार्ग में अनेकों आई पर मनुष्य ने हार नहीं मानीं। कुदरत ने जहाँ एक ओर धरती पर हरियाली दी वहीं दूसरी ओर लम्बे बेजान रेगिस्तान भी बनाया है।

कुदरत ने हमारी धरती को विभिन्न रंगों से सजाया है, अनेकों मौसम हमें दिया है और उन सभी से बढ़कर जो दिया है वह है परिवर्तन जिस प्रकार यह कथन कि मृत्यु

सर्वथा सत्य है ठीक उसी प्रकार परिवर्तन एक सच्चाई है और यही परिवर्तन मनुष्य के लिए कभी-कभी प्रकृति के तरफ से उपहार स्वरूप होता है और कभी एक बहुत बड़े विनाश का कारण बनता है। मनुष्य जिज्ञासु रहता है प्रकृति के उपहार को उसने स्वीकार कर आनंद उठाया है साथ ही विनाश जो उसे प्रकृति ने प्राकृतिक आपदा के नाम से दिया है, स्वीकारा है और लगातार संघर्ष करता रहा है और कभी हार नहीं माना है। अपने जिज्ञासु प्रकृति के चलते ही एक ओर उसने मानव सभ्यता को सम्पन्न किया है उसका चहंमुखी विकास किया है, वही स्वयं मानव सभ्यता के बार-बार विनाश का कारण बना है परन्तु वह रूका नहीं है।

इसी प्राकृतिक आपदा की पृष्ठभूमि पर यदि हम हम निगाह डालते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि आपदा परिवर्तन का ही रूप है उसे रोका नहीं जा सकता इतिहास इस बात का गवाह है कि सभ्यतायें बनी हैं और बिगड़ी हैं, कारण चाहें प्राकृतिक आपदा हो या स्वयं मनुष्य निर्मित आपदा। यदि और बारीकियों से अध्ययन करते हैं तो तत्वों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि डायनासोर जैसे विचित्र प्राणी जो कभी इस पृथ्वी पर विचरण करते थे प्राकृतिक आपदा जो कि उल्का पिण्डों के रूप में करोड़ों वर्षों पहले हुई थी उसमें समाप्त हो गये।

आज विज्ञान और तकनीकी, योजना और प्रयास मनुष्य के पास ऐसे हथियार हैं जिनसे वह किसी भी प्रकार की आपदा से अपने आपको कुछ हद तक बचाने में सक्षम हैं।

यदि हम आपदा की बात करते हैं तो हमें यह भी जानना होगा कि आखिर आपदा क्या है आपदा बहुत बड़े पैमाने पर जन-धन की हानि है कारण प्राकृतिक या मनुष्य निर्मित आपदा कुछ भी हो सकता है। मानव निर्मित आपदा से लड़ने के लिए मनुष्य ने नियम, कानून, रोक, कूटनीति, अधिकार, दण्ड की नीतियों पर चलकर विनाश को कम करने का प्रयास किया है और बहुत हद तक सफलता भी पाई है। परन्तु प्राकृतिक आपदा, जिसका रूप वृहद्ध है, से लगातार संघर्ष करता रहा है और कुछ हद तक प्राकृतिक के चक्र को समझकर यदि कार्य करता रहा तो जन-धन की हानि को बहुत हद तक कम कर सकता है।

यदि संसार के देशों द्वारा किये गयें प्रयासों पर नजर डालतें हैं तो यह साफ हो जाता है कि जिन देशों द्वारा आपदा प्रबन्धन पर अधिक प्रयास किये गये हैं वनस्पति उनके जहां प्रयास नहीं किये गये, कम जन-धन की हानि हुई है। पश्चिमी देश या विकसित देशों के प्रयास इसमें अग्रणी रहे हैं। यदि हम उड़ीसा के चक्रवात की तुलना अमेरिका में आये उच्च श्रेणी के तूफानों से करते हैं तो हम पाते हैं कि उड़ीसा के कम तीव्रता वाले तूफान ने अमेरिका के अधिक तीव्रता के तूफान से अधिक जन-धन को हानि पहुंचाई है कारण-तूफान से लड़ने की तैयारी उनकी हमसे अच्छी रही है।

आज जब विश्व व्यवसायीकरण की ओर तेजी से गतिमान है, बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ पैसा उस क्षेत्र या उस देश में लगाना चाहती हैं जहाँ अधिक लाभ के अवसर हो और लाभ उन्हीं देशों में होगा जहाँ उपभोक्ता अधिक होंगे बाजार की संभावनायें होगी

तथा बाजार स्थापित करने के लिए एशियाई देश एक उत्तम स्थान है।

इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर पश्चिमी देशों का यह प्रयास रहा है कि एक स्थाई सरकार के अलावा एशियाई देशों में प्राकृतिक आपदाओं से लोगों को सचेत किया जाये ताकि उद्योग धन्धों पर इसका बुरा असर न पड़े।

प्राकृतिक आपदाओं के विशेषज्ञ वेदा श्री स्वामी नायन एस अंकलेश्वर अय्यर के अनुसार प्राकृतिक आपदाओं की बात करते हैं तो भारत विश्व में प्रथम स्थान रखता है जबकि थल क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत कई देशों से कम क्षेत्रफल रखता है। एक अध्ययन के अनुसार यदि आज हम एक रूपये खर्च करके प्राकृतिक आपदा से लड़ने की तैयारी करते हैं तो हम आपदा के कारण होने वाली 40 रूपये की हानि को बचा पायेंगे, तो क्यों न एक रूपया ही आपदा प्रबन्धन पर आज खर्च कर लिया जाय।

भारत जो कि एक विकासशील देश होने के साथ-साथ विश्व में जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा स्थान रखता है, भारत भी विश्व बाजार में अपना स्थान सर्वोच्च रखने के लिए प्रयत्नशील हैं ताकि रोजगार की संभावनायें उत्पन्न हों और विश्व बैंक की मदद के बिना यह संभव नहीं है तथा विश्व बैंक उन्हीं देशों को ऋण देने में तत्परता दिखाता है, जिनमें प्राकृतिक आपदाओं से पैसा डूबने की संभावना कम हो जाती है।

अतः भारत ने प्राकृतिक आपदाओं से लड़ने की ठान ली है और उसी तैयारी के चरणों में यह अगला कदम है कि एक ऐसी आपदा प्रबन्धन समिति का गठन किया जाए जो देश के नागरिकों को आपदा प्रबन्धन में सिखलाई देने के अलावा जन व धन की बड़े पैमाने पर होने वाली हानि को रोक सके, कम कर सके। उसी प्रयास के फलस्वरूप अर्द्ध सैनिक बलों की कुछ टुकड़ियों को उस कार्य के लिए चुना गया हैं जो बिना समय गंवाए कम प्रयासों से एक सुदृढ़ इस संगठन का हिस्सा बने जो अपनी भूमिका आपदा प्रबन्धन में निभाऐं। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की दो बटालियन 145 व 146 को इसी कार्य हेतु तैयार किया जा रहा है तथा अपनी इसी तैयारी अवधि के दौरान सुनामी की लहरों से आई प्राकृतिक आपदा के दौरान अण्डमान निकोबार में कठिन मेहनत कर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने यह सिद्ध किया है कि उनका चुनाव सही किया गया है।

यदि हम दूसरे दृष्टिकोण से देखते हैं तो प्राणी इस ब्रहांड की अथक सम्पत्ति है, प्राणी के नुकसान का मतलब एक अमूल्य सम्पत्ति का नुकसान। जब यह विचार बुद्धिजीवियों के मन में आया तो इस अमूल्य सम्पत्ति को कैसें सुरक्षित रखा जाये इस बारे मे प्रयत्न किये गये उन्हीं प्रयत्नों में मानव अधिकार पर्यावरण की रक्षा, भूख, बेराजगारी, बीमारी, औद्योगिकीकरण उपनिवेशवाद, गरीबी आदि विषयों पर चर्चा की जाती रही है। इन्हीं सभी विषयों के दुष्परिणाम आपदा के रूप में सामने आते हैं जैसा कि अध्ययन दर्शाते हैं।

आपदा से बहुमूल्य जन धन की हानि होती है, इस जन-धन की हानि को कैसे रोका या कम किया जाये उन्हीं विषयों पर चर्चा के परिणाम स्वरूप आपदा प्रबन्धन का विचार आया और व्यवस्था की गई। उसी व्यवस्था के एक अंग के रूप में

अर्द्धसैनिक बलों के टुकड़ियों को प्रशिक्षित कर आपदा प्रबन्धन में प्रवीण बनाया जाए और अर्द्धसैनिक बलों की मदद से देश के आपदा प्रभावित क्षेत्रों के लोगों को आपदा से लड़ने के लिए मानसिक व शारीरिक रूप से भविष्य में तैयार किया जा सके। प्रयास अच्छे हैं, सभी के लिए अच्छा अवसर है कि वह प्राणी मात्र की सेवा के लिए इस कार्य में जुट जाए और प्रयत्नशील रहें कि हमारे देश का प्रत्येक नागरिक आपदा प्रबन्धन को अपनी दिनचर्या का हिस्सा मान निरन्तर प्रयासरत रहें क्योंकि प्रकृति परिवर्तनशील हैं।



आपदा एवं स्वास्थ्य परिसेवा

एस.के. गंगोपाध्याय, सहायक कमाण्डेन्ट
145 एन.डी.आर.एफ बटालियन, केरिपुबल

विश्व का यह बहुत ही पुराना अनुभव है कि हर एक प्रकार की आपदाओं के समय स्वास्थ्य परिसेवा हर व्यक्ति के लिए संजीवनी तुल्य रही है और आपत्तिकाल में स्वास्थ्य परिसेवा के अभाव में काफी जान का नुकसान भुगतना पड़ा है। उदाहरणार्थ– दिसम्बर 2004 में सुनामी के कारण इण्डोनेशिया में 240 स्वास्थ्य केन्द्रों में से 30 स्वास्थ्य केन्द्र विध्वंस हो गये थे, इस सूनामी से जानमाल की अपूर्णीय क्षति हुई और लगभग 77 स्वास्थ्य केन्द्र बरवाद हो गये। इसमें सबसे ज्यादा स्त्रियों के स्वास्थ्य पर असर पड़ा और श्रीलंका में इसी सुनामी के कारण 92 स्वास्थ्य केन्द्र विध्वंस हुए

जिसमें 35 अस्पताल भी शामिल हैं।

2001 में गुजरात में आये भीशण भूकम्प से 3812 स्वास्थ्य केन्द्र बरबाद हो गये जिस कारण जीवित बच सकने वाले व्यक्तियों को भी अपनी जान गवॉनी पड़ी।

मई 2008 में चीन के बंगचुअन प्रदेश में भूकम्प के कारण 11000 से ज्यादा चिकित्सा संस्थाएं विध्वंस हुई जिससे हजारों आदमियों को चिकित्सा के लिए इधर उधर भटकना पड़ा।

आपदा एवं आपातकाल के दौरान स्वास्थ्य परिसेवा के प्रशिक्षित कर्मचारियों की उलब्धता बहुत ही जरूरी है क्योंकि उस कठिन स्थिति में स्वास्थ्य कर्मियों की सेवाएं पीड़ितों के लिए जीवनदायिनी होती हैं। इस लिए 2009 में विश्स स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर स्वास्थ्य परिसेवाओं की सुरक्षा एवं स्वास्थ्य कर्मियों को तैयारी हालत में रखने पर विशेष ध्यान दिया गया क्योंकि आपदा के दौरान स्वास्थ्य परिसेवा एवं स्वास्थ्य कर्मी पीड़ितों के लिए लाईफ लाईन का कार्य करते है। जिसमें घायलों एवं बीमारों को चिकित्सा तथा फैलने वाली बीमारियों की रोकथाम करना, आपात स्थिति में बच्चों को सुरक्षित जन्म देना और अन्य संबंधित रोगों का निराकरण आदि आपात सेवाओं की उपलब्धता को सुनिश्चित करना है।

विश्व आपदा न्यूनीकरण प्रचार 2008-09 में भी इन्ही बातों को सामिल किया गया जैसे- “आपदा से सुरक्षित अस्पताल, जोखिमों को कम करना एवं स्वास्थ्य परिसेवाओं को सुरक्षा देना तथा जीवन को बचाना”।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) आपदा न्यूनीकरण के लिए अन्तरराष्ट्रीय योजना के तहत कार्य कर रहा है। इसमें विश्व बैंक पूर्ण रूप से सहायता प्रदान कर रहा है।



विश्व आपदा न्यूनीकरण दिवस-2008 में न्यूयाक्र में बैठक हुई जिसमें चीन, भारत एवं कैराबियन देशों के विशेषज्ञों ने भाग लिया और आपसी अनुभवों के आदान प्रदान के

दौरान यह चर्चा किया कि स्वास्थ्य पारेसेवा एवं स्कूलों को आपदा के समय कैसे सुरक्षित रखा जाये। भारत ने 2001 में आये गुजरात भूकम्प के अनुभव से इसमें 10 पॉइन्ट रखे थे।

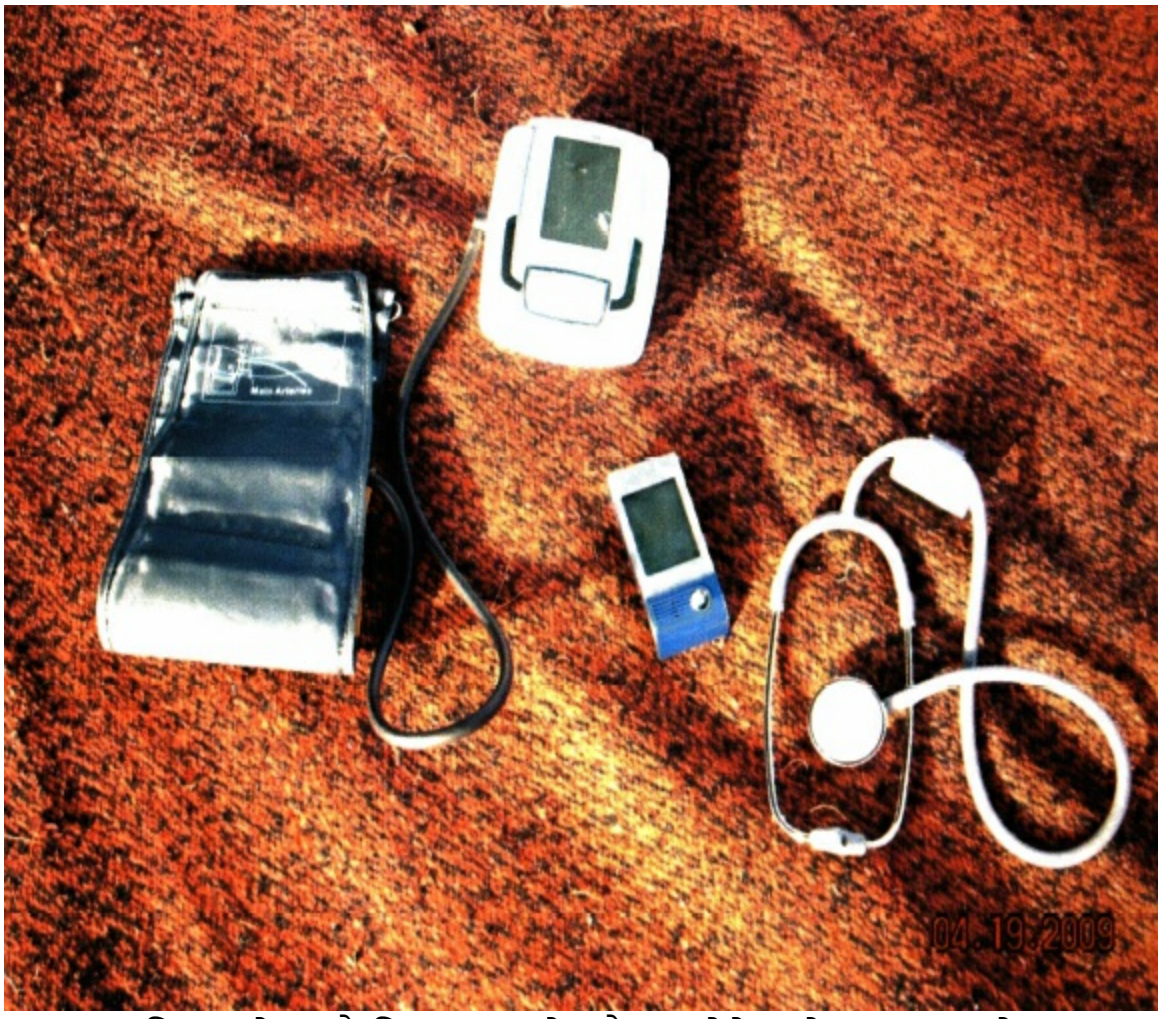
आपदा न्यूनीकरण सलाहकार समूह (DIMAG) ने अपना एक विचार प्रस्तुत किया था कि आपदा के दौरान अस्पताल सक्रिय रहें, ऐसे उपाय करने चाहिए, इसके लिए अस्पताल सुरक्षा इण्डेक्स तैयार करने की सख्त जरूरत है। इन समूहों ने और भी सलाह दिया था कि औजारों के बारे में जानकारी एवं मेथडॉलोजी, अस्पताल तैयारी प्रोग्राम में आग से बचाव की व्यवस्था रखना चाहिए और मरीजों इत्यादि को बाहर निकालने का अभ्यास करना चाहिए।

पान अमेरिकन स्वास्थ्य संस्था (PAHO) एवं आपदा न्यूनीकरण सलाहकार समूह (DIMAG), जून-2009 में "सुरक्षित अस्पताल" होने वाले सम्मेलन के लिए उत्साहित कर रही हैं और सहायता कर रही है। अनेक देश अस्पतालों को सुरक्षित रखने के लिए कार्य कर रहीं हैं और तैयारी और उन्नति भी कर रही हैं।

स्वास्थ्य, शिक्षा एवं कृषि के बारें में बाढ़ एवं साईक्लोन के बाद राहत कार्य के लिए, हमारा पड़ोसी देश बंगलादेश ने बहुउद्देश्यी सुविधा विकसित की है जिस कारण वर्ष-2007 में सीडर नामक साईक्लोन के दौरान हजारों की तादाद में आदमियों की जान बचाने में सफल रहे। युद्धविध्वस्त सोमालिया, असुरक्षा की भावना को दूर करने के लिए बीमारों को चिकित्सा उपलब्धता को सुनिश्चित किया है।

सुरक्षित स्वास्थ्य परिसेवा वही है जो आपदा के तुरन्त बाद कार्यरत रहे और ज्यादा से ज्यादा सुविधा प्रदान करें। यह सिर्फ स्वास्थ्य विभाग एवं स्वास्थ्य कर्मियों का ही कार्य नहीं है बल्कि अन्य सरकारी सभी विभाग एवं समाज के सभी स्तर पर सभी को मिल कर कार्य करना चाहिए। इस लिए समाज के सभी वर्गों के लोगों को प्रथम चिकित्सा उपचारक का ज्ञान होना बहुत ही जरूरी है जिससे जरूरत पड़ने पर वह किसी की भी जान बचाने में मदद कर सकें।

इन्ही बातों को ध्यान में रखते हुए केन्द्र सरकार ने देश में अर्द्धसैनिक बल की यूनिटों में से 08 यूनिटो को राष्ट्रीय आपदा अनुक्रिया बल (एन.डी.आर.एफ.) का गठन किया है जिसमें सभी सदस्यों को प्रथम चिकित्सा उपचारक (एम.एफ.आर.) का प्रशिक्षण दिलाया गया है तथा हर एक कम्पनी स्तर पर एक-एक चिकित्सा अधिकारी को भी नियुक्त किया गया है। इसके अलावा प्रथम चिकित्सा उपचार एवं चिकित्सा संबंधी सभी प्रकार का सामान उपलब्ध कराया गया है और आपातकालीन हेतु दवाईयाँ भी उपलब्ध करायी गयी है जिससे किसी भी समय पर किसी भी प्रकार की आपदा होने पर उससे निपटा जा सके।



हमारा वास्तविक उद्देश्य है कि आपदा के दौरान होने वाले नुकसान को कम करना एवं अधिक से अधिक जान बचाना है।

सूचना



वार्ब हाउसिंग

श्री पी एस दायमा,
उप कमाडेंट एवं सचिव (वार्ब), गृह मंत्रालय

गृह मंत्रालय के अनुदेश तथा दिशा निर्देश के अनुरूप कल्याण एवं पुनर्वास बोर्ड, केन्द्रीय सुरक्षा बलों के मामलों मे गृह मंत्रालय की सर्वोच्च कल्याण एवं सलाहकार बॉडी के रूप में कार्य कर रहा है जिसमें केन्द्रीय सुरक्षा बलों के कार्मिक तथा उनके निकटतम संबंधियों के कल्याण कारी कार्य अर्थात उनका पुनर्वास, स्वरोजगार, ट्रेनिंग, नौकरी तथा आवास की सुविधा उपलब्ध कराने जैसी मूलभूत सुविधाओं को देने के बारे मे अथक प्रयास किये जा रहे है।

चूंकि केन्द्रीय सुरक्षा बलों के अधिकतर कार्मिक देश के दुर्गम दूर दराज यहाँ तक कि विदेशों में तैनात रहते है और वर्ष में एक दो बार ही अवकाश पर आते है, जिसके कारण इस अवधि में केवल अपने रोजमर्रा के कार्य को पूरा कर पाते है और इसमें बुनियादी आवश्यकता जैसे मकान आदि नहीं बना पाते है जिसका मुख्य कारण समयाभाव, योजनाओं के बारे सूचना न होना, बिल्डर की विश्वसनीयता एवं

औपचारिकताओं मे आने वाली विभिन्न बाधाएं होती है।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुये वार्ब कार्यालय ने एक पायलट योजना बनाई कि केन्द्रीय सुरक्षा बलों के कार्मिकों तथा सेवा निवृत कार्मिको एवं मृतक कार्मिकों के निकटतम सम्बन्धियों को मकान जैसी बुनियादी सुविधा उपलब्ध कराई जायें और निरन्तर प्रयासों एवं विस्तृत चर्चा के कारण अभी एक कम्पनी ने वार्ब कार्यालय से सम्पर्क किया और केन्द्रीय पुलिस बलों के कार्मिकों की कार्यप्रणाली को मद्देनजर रखते हुए रियायती दरों पर मकान (फ्लैट) उपलब्ध करने के लिए तैयार हो गये है। वार्ब का प्रयास है कि कार्मिको की प्रत्येक औपचारिकता के लिए सभी सुविधाएं मुहैया करवाए एवं उनके हितों की सजग निगरानी करें।

मै0 ट्रेण्डसेटरस प्रोपमार्ट ने अपना प्रस्ताव वार्ब कार्यालय को प्रस्तुत किया है जिसमें एंनसीआर, एन एच-58 राजनगर एक्सटेशंन गाजियाबाद, में फ्लैट बनाकर दिये जायेगें और यह प्रोजेक्ट मेरठ हरिद्वार 6 लेन एक्प्रेस हाईवे एवं कुंडली मानेसर पलवल (केएमपी) एक्सप्रेस वे पर बेहद सुविधाजनक लोकेशन पर स्थित है। इस स्थान पर 3200 एकड़ जमीन पर आवासीय टाउनशिप विकसित की जा रही है। जिसके आसपास शैक्षणिक संस्थान, अस्पताल, मार्किट, प्रस्तावित मैट्रो स्टेशन, रेलवे स्टेशन, बस अड्डा आदि की सुविधाएं है।

कम्पनी के द्वारा प्रथम स्तर पर कुल 600 न0 मकान/फ्लैट का ही निर्माण कार्य किया जायेगा जो कि रियायती दरों पर केन्द्रीय पुलिस बलो के सेवारत, सेवानिवृत्त एवं दिवंगत कार्मिको के आश्रितों को उपलब्ध कराये जायेंगे जिनका विवरण निम्न प्रकार से है :–

क्र.स	क्षेत्र	स्तर	अनुमानित राशि
1	600 वर्गफुट	एक बीएचके एवं एक टायलेट	900000 लाख
2.	1050 वर्गफुट	दो बीएचके एवं दो टायलेट	1600000 लाख
3.	1150 वर्गफुट	दो बीएचके एवं दो टायलेट	1750000 लाख
4.	1300 वर्गफुट	तीन बीएचके एवं दो टायलेट	2000000 लाख
5.	1500 वर्गफुट	तीन बीएचके एवं दो टायलेट	2300000 लाख

- बी एच के (बैडरूम, हॉल, किचन)
- अनुमानित राशि के अतिरिक्त पार्किंग, स्वीमिगं पुल, क्लब एवं पी एल सी आदि के लिए कोई अतिरिक्त भुगतान नही करना होगा केवल सरकारी ईडीसी एवं रजिस्ट्री के लिए ही ग्राहक को भुगतान करना होगा।

भुगतान योजना निर्माण कार्य आधारित होगी जो कि किश्त के रूप मे भुगतान की जायेगी एवं जरूरत होने पर राष्ट्रीयकृत बैंको उचित ब्याज दरों पर द्वारा लोन की

सुविधा भी उपलब्ध कराइ जायेगी जिसका विवरण निम्न लिखित है।

1, पहली किश्त आवेदन करते समय	5 प्रतिशत
2, निर्माण कार्य शुरू होने पर	10 प्रतिशत
3, प्लिन्थ लेवल पूरा होने पर	5 प्रतिशत एवं ईडीसी 20 प्रतिशत
4, पहला तल शुरू होने पर	5 प्रतिशत
5, दूसरा तल शुरू होने पर	5 प्रतिशत
6 तीसरा तल शुरू होने पर	5 प्रतिशत एवं ईडीसी 20 प्रतिशत
7 चौथा तल शुरू होने पर	5 प्रतिशत
8 पाचवॉ तल शुरू होने पर	5 प्रतिशत
9 छठा तल शुरू होने पर	5 प्रतिशत एवं ईडीसी 20 प्रतिशत
10 सातवॉ तल शुरू होने पर	5 प्रतिशत
11 आठवॉ तल शुरू हाने पर	5 प्रतिशत
12 नौवॉ तल शुरू होने पर	5 प्रतिशत एवं ईडीसी 20 प्रतिशत
13 दशमा तल शुरू होने पर	5 प्रतिशत
14 सुपर स्ट्रक्चर पूरा होने पर	5 प्रतिशत
15 प्लम्बिग, फलोरिग,एवं टायल का काम पूरा होने पर	5 प्रतिशत एवं ईडीसी 20 प्रतिशत
16 इलेवेटर एवं बिजली का काम पूरा होने पर	5 प्रतिशत
17 मालिक द्वारा कब्जे से एक महीना पहले	5 प्रतिशत
18 मालिक को कब्जे का प्रस्ताव देने पर	10 प्रतिशत
टोटल	**100 प्रतिशत प्लस 100 प्रतिशत**

- ई डी सी (अतिरिक्त विकास शुल्क) जो कि सरकारी खाते मे जायेगा और इसकी जानकारी आवास आवंटन के समय पर ही होगीं अतः आवेदको से कुल ईडीसी का 20 प्रतिशत की दर से पाँच बराबर किश्तो मे काट लिया जायेगा ताकि आवेदक को एक साथ अधिक भुगतान नही करना पड़ेगा।

यह योजना केवल केन्द्रीय अर्धसैनिक बलों मे सेवारत, सेवा निवृत्त एवं दिवंगत कार्मिको के आश्रितों के लिए ही खुली होगी। और इसमे पहले आओ पहले पाओ की तर्ज पर अथवा वार्ब द्वारा नियत अन्य पारदर्शी तरीके से आवंटन की सुविधा का

प्रावधान रखा गया है। यह प्रस्ताव मेम्बर एपेक्स बाड़ी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, सीमा सुरक्षा बल, के0औ0सु0बल, भा0ति0सी0पु0, एस0एस0बी एंव आसाम राईफल्स द्वारा अनुमोदित है।

वार्ब अपने स्तर पर कम्पनी के कार्यकलापों पर पूर्ण निगरानी रखेगी एवं तमाम शर्तों एवं आवश्यक दिशानिर्देशों के लिए वार्ब एवं कंपनी के बीच एक एमओयू (समझौते का प्रस्ताव) हस्ताक्षर करेगी तथापि क्रेता एवं विक्रेता सौदा करते समय अपनी पूर्ण तसल्ली कर ले एवं इसमे सौदे की स्थिति मे खरीदार एवं कम्पनी के बीच क्रेता-विक्रेता समझौता होगा जो सभी शर्तो को ध्यान में रखकर किया जाएगा। वार्ब की भूमिका निगरानी एजेंसी की होगी जो प्रत्येक मुद्दे पर अपनी राय एवं निर्णय देगी।

बैंक लोन लेने की स्थिति में फलैट खरीदने वाले की आय एवं व्यय की स्थिति को देखकर ही लोन की सीमा बैंक द्वारा तय की जाएगी। इन सभी कार्यो मे मदद करने के लिए केन्द्रीय कार्यालय परिसर लोदी रोड पर एक आवास मेला लगाया जायेगा जहां मौके पर ही बुकिंग एवं और बैंक लोन की औपचारिकताए पूरी की जायेगी। जिन आवेदको को बलाया जाना है उन्हे अवकाश स्वीकृत करने के लिए उनके अधिकारियों को सूचित भी किया जाएगा।

कम्पनी द्वारा वार्ब कार्यालय के माध्यम से सभी फोरमेशन को आवश्यकतानुसार आवेदन पत्र भेजे जायेगे एवं सभी बलों से फ्लैट खरीदने के इच्छुक आवेदकों द्वारा आवेदन पत्र के साथ ही दस हजार रूपये मात्र सुरक्षा धनराशि के तौर पर अपने कार्यालय अध्यक्ष को जमा कराये जायेगे जो कि वार्ब कार्यालय द्वारा बैंक मे नया खाता खोलकर जमा किये जाएगें ताकि अनावश्यक रूप से कोई फ्लैट के लिए आवेदन नहीं कर सके।

वार्ब कार्यालय द्वारा प्रोजेक्ट की पूरी निगरानी की जायेगी फिर भी आवेदक स्वयं भी साईट पर जाकर प्रोजेक्ट के निर्माणकार्य की निगरानी कर सकते है एवं कम्पनी भी प्रोजेक्ट के चारो तरफ वैब कैमरे लगाएगी अतः जो कार्मिक सुदूर अपनी डयूटी पर तैनात है वह प्रोजेक्ट के निर्माण कार्य का आखों देखा हाल कम्पनी की वैब साईट पर देख सकते है। यह योजना 30 जुलाई, 2009 तक खुली है विस्तृत जानकारी के लिए ब्रोचर, फार्म, शर्तों आदि का अवलोकन करें इसके अतिरिक्त उक्त योजना के विशय मे कोई भी विस्तृत जानकारी श्री पी एस दायमा, उप कमाडेंट एवं सचिव (वार्ब), गृह मंत्रालय से दूरभाष 011-24367000 पर अथवा केरिपुबल की टोल फ्री हेल्पलाईन नं0 1800112111 पर प्राप्त कर सकते हैं।

व्यंग्य



सी आर पी का एड्म

अनिल गुप्ता, उप कमाण्डेन्ट
99 बटालियन. आर. ए. एफ

रेलवे क्लर्क ने मुझे देखा और उठ कर भाग खड़ा हुआ, मैं उसके सेक्शन अफसर के पास गया। वो भी मुझे देखते ही भड़क उठा बोला, “आप लोगों की समस्या क्या है ?”

- मैं खुद हैरान था, पूछा, “जी मैं समझा नहीं।”
- “जनाब अब और ज्यादा समझने के लिए तो आप को रेलवे के ट्रेनिंग स्कूल में कोर्स करना पड़ेगा।”
- “देखिए मैं तो एक सीधी सी बात पता करने आया हूं अजमेर से गुवाहाटी तक ट्रेन के कनेक्शन के बारे में।”
- “जनाब आप पहले आदमी नहीं हैं, एक आया, पूछा ट्रेन जाती हैं? बता दिया जाती है। फिर दूसरा लड़का आया और बोला ब्रोड गेज की है या मीटर गेज की? वो भी बता दिया। आज फिर एक लड़का आया था, पूछ रहा था एक्सप्रेस चलती है उस रूट पर कि नहीं? वो भी बता दिया। अभी वो गया भी नहीं था कि आप की यूनिट से फोन आ गया, बीच में कहां कहां रूकती है, मेरा जी चाहा अपने बाल नोच लूं। पूरा आधा धंटा दिमाग चाट लिया मेरा, गुवाहाटी से अजमेर तक बीच के सारे स्टेशन लिखवा लिये। अब आप आएं है। कहिए आप की क्या सेवा करूं?”

- “जनाब नाराज न हों, हमारे एक साहब अभी नए नए बदली हो कर आए हैं, शायद उन्हें अपने परिवार वालों को बुलाना हैं।”
- “मगर आप लोग इन्क्वायरी तो ऐसे कर रहे है जैसे कोई स्पेशल ट्रेन चलवानी है गुवाहाटी और अजमेर के बीच। आप को चाहिए क्या, ये बताईए?”
- मुझे तो आप बस ये बता दीजिए बीच में राजधानी का कनेक्शन कहीं हो सकता हैं?”
- “नहीं हो सकता ? और पूछिए ?”
- “जी और तो मुझे कुछ पता नहीं करना हैं।
- “मगर मैं बता देता हूं।”
- उन्होंने अपने क्लर्क को आवाज लगायी और बोले, “इन्हें अजमेर से गुवाहाटी जाने वाली सारी ट्रेनों के जनरल डब्बे से लेकर एसी फर्स्ट तक के सारे किराये बता दो, सारी ट्रेनों के चलने और पहुंचने के समय बता दो, ये भी बता दो कि किस किस ट्रेन में पेन्ट्री हैं, और किस में नहीं।”
- फिर तो मुझ से मुखातिब हुए, “इतना हो जाने के बाद मुझे नहीं लगता आप को कुछ और जानकारी भी चाहिए होगी।
- “हां अगर अगले तीन महीने की रिजर्वेशन की पोजीशन और बता दें, तो मुझे लगता है, मुझे नहीं आना पड़ेगा।”
- उसने अपने बाल नोच लिये और बोला, “लगता है मैं पागल हो जाऊंगा।” खैर। किसी तरह सारी जानकारी का इन्सायक्लोपीडिया इकट्ठा करके मैं अपने साहब के पास पहुच गया। मुझे पूरा यकीन था कि अब साहब को कोई शक नहीं रहेगा, आखिर एक विश्वास के साथ अफसर को भेजा था। और मुझे यकीन था कि मैं ने उन के विश्वास की रक्षा की हैं, लेकिन उन के चेहरे के भाव देख कर मेरा यकीन हिल गया, वो कुछ संतुष्ट नहीं हुए बोले, “यार तुम अफसर हो, तुम्हें पता करके आना चाहिए था इसके अलावा कोई अलटरनेटिव रूट भी है क्या ?”
- अगले दिन मैं फिर पहुंच गया। मुझे देखते ही वो साहब बोले “साहब आप लोगो को और कोई काम नहीं है क्या?”
- “है क्यों नही। हम आप की सुरक्षा के लिए तैनात हैं?”
- “पर जनाब आप को इन्क्वारियों से फुरसत मिलेगी तो सुरक्षा करेंगे न। मैं तो आप को हमेशा यहीं देखता हूं। आप का अपना ही एड्म खत्म नहीं होता, तो फिर ड्यूटी कब करते हैं आप?”
- दबी जुबान से सी. आर. पी में सभी कहते हैं कि सी. आर. पी का अपना ही एड्म खत्म नहीं होता, आज बाहर का आदमी भी कह रहा था, वो भी मेरे ही मुंह पर। खैर। मैं फौरन मतलब की बात पर आ गया। उस ने बता दिया कि कोई अलटरनेटिव रूट नही हैं, मैं ने लौट कर डरते डरते साहब को बता दिया। मैं मन ही मन खैर मना रहा था कि कहीं और कोई शंका बाकी न रह गयी हो।
- मेरा शक ठीक निकला। साहब कुछ संतुष्ट नजर नहीं आ रहे थे, मैं ने पूछा, “साहब बात क्या है ? किसे आना है।”

- साहब ने बताया कि गर्मियों की छुट्टियों में उन के परिवार को आना है। उन्हीं का रिजर्वेशन करवाना है, इसलिए पता कर रहा था, मगर बहुत लम्बा रूट है, कुछ जंच नहीं रहा।
- “मगर साहब गर्मियों की छुट्टियों में तो अभी ढाई महिने हैं।”
- “हा मगर अभी से प्लान करेंगे, तो रिजर्वेशन वगैर आराम से मिल जाएगा।”
- “साहब अगर अभी इतना टाईम है तो आप बाई एयर क्यों नहीं करवा लेते।”
- “अरे यार इतने पैसे कहां हैं, जो पूरे परिवार को जहाज से बुलवाऊ।”
- “साहब अगर तीन महीने पहले बुक करवाएगें तो रेल के टिकट से भी सस्ता पड़ेगा। दिल्ली से गुवाहाटी तक का किराया सिर्फ 1100 रूपये है।”
- “क्या?”
- “हां साहब।”
- उन्होंने तुरंत कंट्रोल रूम से फोन कर के कहा कि एयर पोर्ट पर जो कम्पनी कमांडर है उस से कहो कि फौरन दिल्ली से गुवाहाटी आने वाली सारी फ्लाईट के शेड्यूल और किराये की जानकारी प्राप्त कर के मुझ से बात करेगा। साथ ही ये भी पता करेगा, अजमेर से दिल्ली के बीच के कनेक्शन के लिए भी कुछ रिबेट वगैरा है क्या? जल्दी पता करके मुझे रिपोर्ट देगा।”
- मैं ने राहत की सांस ली, मेरी छुट्टी हो गयी थी, अब बारी एयरपोर्ट वाले कम्पनी कमांडर की थी।

रिपोर्ट

गृहमंत्री का महानिदेशालय दौरा



प्रेरक

“आत्म विश्वास व दृढ़ता के साथ सदैव

अग्रसर”

पुरूषोत्तम जोशी, सहा कमा.
ग्रुप केन्द्र, काठगोदाम

मनुष्य के जीवन में अक्सर समस्याओं के आ जाने पर मन में हीन भावना जागृत हो जाती हैं, ऐसी स्थिति में मनुष्य संकोची व हीन भावना से ग्रसित जीवन जीने लगता हैं, उसके मानवीय क्रिया-कलापों व सोच में शनैः-शनैः आमूलचूक परिवर्तन आने लगते है। व्यक्ति पूर्ण रूपेण निरूत्साहित हो आता है। लेकिन व्यक्ति को ऐसे समय में एकाग्रचित होकर स्वयं में उत्साह का संचार अवश्य करना चाहिए, ताकि हमेशा आगे बढ़ने की ओर जीवन अग्रसर रहे।



जीवन मे मानव को निरूत्साहित नही होना चाहिए, बल्कि यह सोचना चाहिए, कि मैं सभी कार्य कर सकता हूं व कोई कार्य इस सृष्टि में मुश्किल नही है। जैसे पृथ्वी पर मनुष्य ने नित नये अविष्कार किए व आज चन्द्रमा व हिमालय की चोटियों पर बुलन्दी से पार कर नई सफलताओं को जागृत किया, इसके लिए इन्सान को दृढ़ता से आगे बढ़ने की जरूरत है।

सफलताओं को यदि पाना है, तो हमें हीन भावनाओं को अवश्य त्याग देना चाहिए क्योंकि हमारी मुख्य समस्या हीन भावना ही है। यदि हम सोचने लगें कि अमुक कार्य

हमसे नहीं हो पायेगा, तो उस काम को करने में असफलता अवश्य प्राप्त होगी व असफलता से निराशा व निराशा हमारे लिए अवसाद की स्थिति ला देती है। हम कोई कार्य करने से पहले उसके नकारात्मक उसके नकारात्मक बातें सोचकर कि यदि मैं असफल रहूंगा, तो लोग हसेंगे व पूर्ण रूपेण पूर्ण में ही कार्य के प्रति निरूत्साहित हो जाते है।

वर्तमान में व्यक्ति को व्यक्ति से ज्यादा भय रहता है, कारण समाज में वर्चस्व को स्थापित करना क्योंकि आडम्बर पूर्ण समाज में दिखावा जितना ज्यादा होगा वह समाज में उतना ही ज्यादा शक्तिशाली होगा। यदि एक धनाढ्य व्यक्ति को व एक सत्यकर्मी को एक मंच पर खड़ा करके पूछा जाए कि कौन बड़ा ज्ञाता है , तो जनता धनी व्यक्ति के साथ जायेगी व सच्चा व्यक्ति स्वयं को ठगा महसूस करेगा, लेकिन जब वास्तविक जीवन को परिभाषित करने का वक्त आयेगा, तो विजय सत्यकर्मी की होगी। झूठी शानो-शौकत वाला मनुष्य कभी भी जीवन की धारा के साथ ज्यादा दिन तक नहीं चल सकेगा। धैर्यवान व्यक्ति, पक्का इरादा लिए हुए हो व सत्य मार्ग पर चले तो असफलताओं के सृजनात्मक पहलुओं को भेदते हुए, जीवन मार्ग पर चलता चला जायेगा।

वर्तमान समाज आलसी, आपसी समन्वय का अभाव, कार्य की व्यवस्था का दौर है जो जीने के हर क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ता जा रहा है।

हमारे अन्दर कई तरह की शक्तियाँ छिपी हुई है, इसके लिए हमें जिज्ञासा को जगाने की आवश्यकता है, ताकि हम अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर सकते है। जैसा कि रविन्द्र नाथ टैगोर ने कहा था कि हमारा सारा ज्ञान व सारी काबिलियत जिज्ञासा के बिना व्यर्थ है व एक अनुमान के तहत् हर सफल व्यक्ति जिज्ञासु प्रवृत्ति का होता है व वह हर एक घटना व पल को सोचने व आकलन करने के बाद अपनी आन्तरिक शक्ति के द्वारा उस घटना को सुलझाने हेतु दृढ़ संकल्प होकर आगे की तरह जिज्ञासा की ओर बढ़ता है। वही सच्चे अर्थो में सफलता की कुँजी है। यदि हम वैज्ञानिक खोजों को जानने की जिज्ञासा रखते है व दृढ़ निश्चय द्वारा उस खोज को आगे बढ़ाने का प्रयत्न करने की कोशिश करने लगते है।

कार्यक्षेत्र में रूचि होने की वजह से जानकारी और ज्ञान का स्तर बढ़ जाता है और यही वजह है कि अपने काम के प्रति आपका लगाव स्वतः ही बढ़ जाता है। काम में और ज्यादा रूचि जगाने के लिए उसमें जिज्ञासा पैदा करनी होगी, बशर्ते यदि आप अपने काम को बोझ की तरह नहीं, बल्कि एक दिलचस्प और रौचक जिम्मेदारी समझकर करना चाहते है।

मानव जाति के उद्गम से आज तक नित नये आविष्कार से समूची दुनिया प्रगतिशीलता के पथ पर आगे बढ़ रही है क्योंकि कार्य क्षेत्र में कार्य के प्रति इच्छा, सीखने की लालसा जानने की जिज्ञासा व दृढ़ संकल्पता ने आज मानवजाति को नई पहचान दी है। लेकिन ज्यादा विकास होने के कारण हमारा समाज झूठे आडम्बर, कुरीतियों व आपसी समन्वय की कमी आदि से जूझ रहा है, क्योंकि दृढ़ संकल्पता

बुराइ के लिए की गइ न कि नइ सोच के साथ भय, आडम्बर, बुराइ रहित समाज के लिए। यदि दृढ़-संकल्पता दिखाई तो अपने निजी स्वार्थ हेतु न कि परोपकार हेतु, जिसके कारण वैमनस्य भाव बढ़ा व अपनी पहचान बनाने की होड़ लग गई। समाज का विकास पूर्ण तथ्य, सौहार्दपूर्ण वातावरण भाई-चारा इत्यादि पीछे रह गए। यदि हमें सचमुच समाज को स्वच्छ बनाना है तो दृढ़ता व आत्मविश्वास में वृद्धि करनी होगी व निजी स्वार्थ का त्याग कर नए भारत वर्ष का सूत्रपात करना होगा।

इन्टेलिजेन्ट

आर पी सिंह, सहा कमा
ग्रुप केन्द्र इम्फाल



वह जमाना गया जब हमारे फोर्स में जवान आनी राईफल को अलग-अलग रंग के धागे बांधकर पहचानते थे और अंगूठा लगागर अपना वेतन लेते थे। अब तो सब पढ़े-लिखे अर्थात कम से कम मैट्रिक पास आते हैं और हर बात को नितान्त आदेश न समझकर तर्क की कसौटी पर कसने की असफल कोशिश करते हैं।

इन्टेलेजेन्ट्स (बुद्धिमान) उस जमाने में भी होते होगें जो अधिक काम कामन सेन्स से चलाते थे, लेकिन आधुनिक इन्टेलिजेन्ट्स जैसे नहीं। मेरा अभिप्राय वैसे इन्टेलिजेन्ट्स से कदापि नहीं, जैसा कि आप समझने का भ्रम कर रहे हैं, बल्कि कुछ विचित्र किस्म के व्यक्तियों से है जो कि यदा कदा अभी भी हमारे फोर्स में मिल जाते हैं। ये संख्या में इतने भी नहीं कि- "एक ढूंढो हजार मिलते हैं" बल्कि ये तो चिराग लेकर ढूंढने से भी बड़ी मुश्किल से मिलते हैं। संयोग से मुझे कुछ ऐसे इन्टेलिजेन्ट्स लोगों से इनकाउन्टर का सुअवसर मिला है। उनमें से कुछ बानगी आपके समझ प्रस्तुत करने की धृष्टता कर रहा हूं, यथा –

रूपये सत्तर केवल : –

मैस मीटिंग के बाद, सी एम एम ने आकर मुझे बताया कि सर इस बार जिस एन सी ओ का चुनाव किया गया है, वह बहुत ही मेहनती, शरीफ और ईमानदार है। उसका कार्य हर समय एवं परिस्थिति में सराहनीय रहा है, किन्तु वह मैस कमान्डर पहली बार बना है, इसलिए आप उसे एक बार ठीक से समझा देंगे तो वह सब काम ठीक प्रकार से कर लेगा। मैंने उस एन सी ओ को अपने आफिस में बुलाया तथा मैस रिकार्ड एवं संचालन के विषय में अन्य सभी बातें समझाने के उपरान्त, यह भी निर्देश दिया कि सप्ताह में एक बार पूरे रिकार्ड के साथ मेरे समक्ष उपस्थित हो चाहे तो मेरे पास आने से पूर्व मैस एस ओ, सी एच एम अथवा पुराने मैस एन सी ओ से मिल लिया करे। निर्देशानुसार जब वह पहले सप्ताह के रिकार्ड के साथ मेरे समक्ष उपस्थित हुआ और मैने रिकार्ड चैक किया तो पाया कि अन्य सब चीजें तो ठीक हैं, बस उसने सामान का बिल दुकानदार से ठीक से बनवाकर नहीं लगाया है। मैंने उसे नमूना बतौर एक कच्चा बिल बनाकर दिखया। उसमें तीन-चार सब्जियों के नाम, दर, कीमत, कुल योग आदि लिखकर नीचे अन्त में रू0 70-00 का योग करके यह लिखकर समझाया कि अन्त में रकम शब्दों में भी अवश्य लिखी होनी चाहिए, जैसे- रूपये सत्तर केवल। उसने सब बातें समझने का मुझे आश्वासन दिया और मैंने उसे जाने की अनुमति दी। अगले सप्ताह जब वह पुनः सभी रजिस्टर लेकर मेरे पास आया तो मैंने पाया बिल फाईल में जितने भी बिल लगे हैं, उन सभी बिलों में रकम कुल योग चाहे जितना भी था, किन्तु सबके अन्त में नीचे "सत्तर केवल" अवश्य लिखा हुआ था। मैंने बिल देखने के बाद उसके चेहरे की ओर देखा। एकदम निश्चिन्त एवं आश्वस्त था। चेहरे पर कोई विचार नहीं। मैंने उससे पूछा कि सब रसीदों पर यह क्यों लिखा है? वह चुप। कोई उत्तर नहीं। मेरा दिमाग चकराया। कई बार पूछने पर बड़ी मुश्किल से उसने कहा कि सर आपने ही तो लिखकर बताया था कि हर बिल में नीचे "रूपये सत्तर केवल" अवश्य लिखना। मैंने अपना सिर पकड़ लिया। उसे कहा कि जाकर मैस एस ओ एवं सी एच एम को साथ लेकर आए। तुरन्त सब (पुराने मैस कमाण्डर सहित) उपस्थित हो गये। मैंने उनसे पूछा कि जब मैंने आप लोगों को आदेश दिया था कि सभी रजिस्टर मेरे पास आने से पहले एक बार आप लोग अवश्य देख लेना तो, आप लोगों ने ऐसा क्यूं नहीं किया? इस पर दोनों हवलदारों ने जो बताया, उसे सुनकर

पता नहीं आप क्या सोचेंगे किन्तु उस समय की मेरी स्थिति का अनुमान कीजिए। उन्होंने बताया कि सर जब हमने इससे पूछा था कि सब बिलों पर यह क्यों लिख दिया, तो इसने जवाब दिया कि इस बारे में कुछ मत कहना। ओ सी साहब ने कहा कि हर बिल पर यह (रूपये सत्तर केवल) अवश्य लिखना है। अब आप आसानी से समझ सकते हैं कि उस इन्टेलिजेन्ट से मुठभेड़ में मैंने कैसे सफलता पायी होगी।

सी एच एम को बुलाया है : –

मुझे सुबह शाम टहलने की आदत है। मैं इसके लिए भरसक प्रयास करता हूं कि यह मिस न हो। लगभग एक-डेढ़ घण्टे दोनों समय का यह मेरा रूटीन है। एक दिन शाम की सैर के लिए जैसे ही मैं चलने को हुआ तो मुझे सी एच एम को बताने के लिए कोई बात याद आई। मैंने कमरे के बाहर खड़े होकर इधर-उधर देखा कि कोई जवान है तो, सी एच एम को बुलवा लेता हूं। संयोग से सिगनल सेन्टर के बाहर एक नहीं 5-7 जवान खड़े दिखाई दिये। मैंने किसी का नाम न लेकर सामान्य रूप से कहा कि भई देखना, सी एच अम को जरा बुला देना। जबकि संभावना यह भी थी कि सी एच एम इस समय पूजा कर रहा होगा। मैं केवल 2 मिनट के लिए रूका और फिर चल दिया। बात कोई इतनी विशेष भी नहीं थी कि अधिक प्रतीक्षा की जाती अथवा पुनः किसी को भेजा जाता। मैं जब टहल रहा था, तो उसी समय सी एच एम लगभग दौड़ता हुआ, हाथ में डायरी और पेन लिये मेरे पास पहुचा। गनीमत थी कि सी एच एम को मेरे वाकिंग रूट का पता था। मैने पूछा इतने परेशान क्यों हो तो वह बोला कि सर 10 मिनट में लगभग कई आदमियों ने मुझे आपसे मिलने के लिए बोल दिया। मतलब यह कि जितने भी लोगों ने सुना था, सबने 2-2 मिनट के अन्तराल से अपनी ड्यूटी बजा दी। सी एच एम चिन्तित कि पता नहीं इतना क्या अरजेन्ट है। तो यह थी इन्टेलिजेन्ट लोगों की सक्रियता।

सूखने के बाद देंगे न : –

इलाका कुछ ऐसा था (झारखण्ड) कि नदी, नाले, पहाड़, जंगल और चलने के लिए केवल कच्चे रास्ते, वह भी पगडंडी के रूप में। ऊपर से मौसम ऐसा कि दिन में दो-तीन बार बारिश होना और बार-बार धूप निकल जाना। ऐसे में कुछ भी निश्चित नहीं था कि कब धूप और पसीना अथवा कब अचानक बारिश आ जाए। ड्यूटी (आपरेशन) ऐसा कि 20-30 कभी-2 तो 50 किमी पैदल आना-जाना। नदी नालों की स्थिति ऐसी कि कभी जूते आदि उतारे तो उतारे अन्यथा ऐसे ही चलते रहे, बार-बार सूखते और भीगते। मतलब यह कि जब वापिस कैम्प में पहुचते थे तो वे कपड़े(वर्दी) तो दुबारा पहनने की स्थिति में बिल्कुल भी नहीं होते थे। इसी प्रकार के आपरेशन से एक दिन लौटे तो वर्दी की, कहना न होगा कि, स्थिति बहुत खराब थी। मैंने कमरे के अन्दर न जाकर बाहर बरामदे में ही सब कपड़े जूते आदि उतारकर एक कुर्सी पर और कुछ रस्सी पर रख दिये तथा अपने सुरक्षा सहायक को बताया कि ये कपड़े धोबी को दे देना और धुलने, सूखने के बाद ही इन्हें अन्दर रखना। ठीक है सर, कहकर वह दूसरे

कामों में लग गया। अगले दिन सुबह नाश्ता आदि करके जब मैं आफिस जाने लगा तो देखा कि वे कपड़े(वर्दी) अभी भी वहीं रस्सी पर लटके है। मैंने सोचा शायद इन्हें बाद में धोबी को देगा और कोई नोटिस लिए बिना मैं चला गया। लगभग एक-डेढ बजे जब मैं वापिस आया तो कपड़े अब भी पूर्व स्थिति में ही थे। अब मुझसे न रहा गया और मैंने सुरक्षा सहायक से पूछ ही लिया कि कपड़े अभी तक धोबी को क्यों नहीं दिये हैं, तो इस पर उसका क्या जवाब था, आप भी सुनिये- "सर सूखने के बाद देंगे न"? मैंने अपना माथा पकड लिया। क्या कहना चाहता है यह। यदि 2-3 दिन तक धूप नहीं निकली और ये कपड़े नहीं सूखे तो क्या यह धोबी का तब तक इन्तजार करता रहेगा और फिर उसकी यह इन्टेलिजेन्स तो मुझे बिल्कुल की समझ नहीं आई कि गीले कपड़े धोबी को क्यों नहीं दिये जा सकते। क्या आपकी समझ में आई हैं? नहीं ना।

बरामदे में बरसात का पानी: –

कम्पनी का कैम्प जिस स्थान पर था, वहा पर कुछ पी एफ हट्स एवं कुछ तम्बुओं में रहने की व्यवस्था थी। मैं स्वंय एक छोटी पी एफ हट में रहता था, जिसमें आगे की तरफ टिनशीट एवं बल्लियों की मदद से रोज ही अधिक वर्षा हो जाती थी। बरामदे की छत का ढलान कुछ ठीक नहीं था। बरसात होने पर बरामदे का कुछ पानी तो बाहर अपनी सही जगह ही गिरता था, किन्तु कुछ पानी बरामदे में ही आ जाता था जो कि बहकर कमरे के दरवाजे तक फैल जाता था। मतलब कि थोड़ा परेशानी हो जाती थी। बरामदे की छत को पूरी तरह से उखाड़कर दुबारा लगाना तो उपयुक्त नहीं था सो मैंने अपने सुरक्षा सहायक से कहा कि एक-दो आदमियों की मदद से इस छत के आगे लोहे की चादर की एक नाली जैसी(परनाल) बनाकर लगा दो, जिसका ढलवान बाहर की ओर हो और पानी पूरा बाहर ही गिरे। यह बताकर मैं आफिस में जा बैठा और जब वापिस लौटा तो 2-3 जवान इस कार्य को पूर्ण करके लगभग उसी समय जा रहे थे। मेरा सुरक्षा सहायक बड़े आश्वस्त मूड में मेरे पास आया और बताया कि सर बरामदे में नाली लगा दी गई है। मैंने कहा वह तो मैं भी देख रहा हूं, किन्तु क्या तुमने इसे चैक कर लिया है कि पानी बाहर ही गिरता है। ऐसे उतावले प्रश्न के लिए शायद वह तैयार नहीं था और बोला कि सर जब बरसात आयेगी तब चैक करेंगे ना? मैंने पूछा इसके लिए बरसात की इन्तजार करने की क्या जरूरत है तो वह अवाक। मैं समझ गया यह तो इन्टेलिजेन्ट है। मैंने कहा कि बाथरूम से पानी भरी बाल्टी लाओ, 5-7 मग पानी बरामदे की छत पर फेंको और चैक करो कि पानी कहां गिरता है। उसने ऐसा ही किया। मैंने भी देखा। सब ठीक था। लेकिन मेरे इन्टेलिजेन्ट का मूड कुछ उखड़ चुका था। शायद उसने सोचा होगा कि यह काम तो अब बरसात आने पर ही संभव था।

रास्ता भी मालूम है : –

अन्त में एक और नमूना। मुझे भी कुछ अन्य सौभाग्यशाली सदस्यों के साथ

कोसोवो(पूर्व यूगोस्लाविया-यूरोप) में (आर ए एफ में तैनाती के दौरान) सेवा करने का सुअवसर मिला। उसमें कुल 240 सदस्यों का बैच(कन्टीजेन्ट) 180 और 60, दो ग्रुपों में जाकर पहले कन्टीजेन्ट को रिलीव करता था। हम 160 व्यक्ति अपना टेन्योर करे प्रिस्टिना एअर पोर्ट पर(चैकिंग आदि की औपचारिकता के उपरान्त) सब से दूर खड़े, प्लेन की प्रतीक्षा कर रहे थे। व्यवस्था ऐसी थी कि, जिस प्लेन से शेष 60 सदस्य आने वाले थे, उसी से हमको भारत लौटना था। कुछ प्रतीक्षा के बाद प्लेन आता दिखाई दिया। सब लोग उत्सुकता एवं उत्साह से उसकी तरफ देखकर उत्तेजना में बोलने लगे कि, भई आ गया- आ गया। क्योंकि हम पूरे एक वर्ष बाद अपने देश लौटने वाले थे, तो हमारी मनः स्थिति का अनुमान आप स्वंय लगा सकते हैं। अब संयोग देखिए कि यह रश्यिन एअरवेज का वही प्लेन था, जिसमें हम एक वर्ष पूर्ण कोसोबो आये थे। प्लेन जैसे-2 नीचे (निकट) आता जा रहा था तो लगभग सभी लोगों ने उसे पहचान लिया कई तो जोर-2 से बोलने भी लगे कि यारों यह तो वही प्लेन है, जिसमें हम आये थे। यहां तक तो सब सामान्य एवं रूटीन वार्तालाप था, फिर आप सोचेंगे कि इसमें लिखने योग्य क्या बात हुई? किन्तु मैं जो यहां पर कहना चाहता हूं वह यह कि उपरोक्त बातें कहकर, अधिकांश लोग जैसे ही चुप हुए थे, तो हमारे ही बीच से हमारे एक साथी कि प्रतिक्रिया, उस प्लेन के बारे में ऊंची आवाज में सुनाई दी कि- "चलो भाई अच्छा है, यह वही प्लेन है। इसे रास्ता भी मालम है।" अब कमेन्ट के बाद क्या दृश्य उत्पन्न हुआ होगा, आप सहज भी झेंप मिटने में नहीं आ रही थी। यह सोचने की किसी को फुर्सत या जरूरत नहीं थी कि उसने यह बात मजाक में कही है या अचानक मुंह से निकल गई है क्योंकि तीर कमान से निकल चुका था और वह इन्टेलिजेन्ट साबित हो चुका था।

ये इन्टेलिजेन्ट्स आपको भी यदा-कदा अवश्य टकराते रहते हैं, लेकिन मैंने उनके कुछ उदाहरण लिख लिये हैं। सो आशा करता हूं कि इन्टेलिजेन्ट्स इसे पढ़कर नाराज न होकर अपनी इन्टेलिजेन्सी का परिचय देंगे।

आंखों देखी

मणिपुरी वृद्ध नागरिकों का सीआरपीएफ प्रायोजित धार्मिक स्थलों का दौरा।

सीआरपीएफ द्वारा सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत मणिपुर के तीस वरिष्ठ नागरिकों को दिल्ली, वृंदावन, मथुरा व हरिद्वार के धार्मिक स्थलों को दौरा करवाया गया।



23 वाहिनी, के0रि0पु0बल द्वारा वाहिनी का स्थापना दिवस मनाया गया।

19वीं वाहेनी एम0पी0एस0एफ0 को 15 मई, 1967 को 23वीं वाहेनी, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में श्री वी0आर0 पब्बी भा0पु0से0 के नेतृत्व में ग्रेट ईस्टर्न रोड (भिलाई) में गठित किया गया। इस तरह प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी अपना 42वां स्थापना दिवस पूरे उत्साह, जोश व उल्लास के साथ वाहिनी मुख्यालय, करण नगर, श्रीनगर, जम्मू और कश्मीर में मनाया गया। 23वीं वाहिनी स्थापना से आजतक देश के विभिन्न राज्यों में अपनी सेवायें प्रदान कर चुकी है व के0रि0पु0बल की गौरवशाली वाहिनियों में से एक है।

13 दिसम्बर 2001 के दिन को पूरे के0रि0पु0बल के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरो में लिखा गया है। वाहिनी के तीन जवानों को इस दिन उग्रवादियों द्वारा भारतीय संसद पर आक्रमण को विफल करने तथा उनकी बहादुरी और वीरता के लिए शौर्य चक्र से नवाजा गया। इसके अतिरिक्त अब तक वाहिनी के 40 से अधिक जवानों और अधिकारियों को उनकी वीरता, साहस व प्रशंसनीय सेवाओं के लिए विभिन्न पदकों से जैसे अर्जुन अवार्ड, वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक, सराहनीय सेवाओं के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक आदि से नवाजा गया है। वाहिनी को वर्ष 1973 व 2001 के0रि0पु0बल की सर्वश्रेष्ठ (परिचालन) वाहिनी, वर्ष 2006 व 2007 में मणिपुर/नागालैण्ड सेक्टर की सर्वश्रेष्ठ (प्रशासनिक) वाहिनी ट्राफी से एवं वर्ष 2008 में सर्वश्रेष्ठ कॉस्ट इफेक्टिव एण्ड फाइनेंसियल डिस्पिलिन ट्राफी से नवाजा गया है। स्थापना दिवस का शुभारम्भ क्वार्टर गार्ड पर ध्वाजारोहण से किया गया। इस अवसर पर सैनिक सम्मेलन, खेल-कूद तथा कई अन्य प्रतियोगितायें आयोजित की गयीं। वाहिनी परिसर में 22 जवानों को परिवार रखने की अनुमति दी गयी है।

स्थापना दिवस पर महिलाओं तथा बच्चों के लिए भी कई मनोरंजक कार्यक्रम जैसे म्यूजिकल चेयर, लाईटिंग द कैण्डल, थ्रेड्-नोट आदि आयोजित किये गये। वाहिनी की म्यूजिकल बैण्ड (क्रेजी जिंगल) व यूथ वैली एक्सप्रेशन, श्रीनगर के कलाकारों द्वारा एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर दर्शकों का मन मुग्ध किया। श्री सुशील कुमार मिश्रा, कमाण्डेंट ने इस अवसर पर वाहिनी के गौरवशाली इतिहास एवम् उपलब्धियों का व्याख्यान किया व अनुशासन, सुरक्षा व कर्तव्यों जैसे महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री श्याम चन्द, पुलिस उप महानिरीक्षक (परिचालन) श्रीनगर ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस की स्थानीय वाहिनियों के कमाण्डेंट एवं शहर के प्रतिष्ठित व्यक्ति भी इस अवसर पर आमंत्रित थे। शाम को बड़े खाने का आयोजन किया गया जिसमें उपस्थित सभी अतिथियों ने भाग लिया।

पिछले एक वर्ष से 23वीं वाहिनी को नये सचिवालय व उच्च न्यायालय की सुरक्षा का अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य सौंपा गया है। वाहिनी द्वारा स्वंय के प्रयास से जवानों के रहन-सहन को उच्चस्तरीय बनाने हेतु आधारभूत सुविधाओं से पूर्ण शौचालय, स्नानागार, भोजनालय, रसोईघर, मनोरंजन कक्ष व कैण्टीन आदि का निर्माण कर वाहिनी को एक आदर्श बटालियन के रूप में विकसित किया है। वाहिनी के सभी

जवानों को गव है कि वे 23 वाहिनो के सदस्य हैं जो 1967 से मुस्कुराते हुए राष्ट्र को सेवा में समर्पित है।



दीप प्रज्जवलन



बड़ा खाना



मणिपुरी नृत्य पेश करते हुए बटालियन के जवान।


भांगड़ा नृत्य



नृत्य पेश करते हुए जवान।



पुरस्कार वितरण।

खेल रिपोर्ट

जिम्नास्टिक व केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल

श्री एस ए एम काजमी
पुलिस उप महानिरीक्षक (प्रशासन)
स्पेशल सेक्टर, केरिपुबल



जिम्नास्टिक एक वर्जिश, शारीरिक शक्ति, लचीलापन, समन्वय, संतुलन वाला खेल है, जिसमें व्यक्ति का शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है। इस खेल का उद्भव प्राचीन यूनानियों द्वारा फिटनेस और शारिरिक सौष्ठव को बनाने के लिये विकसित किये व्यायाम से हुआ है जिसमें घोड़े से उतरने/चढ़ने, सर्कस प्रदर्शन इत्यादि शामिल हैं। जिम्नास्टिक शब्द का प्रयोग एक व्यायामशाला, तालबद्ध अभ्यास/ व्यायाम के लिये प्रयोग किया जाता है। जिम्नास्टिक एक व्यायाम ही नहीं अपितु बौद्धिक एवम् शारिरिक शिक्षा के लिये एक महत्वपूर्ण मद भी है। अन्तर्राष्ट्रीय खेल संघ द्वारा आयोजित कलात्मक जिम्नास्टिक को सबसे अच्छा व लोकप्रिय माना आता है। कलात्मक जिम्नास्टिक आमतौर पर महिलाओं के लिए असमान/ समान्तर सलाखों,

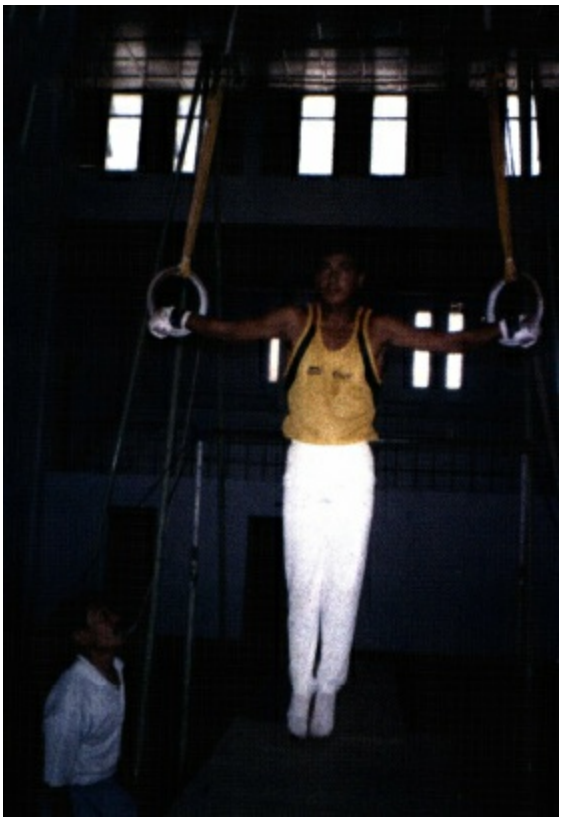
सन्तुलन बीम, और पुरूषों के लिये मांजेल व्यायाम, पामेल हार्स, समानांतर सलाखें और उच्च बार प्रतिस्पर्धा शामिल हैं। इस खेल में जनरल, तालबद्ध, एरोबिक्स तल्यकालन प्रतिस्पर्धा शामिल है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का भारतीय जिम्नास्टिक दल में प्रतिनिधित्व

केरिपुबल में जिम्नास्टिक की शुरूआत सन् 1968 में हुई थी परन्तु स्वतंत्र रूप से केरिपुबल की टीम ने सन् 1971 में अखिल भारतीय पुलिस खेलों में भाग लिया। तब से लेकर अब तक केरिपुबल की जिम्नास्टिक टीम कई बार अखिल भारतीय पुलिस खेलों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर अपना परचम लहरा चुकी है। बल की टीम कई राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय खिलाड़ियों से भरपूर रही है। बल ने देश को कई होनहार खिलाड़ी दिए है। श्री एन बी भौंसले, पुलिस उप महानिरीक्षक ने सन् 1978 में राष्ट्रमंडल खेलों एवं श्री बलराम शील, कमान्डेन्ट ने सन् 1982 व 1986 में एशियाई खेलों में देशों का प्रतिनिधित्व किया। हाल ही में निरीक्षक/जीडी मयंक श्रीवास्तव ने राष्ट्रमंडल खेलों में भारतवर्ष का प्रतिनिधित्व किया तथा दक्षिणी एशियाई प्रतियोगिता में चार स्वर्ण पदक जीतकर देश के साथ-साथ बल का भी गौरव बढ़ाया है।

स्पेशल सेक्टर का बल की केन्द्रीय जिम्नास्टिक टीम में योगदान

स्पेशल सेक्टर के कुशल प्रबंधन को अन्तर्गत बल की जिम्नास्टिक टीम ग्रुप केन्द्र नीमच में अभ्यासरत है। स्पेशल सेक्टर के निर्देशन में बल की जिम्नास्टिक टीम अपनी अद्भुत क्षमता के साथ उभरी है तथा नई बुलंदियों को छूने में प्रयत्नशील है। बल की टीम ने अखिल भारतीय पुलिस खेलों में प्रथम स्थान प्राप्त कर इस बात को सच साबित कर दिया है। यही नहीं वर्तमान में स्पेशल सेक्टर से सि/जीडी एल योइबा व पवन कुमार, केन्द्रीय टीम में शामिल है तथा दोनों कार्मिकों ने पुलिस खेलों में कई पदक प्राप्त कर न केवल बल का बल्कि देश का नाम रोशन किया है।



अन्तर सेक्टर जिम्नास्टिक प्रतियोगिता 2009 में स्पेशल सेक्टर टीम की उपलब्धियाः–

6 अप्रैल 2009 से 9 अप्रैल 2009 तक ग्रुप केन्द्र नागपुर में आयोजित अन्तर सेक्टर जिम्नास्टिक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में स्पेशल सेक्टर की टीम ने 2 रजत एवं 3 कांस्य पदक जीतकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। सि/जीडी देवानन्द ने प्रतियोगिता में बेहतर प्रदर्शन किया एवं उसका चयन सेन्ट्रल जिम्नास्टिक टीम में किया गया है।



आइटीसी वजीराबाद में *2009-2010* सत्र के लिए दाखिला सूचना

1 अगस्त 2009 से प्रारम्भ होने वाले 2 वर्षीय कोर्स के निम्नलिखित ट्रेडस के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाते है।

1. मैकेनिक मोटर व्हीकल
2. इलेक्ट्रानिक मैकेनिक
3. मैकेनिक रेडियो एंड टीवी
4. वैल्डर गैस/ इलैक्ट्रिक (1 वर्षीय कोर्स)
5. इलैक्ट्रिशियन
6. रेफ्रिजरेशन एंड एयरकंडिशनिंग

उपरोक्त कोर्स के लिए विज्ञान एवं गणित विषयों के साथ मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कोर्स क्रम संख्या 4 के लिए आठवीं कक्षा उत्तीर्ण पात्र हैं।

आयु सीमा : 14 से 40 वर्ष

फीस निम्न प्रकार से होगी

क्रम सं	विवरण	बल कार्मिकों के बच्चों के लिए फीस	भू.पू बल कार्मिकों एवं सिविलियन के बच्चों के लिए फीस
1.	टयूशन फीस मासिक	800	1200
2.	एडमिशन फीस (एक मुश्त)	1000	1000
3.	वार्षिक प्रभार	2000	2500
4.	कॉशन मनी (एक बार) रिफंडेबल	1500	1500
5.	मेस एडवांस (एक बार) रिफंडेबल	1000	—
6.	लेब/ वर्कशॉप प्रभार वार्षिक	300	600
7.	कच्ची सामग्री वार्षिक	300	600
8.	रजिस्ट्रेशन फीस	300	300
9.	पहचान पत्र वार्षिक	50	75
10.	स्टूडेंट फंड वार्षिक	500	500
11.	होस्टल खर्च प्रतिमाह	500	—

आवेदन की अंतिम तिथि 31 जुलाई 2009 हैं और इस विषय में अधिक जानकारी के लिए प्रिसिंपल आईटीसी वजीराबाद से दूरभाष संख्या 011–22960150 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

आवेदन की अंतिम तिथि 31 जुलाई 2009 हैं और इस विषय में अधिक जानकारी के लिए प्रिसिंपल आईटीसी वजीराबाद से दूरभाष संख्या 011-22960150 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

महानिदेशक का गुवाहाटी दौरा

पूर्वोत्तर क्षेत्र की आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेने पहुचें श्री ए एस गिल, महानिदेशक, केरिपुबल ने 1 मई 2009 को पूर्वोत्तर राज्यों का मुख्य द्वार गुवाहाटी में रेलवे स्टेशन के नजदीक केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के सुविधाओं से युक्त विश्राम गृह (ट्रांजिट कैंप) का उद्घाटन किया। उल्लेखनीय है कि इसके पहले पूर्वोत्तर में तैनात केरिपुबल के जवानों के लिए गुवाहाटी पहुचने पर विश्राम अथवा ठहरने की कोई उपयुक्त व्यवस्था नहीं थी, जबकि पूर्वोत्तर में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों की तैनाती दूसरे अर्द्ध सैनिक बलों की तुलना में कहीं अधिक है। परिणामस्वरूप बल के जवानों का यहा आना-जाना काफी अधिक रहता है। इसीको ध्यान में रखते हुए काफी समय से बल के अधिकारियों एवं जवानों के विश्राम के लिए सुविधायुक्त विश्राम स्थल के निर्माण की आवश्यकता महसूस की जा रही थी।

उद्घाटन अवसर पर पुलिस महानिरीक्षक (परिचालन) महानिदेशालय, श्री पी एम नायर पुलिस महानिरीक्षक, पूर्वोत्तर सेक्टर श्री श्रीकांत, पुलिस उप-महानिरीक्षक, गुवाहाटी, श्री बी के सग्गड़ और पुलिस उप-महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र, गुवाहाटी श्री जोगीन्दर सिंह मौजूद थे। इस अवसर पर अपने सम्बोधन में महानिदेशक महोदय ने समारोह में उपस्थित अधिकारियों एवं जवानों को सम्बोधित करते हुए सुविधायुक्त विश्रामस्थल का लाभ उठाने का आह्वाहन किया।

केरिपुबल अर्द्ध सैनिक बलों में सबसे बड़ा एवं पुराना बल है तथा इसकी अधिकतम तैनाती पूर्वोत्तर क्षेत्र, जम्मू कश्मीर एवं झारखंड जैसे अति संवेदनशील एवं उग्रवादग्रस्त क्षेत्रों में है। देश में आंतरिक सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की जा रही है। इस सिलसिले में महानिदेशक महोदय ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में स्थित कार्यालयों/ बटालियनों के अधिकारियों की परिचालनिक बैठक को सम्बोधित किया। बैठक में आतंकवाद एवं उग्रवादियों की संभावित गतिविधियों से निपटने हेतु प्रभावी उपायों के बारे में चर्चा की एवं आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिये। पुलिस महानिदेशक ने समाजोपयोगी कार्यक्रम अर्थात् विविक एक्शन प्रोग्राम पर विशेष बल देते हुए कहा कि इसे अच्छी तरह तथा सुनियोजित तरीके से सम्पन्न किया जाये, जिससे पुलिस बल को स्थानीय व्यक्तियों का पूरा-पूरा सहयोग मिल सके हम अपने उद्देशय में सफल ही सके। बैठक के दौरान उपस्थित अधिकारियों द्वारा प्रस्तुत सुझावों तथा समस्याओं को सुना तथा आश्वासन दिया कि उनकी सुझाव व समस्याओं को मामले की अनुरूपता के आधार पर शीघ्रातिशीघ्र निपटाया जायेगा। महानिदेशक महोदय ने 2 मई 2009 को अधिकारियों एवं जवानों का मनोबल को बढ़ाने हेतु पूर्वोत्तर क्षेत्र में स्थित बटालियनों का दौरा किया। दौरा के दौरान अधिकारियों एवं जवानों को उनकी कार्य शैली, प्रशिक्षण, आत्मसंयम आदि के साथ ड्यूटी की निर्वहन तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र में आतंकवादियों के विरूद्ध प्रतिक्रया एवं उनका

सामना करने इत्यादि के बारे में समझाया।





ग्रुप केन्द्र गुवाहाटी परिसर में 3 मई 2009 को एक सैनिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन को केरिपुबल के महानिदेशक महोदय ने सम्बोधित करते हुए पूर्वोत्तर में तैनात बल के जवानों व अधिकारियों की आतंकवाद का डटकर मुकाबला करने के लिए प्रशंसा की साथ ही उन्होनें समाजोपयोगी कार्यक्रम पर विशेष बल देते हुए कहा कि इसे और अच्छी तरह तथा सुनियोजित तरीके से करें, केरिपुबल को स्थानीय व्यक्तियों का पूरा सहयोग मिल सके। इसके साथ ही असम में हाल ही में समाप्त हुए लोकसभा चुनाव को शांति एवं सफलतापूर्वक समाप्त कराने के लिए उनके द्वारा किये गये योगदान की सराहना की तथा धन्यवाद दिया। सम्मेलन के दौरान उन्होंने कार्मिकों की समस्याओं को ध्यान से सुना तथा मामले की अनुरूपता के आधार पर उसे शीध्र निपटाने का आश्वासन भी दिया।

ग्रुप केन्द्र सिन्दरी में बच्चों के लिए कंप्यूटर कोर्स



ग्रुप केन्द्र परिवार कल्याण केन्द्र मनोहर टांड में 23 अप्रैल 2009 से 3 मई 2009 तक कंप्यूटर कोर्स चलाया गया। इस कोर्स में केरिपुबल के कार्मिकों के कुल 25 बच्चों द्वारा भाग लिया गया जिन्हें शिक्षकों द्वारा कंप्यूटर के थ्योरी एवं प्रैक्टिकल के बारे में विस्तार से बताया गया। इस कोर्स को स्थानीय अखबार में भी प्रकाशित किया गया तथा रिजनल कावा, ग्रुप केन्द्र सिन्दरी द्वारा समय-समय पर कराए जा रहे निःशुल्क कोर्सों के आयोजन के लिए सराहना की गई।

कोर्स के समापन समारोह के अवसर पर अपने अभिभाषण में बोलते हुए रिजनल कावा अध्यक्षा श्रीमती करूणा भोंसले ने उपस्थित सभी बच्चों को कोर्स में भाग लेने के लिए उन्हें बधाई दी जबकि उनके माता-पिता के प्रति आभार व्यक्त किया।

अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस 2009



विगत वर्ष की भांति 15 मई 2009 को इस ग्रुप केन्द्र के परिवार कल्याण केन्द्र में अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर रिजनल कावा अध्यक्षा श्रीमती करूणा भोसले की अध्यक्षता में परिवार कल्याण केन्द्र के प्रांगण में एक संगोष्ठी एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय था- संयुक्त परिवार का महत्व, विशेषकर उस स्थिति में जब बल के कार्मिकों के परिवार अपने जीवन का अधिकांश समय अपने पतियों से अलग रहकर व्यतीत करते है। इस प्रतियोगिता में स्टेशन पर उपस्थित कार्मिकों ने अपने परिवारों एवं उनके बच्चों के साथ इस आयोजन में बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। इस अवसर पर ग्रुप केन्द्र, सिंदरी के सभी अधिकारी एवं रिजनल कावा के सदस्यगण उपस्थित थे। उपस्थित कार्मिकों एवं महिलाओं ने आयोजित प्रतियोगिता में बड़े ही तरतीब से अपने विवेकपूर्ण विचारों का आपस में आदान-प्रदान किया गया एवं संपूर्ण प्रतियोगिता के दौरान बेहतर प्रदर्शन करने वाली महिलाओं को पुरस्कार के लिए भी चयनित किया गया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर रिजनल कावा सचिव श्री मनोज कुमार उप कमाण्डेन्ट के द्वारा अपने संबोधन में सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया एवं उपस्थित सदस्यों को एकल परिवार के बजाय संयुक्त परिवार में मिल-जुलकर रहने के लिए प्रेरित किया।

सिन्दरी मे चिकित्सा शिविर

महिला कल्याण संस्था रिजनल कावा ग्रुप केन्द्र, सिन्दरी की ओर से 24 अप्रैल 2009 को महिला कल्याण केन्द्र, मनोहर टाड के प्रांगण में चिकित्सा शिविर लगाया गया। इस शिविर का उद्घाटन रिजनल कावा अध्यक्षा श्रीमती करूणा भोंसले द्वारा किया गया। इसे सफल बनाने में कम्पोजिट अस्पताल केरिपुबल, सिन्दरी के महिला

चिकित्सक डा0 सुनीता कुमारी एवं डा सोनेला सोनी, चिकित्सा अधिकारी ने योगदान दिया। इस शिविर में केरिपुबल के कार्मिकों के बच्चों एवं महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। शिविर में 60 महिलाओं एवं बच्चों का इलाज किया गया।

विविध समाचार

78 बटालियन में एच आई वी जागरूकता क्लास, मेडिटेशन एवं डि-एडिक्सन कार्यशाला तथा कंप्यूटर ट्रेनिंग क्लासेस

78 बटालियन मुख्यालय जुब्जा, कोहिमा में 27 फरवरी 2009 को समादेष्टा-78 वाहिनी के प्रयास से एन एन पी पाजिटिव संस्था कोहिमा(नेटवर्क आफ नागा पिपुल लिविंग विद एव आई पी एड्स) एवं नागा अस्पताल कोहिमा के डाक्टर एवं काउंसलर द्वारा एच आई पी/एड्स जागरूकता क्लास चलाया गया जिसमें समादेष्टा-78 वाहिनी के अलावा 85 लोगों ने भाग लिया। इस क्लास का मुख्य विषय लोगों को एच आई वी/एड्स के प्रति जागरूक बनाने के अतिरिक्त एच आई वी पाजिटिव लोगों में जीवन के प्रति नीरसता को कम करते हुए उन्हे समग्र रूप से अपने जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करना था।

उपरोक्त के अलावा वाहिनी मुख्यालय जुब्जा, कोहिमा में पुलिस उप महानिरीक्षक (परिचालन) कोहिमा रेंज एवं समादेष्टा-78 वाहिनी के निरीक्षण में तथा ब्रह्माकुमारी अध्यात्मिक एवं ध्यान केंद्र कोहिमा के सदस्यों के सहयोग से पाच दिनों का मेडिटेशन एवं डि–एडिक्सन कार्यशाला 16 मार्च 2009 से 20 मार्च 2009 तक चलाया गया जिसमें 75 कार्मिकों ने प्रतिदिन इस कार्यशाला में भाग लिया। उक्त कार्यशाला का आरंभ आर डुईडांग समादेष्टा 78 वाहिनी ने 16 मार्च 2009 को की। इस कार्यशाला में आडियो विजुअल प्रर्दशन एवं अन्य माध्यम से अनेक प्रकार के व्यसन जैसे तंबाकू, शराब, चरस, गांजा आदि के प्रति लोगों को सचेत करने हेतु एवं उनसे मुक्ति के उपाय बताये गए। इस कार्यशाला का मुख्य विषय जवानों के बीच राजयोगा मेडिटेशन को बढावा देना रहा जिससे कि जवानों को मानसिक शांति मिले एवं उनकी कार्यकुशलता बढाई जा सके साथ ही उनेक प्रकार के व्यसन से भी उन्हें मुक्ति दिलाई जा सके। इस कार्यशाला का समापन श्री पी एम रामालिंगम, पुलिस उप महानिरीक्षक(परिचालन) कोहिमा रेंज ने की। वाहिनी मुख्यालय जुब्जा, कोहिमा में 24 अप्रैल 2009 से 8 मई 2009 तक सिविलयन के लिए कंप्यूटर क्लासेस चलाई जा रही है।

ग्रुप केन्द्र इम्फाल में अधीनस्थ अधिकारी मेस का उद्घाटन

ग्रुप केन्द्र केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल इंफाल के अधीनस्थ अधिकारी मेस का उद्घाटन श्री ए एस गिल, पुलिस महानिदेशक, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कर कमलों द्वारा 4 मई 2009 को श्री पी एम नायर, पुलिस महानिरीक्षक(परिचालन), महानिदेशालय की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। उक्त अधीनस्थ अधिकारी मेस भवन की आधारशिला 1 जनवरी, 2004 को रखी गई और जिसका निर्माण लगभग पांच वर्ष तीन माह में सम्पन्न हुआ। इस 27 कमरों की चार मंजिला भवन पर कुल- 2,39,81,300/- रू की लागत आई है तथा बागवानी पर रू-80,000/- हजार खर्च किए जाएंगे। उक्त अधीनस्थ अधिकारी मेस की इमारत सभी आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न है। अधीनस्थ अधिकारियों को उपलब्ध कराए जाने वाली सुविधाओं को प्रदर्शित करने के लिए बतौर नमूना अधीनस्थ अधिकारियों की इस शयनशाला के एक सूट को पूरी तरह से सुसज्जित करके महानिदेशक महोदय को दिखाया गया था जिसकी महानिदेशक महोदय ने भूरी-भूरी प्रशंसा की तथा अधीनस्थ अधिकारी मेस में इस प्राकर की उच्चस्तरीय सुविधाए मुहिया कराने की योजना कार्यान्वित करने के लिए श्री वी पी एस पवार, पुलिस महानिरीक्षक मणिपुर व नागालैण्ड सेक्टर एवं श्री अनिल दुग्गल पुलिस उप महानिरीक्षक ग्रुप केन्द्र इंफाल के कार्यो की सराहना की और कहा कि इससे अधीनस्थ अधिकारियों की कार्य प्रणाली में सुधार के साथ साथ उनका मनोबल भी बढेगा।



उद्घाटन के समय श्री वी पी एस पवार, पुलिस महानिरीक्षक मणिपुर व नागालैण्ड सेक्टर, श्री आर तोमर, पुलिस उप महानिरीक्षक इंफाल रेंज, श्री अनिल दुग्गल, पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र इंफाल, श्री डी के सिरोही, पुलिस उप महानिरीक्षक(परिचालन)मणिपुर व नागालैण्ड सेक्टर, श्री एस के मलिक पुलिस उप

महानिरीक्षक (लेखा/प्रशा) मणिपुर व नागालैण्ड सेक्टर, स्टेशन पर उपस्थित समस्त अधिकारीगण एवं अधीनस्थ अधिकारीगण के अतिरिक्त जवान भी उपस्थित थे।

खबरों में

सभी अर्द्धसैन्य कर्मियो की पेंशन सुविधा को हरी झंडी



सभी अर्द्धसैन्य कर्मियों की पेंशन सुविधा को हरी झंडी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने वर्ष 2004 के बाद भर्ती किये गए अर्द्धसैनिक बलों की पेंशन योजना बहाली की अर्से पुरानी मांग को मंगलवार को मान लिया। सरकार के इस निर्णय से केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल, सीमा सुरक्षा बल, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, सशस्त्र सीमा बल तथा आईटीबीपी के करीब 20000 कर्मियों को फायदा मिलेगा। सीमा सुरक्षा बल के महानिदेशक एमएल कुमावत ने यहां एक समारोह में कहा, मुझे यह घोषणा करते हुए बहुत खुशी हो रही है कि सरकार ने पुरानी पेंशन योजना को बहाल करने की हमारी मांग को स्वीकार कर लिया है। गौरतलब है कि सरकार की पिछली नीतियों के तहत अर्द्धसैनिक बलों के उन जवानों को पेंशन सुविधा नहीं दी जाती थी जिन्होंने वर्ष 2004 के बाद सेवा शुरू की थी। हालांकि छठे वेतन आयोग ने नए कर्मियों को भी पेंशन की सुविधा देने की सिफारिश की थी।

नई दिल्ली। केन्द्र सरकार ने वर्ष 2004 के बाद भर्ती किये गये अर्द्धसैनिक बलों की पेंशन योजना बहाली की अर्से पुरानी मांग को मंगलवार को मान लिया। सरकार के इस निर्णय से केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल, सीमा सुरक्षा बल, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, सशस्त्र सीमा बल तथा आईटीबीपी के करीब 20,000 कर्मियों को फायदा मिलेगा। सीमा सुरक्षा बल के महानिदेशक एमएल कुमावत ने यहां एक समारोह में कहा, मुझे यह घोषणा करते हुए बहुत खुशी हो रही है कि सरकार ने पुरानी पेंशन योजना को बहाल करने की हमारी मांग को स्वीकार कर लिया है। गौरतलब है कि सरकार की पिछली नीतियों के तहत अर्द्धसैनिक बलों के जवानों को पेंशन सुविधा नहीं दी जाती थी जिन्होंने वर्ष 2004 के बाद सेवा शुरू की थी। हालांकि छठे वेतन आयोग के नए कर्मियों को भी पेंशन की सुविधा देने की सिफारिश की थी।

उम्मीदवारों की किस्मत की सुरक्षा कर रही सीआरपीएफ


उम्मीदवारों की
किस्मत की सुरक्षा
कर रही सीआरपीएफ

बाहरी दिल्ली, जासं: कौन उम्मीदवार संसद पहुंचेगा इसका फैसला तो 16 मई को होगा। लेकिन ईवीएम मशीन में मतदाताओं द्वारा कैद की गई उम्मीदवारों के किस्मत की सुरक्षा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के आला अधिकारी व जवान कर रहे है। हालांकि बाहरी जगहों पर दिल्ली पुलिस भी तैनात है। साथ ही उम्मीदवारों ने भी अपने समर्थकों को मशीनों की निगरानी के लिए लगा रखा है। जिन स्ट्रांग रूम में मशीनें बंद हैं उनकी निगरानी पूरी तरह केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के हाथों में है। उत्तर पश्चिम संसदीय क्षेत्र की मतगणना का काम पीतमपुरा स्थित कस्तूरबा गांधी पालीटेक्निक में होगा, जहां ईवीएम मशीनें रखी हैं। सूत्रों के मुताबिक इनकी सुरक्षा के लिए सीआरपीएफ 89 बटालियन को तैनात किया गया है। जो वर्तमान में पुलिस महानिरीक्षक उत्तरी क्षेत्र के परिचालन में कार्यरत है। बताया जाता है कि मतगणना वाले दिन किसी भी अप्रिय घटना को रोकने के लिए सीआरपीएफ हर पल चौकन्नी रहेगी।

सीआरपीएफ के *80* फीसद कर्मियों को *20* साल तक नहीं मिल पाती 'पीस पोस्टिंग'

नई दिल्ली, 10 मई (भाषा)। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल(सीआरपीएफ) के कर्मियों को लगभग 20 साल से अधिक समय तक 'पीस पोस्टिंग' (शांति वाली जगह पर तैनाती) नहीं मिलती। इसका इंतजार करते-करते या तो वे देश विरोधियों तथा असामाजिक तत्वों की गोलियों के शिकार हो जाते हैं या फिर किसी घातक बीमारी की चपेट में आ जाते हैं।

यह खुलासा देश के इस सबसे बड़े अर्द्धसैनिक बल की आंतरिक रिपोर्ट में हुआ है। रिपोर्ट के ढाई लाख से अधिक कर्मियों में से 75 फीसद की नौकरी की अवधि लगातार तैनाती में ही गुजर जाती है। इसके अलावा 92 राजपत्रित अधिकारी 20 साल से अपने परिवार को साथ नहीं रख पा रहे।

रिपोर्ट के अनुसार अधिकारियों को 20 साल से अधिक समय तक लगातार इधर-उधर तैनात किया आता रहा लेकिन उन्हें 35 साल की औसत सेवा अवधि में किसी शांति वाली जगह पर तबादला नहीं मिल पाया। सूत्रों का कहना है कि देश की आंतरिक सुरक्षा का दायित्व संभालने वाले इस बल में यह स्थिति पैदा हो गई है कि इसके 50 फीसद से अधिक कर्मी त्वचा रोग, अवसाद, उच्च रक्तचाप, हृदय और मानसिक जैसी समस्याओं से ग्रसित है। 2005 से लेकर 2008 तक के बीच सीआरपीएफ के 1425 कर्मियों की जान कैंसर सहित विभिन्न बीमारियों की वजह से चली गई।

अधिकारिक आंकड़ों के अनुसार सीआरपीएफ के 52 हजार से अधिक कर्मी त्वचा रोगों, 27 हजार कर्मी उच्च रक्तचाप और सात हजार कर्मी मधुमेह रोग से पीड़ित हैं। लगभग छह हजार जवानों को हेपेटाइटिस है तो 1300 एच आई वी और 700 कर्मी कैंसर से पीड़ित हैं। उपचाराधीन मामलों की सूची में 16 हजार 300 मलेरिया के मामले भी शामिल हैं।

सीआरपीएफ के छह हजार 200 से अधिक जवान हृदय रोग और इतनी ही संख्या में अवसाद तथा मानसिक समस्याओं से ग्रसित हैं। एक सूत्र ने कहा-सीआरपीएफ कर्मियों को अधिकतर बीमारियां क्षेत्रीय परिस्थितियों और काम के अत्यधिक दबाव की वजह से लगती हैं। वर्तमान में बल की अभियान संबंधी कुल 181 बटालियनों में से 77 बटालियन (77 हजार से अधिक कर्मी) जम्मू कश्मीर में तैनात हैं। अन्य 44 बटालियनें (अभियान संबंधी बटालियनों का 24 फीसद) पूर्वोत्तर के विद्रोही गतिविधियों वाले राज्यों में तैनात हैं।



सीआरपीएफ के 80 फीसद कर्मियों को 20 साल तक नहीं मिल पाती 'पीस पोस्टिंग'

बल का 19 फीसद हिस्सा नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में तैनात है। सूत्र ने कहा-अधिकांश समय कर्मियों के रहने के लिए भी जगह नहीं होती। पूर्वोत्तर और नक्सल प्रभावी क्षेत्रों में तो उन्हें जंगलों में तंबू के नीचे दिन गुजारने पड़ते हैं। संपर्क किए जाने पर सीआरपीएफ के एक प्रवक्ता ने कहा-कर्मियों में तनाव कम करने के लिए योग और आर्ट आफ लिविंग पाठ्यक्रम शुरू किए गए हैं।

कविता

अपनी ड्यूटी के दौरान

सि/जीडी हिमांशु जोशी
46 बटालियन

अपनी ड्यूटी के दौरान स्वंय को और पोस्ट को सुरक्षित रखना, अपने सोये हुए साथियों को सुरक्षित रखने का पूर्ण धोतक है।
अपनी ड्यूटी के दौरान सतर्कता के साथ संयम रखे, तो सभी कार्य आसानी से सम्भव हो जाते है।
अपनी ड्यूटी के दौरान मातृत्व को याद कर आगे बढे, तो दिमाग और साहस का अजीब सा जज्बा पैदा हो जाता है।
अपनी ड्यूटी के दौरान अपना कर्तव्य है कि अन्य साथियों को सुरक्षित रखे, ताकि भविष्य में वह सुरक्षा प्रदान करने के लिए तैयार रहे।
अपनी ड्यूटी के दौरान अपने से सीनियर के आदेशो का पालन करे,
तो सदैव एकरूपता होने के कारण दुर्घटना होने की संभावना कम होती है।
अपनी ड्यूटी के दौरान स्वंय और हथियार को इस प्रकार रखे, जिसको दुश्मन देखकर भी घबरा जाये।
अपनी ड्यूटी के दौरान स्वंय की जान हथेली पर रखता हूं

सी आर पी एफ का वीर जवाना

हव/जीडी, प्रेम सिंह – 46 बटालियन

ओ सी आर पी के वीर जवान् तेरा है यह मकसद जान,
तू देश की शांति व्यवस्था में, न्यौछावर कर दे अपने प्राण।
तू देश का सच्चा प्रहरी बनकर, रक्षक बनना एक महान्
आतंकवाद को जड़ से मिटाना, यही है तेरा अपना काम।
कर्मभूमि में सच्चाई से, कर्तव्य को अपने तू ले जान,
एक वीर सिपाही बनके दिखा, तब आगे बढेगा हिन्दुस्तान।

इस बल में तेरा नाम अमर हो, बल का बढा दे तू आभेमान,
इस देश के जन-जन में, तू अपनी बना अलग पहचान।
बर्फ पडें या आंधी आये, और आये कोई तूफान,
तू कभी ना रूकना कभी ना थकना, जारी रखना अपना अभियान।

वंदना

मुकेश कुमार सेवरिया,
स कमा, 46 बटालियन

“भारत भू की करो वंदना यही हमारी माता है।
यही कर्म है यही धर्म है सब की भाग्य विधाता है।
तुच्छ स्वार्थ से ऊपर उठकर नव-नव मंगल कार्य करें।
मिल-जुलकर हम रहें प्रेम से सबका ही उत्थान करें।
जाति-पाति के बंधन तोड़े वर्ग-भेद को चूर करें।
मिल-जुलकर हम बांटे खांए तेरा-मेरा सब दूर करें।
भारत माता सबकी साक्षी सब को प्यार लुटाती है।
तेरा-मेरा सब इसको अर्पण सब कुछ इसकी थाती है।

“कन्यादान”

पुरूषोत्तम जोशी, सहा कमा.
ग्रुप केन्द्र, काठगोदाम

गरीब बाप अपनी बेटी की शादी कैसे कर पायेगा।
मजबूरी घर का खर्च, बच्चों को क्या पढ़ा पायेगा।

बेटी जवान हुई शादी की फिक्र सताने लगी।
ऑखों की नींद रातों को उड़ जाने लगी।

बेटी का रिश्ता तलाश करने लगा, पैसा जमा करने लगा।
मुश्किल से रिश्ता मिल गया, दिल का मुरझाया फूल खिल गया।

चन्द दिन बारात आने को रह गये, एक चिट्ठी आ गयी।
चिट्ठी नहीं बल्कि दहेज की लिस्ट बनकर आ गयी।

इतना अगर दहेज दोगे तो शादी करूँगा।
वरना यह रिश्ता हर हाल में तोड़ दूँगा।

बेटी के बाप के पास कुछ भी नहीं था।
एक खत भेज दिया और कोई जरिया नहीं था।

फिर एक दिन बिदाई का वक्त आ गया, लड़की ससुराल पहुंच गई।
दहेज की कमी बाकी रह गई, इसलिए नजरों से उतर गई।

सास ने बहू को लड़के से जहर दिलवा दिया।
तेज बुखार था मर गई, घर लड़की के कहलवा दिया।

गरीब बाप अपनी लड़की की लाश पर आंसू बहा रहा था।
वो दूसरा रिश्ता तलाश रहे थे, शादी बिना दहेज करेंगे कह रहे थे।

समाज में सुख शान्ति लायेंगे हम, दोस्तो मेरा यह फरमान याद रखना,
कभी दहेज की शादी नहीं करना।

“नारी का सम्मान”

अमिता शर्मा, उनि(मं)
ग्रुप केन्द्र,-1, अजमेर

बालिका को बल से दबाओ नहीं,
जिन्दगी से उसको भगाओ नहीं

समाज की सोच को हुआ है क्या,
मर गई या दब गई हुआ है क्या

सोचा ना कभी भविष्य की मचान पर,
जल रही चिताएं जहान भर

शोर बहुत है उठ रहा
भ्रूण हत्या, बालिका विवाह,

दहेज और बहुत
शोर नहीं आवाज बन जाओ तुम,

बेअसर नारों से बचाओ तुम
नारी तो सीता, सावित्री और राधा हुई

सही अवसर ना रहा
तो चण्डी काली हुई

ऐसा समय ना लाओ तुम
जगत को शिव तांडव से बचाओ तुम

होगा ऐसा तभी, पहल का कदम बढाओ
तुम नारी को खोया सम्मान दिलाओ तुम।

बड़ा महत्व है।

हव/जोडा प्रेम सिंह
46 बटालियन

1. पानी में गंगाजल का
   परीक्षा में परीक्षाफल का,
   और देश में केरिपुबल का!
   बड़ा महत्व है।
2. देश में प्रधानमंत्री का,
   राज्य में मुख्यमंत्री का
   और केरिपुबल में संत्री का!
   बड़ा महत्व है।
3. फलों मे आम का
   भगवानों में राम का
   और केरिपुबल में अच्छे काम का!
   बड़ा महत्व है।
4. दफ्तर में पीए का
   आडिट में सीए का
   और केरिपुबल में टीए/डीए का!
   बड़ा महत्व है।
5. रंगो में रंग लाल का
   गानो में सुरताल का और केरिपुबल
   की ट्रेनिंग में दौड़ चाल का!
   बड़ा महत्व है।
6. लैब में परीक्षण का।
   स्कूल में शिक्षण का
   और केरिपुबल में निरीक्षण का
   बड़ा महत्व है।
7. लंगर में खाने का
   महफिल में गाने का
   और केरिपुबल में छुट्टी जाने का।
   बड़ा महत्व है।
8. ट्रेजरी में ट्रेजर का।
   रोड में ब्रेकर का।
   और केरिपुबल में सूबेदार मेजर का।
   बड़ा महत्व है।
9. कश्मीर में बार्डर का।

भवनों में गाडेर का।
और केरिपुबल में आर्डर का
बड़ा महत्व है।

10. घर में आने वाले गेस्ट का।
कैडर कोर्स में टेस्ट का।
और केरिपुबल में रेस्ट का!
बड़ा महत्व है।

11. महीनों में श्रावण मास का।
ससुराल में पूज्यनीय सास का।
और केरिपुबल में आउट पास का!
बड़ा महत्व है।

12. कपड़ो में पेन्ट का!
दिल्ली में दिल्ली केन्ट का।
और केरिपुबल में टेन्ट का!
बड़ा महत्व है।

“बेगानों की तरह”

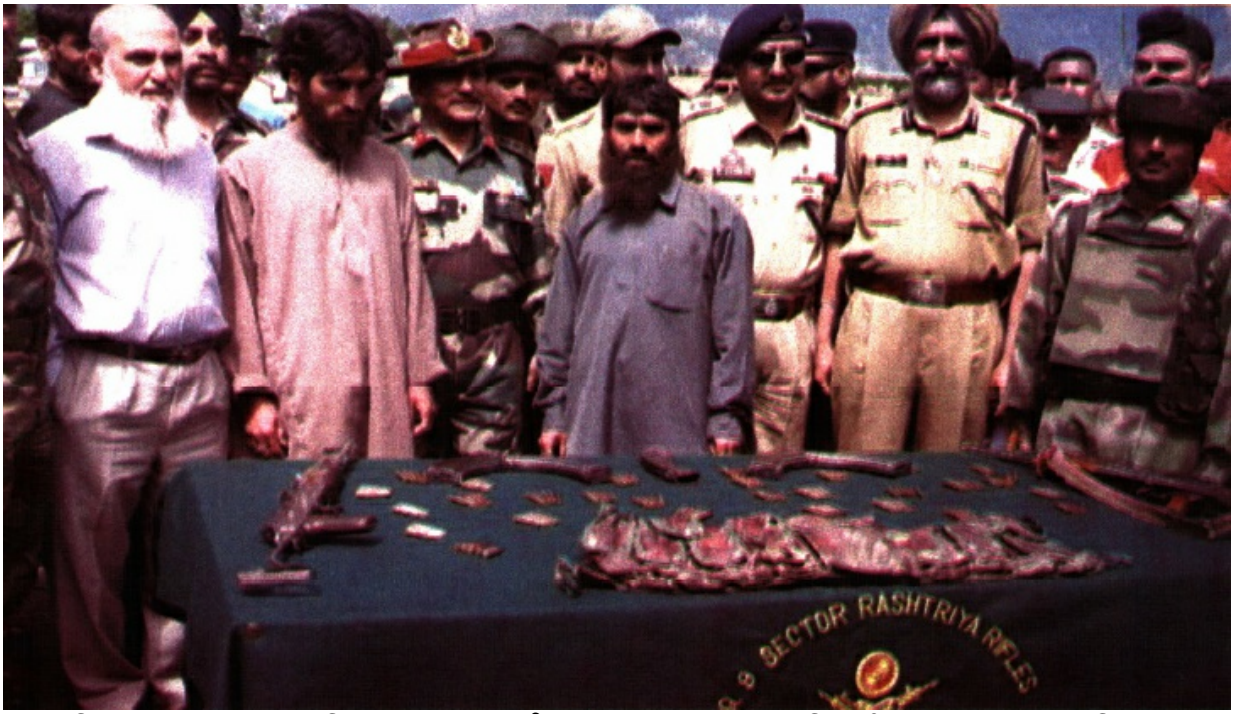
आर पी सिंह, सहा कमा
ग्रुप केन्द्र इम्फाल

ये दुनिया अपनी है, चलो मान लेते हैं,
फिर क्यूं अपनों में रहते हैं
बैगानों की तरह।
जिन्दगी हकीकत है इसे जीना ही
पड़ेगा, फिर हकीकत में क्यूं रहते हैं
अफसानों की तरह।
देखकर हम लोग बात करते हैं ऐसे,
कि हम जमीं पर रहते हों
आसमानों की तरह।
एक हम ही नहीं, सब तो होशमन्द हैं,
फिर क्यूं होशमन्दों में रहते हैं
दीवानों की तरह।

तुम सब जानते हो तो हमें भी बताओ,
जानने वालों में क्यूं रहते हैं
अन्जानों की तरह।
तुम्हारा एक अरमान पूरा नहीं हुआ
तो क्या, हम तो खुद ही मिट गये
अरमानों की तरह।



गुवाहाटी में ट्रांजिट कैम्प का उद्घाटन करते हुए बल महानिदेशक श्री ए.एस. गिल।



किश्तवाड़ में आंतकवादियों के आत्मसमर्पण अवसर पर सेना के अधिकारियों के साथ *74* बटालियन सीआरपीएफ के कमांडेन्ट श्री बलदेव सिंह।

सी.आर.पी.एफ
समाचार



राजभाषा
विशेषांक



महानिदेशालय के.रि.पु. बल और केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो के अधिकारियों के साथ प्रशिक्षार्थी एवं ग्रुप केन्द्र नीमच के अधिकारीगण



173 बटालियन के स्थापना दिवस पर कमांडेंट श्री बलराम् शील को बधाई देते हुए स्थानीय नगर निगम के चेयरमैन श्री खेकाहो असुमी।

सीआरपीएफ सामाचार

Vol.21 No.10

अगस्त 2009

मुख्य संपादक: अजय चतुर्वेदी, **संपादक:** पंकज गुप्ता, **चित्रः** जनसंपर्क फाटा सेल, महानिदेशालय और सीआरपीएफ यूनिट्स, **संपादकीय कार्यालयः** महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, ब्लॉक–1, केन्द्रीय कार्यालय परिसर, लोधी रोड, नई दिल्ली–110003, **दूरभाष:** 24360649, **महानिदेशक सीआरपीएफ की ओर से मुद्रित और प्रकाशितः** विबा प्रेस प्रा. लि., सी–66/3, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फेस–2, नई दिल्ली–110020, दूरभाष: 41611300–31, 9810049515

संपादकीय सलाहकार समिति

अध्यक्षः विजय रमन, अपर महानिदेशक (मुख्यालय), **सदस्यः** एस.के. सिंह, महानिरीक्षक (कार्मिक), डी.सी.डे., महानिरीक्षक (संभरण), एस.आर.ओझा, उपमहानिरीक्षक (प्रशासन), रमेश चन्द्र, उपमहानिरीक्षक (कार्मिक), एल.आर.सिधरा, उपमहानिरीक्षक (परिचालन), रविन्द्र तोमर, उपमहानिरीक्षक (प्रशिक्षण), जी.डी. पेवाल, उपमहानिरीक्षक (संभरण), रोज़ी अग्रवाल, उप वित्तीय सलाहकार

सीआरपीएफ समाचार मासिक पत्रिका है जिसमें प्रकाशित किए जाने वाले विचार लेखकों के व्यक्तित्व विचार हैं। विभाग की नीति से इसका कोई संबंध नहीं है।

मुख्य संपादक



हिन्दी की जय हो !!!



राजभाषा हिन्दी-विकास,
स्वरूप और समस्या



छत्तीसगढ़: नक्सलियों से मोर्चा
लेते सी0आर0पी0एफ0 जवान



राष्ट्रभाषा अपनाने के लिए
कितना वक्त चाहिए?

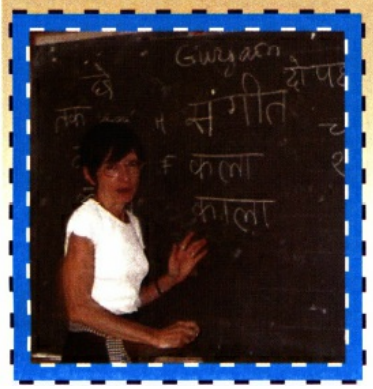
विषय सूची

हिन्दी की जय हो !!!
राजभाषा हिन्दी–विकास, स्वरूप और समस्या
एक क्रिकेटर ऐसा भी है, के.रि.पु. बल का कम्पनी कमाण्डर
छततीसगढ़ – नक्सलियों से मोर्चा लेते सीआरपीएफ जवान
राष्ट्रभाषा अपनाने के लिए कितना वक्त चाहिए?
भूमंडलीकरण और हिंदी
जन व्यवहार में राजभाषा
क्या आप जानते हैं?
राष्ट्रभाषा हिन्दी
अमरनाथ यात्रा के शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न होने में सुरक्षा बलों की भूमिका
डिब्रुगढ़ राजधानी
माओवाद से फैलती गरीबी एवं असुरक्षा
विविध समाचार
कविता

लेख



हिन्दी की जय हो!!!



के.के.पाण्डेय
द्वितीय कमान अधिकारी
196 बटालियन, केरिपुबल

शुरूआत मैं कुछ ऐसे उदाहरणों से कर रहा हूँ जो इस बात का संकेत देते हैं कि हिंदी को अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर नई पहचान मिल गई है तथा इसकी लोकप्रियता देश के अन्दर तथा बाहर दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

1) फिल्म "स्लमडॉग मिलिनियर" के मशहूर गीत 'जय हो' का अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर झंडा गाड़ना तथा 'जय हो' का अंग्रेजी के मानक शब्द कोश में दस लाखवें शब्द के तौर पर दर्ज होने की दौड़ में शामिल होना।

2) मेघालय जैसे गैर हिंदी भाषी राज्य से सांसद के रूप में जीतकर आई सुश्री अगाथा संगमा द्वारा 29 मई 09 को राष्ट्रपति भवन में हिंदी में शपथ लेना।

3) अंग्रेजी समाचार पत्र बिजनेस स्टैण्डर्ड तथा इकोनोमिक टाईम्स के अब हिंदी संस्करण भी प्रकाशित होना।

4) बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा अपने उत्पादों का प्रचार हिंदी में करना।

5) गैर हिंदी भाषी इलाकों में हिंदी टेलीविजन चैनलों का ज्यादा पसंद किया जाना खासकर बच्चों द्वारा।

ये उदाहरण स्पष्ट करते हैं कि विश्व स्तर पर हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ी है तथा हिंदी के महत्व को देखते हुए लोगों की इस पर निर्भरता में भी इजाफा हुआ है। उपरोक्त चंद उदाहरण सांकेतिक हैं। इसके अलावा ढेर सारे दृष्टांत हैं जो हिंदी के बढ़ते महत्व एवं लोकप्रियता को साबित करते हैं जिनका जिक्र मैं आगे करूंगा। आज के बाजार ने हिंदी को नए सिरे से ताकतवर और नया आधार मुहैया कराया है। हिंदी भाषी इलाकों में पैर जमाने के लिए बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के आला अधिकारियों को भी आज हिंदी का सहारा लेना पड़ रहा है। बीती सदी के नब्बे के दशक के शुरूआत में भारत आए सिटी बैंक या एच.एस.बी.सी. बैंक के बारे में शायद ही किसी ने सोचा होगा कि वे हिंदी में काम करेंगे लेकिन आज उनके यहां आज हिंदी में भी बातचीत के जरिए काम कर सकते हैं। ये बातें जाहिर करती हैं कि हिंदी अब रोजगारोन्मुख हो चुकी है।

हिंदी फिल्में अरसे से हिंदी के प्रचार प्रसार में अहम भूमिका निभाती रही है। पिछले कुछ वर्षों में हिंदी फिल्मों के विदेशी दर्शकों की संख्या में काफी बढ़ोतरी हुई है। हिंदी फिल्मों की लोकप्रियता का आलम यह है कि वे विदेशों में भी अच्छी कमाई कर रही है। बाज़ारवाद के विस्तार के इस दौर में हिंदी को लोकप्रिय बनाने में हिंदी टेलीविजन चैनलों की जबरदस्त भूमिका रही है। कभी तमिलनाड और कर्नाटक के लोगों का जायका हिन्दी के नाम पर खराब हो जाता था लेकिन यह टेलीविजन क्रान्ति का असर है कि अब गैर हिंदी भाषी इलाकों के बच्चों को हिंदी चैनल ज्यादा लुभाते हैं। इसके लिए उनका तर्क है कि हिंदी टेलीविजन चैनल में काम करने से उनकी अखिल भारतीय पहचान बनती है जबकि तमिल या मराठी में काम करने से उनकी दुनियां सिमट जाती है और उन्हें यह सिमटी हुई दुनिया बिल्कुल पसंद नहीं है। अब तो हिंदी चैनलों के लोकप्रियता का आलम यह है कि उनके हिंदी शो में न केवल हिन्दुस्तान के सभी राज्यों के सभी उम्र के लोगों की सहभागिता हो रही है बल्कि कई रियलटी शो में दूसरे देशों के प्रतियोगी हिस्सा ले रहे हैं जो कि हिंदी की प्रगति के लिये शुभ संकेत है और तो और जिस तमिलनाडु में कभी हिंदी विरोध की आग ने तांडव मचा रखा था, वहाँ के लोग अव अपने बच्चों को हिंदी पढ़ने के लिये प्रोत्साहित कर रहे हैं। बाजारवाद की यह नब्ज हिन्दी क्षेत्र के नौजवान नेताओं ने भी पहचानी है। 28 मई 09 को राष्ट्रपति भवन में श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, जितिन प्रसाद और सचिन पायलट ने हिंदी में शपथ लेकर हिंदी के प्रति अपनी रूझान की नीति को गति दी है और तो और मेघालय जैसे गैर हिंदी भाषी इलाके से जीतकर आई सुश्री अगाथा संगमा ने पूरे आत्म विश्वास के साथ जिस तरह हिंदी में शपथ ली साफ है कि भारत में हिंदी को लेकर नजरिया बदल रहा है। महंगे और अभिजात्य कान्वेंट और पब्लिक स्कूलों के बाद विदेशी धरती तक से शिक्षा हासिल कर चुके नई पीढ़ी के इन नेताओं ने साफ कर दिया है कि कम से कम अपनी पहली वाली पीढ़ी से वे भाषा के संदर्भ में प्रगतिशील और ठेठ देशी समझ रखते हैं। विभिन्न विदेशी समाचार माध्यमों जैसे :–

वायस ऑफ अमेरिका, बीबीसी लंदन, रेडियो सिलोन, जापान रेडियो, चाइना रेडियो इंटरनैशनल द्वारा नियमित हिंदी के कार्य प्रस्तुत किया जाना इस बात का गवाह है कि हिंदी कितनी सशक्त एवं लोकप्रिय है।

हिंदी को अन्तरराष्ट्रीय माथे की बिंदी बनने के लिए वैश्वीकरण एवं उदारीकरण की नीति को पूर्ण रूप से धारण करना पड़ेगा। हिंदी को समुद्र की भूमिका निभानी पड़ेगी जो अपने अन्दर नदियों को समाहित करने का हुनर रखता है। हमें इस धारणा को छोड़ना होगा कि अगर हिंदी ने दूसरे भाषा के शब्दों का आयात कर लिया तो उसकी मौलिकता खो जाएगी। इसी धारणा का नतीजा है कि हिंदी के शब्द मात्र 1,20,000 हैं। हम सभी जानते हैं कि अंग्रेजी प्रतिवर्ष विभिन्न भाषाओं के लोकप्रिय शब्दों को अपने में समाहित कर लेती है और आज उसका शब्द कोश दुनिया के किसी भी भाषा से सबसे बड़ा है। मेरे कहने का मतलब है कि हिंदी को शिखर पर पहुँचाने के लिए अपने रूख में बदलाव लाना होगा तथा रूढ़िवादी धारणा से हिंदी को मुक्ति दिलानी होगी।

शब्दों की गिनती

भाषा	शब्दों की संख्या
अंग्रेजी	10,00,000
चाइनीज	05,00,000
जापानी	02,32,000
स्पेनिश	02,25,000
रूसी	01,95,000
जर्मन	01,85,000
हिंदी	01,20,000
फ्रेन्च	01,00,000


हिन्दी
मेरी
आवाज़ है



राजभाषा हिन्दी–विकास, स्वरूप और समस्या

एस.सी. रावत, द्वि.कमान अधि,
158 बटालियन

"एक हृदय हो भारत–जननी" का एकात्मक सूत्र हिन्दी है। सदियों पूर्व हिन्दी हमारे देश मे राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित रही। राजपूत, मराठा और मुगल शासकों तथा ईस्ट इण्डिया कम्पनी आदि के शासन काल में हिन्दी का प्रयोग होता रहा। 1526 ई. से 1707 ई. तक मुगलवंश के बादशाहों के शासन काल मे शासन कार्य का माध्यम हिन्दी भी थी। इस काल में सूर, तुलसी और कबीर, रहीम खानखाना हिन्दी साहित्य के महान कवि हुए। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन काल मे हिन्दी का प्रयोग जारी रहा किन्तु लार्ड मैकाले ने राजकाज की भाषा के रूप मे अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया। 1829 में राजा राममोहन राय ने साप्ताहिक बंगदूत हिन्दी में निकाला। सुभाष चन्द्र बोस ने अपनी आजाद हिन्द फौज का गाना 'कदम–कदम बढ़ाए जा, खुशी के गीत गाए जा' हिन्दी में रखा। तमिल राष्ट्रकवि सुब्रमण्यम भारती ने इलाहाबाद से प्रवेशीय परीक्षा पास की और अपनी पत्रिका 'इन्दिये' में हिन्दी पाठ प्रकाशित किए।

1906 मे द्रावेड़ कड्गम के आंदे नेता रामस्वामी नायक्कर ने हिन्दी विद्यालय के लिए अपने घर में जगह दी। 1925 मे काशी कांचिकोटि शंकराचार्य ने हिन्दी प्रसार के लिए राजर्षि टण्डन जी को सौ रूपए भेजे। आंध्र में 1886 में पुरूषोत्तम कवि ने भंवयोग्य 32 नाटक हिन्दी में लिखे। हिन्दी हमेशा राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति का माध्यम रही है। गुरू नानक, स्वामी दयानन्द, महात्मा गांधी, काका साहेब कालेलकर, विनोबा भावे, सुभाष चन्द्र बोस, आदि ने अपने विचारों को प्रकट करने का माध्यम हिन्दी को बनाया।

स्वतत्रंता के बाद राजभाषा हिन्दी

सैकड़ों वर्षों तक परतन्त्र रहने के उपरान्त भारत 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश के सामने अनेक समस्याएँ उठ खडी हुई थी। उन समस्याओं में से एक राष्ट्रभाषा की समस्या भी थी। उस समय कोर्ट कचहरी तथा शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी था। अतएव देश के स्वतंत्र हो जाने के बाद भी कुछ लोग अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा बनाने के पक्ष में थे। राष्ट्रभाषा बनाने के लिए किसी भाषा मे निम्नलिखित विशेषताएं आवश्यक एवं अपेक्षित हैं।

1. उस भाषा को देश के अधिकांश व्यक्ति बोलते एवं समझते हों।
2. वह भाषा राष्ट्र के निवासियों के लिए बोलने, लिखने एवं पढ़ने मे सरल हो।
3. वह भाषा टिकाऊ तथा स्थिर हो। वह ऐसी नहीं होनी चाहिए कि कुछ समय के बाद उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाए।
4. वह भाषा ऐसी होनी चाहिए जिसमें राष्ट्र का आपसी धार्मिक और राजनैतिक कामकाज सम्पन्न हो सके।
5. वह भाषा सरकारी कर्मचारियों के लिए सरल और आसान हो।

उक्त बातों पर विचार करने के बाद यह कहा जा सकता है कि भारत में प्रचलित अग्रेजी व अन्य भाषाओं में कोई भी राष्ट्र भाषा बनने लायक नहीं है। इस संबंध मे हिन्दी ही इस विशेषताओं पर खरी उतरती है। इसी कारण संविधान निर्माताओं ने यह घोषित किया कि संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागिरी होगी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय संविधान में 15 भारतीय भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई जिसमें हिन्दी भी एक भाषा है। बाद मे इस अनुसूची में तीन भाषाएं जोडी गई। अधिकांश लोगों द्वारा समझी व बोली जाने के कारण राष्ट्रीय सम्पर्क की भाषा के रूप में हिन्दी को संघ सरकार की राजभाषा की गरिमा 26 जनवरी 1950 को प्रदान की गई। 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को राजभाषा बनाने के लिए संविधान सभा में निर्णय लिया गया, जिसके अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद थे।

यह भी उल्लेखनीय है कि 25 जनवरी 1965 तक दो राजभाषाएं हिन्दी और अंग्रेजी बनी रही किन्तु 26 जनवरी 1965 से हिन्दी का राजभाषा के रूप मे प्रयोग करने का

निर्णय लिया गया क्योंकि सन् 1950 में हिन्दी को राजभाषा के रूप मे प्रयोग करने हेतु 15 वर्ष की कालावधि दी गई थी। सन् 1963 में राजभाषा अधिनियम बना जिसके अनुसार सभी सरकारी प्रयोजन के लिए हिन्दी के साथ–साथ अंग्रेजी भाषा का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। संविधान के अनुच्छेद 120 (1) भाग 17 में यह व्यवस्था कि गई थी कि संसद में हिन्दी या अंग्रेजी में कार्य किया जाएगा किन्तु यदि कोई सदस्य हिन्दी या अंग्रेजी मे अपने विचारों को व्यक्त नहीं कर सकता तो उसे अपनी मातृभाषा व्यक्त करने की सुविधा प्रदान की जा सकती है। सन् 1967 मे राजभाषा अधिनियम में संशोधन किया गया। इस अधिनियम की धारा 3 (3) में 14 मदें रखी गईं, जिनका अंग्रेजी के साथ–साथ हिन्दी में अनुवाद का प्रावधान रखा गया। 1968 मे राजभाषा संकल्प पास किया गया, जोकि 18 जनवरी 1968 को गृह मंत्रालय द्वारा परिचालित किया गया जिसमें भारत सरकार द्वारा एक व्यापक एवं समन्वित कार्यक्रम तैयार करने के उपरान्त उसे कार्यान्वित किया जाएगा और हिन्दी के प्रयोग तथा विकास के लिए किए जाने वाले उपायों और प्रगति की विस्तृत रिपोर्ट दोनों सदनों में रखी जाएगी और सब राज्य सरकारों को भेजी जाएगी। यहाँ राजभाषा नियम 1976 का भी उल्लेख करना अपेक्षित होगा जिसमें देश को तीन भागों में बांटा गया है।

क्षेत्र 'क' बिहार, हरियाणा, हिमाचल, मध्यप्रदेश, उत्तराखंड, झारखंड, छत्तीसगढ़, राजस्थान, उ.प्र., दिल्ली संघ राज्य

क्षेत्र 'ख' से गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब तथा अंडमान निकोबार द्वीपसमूह तथा चंडीगढ़ संघ

क्षेत्र 'ग' मे 'क' और 'ख' क्षेत्रों मे शामिल न किए गए सभी राज्य व संघ राज्य क्षेत्र।

प्रादेशिक भाषाओं से हिन्दी का संबंध:–

किसी भी भारतीय भाषा से हिन्दी का कोई टकराव नहीं है। ये सभी भाषाएं परम्परा पूरक हैं। समस्त भारतीय भाषाओं और लिपियों को संबंधित क्षेत्रों मे बढावा मिले, यह सभी चाहते हैं, किन्तु समस्त देश को एकता के सूत्र मे पिरोने का कार्य हिन्दी ही कर सकती है। भारतीय भाषाओं के साथ हिन्दी का अटूट संबंध है। संस्कृत हिन्दी की जननी है, और संस्कृत से सभी भारतीय भाषाएं उपकृत हुई हैं। शब्दावली के परस्पर साम्य होने के कारण ही अहिन्दी भाषी लोग हिन्दी समझ लेते हैं। यदि दक्षिण भारत में प्रचलित नामों का हम अध्ययन करें तो उन्हे हम उत्तर भारत में प्रचलित नामों की तुलना मे संस्कृत भाषा के अधिक निकट पाएंगे। दक्षिण भारत के प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में स्नातक तथा स्नात्कोत्तर स्तर पर हिन्दी का अध्ययन – अध्यापन जोरों से हो रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि त्रिभाषी फार्मूले को प्रभावी ढंग से भारत के सभी भागों में अपनाया जाए और उत्तर भारत और दक्षिण भारत के लोग एक दूसरे की भाषा सीखें। वस्तुतः दक्षिणी भारतीय भाषाओं के प्रति उपेक्षा भाव किसी उत्तर भारतीय के मन में नहीं है किन्तु द्रविड़ भाषाओं को सीखने की सुविधाओं की कमी इसके लिए उत्तरदायी कही जा सकती है। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचारसभा इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य कर रही है।

विश्व की भाषा के रूप मे हिन्दी का विकास :–

विश्व की भाषा के रूप मे हिन्दी के विकास की संभावनाएं असीमित हैं। हिन्दी भाषी जन समुदाय विश्व के तीन बहुतर भाषायी समूहों में से एक है। नेपाल, मॉरीशस, त्रिनिडाड, फिजी, सूरीनाम की हिन्दी भाषी जनता के अतिरिक्त विश्व के अनेक भागों में जैसे दक्षिणी व पूर्वी अफ्रीका, बर्मा आदि में बसे लोग हिन्दी बोलते हैं। गुयाना की भाषा में हिन्दी का पुट मिलता है। ब्रिटेन में लंदन कैम्ब्रिज और यार्क विश्वविद्यालयों के प्राच्य अध्ययन–संकाय तथा भाषा विभाग में हिन्दी के अध्ययन की व्यवस्था है। कनाडा के ब्रिटिश कोलम्बिया विश्वविद्यालय, वाशिंगटन, टेक्सास तथा वर्जिनिया आदि विश्वविद्यालयों में अर्जेन्टीना में यूनिवर्सिटी ऑफ बुएनोस आइरेस, पेरिस मे सारवान विश्वविद्यालय, जापान के टोकियो तथा ओसाका में दो विश्वविद्यालयों, बुलगारिया के सोफिया विश्वविद्यालय में हिन्दी के अध्ययन की व्यवस्था है। रूस में कई नगरों में हिन्दी का अध्ययन–अध्यापन और अनुवाद कार्य जोरों पर चल रहा है व अनेक पत्रिकाएं हिन्दी में प्रकाशित की जा रही हैं। आस्ट्रेलिया, श्रीलंका, बांग्लादेश आदि में हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि यूनेस्को की प्रमुख पत्रिका युनेस्को कूरियर का प्रकाशन 'यूनेस्को दूत' नाम में हिन्दी मे होता है। अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनों यथा नाम (NAM) चोग्म (CHOGM) आदि मे हिन्दी को यथोचित स्थान मिला।

राजभाषा की समस्या

स्वतंत्रता के बाद हिन्दी को खुली हवा में सांस लेने का अवसर मिला किन्तु विचारणीय प्रश्न यह है कि स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी हिन्दी को वह स्थान नहीं मिला जो मिलना चाहिए। कहने को तो हिन्दी राष्ट्र भाषा है किन्तु अंग्रेजी तथा अंग्रेजी माध्यम से पढ़े लोगों का बोलबाला है। इसके लिए निम्नलिखित कारण उत्तरदायी हैं :–

1. हिन्दी भाषा भाषियों का यह सोचना कि हिन्दी का वर्चस्व होने पर प्रतियोगी परीक्षाओं मे हिन्दी भाषी लोग ज्यादा सफल होंगे।
2. वोटों की राजनीति के कारण ही हिन्दी कि उपेक्षा की जाती है।
3. विषैले व दो मुंहे नेताओं के कारण भी हिन्दी की प्रगति में बाधा आई है एक तरफ उत्तर भारत मे ये नेता कहते हैं कि राष्ट्रभाषा हिन्दी ही हो सकती है दूसरी तरफ दक्षिण भारत में कहते है कि हिन्दी किसी पर थोपी नही जाएगी।

विरोधी लोगों की धारणा है कि अंग्रेजी भाषा का पठन पाठन आज के युग मे अत्यन्त आवश्यक है। इसके माध्यम के बिना भारतीय युवा पीढी कुएं का मेढक बनकर रह जाएगी। इस कथन मे आंशिक सच्चाई अवश्य है परन्तु संसार के कई ऐसे देश भी हैं जहाँ अंग्रेजी भाषा का नगण्य अथवा शून्य के बराबर प्रयोग किया जाता है। ये देश हैं चीन, जापान, रूस आदि जिन्होंने स्वभाषा के बल पर ही आशातीत उन्नति की है।

अंग्रेजी हमारे देश की सहयोगी भाषा बन सकती है न कि राष्ट्रभाषा। अंग्रेजी एक अन्तरराष्ट्रीय भाषा है इसका वैज्ञानिक ज्ञान के लिए सीखना आवश्यक है क्योंकि हिन्दी मे अभी इस विषय पर पुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं। परन्तु अंग्रेजी मानसिकता का गुलाम बनकर भारतीय संस्कृति को भुला देना किसी भी कीमत पर ठीक नही है। उड़िया कवि प्रधुम्न दास का कटाक्ष देखने एवं समझने लायक है

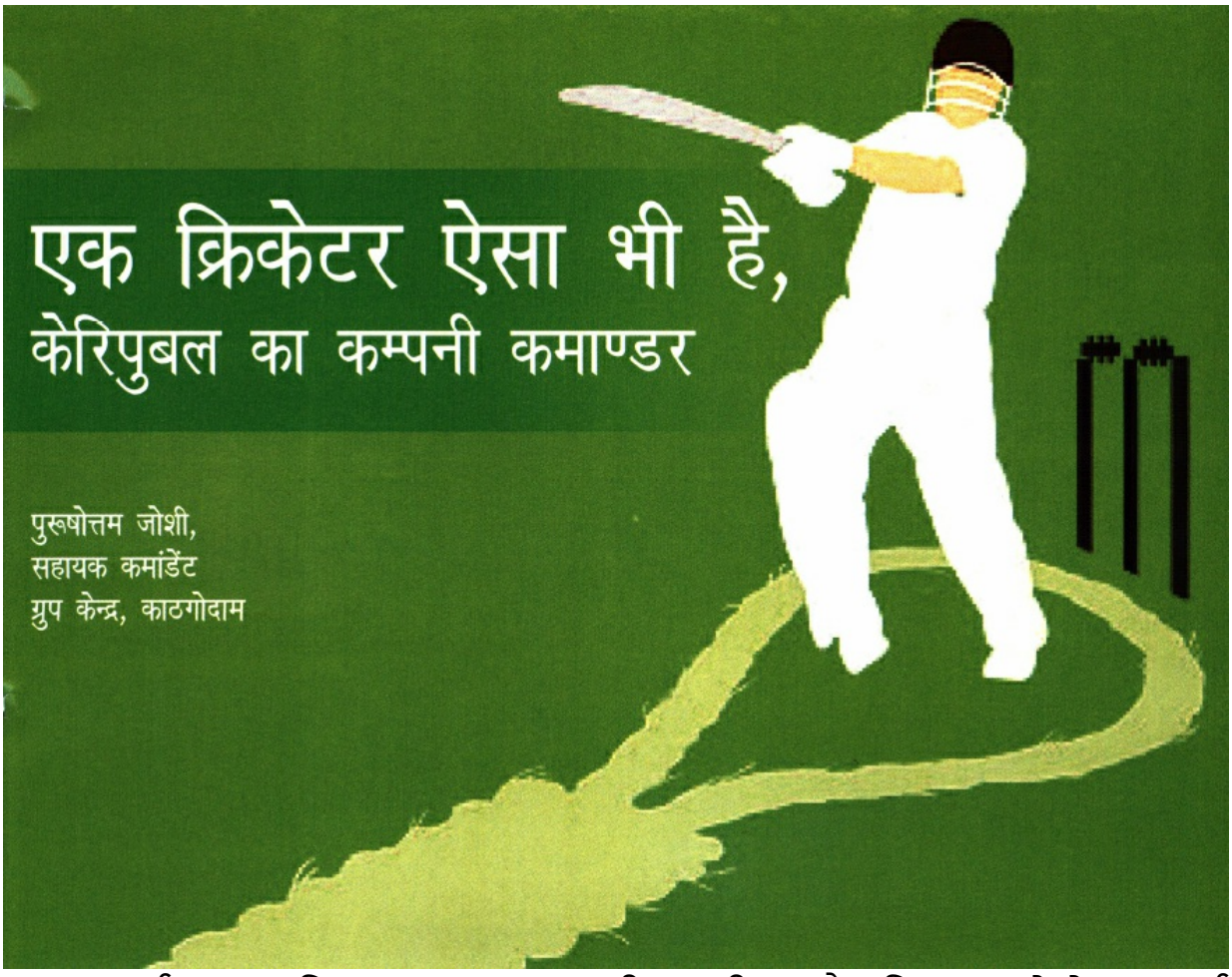
कौन कहता है कि अंग्रेज़ चले गये
वे तो गली–गली मे रम गए हैं, बस गए हैं
अंतर केवल इतना है, पहले ससुर थे
अब साले हो गए हैं
पहले गोरे थे, अब काले हो गए हैं।

संक्षेप :–

बिना व्यवहारिक प्रयोग के कोई भी भाषा प्रचलित नहीं हो पाती है। हिन्दी हमारी अभिव्यक्ति का माध्यम बने और हमारे जीवन की भाषा बने तभी हिन्दी का उत्थान होगा और इसका भविष्य भी उज्जवल होगा। हमारे देश मे हिन्दी जनसाधारण के बहुत अनुकूल्य है। केवल कमी है संकल्प की, यदि सम्पूर्ण राष्ट्र एक ध्वज और एक राष्ट्रगान को मान सकता है तो एक भाषा हिन्दी क्यों नहीं। भारतेंदु बाबू हरिशचन्द्र की यह पंक्तियां आज भी हमारे लिए प्रेरणास्रोत हैं :–

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल।

व्यंग्य



एक दर्द वह था, जिसका इलाज बाबा नीम हकीम व वैध किया करते थे, एक दर्द ऐसा कि काटे का कोई इलाज नहीं। इस लेख को व्यंग्यात्मक शैली में लिखकर मैंने बल में अपने कार्य अनुभव के आधार पर बल को अत्याधुनिक अर्धसैनिक बल बनाने हेतु क्रमवार हर बिन्दु को उजागर करने हेतु प्रयास किया है अतः आप इस दर्द का इलाज औषधि (यानि प्रकाशन) से न कर शल्य चिकित्सा (चर्चा) से अवश्य करवायें।

बैटिंग कर रहा CRP का कम्पनी कमाण्डर,
हैरान, परेशान होकर।
BOWLING कर रहा हर कोई कमांडर,
फील्डिंग पर CRP का जवान लगातार,
कहता है कम्पनी कमाण्डर,
मैदान क्रिकेट का छोड़कर।
सैंकड़ा तो लगेगा, जवानी में बुढ़ापा लाकर।

आज यदि इस लोकतांत्रिक देश में वास्तविक लोकतंत्र ढूंढना है तो CRP महान है, जहाँ मुख्य विपक्षी कम्पनी कमांडर है, हर वरिष्ठ अधिकारियों के दौरे, निरीक्षण या हों

सौनेक सम्मेलन, बातें घूम–फिरकर मैस प्रबन्धन पर ही टिकती है व कम्पनी कमांडर बड़े से छोटे अधिकारियों के BOUNCER पर BOUNCER झेलकर मैदान में TEST MATCH खेलता रहता है लेकिन शिकायत कि कमान अधिकारी महोदय ने MESS की खरीददारी में पैसा खा लिया, वगैरह–वगैरह, परन्तु वह शान्त भाव से जमकर मैदान के हर क्षेत्र में घूम रहे क्षेत्ररक्षकों को देखता रहता है।

"मेरे एक मित्र की कम्पनी में उनसे वरिष्ठ अधिकारी आते हैं व ORS MESS का खाना चखने के बाद बोलते हैं कि इस दाल में 24 किस्म के मसाले होने चाहिए थे, मित्र बोला, श्रीमान् बचपन से अभी तक चार किस्म के मसालों के बारे में सुना व बताया है तो अधिकारी महोदय विपरीत अभ्युक्ति Coy Register में दर्ज कर देते हैं कि 24 किस्म के मसाले उपयोग किए जायें, जो नहीं किए गए"।

दूसरा विचार कम्पनी कमांडर महोदय मैस से आलू–प्याज ले लेते हैं या बड़े खाऊ किस्म के इन्सान हैं। अब जरा उक्त तथ्य पर गौर करें तो पायेगें कि भारत सरकार ने केन्द्रीय पुलिस संगठन के कार्मिकों की राशन उपभोग की सीमा रू० 1150/– माह तय कर दी है तो इस बात को भारत सरकार भी भली भांति समझती है कि इस राशि से ज्यादा का राशन खाने से कार्मिक का पेट "नो बॉल" घोषित किया जा सकता है तो सोचें कि कम्पनी कमाण्डर कितना खाना खा लेगा, आखिर उसे "टेस्ट मैच" खेलना है न कि दनादन क्रिकेट मैच।

के.रि.पु. बल के वरिष्ठ अधिकारियों के कम्पनी के दौरे हों तो सर्वप्रथम राशन भण्डार का निरीक्षण व उसमें फिर BOUNCER पर BOUNCER कम्पनी कमांडर पर कि दाल खराब, सब्जियाँ ताज़ी नहीं इत्यादि। जबकि वास्तविकता यह है कि यह खरीददारी या तो सहकारी संस्था या खरीददारी कमेटी द्वारा तुलनात्मक आधार पर होती है।

अब जरा कम्पनी मैस के सुचारू प्रबन्धन की बात करें तो 03 कार्मिक सामान्य ड्यूटी व 05 अनुचर इस कार्य हेतु नियुक्त होते हैं व इसके अलावा बाकी छोटे–मोटे कार्य हेतु कम्पनी के आम जवान भी सहायता करते हैं जबकि कुल नफरी 60 या 70 से ज्यादा बमुश्किल होती है, वहीं एक सिविल पुलिस के पुलिस स्टेशन में तकरीबन 40 कार्मिकों का खाना व मैस मात्र एक अनुचर संभालता है व साथ ही SHO को खाना खिलाने से लेकर बर्तन साफ करने की ड्यूटी भी वह करता है । अतः वाकई में के.रि.पु. बल को एक अत्याधुनिक बल बनाना है तो मैस प्रबन्धन केन्द्रीयकृत कर किसी खान–पान सेवा कम्पनी को ठेका दे देना चाहिए, ताकि हमारी Man power को बढ़ाया जा सके व वह अपनी उपयोगिता सिद्ध कर सकें व कम्पनी कमांडर अपना ध्यान फालतू की बातों से हटाकर कम्पनी के परिचालन स्तर को ऊपर उठाने में लगाएं।



यहीं पर यदि जवानों को छुट्टी छोड़ने का प्रश्न हो तो उच्च अधिकारियों को मैनुअल के अनुसार छुट्टी प्रतिशत नजर आने लगता है कि 25% से ज्यादा छुट्टी मत छोड़ो, लेकिन जब हमारे बल के मैनुअल बनाए गए थे तब न तो वर्तमान आन्तरिक सुरक्षा ड्यूटियां इतनी थीं न ही इतने कैडर, कोर्सेस व अटैचमेन्ट ड्यूटियां होती थीं व न ही कुल नफरी की कमी का ध्यान रखा गया होगा तो वर्तमान में ले–दे के सीआरपीएफ की कम्पनी में 55 या 60 से ज्यादा की नफरी शायद ही हो पाये सिवाय चुनाव ड्यूटी के जब जोड़–तोड़ करके नफरी बढ़ा दी जाती है। इस तथ्य पर भी कम्पनी कमाण्डर कभी तो उच्चाधिकारियों के "इन स्विंगर" तो कभी छुट्टी हेतु जवानों की शिकायत संबंधी "गुगली" झेलता–झेलता अपना शतक पूरा करने की ओर बढ़ता जाता है।

कभी–कभी कम्पनी में ऐसा सिगनल आता है कि "जूडो" प्रतियोगिता हेतु प्रत्येक कम्पनी से दो कार्मिक भेजो, परन्तु चाहे उस खेल को कम्पनी में कोई जानने या खेलने वाला ना हो फिर भी कंपनी, कमांडर दो सबसे बड़े गैर अनुशासित कार्मिक जो कम्पनी मे सिरदर्द होते हैं उन्हें आदेश की पूर्ति हेतु मुख्यालय भेज देता है ताकि पांच दिन थोडा Stump पर टिक कर बल्लेबाजी कर सके।

वर्तमान समय में जहाँ हमारे देश की सरकार दो बच्चों के परिवार का समर्थन करती है वही पर कम्पनी कमाण्डर 126 जवानों के परिवार का मुखिया होकर अपनी जिम्मेदारी निभाता है। इसमें से भी यदि जवान की वर्दी ठीक नहीं हो तो कम्पनी कमाण्डर जवाबदार, जवानों का रहन–सहन ठीक नहीं तो कम्पनी कमांडर की कमी। आखिर करें तो क्या करें। ऐसे कंपनी कमांडर अक्सर अपनी उम्र से पहले ही बूढ़ा हो आता है, लेकिन शतक अवश्य पूरा कर लेता है।

कुछ कंपनी कमांडर ऐसे की उच्चाधिकारी महोदय का दौरा हो तो कम्पनी राशन

स्टोर में रखे गए "बैंगन" को साफ करके इस पर सरसों का तेल लगाकर ऊपर से पानी की बूंदे डाल देते हैं व उस दिन मैस में खाद्य निगम के चावल बनवाकर ऊपर से 2 इन्च मोटी परत बासमती चावल की बनवाकर डाल देते हैं ताकि प्रतीत हो कि रोज महोदय अपने जवानों को ताजी सब्जी व बासमती चावल खिलाते हैं व सैनिक सम्मेलन में ऐसे आडम्बर की तारीफ की जाती है। अतः मेरे अनुभव के आधार पर सीआरपीएफ में दिखावा सबसे अधिक है वहीं दिखावा इस बल के आधुनिकीकरण की बाधा है। आज हमारा बल वर्दी, प्रशिक्षण, रहन–सहन व कल्याण सम्बन्धी मामलों में नीचे आता जा रहा है इसकी वजह अत्यधिक कोर्सेस व अटैचमेन्ट ड्यूटी व खिदमतगिरी में ज्यादा ध्यान देने के कारण है।

वर्तमान समय में सीआरपीएफ अपनी Quantity पर ध्यान दिए हुए है न कि Quality व उसकी productivity पर ऐसे में हर स्तर पर तनाव, ढीलापन व मन–मुटाव लाजमी है। कम्पनी कमांडर पर बिना कार्य इतना अधिक दबाब है कि वह चाहते हुए भी अपनी उपयोगिता सिद्ध करने में परेशानी महसूस करता है व हमारे बल में In–service व Out–service कोर्सेज ऐसे होते हैं कि वहाँ पर भी कम्पनी कमांडर को ऐसे जाना पड़ता है जैसे वह "काउंटी मैच" खेलने जा रहा हो।

सीआरपीएफ महान कहते–कहते हम नहीं थकते, परन्तु महानता इस बल की यह है कि किसी आपरेशन में जाना हो तो ड्यूटी के बारे में ब्रीफिंग में, पहला BOUNCER जवानों की ओर से कि साहब हमारे खाने का क्या होगा व कब व कैसे ड्यूटी पर हमें मिलेगा। यह सुनकर कम्पनी कमांडर ऐसे गच्चा खा जाता है जैसे किसी ने उसे "Leg Before Wicket" कर दिया हो। यह सब इस बल में एकाएक नहीं हुआ बल्कि हर दौरे या निरीक्षण में हर स्तर के अधिकारी द्वारा घूम–फिरकर मैस प्रबन्धन पर ज्यादा ध्यान देने के कारण हुआ। ऐसे में सीआरपीएफ का कार्मिक भोजन करना अपनी primary Task समझता है, नतीजा physical fitness का अभाव व जवान Operational duty secondary task समझता है । वैसे भी सीआरपीएफ में ORs Mess का कोई fix समय नहीं है कागजों पर अवश्य है परन्तु हकीकत में तीन समय सुबह नाश्ता 0645 बजे, दिन का भोजन 1045 बजे व रात्रि का भोजन 0545 बजे क्यों कि 45 का आंकडा प्रशिक्षणोंपरान्त सेवानिवृत्त होने तक पीछा नहीं छोड़ता।

के.रि.पु. बल को यदि अत्याधुनिक अर्धसैनिक बल बनाना है तो पहले शारीरिक तौर पर फिर वर्दी के स्तर पर व मैस संबंधी प्रत्यक्ष आदेश होने चाहिए, हर स्तर पर समय प्रबंधन का ध्यान नहीं रहता, न ही व्यक्ति प्रबंधन का, यदि सीआरपीएफ में कोई सबसे सफल प्रबन्धन है तो "Boss Management" यदि इस बल का मेरे अनुभव के आधार पर कमजोर कड़ी है। उपरोक्त बातों पर यथाशीध्र ध्यान केन्द्रित करके ही सीआरपीएफ के कम्पनी कमांडर की जवानी बरकरार रखी जा सकती है। "How is that!!!"



लेख



छत्तीसगढ़: नक्सलियों से मोर्चा लेते सीआरपीएफ जवान

अजय चतुर्वेदी
(जन संपर्क अधिकारी)

छत्तीसगढ़– नैसर्गिक सुंदरता और प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर यह प्रदेश पिछले कुछ वर्षों से नक्सलवाद की चपेट में है। अठारह जिलों वाले इस प्रदेश के आधे जिलों में नक्सल गतिविधियाँ काफी तेज़ हैं। दंतेवाड़ा, बीजापुर, नारायणपुर, अम्बिकापुर, राजनंदगांव, कांकेर और कोरिया ऐसे जिले है, जहाँ नक्सलवाद पूरी तरह जड़ें जमा चुका है। केंद्र और राज्य पुलिस बल के लगातार बढ़ते दबाव के कारण नक्सलवादी संगठन हताशा में न सिर्फ निर्दोष जनता को मार रहे हैं बल्कि सरकारी सम्पति को भी नुकसान पहुँचा रहे हैं। यह कार्रवाई नक्सलियों की विकास विरोधी विचारधारा को ही प्रदर्शित करती है। इस बात की भी शिकायतें मिलती हैं कि अब नक्सलवादी ही भोले–भाले आदिवासियों का शोषण कर रहे हैं और उनको अपने संगठन में शामिल होने के लिये डरा–धमका रहे हैं।

कई निर्दोष लोगों की हत्या मुखबिर बताकर नक्सली संगठनों द्वारा की जा रही है। नक्सलियों के इन अत्याचारों से गांव वाले भी परेशान हैं, लेकिन भय के कारण वे अपनी जुबान अभी नहीं खोल रहे हैं हालांकि यह स्थिति अब अधिक दिन तक नहीं रहने वाली।

पुराने मध्यप्रदेश का छत्तीसगढ़ क्षेत्र वर्ष 2000 में अलग राज्य बना और 1 नवंबर 2000 को यह नया राज्य अपने अस्तित्व में आया। नया राज्य बनने से पहले छत्तीसगढ़ में नक्सलवादियों की सुगबुगाहट शुरू हो गई थी, लेकिन नया राज्य बनने के बाद से बस्तर क्षेत्र में नक्सलवादियों ने पैर जमाने शुरू कर दिये। राज्य का बस्तर जिला घने जंगलों का क्षेत्र रहा है। इसकी सीमा दक्षिण में आंध्रप्रदेश और पूर्व में उड़ीसा से लगती है। क्षेत्रफल के हिसाब से सबसे बड़े बस्तर जिले को बाद में पांच जिलों में बांट दिया गया– जगदलपुर (बस्तर), दंतेवाड़ा, नारायणपुर, बीजापुर, और कांकेर। उत्तर में छत्तीसगढ़ की सीमा झारखंड से लगती है। इस राज्य का एक हिस्सा महाराष्ट्र के विदर्भ से भी जुड़ता है। छत्तीसगढ़ के इन सभी पड़ोसी राज्यों में नक्सलवादी गतिविधियां पहले से ही सक्रिय रही हैं।

एक दशक पूर्व आंध्रप्रदेश ने जब नक्सलियों का सफाया करना शुरू किया तो इनके अधिकांश कमांडर और सक्रिय कार्यकर्ता जंगलों के रास्ते पड़ोसी राज्य छत्तीसगढ़ में घुस आए। इसके आसपास के लगे पड़ोसी राज्यों में जंगल होने के कारण इनको काफी सुरक्षित लगा। धीरे–धीरे नक्सलियों ने इन्हीं राज्यों के जंगलों में

अपने छिपे अड्डे बना लिए और भोली–भाली आदिवासी जनता को सरकार के खिलाफ भड़काने और उन्हें डराने–धमकाने लगे। नक्सली संगठनों ने यह काम बड़े सुनियोजित तरीके से किया और जंगलों तथा आदिवासियों पर अपना आधिपत्य जमा लिया है।

छत्तीसगढ़ के जंगलों में नक्सलवादियों के कई प्रशिक्षण केंद्र हैं। बताते हैं कि इनका मुख्यालय भी छत्तीसगढ़ के जंगलों में अबझमाड क्षेत्र में है। जहाँ से ये अपनी गतिविधियों का संचालन कर उन्हें अंजाम देते हैं। देश के 39 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में नक्सलवादी संगठन सक्रिय हैं, जिसे **लाल गलियारा** भी कहा जाता है। यह सात राज्यों में फैला है।

नक्सली संगठन उद्देश्य से भटके

यह बात दावे के साथ कही जा सकती है कि जिन उद्देश्यों को लेकर नक्सली संगठन आगे बढ़े थे, उससे अब वे पूरी तरह भटक चुके हैं। सरकार द्वारा विकास और निर्माण के हर कार्यों का ये संगठन खुल कर विरोध कर रहे हैं। अपनी ताकत बढ़ाने के लिए इनके संगठन अवैध वसूली, हत्या निर्माण कार्यों और भवनों को नष्ट कर ग्रामीणों में भय व्याप्त करने में लगे हैं। छत्तीसगढ़ में पिछले पांच सालों में कई मोबाईल टावर उड़ा दिए गए। सरकारी भवनों को तोड़ा गया, स्कूल भवनों में भी तोड़ फोड़ की गई। सड़क निर्माण में लगे ठेकेदारों और उनके मजदूरों को मारपीट कर भगा दिया गया। निर्माण उपकरणों को नष्ट कर दिया गया। अवैध वसूली के बावजूद ठेकेदारों को काम नहीं करने दिया गया।

सीआरपीएफ का अभियान

नक्सली संगठनों के खिलाफ छेड़े गए अभियान में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के जवान बड़ी मुस्तैदी से लगे हैं। इस समय छत्तीसगढ़ में बल की 14 बटालियन हैं, इनमें से 11 बटालियन बस्तर, दंतेवाड़ा, कांकेर, नारायणपुर और बीजापुर के जंगलों में तैनात हैं, जबकि शेष तीन बटालियन अम्बिकापुर, कोरिया तथा अन्य जगहों में तैनात हैं। हालांकि पिछले पांच वर्षों में राज्य में नक्सल गतिविधियों में काफी तेजी आई है, लेकिन तमाम परेशानियों के बावजूद सीआरपीएफ के जवान उनसे हर स्तर पर दो–दो हाथ कर रहे हैं। नक्सलियों से कई मुठभेड़ें हुईं। उनके कार्यकर्ता बड़ी तादाद में मारे जा रहे हैं। बल के जवानों ने भारी मात्रा में बंदूकें, गोलियां, तथा अन्य प्रकार के हथियार बरामद किये हैं। चूंकि नक्सलवादी भारी तादाद में आते हैं और सशस्त्र हमले करते हैं। अपने घायलों अथवा मारे गये साथियों के शव अपने साथ ले जाने के प्रयास करते हैं, इस कारण उनके मारे गए लोगों की संख्या का सही–सही पता नहीं चल पाता है। वर्ष 2009 में जनवरी से जून तक बल के 46 जवान/अधिकारी नक्सलियों के साथ लड़ाई में शहीद हुए। इसके बावजूद बल के जवान नक्सलियों के सफाये में पूरे उत्साह से डटे हैं।

बस्तर क्षेत्र में बल के दो पुलिस उप महानिरीक्षक श्री रघुवीर सिंह सहोता और श्री

आर.डी.एस.साहो के निदेशन में 11 बटालियनों के अधिकारी और जवान मुस्तैदी से डटे हैं। छत्तीसगढ़ स्पेशल सैक्टर के तहत आता है जिसके प्रभारी पुलिस महानिरीक्षक श्री रमेश चंद्र हैं।

नक्सलियों से मुकाबले के लिए छत्तीसगढ़ में नवगठित कोबरा की भी एक बटालियन है। कोबरा की 201 बटायिलन को जगदलपुर के पास जंगल में प्रशिक्षण भी दिया गया है। कोबरा के कमांडो अपनी जिम्मेदारी को खूबी के साथ निभा रहे हैं और जल्दी ही इनकी उपस्थिति के सुखद परिणाम आने की आशा है।

बढ़ते नक्सलवाद के कारण छत्तीसगढ़ में विकास कार्यों पर भी विपरीत असर पड़ रहा है। बस्तर क्षेत्र, जहाँ प्राकृतिक संसाधनों और समृद्ध खनिज सम्पदा के भण्डार हैं, वहाँ नक्सली संगठनों की आक्रामकता के कारण पर्यटन उद्योग भी बुरी तरह प्रभावित हो रहा है।



स्थानीय पुलिस और केंद्रीय बलों के बीच बेहतर तालमेल और समन्वय तो हर स्तर पर है, लेकिन पर्याप्त राज्य पुलिस और थानों की संख्या कम होने के कारण इतने विशाल जंगल क्षेत्र में पुलिस बल जल्दी नहीं पहुँच पाता।

छत्तीसगढ़ और अन्य पड़ोसी राज्यों के जंगल आपस में मिले हुए हैं और आदिवासी इन जंगल के रास्तों से भलीभांति परिचित भी हैं, जिसके कारण वारदात के बाद ये संगठन एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में जंगल के रास्ते प्रवेश कर जाते हैं।

नक्सली संगठनों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई समय की मांग है। कार्रवाई की सफलता के लिए जरूरी है कि राज्यों की पुलिस और केंद्रीय बलों के बीच बेहतर तालमेल और समन्वय हो।

बल के जवानों को आ रही दिक्कतें

छत्तीसगढ़ में बल के जवानों को कई प्रकार की दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। इनमें सबसे प्रमुख है मलेरिया। लंबे समय तक जंगलों में रहने के कारण सीआरपीएफ के अधिकारी और जवानों का सबसे बड़ा दुश्मन मलेरिया है। मच्छरों के कारण मलेरिया होना आम बात है। जंगल में अंदरूनी इलाकों में स्वास्थ्य सेवा की उचित और पर्याप्त व्यवस्था न होने के कारण पीडित को जिला मुख्यालय के अस्पताल तक ले जाना पड़ता है।

घना जंगल, दुर्गम स्थान, कठिन भौगोलिक स्थान समझने में बल के सदस्यों को कुछ समय लगना स्वाभाविक है, जिसका फायदा नक्सली संगठन बड़े आराम से उठाते हैं और बल के लोगों को अपना निशाना बनाने से नहीं चूकते।

बस्तर अंचल के जंगलों में लगभग सभी जगह जमीनी बारूदी सुरंग बिछी हुई है। गाड़ी पर चलना इन क्षेत्रों में मना है। इसलिये बल के अधिकारियों और जवानों को इन रास्तों पर केवल पैदल ही चलना पड़ता है। बल के जवान रोज़ औसतन 15 किलोमीटर का रास्ता तय करते हैं।

स्थानीय जनता का असहयोग और उनकी बोली न समझना भी बल के लिए बड़ी समस्या है। नक्सलियों के डर से स्थानीय आदिवासी पुलिस को सहयोग नहीं देते जिससे कई बार जवानों को अंधेरे में तीर चलाना पड़ता है।

कई जगहों पर बल के रहने के स्थान अस्थाई हैं। इनमें मूलभूत सुविधाओं की भी कमी है। इन परेशानियों के बावजूद बल के जवानों के उत्साह में कोई कमी नहीं है और वे हर समय मोर्चे पर डटे रहते हैं।

परिचालनिक उपलब्धियां

अगस्त माह के दौरान कुल 21 मुठभेड़ों में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने 7 आतंकवादियों को मार गिराया, संदिग्धों सहित 144 को गिरफ्तार किया।

इन घटनाओं में 29 हथियार, 455 गोली बारूद, 20 ग्रेनेड बम व 60 किलोग्राम विस्फोटक, 6,72,240 रूपये नगद, 10.2 किलोग्राम गांजा और 54 डेटोनेटर बरामद किए। इस दौरान बल ने अपने 3 वीर जवानों को खोया।



राष्ट्रभाषा अपनाने के लिए कितना वक्त चाहिए?

निरीक्षक (हिंदी अनुवादक) जितेन्द्र सिंह
ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, रामपुर (उप्र)

किसी भी देश की राष्ट्रभाषा उस देश की पहचान होती है। राष्ट्रभाषा के माध्यम से ही नागरिक अन्य देशों में जाकर अपने देश का प्रतिनिधित्व करते हैं। एक तरह से अपने देश की पहचान बनाते हैं।

राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय चिह्न के साथ–साथ राष्ट्रभाषा जहाँ एक ओर देश को एकता की कड़ी में पिरोती है वहीं इसके माध्यम से देश–प्रेम की भावना समस्त देशवासियों के मन में जागृत होती है। कोई भी देश कितना भी छोटा क्यों न हो अपनी मातृभाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाकर गौरव का अनुभव करता है।

राष्ट्रभाषा अपनाने के लिए कितना वक्त चाहिए? हमारे देश के संदर्भ में इस बात को लेकर एक विषम स्थिति रही है, एक समय था जब भारतवर्ष एक अति विशाल देश था। इसकी सीमाएं अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बर्मा, श्रीलंका और आज के बांग्लादेश तक फैली थी। हमारा देश एक लम्बे समय तक मुगल शासकों के आधीन रहा है, उनके साम्राज्य में हिन्दुओं या अन्य धर्मों के लोगों पर चाहे कितने भी अत्याचार हुए हों लेकिन विभिन्न भाषाओं को फलने–फूलने का पर्याप्त अवसर मिला था। मुगल शासनकाल में भी तमिल भाषा सबसे प्राचीन भारतीय भाषा के रूप में स्थापित रही और वर्तमान युग की भारतीय भाषाओं सहित अरबी, फारसी और उर्दू भी हिंदी के साथ खूब फली–फूली।

देश की आजादी के बाद हिंदी को राष्ट्रभाषा/राजभाषा के रूप में अपनाना मात्र एक विडंबना बन कर रह गई है। गणतंत्र स्थापना के समय राष्ट्र निर्माताओं ने आगामी 15 वर्ष के दौरान केन्द्र सरकार सहित देश के सभी राज्यों द्वारा इसे पूर्ण रूप से अपनाने की बात कही थी। इस दौरान हिंदी को राष्ट्रभाषा के तौर पर स्थापित करने के लिए अनेकानेक सरकारी विभाग बने, नियम, अधिनियम, दिशा–निर्देश कानूनी रूप में सामने आए और यहाँ तक की पहली पीढ़ी से तीसरी पीढ़ी आ गई परन्तु वह 15 वर्ष की अवधि गणतंत्र स्थापना के 63 वर्ष बीत जाने के बाद भी पूरी नहीं हुई और सभी राज्यों सहित समूचे राष्ट्र में हिन्दी को राष्ट्रभाषा का गौरव दिलाने का सपना धराशायी हो गया।

इस संदर्भ में एक बहुत पुरानी घटना का उदाहरण देना न्यायसंगत होगा। लम्बी गुलामी के बाद 1923 में तुर्की आजाद देश बना और उसके शासन की बागडोर राष्ट्रपति मुस्तफा अतातुर्क कमाल पाशा ने संभाली। तुर्की एक छोटा राष्ट्र था, आबादी भी ज्यादा नहीं थी और गुलामी की जंजीरों ने उसकी राष्ट्रभाषा तर्कीश को विकसित होने का कोई अवसर नहीं दिया था, वैसे भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तर्कीश बहुत समृद्ध भाषा नहीं थी, विदेशी भाषा अरेबिक पूरे देश मे सर्व प्रमाणित थी और विकसित भी थी। तुर्की के आजाद होने के बाद तीश को राष्ट्रभाषा बनाया जाएगा, यह बात आम नागरिक की समझ से बाहर थी। सबके मन में तर्कीश को लेकर संदेह था कि क्या ज्ञान, विज्ञान, तकनीकी, मेडिकल और न्यायपालिका में तर्कीश को कार्य रूप में लाया जा सकेगा। यह एक असंभव सी बात थी, विदेशी प्रभाव में पढ़े–लिखे राजकीय पदाधिकारी अपने सरकारी कार्य को तर्कीश में कर पाने की दिशा में संशय से भरे थे

और सही मायनों में भाषा के बदलाव के प्रति किसी के मन में कोई रूचि भी नहीं थी।

एक राष्ट्रपति के रूप में मुस्तफा अतातुर्क कमाल पाशा के सामने आजाद देश तुर्की की राष्ट्रभाषा निर्धारित करने का प्रश्न बहुत बड़ा था। एक शासक होने के बावजूद भी उन्होंने अपने मंत्रियों, राजकीय अधिकारियों, देश के बुद्धिजीवियों और कूटनीतिज्ञों की सलाह इस विषय में लेना उचित समझा। एक मूल प्रश्न पर राष्ट्रीय स्तर की बैठक में फैसला होना था, कि हमारी राष्ट्रभाषा क्या हो .....? आजादी से एक दिन पूर्व तक देश सरकारी काम–काज में प्रयोग होने वाली भाषा अरेबिक या देश प्रेम की भावना से जुड़ी मातृभाषा तर्कीश। ऐरेबिक तकनीकी दृष्टि से समृद्ध, परिपक्व व एक श्रेष्ठ विदेशी भाषा थी परन्तु एक कठोर शासक के सामने बुद्धिजीवियों व राजकीय अधिकारियों द्वारा यह कहना कि देश की तरक्की के लिए आधुनिक विदेशी भाषा ही राष्ट्रभाषा होनी चाहिए, बहुत कठिन था। बहुत देर तक तर्क–वितर्क, वाद–परिसंवाद का दौर चला जिसको अपेक्षाकृत कम पढ़े–लिखे शासक मुस्तफा अतार्तुक कमाल पाशा ने बड़े ध्यान से सुना। संवादों व विभाजित मत से एक अनिर्णय की स्थिति सामने आई। जहाँ सर्वसम्मति से कुछ भी सुनिश्चित कर पाना असंभव था। समाज के सभी वर्गों के गणमान्य व्यक्तियों को अपनी बात कहने का पूर्ण अवसर प्रदान करने के बाद बैठक के अंत में राष्ट्रपति मुस्तफा अतार्तुक कमाल पाशा ने पूछा, 'आप सब बताएं तर्कीश हमारी राष्ट्रभाषा बनेगी या नहीं?' बादशाह के मुख से यह सीधा प्रश्न सुनकर सभी भयभीत और आतंकित होने लगे। किसी को भी अपनी बात कहने का साहस नहीं था। तर्कीश के प्रति उनके मन में प्रेम तो था परन्तु शिक्षा के क्षेत्र में, राजकीय कार्यालयों में, न्यायालयों में तर्कीश के माध्यम से वो कार्य कर सकेंगे यह सभी को नामुमकिन सा लग रहा था, परन्तु बादशाह से अपने दिल की बात कहें तो कैसें? फिर भी एक लंबे संवाद में बादशाह को उन्होंने बता दिया कि तर्कीश भाषा किसी भी प्रकार से विदेशी भाषा की बराबरी नहीं कर सकती। कुछ विद्वानों ने बीच का एक रास्ता निकाला और बड़ी बुद्धिमानी से बादशाह की उम्र का ख्याल करते हुए एक स्वर में कहा, 'कि तर्कीश राष्ट्रभाषा बन सकती है, परन्तु इसको तकनीकी और भाषाई तौर पर समृद्ध व परिपक्व करने में 15 वर्ष का समय लगेगा।' अब, तक लोगों के मन की बात जान चुके बादशाह को जरा भी आश्चर्य नहीं हुआ और एक बादशाह ने अपनी फौलादी आवाज में कहा, 'मुझे बहुत खुशी है कि आज राष्ट्र के नीति निर्धारकों ने तर्कीश को मातृभाषा के रूप में अपनाने का निर्णय लिया हैं। भले ही आने वाले 15 वर्षों के बाद ही तर्कीश तुर्की के प्रत्येक कार्यालय और जनता की एक मातृभाषा होगी। देश के सारे विद्यालय चाहे वो किसी भी तकनीकी क्षेत्र में हो तर्कीश भाषा में ही पढ़ाई करेंगे। देश की सभी अदालतें तर्कीश भाषा में ही चलेंगी। तुर्की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तर्कीश को अपनी राष्ट्रभाषा घोषित करेगा।' बादशाह के मुंह से अपने प्रस्ताव की। सहमति पर सभी ने तालियां बजाकर खुशी जाहिर की। सारा माहौल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। बादशाह मुस्तफा अब्दुल कलाम पाशा ने खड़े होकर अपना हाथ उठाया और जोरदार आवाज में कहा 'मैंने अभी अपनी बात खत्म नहीं की है.....और वह 15 वर्ष का समय कल सुबह सूरज उगने के साथ

खत्म हो जाएगा। जिस व्यक्ति को कल सुबह तक तर्कीश राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार नहीं तो वह व्यक्ति तुर्की छोड़कर कहीं भी जाने के लिए स्वतंत्र है। और इसके साथ ही यह घटना एक इतिहास बन गई। केवल एक रात में गुजारा गया 15 वर्ष का समय तर्कीश को तुर्की की राष्ट्रभाषा बना गया। बादशाह मुस्तफा कलाम पाशा ने लम्बे समय पर तुर्की पर राज किया और तर्कीश तुर्की–टर्की की एक सफल राष्ट्रभाषा बनी रही और आज भी है। आईए, हम सब सोचें क्या इतिहास की यह घटना हमसे कुछ कह रही है।



भूमंडलीकरण और हिंदी

एस ए एम काजमी
पुलिस उप महानिरीक्षक (प्रशासन)
स्पेशल सेक्टर, मुख्यालय

बात हिंदी की हो और उस पर हाय–हाय न हो, ऐसा हो नहीं सकता। इस मुद्दे पर ये शेर वाकई मौजूद है:–

“बहुत शोर सुनते थे पहलू में दिल का

जो चीरा तो एक कतरा–ए–खू भी न निकला”

हर वक्त एक सी बातें – क्या हिंदी, क्यों हिंदी, कैसी हिंदी, किसके लिए हिंदी. वगैरह–वगैरह, मानों तथाकथित बुद्धिजीवी(अंग्रेज़ीदा) तबके को चिंता करने के लिए इसके अलावा और कोई काम ही नहीं रह गया हो। भारत की तरक्की की राह में यह भाषा उन्हें अटकती हुई लगती है। तो कुछ और ‘वक्त के साथ चलने वालों’ को ये भाषा घिसी–पिटी, दकियानूसी और पिछड़ेपन का नमूना लगती है। यानि कि भारत को ‘इंडिया’ बना देने वाले खैरख्वाह हर मोड़ पर छाती पीटते हुए ‘सक्रिय नागरिक’ की भूमिका बखूबी निभा रहे हैं, जबकि हकीकत इसके बिल्कुल उलट है।

भूमंडलीकरण अर्थात् विश्वग्राम का सपना

आखिर उलझन क्या है? ये कैसी विडंबना है और इसमें कितना सच है? इन्हीं सब मुद्दों की पड़ताल करने का अब सही वक्त आ गया है। सबसे पहले बात आती है “भूमंडलीकरण” की। इसके मूल में है “वसुधैव कुटंबकम्” का उदात्त भारतीय दर्शन जो तमाम विश्व को एक परिवार के रूप में रहने की प्रेरणा देता है ताकि हम मिलकर तरक्की कर सकें और एक–दूसरे के सुख–दुख को समझकर परस्पर सहयोग कर सकें, मगर ये दर्शन यह कहीं नहीं कहता कि अपनी पहचान को विलीन कर दो, अपनी जड़ों को खो दो या अपनी संस्कृति की मर्यादा को भूल जाओ। इसमें सीधे–सीधे अपने स्वाभाविक स्वरूप को सहज रूप से बाकी दुनियां से जोड़ने का संदेश निहित है। बात यहीं आकर अटकती है। वे प्रगतिशील देशों के अनुरूप आचरण करते हुए और उनकी भाषा व संस्कृति को अपनाते हुए ‘विश्व ग्राम’ के नागरिक बनना चाहते हैं जबकि अपनी सुदीर्घ प्रतिष्ठाजनक संस्कृति इससे सहज रूप से जुड़ना चाहती है।

तो उन दोस्तों से इतना ही निवेदन किया जा सकता है कि वे सबसे पहले ग्लोबलाइजेशन यानि भूमंडलीकरण को सही माने जानने की जहमत उठाएं। इस सिक्के का एक पहलू जहाँ आपसदारी है, वहीं दूसरा पहलू है बाज़ारीकरण, यानि की एक देश का माल दूसरे देश में खपाना। ज़रा सा गौर करेंगे तो पाएंगे कि भूमंडलीकरण के इस सिक्के के दोनों तरफ ही ‘बाजारीकरण’ लिखा है। भौतिकता और समृद्धि की इस होड़ में परस्पर सुख–दुख और सहयोग की परवाह भी किसे है? यहाँ तक तो ठीक है, पर और ज़रा सा आगे बढ़कर देखें तो खुले बाजार का नज़ारा साफ नज़र आता है, जिसमें विज्ञापनों की डुगडुगी बजाते कितने ही मज़मे वाले लोगों का ध्यान खींचने में लगे हैं, भले ही वो किसी भी देश के हों पर थोड़ा–सा भी ध्यान से सुनेंगे तो अधिकतर लाल–पीले–काले मजमे वालों की भाषा वही है जो आप बोलते हैं, यानि कि हिन्दुस्तानी। गाहे–बगाहे क्षेत्रीय भाषाएं भी इसमें शामिल हो जाती हैं। है ना

कमाल! मगर ये कैसे? इसलिए नहीं कि वो आपके देश की भाषाओं के प्यार में डूबे हैं, बल्कि इसलिए कि वे बखूबी व्यापार में डूबे हैं और सच्चा व्यापार आपकी ही भाषाओं में आपकी भावनाओं को भुनाकर किया जा सकता है। उनके इस गुरूमंत्र को समझ लिया जाए तो हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं पर उंगली उठाने वालों का दर्द थोड़ा कम हो सकता है, जो इन्हे संप्रेषण के सही माध्यम का दर्जा देने से कतराते हैं इन्हे सशक्त नहीं मानते।

मीडिया यानी हिंदी के दनदनाते बुलेट

अब इस भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में जरा मीडिया की भूमिका पर भी एक नजर डाली जाए "चैनल..... चैनल, कितने चैनल"। रिमोट हाथ में रखिए और ड्राइंग रूम में गद्देदार सोफे पर पसरे–पसरे या बैड रूम में आरामदेह बिस्तर पर लेटे–लेटे दुनियां भर की सैर कीजिए–अंतहीन खबरों के सिलसिले के साथ। परंपरागत प्रिंट मीडिया से पहले इलेक्ट्रानिक मीडिया की चर्चा करने का मंतव्य इतना ही है उसमें आपको अधिकतर प्रतिदिन सुबह, प्रति सप्ताह या प्रत्येक माह में अखबार या पत्रिकाएं मिलती हैं जबकि चैनलों की चक–चक चौबीसों घंटे खोखली सनसनी पैदा करने में जुटी रहती हैं। एक पल भी छुटकारा नहीं, तो असर क्यों नहीं होगा? दोस्तो ज़रूर होगा। चलती का नाम ही तो गाड़ी है, मगर फिर से गौर कीजिए कि 5 प्रतिशत अंग्रजी चैनल सुनने वालों से नहीं बल्कि 95 प्रतिशत हिंदी या अन्य सहोदरा भारतीय भाषाओं के चैनलों को सुनने से असर होगा। मीडिया इस असर को बखूबी जानता है और बाजार की नस–नस को भी वो बेहतर पहचानता है। एक तरफ तो अक्सर ऊल–जुलूल, उबाऊ और असरहीन खबरों की लंबी कड़ी रहती है तो दूसरी तरफ सिक्कों की खनक से खनखनाती और भौतिकता की चमक से चमचमाती बाजार की बानगी छाई रहती है यानी एक के बाद एक विज्ञापन का अटूट सिलसिला। कई बार तो यह समझना भी मुश्किल हो जाता है कि ये मीडिया के समाचार चैनल हैं या बाजार के विज्ञापन चैनल। मगर यहाँ भी बात वही है, उनकी भाषा वही है..... मेरी और आपकी भाषा। यहाँ अंग्रेजी नहीं बिकती और न ही उतना बेचती है। आखिर यहाँ भी काम आती है तो हमारी अपनी भाषाएं जिनमें भावनाओं की पकड सहज है। लगे हाथ प्रिंट मीडिया की भी बात कर ली जाए। तो उसमें और चैनले में एक और बड़ा फर्क है। उसे जहाँ सिर्फ एक बटन दबाकर और अपने कामों में लगे रहकर सुना/देखा जा सकता है (भले ही आप शिक्षित हों या नहीं), वहीं प्रिंट मीडिया की तरफ आप तभी तवज्जो दे सकते हैं जब आप पढ़े–लिखें हों और उनकी सामग्री को पढ़ने के लिए आपके पास पर्याप्त समय हो, लेकिन मामले में भारत में उलट–बासी की स्थिति है, जो पढ़े–लिखे हैं, उन्हें समय नहीं मिलता और जो अनपढ़ हैं, वे तो अनपढ़ हैं ही। फिर भी, बहुत सारे लोग हैं जो अभी–भी प्रिंट मीडिया से अपना लगाव बनाए हुए हैं, मगर उनके लगाव की अभिव्यक्ति विशेषकर हिंदी या उनकी अपनी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति भावनात्मक संवेदना या साहित्य से लगाव को लेकर है। यही बात उन्हें अंग्रेजी प्रिंट मीडिया से बहुत आगे ले गई है। पिछले कई वर्षों के दौरान हुए सर्वे में बार–बार

यह बात साफ तौर पर उभर कर आई है कि प्रिंट मीडिया में भारतीय भाषाओं का हिस्सा अंग्रेजी की तुलना में काफी बड़ा है, एक अंग्रेजी अखबार या पत्रिका लेने वाला भी इसके साथ अक्सर अपने घर में हिंदी या क्षेत्रीय भाषा के अखबार या पत्रिकाएं मांगना पसंद करता है, तो आखिर क्यों? इसलिए कि 'वसुधैव कुटुंबकम्' के आधुनिक संस्करण भूमंडलीकरण (या बाजारीकरण) के दौर में भी वह अपनी मिट्टी को नहीं भूला है। तथाकथित 'अंतर्राष्ट्रीय भाषा का दम भरने वाली अंग्रेजी इस मोर्चे पर भी नाकाम दिखती है। वो तो गनीमत है कि कुछ विज्ञापन समूहों ने इसे अभी तक टिका रखा है। विडंबना ये है कि भारत को चलाने वाले 5 प्रतिशत अंग्रेजीदां लोगों का वरदहस्त इन्हें मिला हुआ है और वही यहाँ इसके अस्तित्व का मुख्य आधार बने हुए हैं।

विज्ञापन अर्थात् हिंदी का फैलता इंद्रजाल

इसके बाद बारी आती है ग्लैमर की चकाचौंध से चकमक विज्ञापन जगत की। एक ऐसी नायाब तरकीब जो पूरी दुनियां का मुट्ठी में कर लेने की हिदायत देती नजर आती है। हो भी क्यों ना? हमारी जिंदगी की जरूरतों का फैसला अब हम नहीं करते, कंपनियाँ करती हैं। हम क्या पहनें–क्या खाएं, हम क्या ओढ़ें, क्या बिछाएं, हम कहाँ खर्चे, कहाँ लगाएं, यानि गोलमाल के पूरे चक्कर का जिम्मा अब उन्होंने हासिल कर लिया है। ऐसा असर जो न पहले कभी देखा, न सुना। आखिर किसके बूते? घूम–फिर कर बात फिर वहीं आकर रूकती है हमारी अपनी भाषाओं के बल पर हमें बरगला कर। कोई विदेशी भाषा हमारी 'चेतना को इस कदर जकड़ ही नहीं सकती कि हमारी बौद्धिक वृत्तियों को इतना पंगु बना सके। भारतीय भाषाओं के विज्ञापनों की तुलना में अब अंग्रेजी के विज्ञापन इने–गिने ही नज़र आते हैं तो क्यों? क्योंकि बाजारीकरण का परिवेश बनाने और उत्पादों को उसमें ठेलते जाने का अभेध अस्त्र है आपकी अपनी भाषा, जो आपकी संवेदनाओं को भीतर तक छूती है और उनमें गहरी पैठ बनाने का माद्दा रखती है। बाजार के नियंताओं ने इस रामबाण का असर बखूबी समझ लिया है। तो अब तक एक बात तो साफ हो गई है कि भूमंडलीकरण की प्रक्रिया हो या मीडिया अथवा विज्ञापनों का क्षेत्र–इनमें अपनी भाषाओं का उपयोग (जिनमें हिंदी प्रमुख संपर्क भाषा है, जिसे भारत के लगभग 80 करोड़ लोग समझते हैं और जिसके जाने वालों की संख्या अब विश्व में चीनी भाषा के बाद दूसरे नंबर पर है, जबकि अंग्रेजी इस क्रम में तीसरी भाषा है) कारगर सिद्ध होता है। हमारे यहां घटते हुए अंग्रेजी समाचार चैनल और अंग्रेजी विज्ञापनों की संख्या में आई भारी कमी भी इसी बात को सिद्ध करती हैं। लेकिन एक बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि भारत से बाहर अंतरराष्ट्रीय समुदाय में अंग्रेजी की पैठ या कंप्यूटरों में फिलहाल इसकी उपयोगिता निर्विवाद है। दृष्टि से अंग्रेजी को जानना–समझना समय के अनुरूप है। मगर भारत की अपनी समृद्ध भाषाओं की कीमत पर ऐसा नहीं होना चाहिए–न तो 'स्टेटस सिंबल' का झूठा दंभ भरने की खातिर और न ही भारतीय भाषाओं पर संप्रेषण के अभाव में मिथ्या आरोप मढ़कर, 'विंग्स आफ फायर' में यदि

भारत के पूर्व माननीय राष्ट्रपति डा० ए पी जे अब्दुलकलाम ने अगले 20 वर्ष में भारत के विश्व शक्ति के रूप में स्थापित होने (या फिर से जगद्गुरू बनने) का सपना देखते हैं तो वह अकारण नहीं है। उसके पीछे छिपी है भारत की अद्वितीय, अनमोल और अमिट संस्कृति की पहचान, जो आज भी विश्व–दर्शन में सर्वोपरि मानी जाती है। यह पहचान हमारी अपनी भाषाओं में संरक्षित है और निश्चय ही उन्हीं में पुनः पल्लवित हो सकेगी।



हिंदी यानी एक अनार सौ बीमार

भारत एक उप महाद्वीप सरीखा विशाल देश है और इसके दूर–दूर तक फैले प्रांतों में बोली जाने वाली हिन्दी भाषा का स्वरूप अलग–अलग है। भले ही वो स्थानीय भाषा या बोलियों के कारण हो या उनकी अपनी शब्दावली व व्याकरण के प्रभाव के चलते, मगर सभी हिंदी के ही विभिन्न रूप हैं। एक को दूसरे की भाषा गलत लगती है, उसका उपहास होता है और इससे अंततः हिंदी के विकास–क्रम को बाधा पहुँचती है। इस प्रवृत्ति से बचना होगा। अन्य भाषाओं (विशेषतः उर्दू या अंग्रेजी) से शब्द लेते हुए यदि हिंदी की सामर्थ्य बढ़ती है तो कुछ भाषा विज्ञानियों के पोंगापंथी दर्शन को ठेस पहुँचती है। यही नहीं, कट्टरपंथी शुद्धतावादियों से जूझना तो और भी कठिन काम है जिनकी सारी ऊर्जा मीन–मेख निकालने में ही लगी रहती है। ऐसा तबका भाषा के प्रचार–प्रसार में जुटे कार्यकर्ताओं के उत्साह पर पानी फेर देता है। संभवतः

ये कुछ ऐसी चुनौतियाँ है जिनका समाधान निकट भविष्य में ही कर लिया जाना चाहिए। साफ शब्दों में कहा जाए तो हिंदी अब किसी एक प्रांत या एक खंड की बपौती नहीं रही कि जिसके कहने पर ये भाषा चलेगी। अब यह सबकी भाषा है और सभी का इस पर समान अधिकार है। इसे समृद्ध करने वाले किसी भी प्रयास का स्वागत ही होना चाहिए, अपना स्वरूप यह खुद ही तय कर लेगी। 'बहते नीर' पर अकारण बांध बनाने वाले इसे समझेंगे, ऐसी उम्मीद की जा सकती हैं

इसी संदर्भ में एक और बात का जिक्र किया जाना जरूरी है, और वो है 'अनुवाद' की गुत्थी। दूसरी भाषाओं के ज्ञान–विज्ञान, साहित्य और दर्शन को अनुवाद के जरिए अपनी भाषाओं में इस प्रकार लाना ताकि उनका लाभ उठाया जा सके। यह देखने में आया है कि जहाँ इन क्षेत्रों के अनुवाद सामान्यतः अपने उद्देश्य में सफल रहते हैं, वहीं हिंदी के प्रशासनिक स्वरूप के अनुवाद को लेकर काफी चर्चा चलती रही है। इससे हिंदी की लोकप्रियता को थोड़ी हानि भी सहनी पड़ी है। यह उस समय की जरूरत और परिस्थितियों पर आधारित था जब प्रशासनिक अनुवाद शुरू हुआ था और फिर वही स्वरूप अब तक चलता आया है। आज जरूरत है इसमें बदलाव लाने की, इसे मौलिक स्वरूप प्रदान करने की, जो सरल, सहज और ग्राह्य हो। इसके लिए बेहतर है कि विशुद्ध अहिंदीभाषी क्षेत्रों को छोड़ कर अन्य क्षेत्रों में अनुवाद से जुड़े अधिकारियों को अब सीधे आधिकारिक रूप से हिंदी के साथ–साथ अन्य विभागों के काम से भी जोड़ दिया जाए, ताकि वे क्लिष्ट अनुवादों के बजाय वहाँ सरल मूल–लेखन का कार्य कर सकें और साथ ही संस्थाओं की कार्य–संरचना में उनकी उपयोगिता प्रत्यक्ष रूप से दिखाई पड़ सके। आम जनता को राजभाषा का नहीं बल्कि जन–भाषा का स्वरूप ही संस्था के नजदीकी लाएगा। ऊपर मीडिया और विज्ञापनों की भाषा पर चर्चा के दौरान भी यह बात साफ तौर पर उभरकर सामने आ चुकी है। उनकी सफलता का राज उन्हें भाषा के क्षेत्र में मिली कामयाबी में छिपा है। तो भाषा के संदर्भ में हमें यही सफलता प्रशासन के क्षेत्र में क्यों नहीं मिल सकती? इस पर गंभीर विमर्श जल्द होना चाहिए।

राजनैतिक और सांस्कृतिक भय का वातावरण बनाकर भाषा के मुद्दे पर रोटियां सेकने की कवायद अभी–भी जारी है। अब इसमें भारत में रह रहे 'इंडियन' भी शामिल हो गए है। इसमें कोई विशेष चिंता करने की बात नहीं है। जैसे वक्त अपना रास्ता खुद तय करता है, वैसे ही भाषा भी अपना मार्ग खुद बनाती है। दुनिया में "सर्वोत्तम ही टिकता है" की थ्योरी आज भी प्रासंगिक है। अर्थात् जो सार्थक है, सशक्त है, सक्षम है और परिवर्तनों के प्रति सहज है, वही टिकेगा। आज व्याकरण के नियम भाषा शास्त्र नहीं बल्कि बाजार शास्त्र तय कर रहा है। यह उपयोगिता और आकर्षण के दो मजबूत पायों पर टिका है और भाषा इसकी सहचर है। एक अरब से अधिक की जनसंख्या वाला और दुनियां की आबादी में लगभग 23 प्रतिशत हिस्सा रखने वाला देश अपनी भाषाओं और सांस्कृतिक मूल्यों को भूल जाएगा, यह मुमकिन ही नहीं। यदि कोई अपने पड़ोसी से स्नेह रखता है, उसका आदर करता है और उसकी उपयोगिता समझता है तो यह जरूरी नहीं कि इसके लिए वह अपने परिवार

के प्रांते अपने स्नेह, आदर और कर्तव्यों को भुला दे। ठीक यही बात भाषा के मामले में भी लागू होती है। हम भले ही कभी हिंदी के विकास को लेकर उदासीन हो जाते हो मगर इसकी उपादेयता जरा उन विदेशी हिंदी विद्वानों से पूछी जाए जिन्होंने अपना पूरा जीवन ही इसमें खपा दिया है। यह फिर विश्व भर में फैले उन लगभग 140 विश्वविद्यालयों से पूछी जाए जिनके पाठ्यक्रमों में हिंदी डिग्री स्तर तक एक भाषा के रूप में नियमित रूप से पढ़ाई जाती है। आखिर इस जज़्बे की कोई तो वजह होगी?

अंत में, कहा जा सकता है कि भाषा का उपयोगिता आधारित विकास एक स्वतः यानि खुद–ब–खुद होने वाली प्रक्रिया है। इसके लिए इसे किसी पद–प्रतिष्ठा की कोई खास जरूरत नहीं होती है। इस पर भाषाशास्त्र के नियमों को कसते जाना भी बहुत प्रासंगिक नहीं होगा। अपनी मातृभाषा के अलावा किसी दूसरी भाषा का ज्ञान हमें बौद्धिक रूप से समृद्ध तो बनाता है पर यह अधिकार कभी नहीं देता कि हम अपनी भाषा को भुला दें। और तो और, इस शाश्वत सत्य को भी झुठलाया नहीं जा सकता कि हमारी तमाम अनुभूतियों व उससे उपजी संवेदनाओं की अभिव्यक्ति का जितना सशक्त माध्यम हमारी अपनी भाषा हो सकती है, उतनी कोई और भाषा नहीं, तभी तो इसे मातृभाषा कहा आता है, जिसकी मिट्टी से हम बने हैं और जिसके परिवेश में हम पले–बढ़े हैं। आधुनिकीकरण के नाम पर पश्चिमीकरण की यह आंधी उद्योग और विकास के लिए तो ग्राह्य है किंतु उनके सांस्कृतिक मूल्यों को अपनाने की दृष्टि से इससे एक सीमित दूरी बनाए रखना ही श्रेयस्कर है जो हमारी राष्ट्रीय अस्मिता या हमारी पहचान को खोखला बना सकती है। यदि केवल इस अंतिम तथ्य को गहराई से समझ लिया जाए तो शायद भारत में भाषा को लेकर उपजे विवादों और संशयों के लंबे दौर से हमेशा के लिए छुटकारा मिल सकेगा, बात सिर्फ एक कदम आगे आने की है।

हिन्दी हमारी मातृभाषा है; मात्र एक भाषा नहीं.

जन व्यवहार में राजभाषा

निरीक्षक (हिंदी अनुवादक)
विनोद कुमार राणा
ग्रुप केन्द्र, नीमच

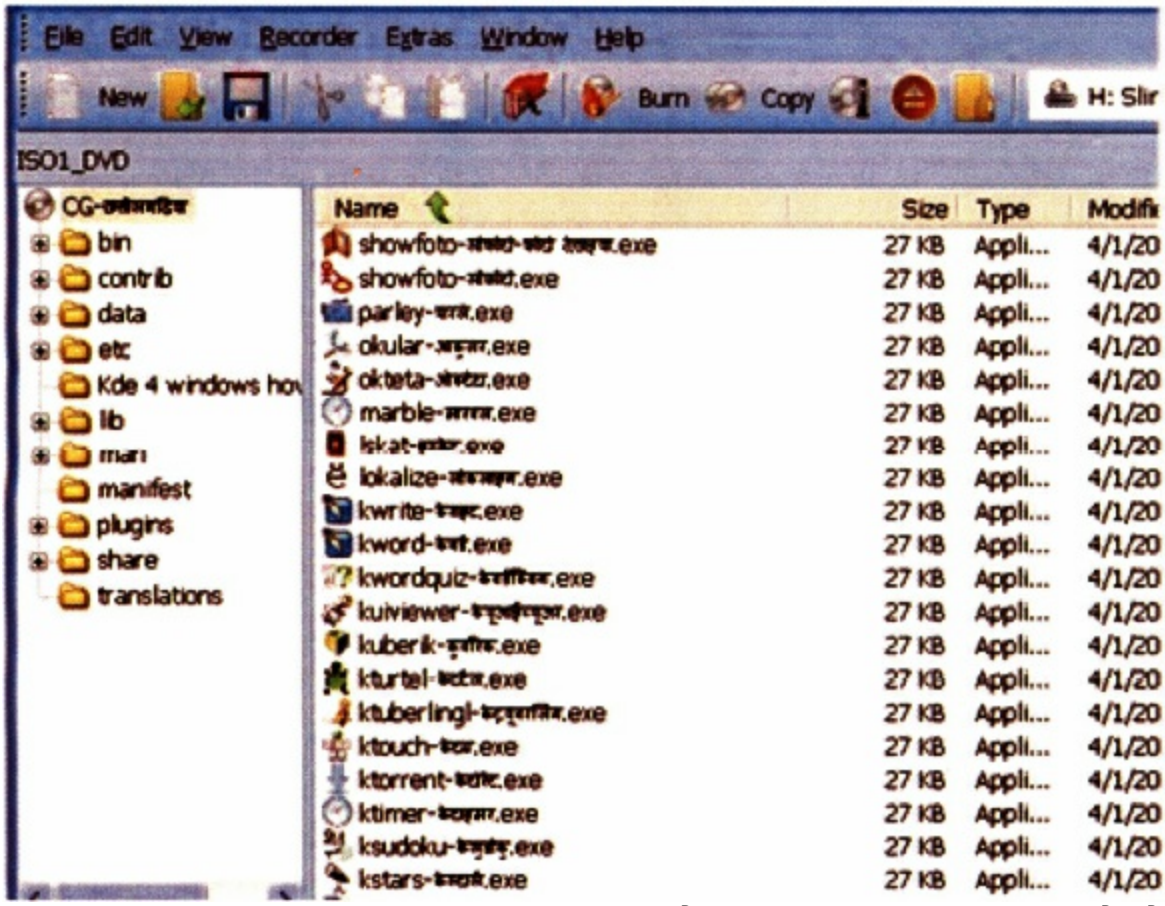
जन व्यवहार में हिंदी का प्रयोग व प्रचार–प्रसार काफी बढ़ गया है। अब हिंदी बोलचाल और साहित्य की भाषा नहीं रह गई है बल्कि जन संचार के विविध माध्यमों में इसका प्रयोग बहुतायत से बढ़ गया है। आज जनसंचार के माध्यमों के रूप में समाचार पत्र पत्रिकाएं रेडियो, टेलीविजन तथा सिनेमा अहम भूमिका निभा रहे हैं। समाचार में छपे समाचार तथा रेडियो, टेलीविजन के समाचारों में काफी अंतर देखने को मिलता है। सिनेमा की भाषा भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। हिंदी सिनेमा ने हिंदी प्रचार प्रसार में अहम भूमिका निभाई है। हिंदी न जानने वाला व्यक्ति भी हिंदी फिल्में देखता है और वाक्यों को समझने की कोशिश करता है। हिंदी गाने कहीं भी सुनने को मिल जाते हैं चाहे वह हिंदी भाषी क्षेत्र हो या गैर हिंदी भाषी।

आज विज्ञापनों का युग है, समाचार पत्रों तथा रेडियो व दूरदर्शन में जो विज्ञापन देखने व सुनने को मिलने हैं उनमें थोड़ा बहुत अंतर भी देखने को मिलता है। विज्ञापनों की एक अलग ही भाषा विकसित हो गई है।

सुबह से शाम तक हम जन संचार के माध्यमों से जुड़े रहते है। सुबह होते ही समाचार पत्र द्वारा हम समाचार जानते हैं। रेडियो से समाचार सुनते हैं। टेलीविजन पर समाचार देखते हैं व सुनते हैं। जन संचार के माध्यमों ने पूरे विश्व को नजदीक ला दिया है। जन संचार विशेषज्ञ विल्वर श्रम ने अपनी पुस्तक "मॉस मीडिया एंड नेशनल डेवलपमेंट" में लिखा है कि "जन संचार माध्यम दुनियां का नक्शा बदल सकते हैं।"

जन संचार का अर्थ :–

जन संचार दो शब्दों से मिलकर बना है – जन अर्थात् जनता और संचार अर्थात् किसी बात को आगे बढाना, चलाना या फैलाना। इस संबंध में ए. मिलर ने कहा है कि जन संचार का अर्थ सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाना है। कोई भाषा, सूचना विचार या जानकारी दूसरों तक पहुँचाने की क्रिया सामूहिक होती है जिसमें समाज के सभी लोग उसका फायदा ले सकें।



वर्तमान समय में जन संचार के जो माध्यम है वे सामान्यतः एक तरफा हैं जैसे समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, आडियो वीडियो कैसेट आदि। इनके द्वारा हम सूचना भेज सकते हैं किंतु फीडबैक प्राप्त नहीं कर सकते। फीडबैक प्राप्त होता भी है तो वह बहुत कम मात्रा में। फिर भी इन माध्यमों का अपना एक विशेष महत्व है। राष्ट्र के विकास में इन माध्यमों की अपनी एक अहम भूमिका है।

समाचार का अर्थ :–

समाचार को अंग्रेजी में न्यूज (NEWS) कहते है। अंग्रजी मे इन चार वर्णों को जोड़ने से बनाता है :–

N (North अर्थात् उत्तर) E (East अर्थात् पूर्व) W (West अर्थात् पश्चिम) S(South अर्थात् दक्षिण) अर्थात जो उत्तर पूर्व, पश्चिम तथा दक्षिण की खबरें दे वह समाचार है।

इसके अतिरिक्त New का अर्थ हुआ नया तथा S जोड़ने से नया का बहुवचन हुआ 'नए' अर्थात् जो नई–नई सूचनाएं दे वह समाचार है। साधारण सी बात समाचार नहीं होती कोई नवीनता, उत्तेजकता या परिवर्तनशीलता लिए हुए कोई खबर होती है वही समाचार कहलाती है।

समाचारों में छह "क" का विशेष महत्व है :–

अर्थात् क्या, कहाँ, कब, कौन, क्यों तथा कैसे।

ये छह 'क' समाचार की आत्मा होते हैं। समाचार में इन छह प्रश्नों का उत्तर अनिवार्य होता है।

समाचार कैसे बनते हैं :–

समाचार पत्रों में प्रकाशित होने वाले तथा रेडियो या दूरदर्शन से प्रसारित होने वाले समाचारों के दो साधन होते हैं, संवाददाता और समाचार एजेसियां। संवाददाता विभिन्न माध्यमों से जैसे–राजनीतिक दलों के कार्यालयों, रेलवे स्टेशनों, सूचना विभाग जनसंपर्क अधिकारियों आदि से निरंतर संपर्क बनाए रखकर समाचार एकत्रित करता है, साथ ही समाचार एजेसियां टेलीप्रिंटर के माध्यम से लगातार समाचार भेजती रहती हैं। भारत की मुख्य समाचार एजेंसियां है – प्रेस ट्रस्ट आफ इंडिया, यूनिवार्ता, भाषा, यूनाइटेड न्यूज आफ इंडिया आदि।

समाचार पत्रों में छपने वाले समाचार और रेडियो और दूरदर्शन से प्रसारित होने वाले समाचारों का तरीका बदल जाता हैं। समाचार पत्रों का समाचार पढ़ा जाता, रेडियो का समाचार सुना जाता है तथा दूरदर्शन का समाचार देखा व सुना जाता है। अतः तीनों माध्यमों की प्रस्तुति में अंतर स्वाभाविक है।

समाचारों के प्रकार :–

दिन प्रतिदिन कुछ न कुछ घटनाएं घटती होती रहती हैं किन्तु उनमें से कुछ घटनाएं ही समाचार बनती हैं सभी नहीं। संवाददाता और समाचार लेखक इन समाचारों का चयन किस प्रकार करते हैं इन तथ्यों का विवरण निम्नानुसार हैं :–

(क) जन सामान्य की रूचि के समाचार तथा गंभीर समाचार–

सामान्य रूचि के समाचार आम जनता बड़े चाव से पढ़ती है जैसे–दुर्घटना, पानी, बिजली या सड़क की समस्या अपराध, बसों का संकट आदि। गंभीर समाचारो में देश–विदेश की राजनीतिक खबरें, संवैधानिक संकट के समाचार चुनाव के समाचार संसद या विधान मंडलों के समाचार आदि गंभीर किस्म के समाचार होते हैं, इन्हें खासतौर से एक खास वर्ग ही पढ़ता है।

(ख) तथ्यात्मक और विश्लेशणात्मक समाचार–

तथ्यात्मक समाचार में किसी घटना की सूचना भर होती है। उसमें विश्लेषण नहीं होता किन्तु विश्लेषणात्मक समाचार में उस घटना से संबंधित अन्य पहलुओं का विश्लेषण भी किया जाता है। जैसे–समाचार है कि "भारतीय प्रवासी भारत में निवेश करने के उत्सुक" यह एक तथ्यात्मक समाचार है किन्तु इससे कितना लाभ होगा, निवेश काहां और कितना किस क्षेत्र में किया जाएगा ये सब विवरण देने से उक्त समाचार विश्लेषणात्मक समाचार हो जाता है। ये समाचार वाणिज्य, खेल, दुर्घटना, शिक्षा, महंगाई आदि से संबंधित हो सकते हैं।

विज्ञापनों में हिंदी

आज का युग विज्ञान का युग है। किसी भी उत्पादन कि बिक्री बढ़ाना है या किसी चीज की जानकारी आम जनता को पहुँचाना है तो इसके लिए विज्ञापन ही एक उचित माध्यम है। यही कारण है कि चाहे समाचार पत्र पत्रिका हो, रेडियो हो या टेलीविजन हो, समाचार के साथ विज्ञापनों से भरे रहते हैं।

विज्ञापन की परिभाषा

हिंदी भाषा के कोश "हिंदी शब्द सागर" में विज्ञापन की परिभाषा दी गई हैं कि जिसके द्वारा कोई बात लोगों को बताई जाती है वह सूचना पत्र/इश्तहार/बिक्री आदि के माल या किसी बात की सूचना जो सब लोगों को विशेषतः सामयिक पत्रों के माध्यम से दी जाती है।"

समाचार और विज्ञापन में खास अंतर यह होता है कि समाचार से ज्ञान में वृद्धि होती है, उसका लाभ पाठकों को होता है जबकि विज्ञापनों से प्राप्त सूचनाएँ विज्ञापनदाताओं तथा माध्यमों को लाभान्वित करती है। संचार माध्यमों को आर्थिक लाभ होता है। बिक्री बढ़ाने में सहायता मिलती है।

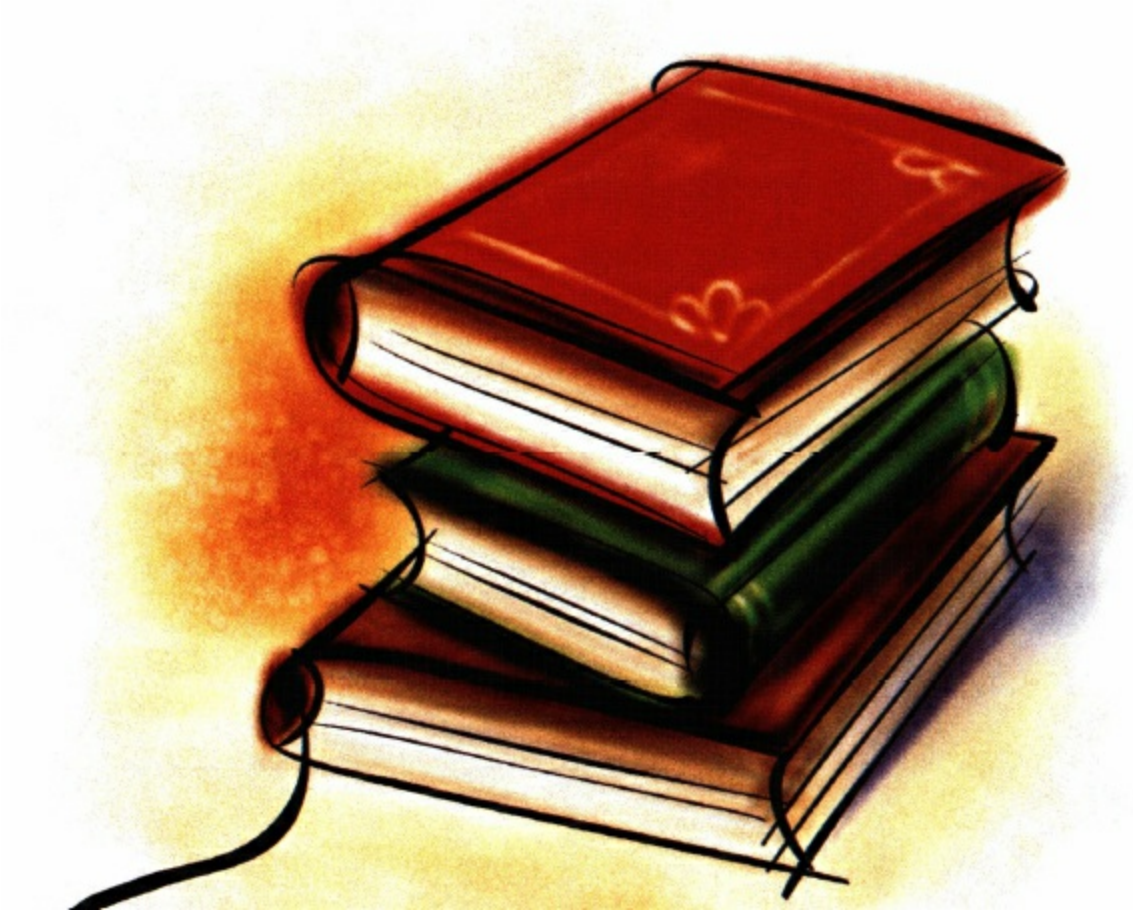
विज्ञापनों का वर्गीकरण

विज्ञापन तीन प्रकार के होते हैं :–

(क) **दृश्य माध्यमों के विज्ञापन :–** इस तरह के विज्ञापनों में लिखित या मुद्रित विज्ञापनों को सम्मिलित किया जा सकता है। लिखित विज्ञापनों में दीवारों पर लिखे विज्ञापन, दुकानों के बोर्ड, बसों आदि पर लिखे विज्ञापन, बिजली के खंभों आदि पर लिखे विज्ञापन, बड़े–बड़े होर्डिंग्स पर लिखे विज्ञापन आदि सम्मिलित होते हैं जब कि मुद्रित विज्ञापनों में समाचार पत्रों पत्रिकाओं में छपे विज्ञापन पम्फलेट, पोस्टर आदि सम्मिलित किए जा सकते हैं।

(ख) **श्रव्य विज्ञापन :–** रेडियो से प्रसारित किए जाने वाले विज्ञापन इस श्रेणी में आते हैं जिसमें प्रायोजकों आदि के विज्ञापन दिए जाते हैं साथ ही पल्स पोलियो की दवा पिलाने, सार्वजनिक सूचना देने आदि के विज्ञापन सम्मिलित होते हैं।

(ग) **दृश्य–श्रव्य विज्ञापन :–** इस प्रकार के विज्ञापन प्रायः टेलीविजन, सिनेमाघरों, वीडियो कैसेट आदि के माध्यम से प्रसारित होते हैं जिन्हें देखा व सुना जा सकता है।



जानकारी

क्या आप जानते हैं?

निरीक्षक/ हिंदी अनुवादक
राकेश कुमार कुशवाह – ग्रुप केन्द्र रामबाग, श्रीनगर

1. हिंदी की प्रोत्साहन योजनाओं के तहत प्राप्त हुई नकद पुरस्कार राशि, मानदेय राशि एवं वार्षिक वेतन वृद्धि के रूप में स्वीकृत की गई प्रोत्साहन राशि आदि पर आयकर अधिनियम 1961 की धारा 10(3) के तहत आयकर वसूल नहीं किया जा सकता है?
2. राजभाषा द्वारा 15 भारतीय भाषाओं के माध्यम से आनलाइन हिंदी भाषा सीखने के लिए “लीला” राजभाषा साफ्टवेयर का विकास किया गया है।

3. “क” क्षेत्र में 11 राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश हैं इनमें चार केन्द्र शासित प्रदेश दिल्ली एवं अंडमान व निकोबार शामिल हैं।
4. “ख” क्षेत्र में 4 राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश हैं–महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब एवं चंडीगढ़।
5. “ग” क्षेत्र में 20 राज्य/ केंद्र शासित प्रदेश है। इनमें चार केंद्र शासित प्रदेश पुदुचेरी, दमन, दीव व लक्षद्वीप शामिल हैं।
6. राजभाषा विभाग की स्थापना वर्ष 1975 में की गई।
7. मैथिलीशरण गुप्त भारत के राष्ट्रकवि है।
8. सी.आर.पी.एफ. समाचार किस माह में हिंदी व किस माह में अंग्रेजी में प्रकाशित होते हैं–

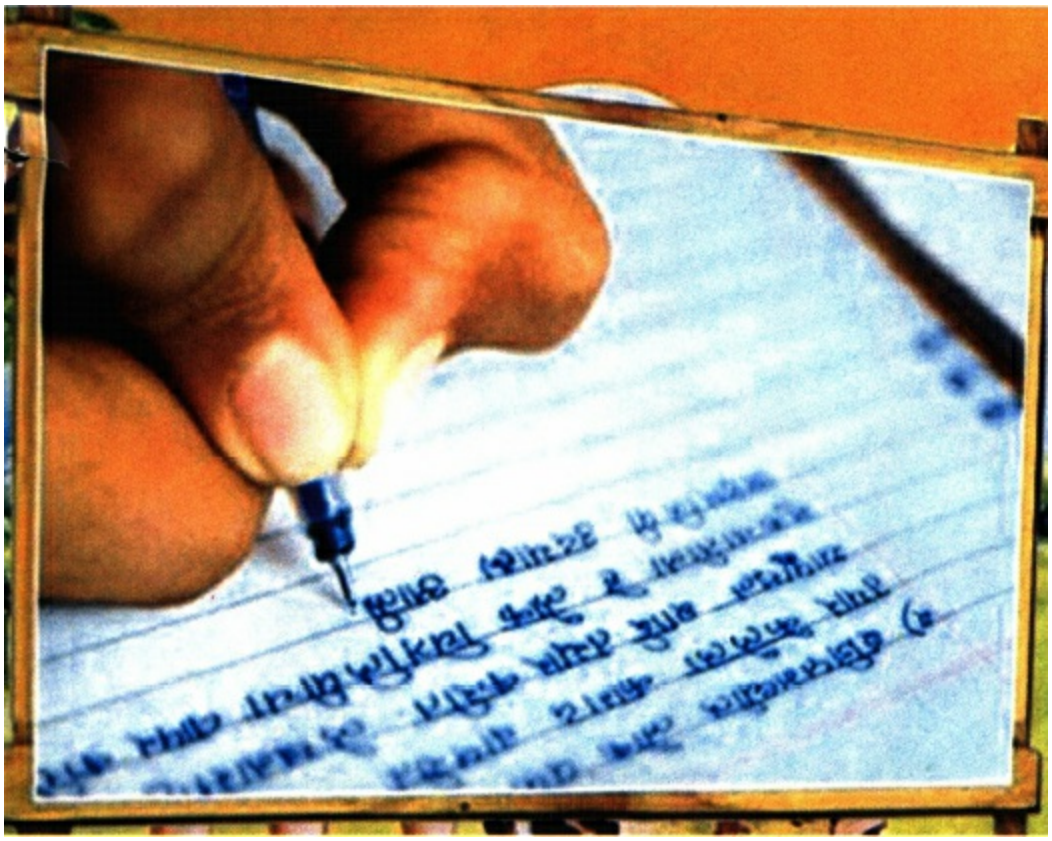
   अंग्रेजी में 4 माह के अंक–जनवरी, अप्रैल, जुलाई, अक्तूबर। हिंदी में 8 माह के अंक–फरवरी, मार्च, मई, जून, अगस्त, सितंबर, नवंबर, दिसंबर।
9. किसी कार्यालय के 80 प्रतिशत अधिकारियों व कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान होने पर उस कार्यालय को भारतीय राजपत्र में अधिसूचित किया जाता है। (राजभाषा नियमावली 1976 के नियम 10(4) के तहत)
10. केंद्रीय हिंदी समिति के अध्यक्ष प्रधानमंत्री हैं।
11. सात वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए शिशु (Infant) शब्द प्रयोग होता है।

मंत्रालयों, विभागों में कार्यालयीन पत्राचार में प्रयोग में लाए जाने समितियों के द्विभाशी नाम–

Action Committee	कार्रवाई समिति
Ad–hoc Committee	तदर्थ समिति
Advisory Committee	सलाहकार समिति
Admission Committee	प्रवेश समिति
Board of Studies	पाठ्य समिति
Co–Operative Credit Society	सहकारी उधार समिति
Co–Ordination Committee	समन्वय समिति
Credential Committee	प्रत्ययपत्र समिति
Emergency Production Committee	आपात उत्पादन समिति
Estimates Committee	प्रक्कलन समिति

Finance Committee	ावित्त सामोते
Housing Management Committee	आवासीय प्रबंधन समिति
Joint Parliamentary Committee	संयुक्त संसदीय समिति
Line Committee	लाइन समिति
Multipurpose Cooperative Committee	बहुद्देशीय सहकारी समिति
Public Accounts Committee	लोक लेखा समिति
Public Undertaking Committee	लोक उपक्रम समिति
Screening Committee	छानबीन समिति
Shipping Development Fund Committee	जहाजरानी विकास निधि समिति
Standing Consultative Committee	स्थायी परामर्श समिति
Standing Screening Committee	स्थायी छानबीन समिति
Steering Committee	विषय निर्वाचन समिति
Tariff Revision Committee	शुल्कदर परिशोधन समिति
Text Book Committee	पाठ्यपुस्तक समिति
Ways and Means Committee	अर्थोपाय समिति

लेख



राष्ट्रभाषा हिन्दी

निरीक्षक/हिंदी अनुवादक
कृष्ण कुमार, ग्रुप केन्द्र, इंफाल

हर स्वतन्त्र राष्ट्र की अपनी राष्ट्रभाषा होती है। 15 अगस्त 1947 के दिन स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हमारे देश के सामने भी यही प्रश्न आ खड़ा हुआ कि हमारे देश की राष्ट्रभाषा कौन-सी हो? राष्ट्रभाषा को लेकर काफी वाद-विवाद हुआ लोकसभा में हिंदी प्रेमी हिंदी को और अंग्रेजी के गुलाम अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने के लिए संघर्ष करने लगे। आम सहमति और बातचीत से इस प्रश्न का कोई हल नहीं निकल सका। हिंदुस्तान, अंग्रेजों की कूटनीति की कुचाल से पहले ही धर्म के नाम पर दो हिस्सों में बंट चुका था और अब राष्ट्रभाषा का विवाद गहराता जा रहा था इसलिए राष्ट्रभाषा को चुनने के लिए लोकसभा में मतदान कराने का निर्णय सर्वसम्मति से लिया गया। किन्तु दुर्भाग्य से अंग्रेजी भाषा के हिमातियों के सामने हिंदी भाषा के दीवानों की एक न चली और एकमत के अन्तर से हम हार गए और बेगाने जीत गए। यह एक बहुत बड़ी विडंबना थी कि 200 वर्षों से अधिक समय से चले आ रहे अंग्रेजी शासन की नींव तो हमने उखाड़ फेंकी किन्तु उनके द्वारा कूटनीति से लागू की गई

अंग्रेजो भाषा को परास्त नहों कर पाए और हिंदी को राष्ट्रभाषा का दजा नहों मिल पाया। जबतक हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं मिल पाता तब तक भारत माता को आजाद समझना हमारी भूल होगी।

किन्तु हमे हताश और निराश नहीं होना चाहिए और निराशा के अंधकार को चीरकर हिंदी को आजाद कराकर उसे राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाना हमारा वांछनीय लक्ष्य होना चाहिए। स्मर्णीय है कि जिस हिंदी की संस्कृत सबल जननी है और प्रांतीय भाषाएं उसकी सुघड़ बहने है, जिसमें विपुल शब्द संपदा है, और जो भारत के जनमानस की भाषा है, उसे हिंदी को भला इसके मुट्ठी भर विरोधी क्या इसे राष्ट्रभाषा बनने से रोक पाएंगे। हिंदी में देश की मिट्टी की सुगंध है और यह अपने मुकाम के पथ पर स्वतः ही लगातार आगे बढ़ रही है। इस संदर्भ में कविवर गोपाल सिंह जी नेपाली की ये पंक्तियां प्रत्येक व्यक्ति के कानों में गूंजनी चाहिए:–

दो, वर्तमान को सत्य, सरल,
सुन्दर भविष्य के सपने दो।
हिंदी है भारत की बोली,
इसे अपने आप पनपने दो।
बढ़ने दो सदा आगे,
हिंदी जनमन की गंगा है।
यह माध्यम है उस देश का,
जिसकी ध्वजा तिरंगा है।
हो कान पवित्र इसी सुर में,
इसमें हर हृदय तड़फने दो।
हिंदी है भारत की बोली,
इसे अपने आप पनपने दो।

भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को देश के राजकाज चलाने के साथ-साथ केन्द्र व राज्यों के बीच संपर्क बनाए रखने की भूमिका निभाने का दायित्व हिंदी को सौंपकर उसे संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया था।

भारत की राजभाषा होते हुए भी हिंदी आज अपने ही देश में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त नहीं कर पा रही है, इसका मुख्य कारण है कि हम सिद्धान्तों की बात तो करते है परन्तु व्यवहारिक रूप से उन सिद्धान्तों का पालन नहीं करते। योजनाएं बनाते है किन्तु उनका कार्यान्वयन नहीं करते। हिंदी के विकास में सबसे बड़ी बाधा है, अंग्रेजी भाषा का प्रचार प्रसार और कई मामलों में अंग्रेजी भाषा की अनिवार्यता का प्रावधान। आज भी भारत का शासक वर्ग, अधिकारी वर्ग अंग्रेजी भाषा को न केवल अपनी श्रेष्ठता का आधार मानते है बल्कि उनकी नजरों में अधीनस्थों की योग्यता के आंकलन

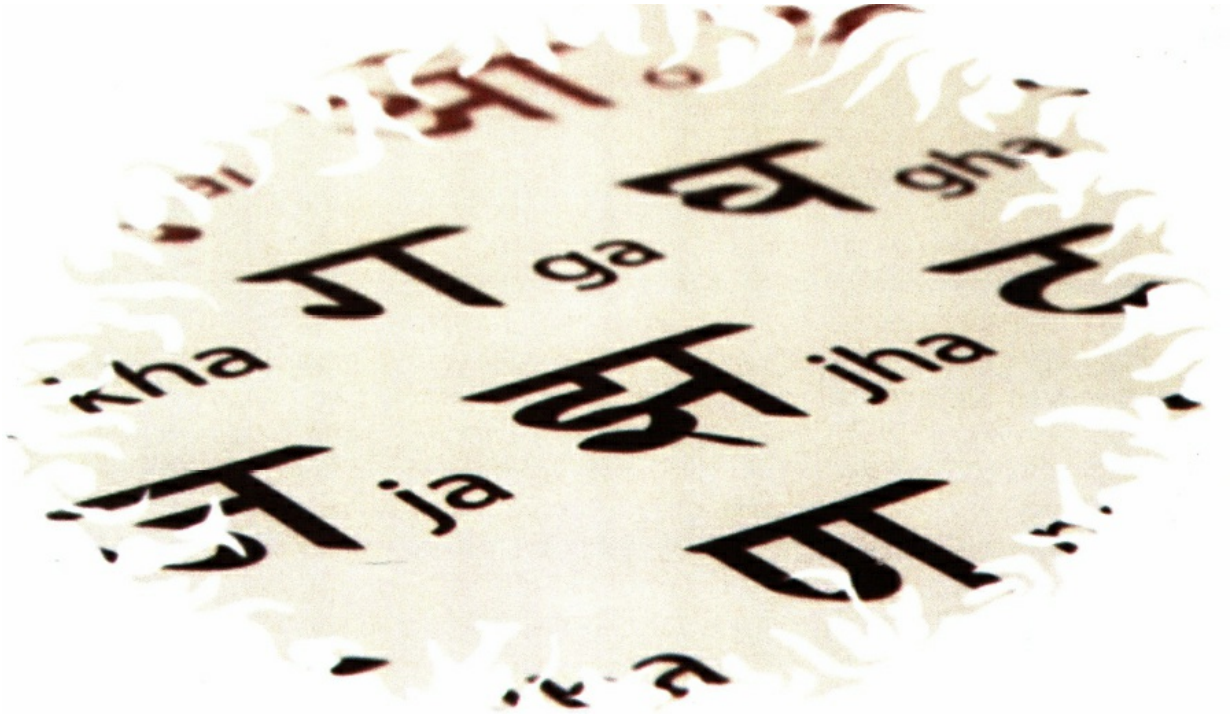
का आधार भी अंग्रेजी भाषा का ज्ञान ही है। अंग्रेजी भाषा के प्रति भारतवासियों का यह अंधा मोह उनकी हीन भावना का परिचायक है।

जब बात देशहित की हो तो हमें क्षेत्रवाद भाषावाद के दलदल में नहीं फंसना चाहिए और हमारी विचारधारा न तो वामपंथी होनी चाहिए और न दक्षिण पंथी, बल्कि सिर्फ और सिर्फ लोकपंथी अर्थात् भारतपंथी होनी चाहिए। गौरतलब है

यूं तो हर रास्ता जाता है,
मंजिल की तरफ।
शाने वतन के वास्ते,
हर हाथ मिलना चाहिए।

भाषा निरन्तर प्रयोग से ही बढ़ती है इससे उसमें सहजता, सरलता और एक रूपता आती है पूरे राष्ट्र को एक धारा लाने और इसके विकास के लिए यह अच्छा होगा कि जितनी जल्दी हो सके, हम खुलकर अपना सारा काम काज हिंदी में करने लगें। आओ हम सब मिलकर राजरानी हिंदी को भारत संघ की राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलवाने का संकल्प लें।

मन में होगी जब निष्ठा,
हिंदी की बढ़ेगी तब प्रतिष्ठा।





अमरनाथ यात्रा के शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न होने में सुरक्षा बलों की भूमिका

ओंकार केडिया
अपर महानिदेशक (एम एंड सी),
पीआईबी, नई दिल्ली

प्रत्येक वर्ष श्रावण माह में अर्थात् जुलाई -अगस्त में दुनियाभर से आने वाले हजारों श्रद्धालुओं का एकमात्र उद्देश्य 3.880 मीटर की ऊंचाई पर स्थित पवित्र अमरनाथ गुफा में बनने वाले प्राकृतिक हिम शिवलिंग के रूप में भगवान शिव के स्वरूप के दर्शन पाना है और यही भाव श्रद्धालुओं को पवित्र गुफा तक खींच ले जाता है हालांकि यह यात्रा किसी विशेष धर्म के अनुयायियों के विश्वास को ही प्रस्तुत नहीं करती बल्कि यह हमारे देश की समावेशी संस्कृति का प्रतीक है। यह विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोगों का संयुक्त प्रयास है जो वर्ष दर वर्ष यात्रा को सफल बनाता है।

ऐसा माना जाता है कि एक मुसलमान गडरिये ने अपनी लापता बकरी को खोजते हुए गुफा का पता लगाया था। यात्रा मार्ग पर विभिन्न सामानों को बेचने के लिए यात्रा के समय लगने वाली अधिकतर दुकानें मुस्लिमों की हैं। यह यात्रा हजारों मज़दूरों, सामान ढोने वालों, टट्टू वालों, होटल संचालकों, कुलियों, तंबू मालिकों आदि के लिए आमदनी का महत्वपूर्ण स्रोत है। इनमें से अधिकांश लोग मुस्लिम हैं। वे यात्रा में

सहायता प्रदान करने में गर्व महसूस करते हैं।

पवित्र गुफा तक दो मार्गों से पहुंचा जा सकता है - बालटाल से यह गुफा 14 किलोमीटर की दूरी पर है , जबकि पहलगाम से यह 46 किलोमीटर दूर है। पहलगाम मार्ग पारंपरिक है और इसमें चंदनबाड़ी, पिस्सू टाप, शेषनाग और पंचतरणी से होकर गुजरना पड़ता है। दोमेल और बरारी से होकर गुजरने वाला बालटाल मार्ग खड़ी चढ़ाई वाला है। बर्फ और आमतौर पर भारी वर्षा के कारण यह मार्ग अत्यंत कठिन हैं।

इस वर्ष यात्रा की निर्धारित तिथि दोनों मार्गों से 7 जून, 2009 थी परन्तु दोनों मार्गों पर खराब मौसम और रास्ते पर जमा बर्फ के कारण यात्रा अधिक जोखिम भरी रही। यात्रा की अवधि बालटाल मार्ग से 51 दिन और पहलगाम मार्ग से 41 दिन थी। यह यात्रा भारी संख्या में साधुओं द्वारा पवित्र गुफा तक ले जाई गई **छड़ी मुबारक** अर्थात् भगवान शिव की पवित्र गदा और अंतिम पूजा-अर्चना के साथ रक्षा बंधन के दिन 5 अगस्त, 2009 को सम्पन्न हो गई। यात्रा की समयावधि कम रहने के बावजूद इस वर्ष करीब 4 लाख तीर्थ यात्रियों ने पवित्र गुफा के दर्शन किए।

केन्द्र और राज्य सरकार के स्वास्थ्य, पर्यटन, परिवहन, दूरसंचार और बैंक आदि विभागों के सैकड़ों कर्मचारियों ने यात्रियों को विभिन्न सेवाएं प्रदान की। बिजली, जल, भोजन और अन्य आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति के लिए भी व्यापक प्रबंध किये गए थे। आतंकवादियों और उनके साथियों द्वारा यात्रा में बाधाएं पैदा करने के प्रयासों को देखते हुए यात्रियों के लिए सुरक्षा व्यवस्था करना सबसे कठिन कार्यों में से एक था। 21 जुलाई, 2001 को शेषनाग यात्री शिविर पर किए गए हमले, जिसमें 12 लोग मारे गए थे और 6 अगस्त, 2002 को ननवाल यात्री शिविर पर किये गए हमले, जिसमें 9 लोगों की मृत्यु हुई थी, से उनके नापाक इरादे स्पष्ट हैं।

इस वर्ष यात्रा के लिए केन्द्रीय अर्द्ध सैनिक बलों की 67 कंपनियां और सीमा सुरक्षा बल की 27 कंपनियां तैनात की गई थीं। केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बलों की 67 कंपनियों में से 40 कंपनियां केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की थीं। राज्य पुलिस ने भी अपने बल तैनात किए थे। सैनिक कर्मियों ने पवित्र गुफा को जाने वाले मार्गों पर क्षेत्रीय प्रभुत्व प्रदान किया। सुरक्षा व्यवस्था लखनपुर से पवित्र गुफा तक बालटाल और पहलगाम दोनों मार्गों पर उपलब्ध कराई गई थी। केन्द्रीय आरक्षित पुलिस बल शिविर सुरक्षा, यात्रियों की तलाशी, भंडारों की सुरक्षा, यात्रियों के काफिलों को सुरक्षा प्रदान करने के काम में भी लगा हुआ था। सीमा सुरक्षा बल सड़क खोलने का काम देख रहा था।

पिछले वर्षों की तरह जवानों ने यात्रा शुरू होने से बहुत पहले से चंदनबाड़ी और बालटाल से पवित्र गुफा तक कड़ाके की सर्दी को सहन करते हुए मार्ग को साफ करना शुरू कर दिया था। रास्ता बनाने के लिए बर्फ और शिलाखंडों को हटाना कठिन काम था। लेकिन सुरक्षा बलों ने इसे वचनबद्धता के साथ सम्पन्न किया। अनंतनाग जिला, जहां पवित्र गुफा स्थित है, पिछले कुछ समय से आतंकवादी

गतिरोधियों का केन्द्र रहा है लेकिन अच्छी सुरक्षा व्यवस्था के कारण ही समूचे देश से यात्री पवित्र गुफा के दर्शन कर पाए।

बालटाल और ननवान में अमरनाथ यात्रा के आधार शिविरों के आसपास बहु-स्तरीय सुरक्षा व्यवस्था उपलब्ध कराई गई। पहलगाम में वर्ष 2000 में आतंकवादियों के आक्रमण के बाद 2001 में ननवान आधार शिविर बनाया गया। इस आक्रमण में 16 यात्रियों सहित 25 लोग मारे गए थे और 60 अन्य घायल हुए थे। समूचे शिविर को कांटेदार तारों और लोहे के द्वारा से घेर दिया गया था। दूसरे मार्ग बालटाल पर भी इससे मिलता-जुलता शिविर लगाया गया था।

यात्रा में आने वाले हजारों तीर्थ यात्रियों और अन्य लोगों के शामिल होने को देखते हुए सुरक्षा सैनिक आतंकवादियों की गतिविधियों पर लगातार निगरानी बनाए रखते हैं जो एक कठिन काम है। वर्ष 2001 में टट्टू चलाने वाले के भेष में एक आतंकवादी को विस्फोटकों के साथ पंचतरणी में गिरफ्तार किया गया था। एक अन्य अवसर पर एक फिदायीन लंगडे तीर्थयात्री के रूप में पाया गया था जिसने अपनी खोखली बैसाखियों में विस्फोटक भर रखा था। वर्ष 2001 में आतंकवादियों ने साधुओं के भेष में शेषनाग शिविर पर आक्रमण किया था।

सुरक्षा बलों के अथक प्रयासों के कारण इस वर्ष की यात्रा शांतिपूर्वक सम्पन्न हो गई घुसपैठ करने और यात्रा में बाधा डालने की अनेकों कोशिशों के बावजूद सुरक्षा बलों ने गुप्तचर एजेंसियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर यह सुनिश्चित किया कि यात्रा में बाधा न पड़े और सभी तीर्थ यात्री सुरक्षित रहें।

यहां इस बात का उल्लेख करना भी जरूरी है कि सुरक्षा बल के जवानों ने तीर्थ यात्रियों को सुरक्षा प्रदान करने के साथ-साथ चिकित्सा सुविधाएं भी प्रदान की और कोई अपरिहार्य घटना न हो, इसके लिए उन्होंने विभिन्न शिविरों में विश्राम करने के बैगों और गद्दों सहित आपदा प्रबंधन भंडारों की भी व्यवस्था की।

वास्तव में, सुरक्षा बलों की सहायता के बिना यात्रा के शांतिपूर्ण सम्पूर्ण होने की कल्पना करना कठिन है। पिछले कुछ वर्षों में अमरनाथ यात्रा कुल मिलाकर हिंसा मुक्त रही है, इस बात का श्रेय हमारे सुरक्षा बलों के चरित्रबल और दृढ संकल्प को जाता है।

–साभार पी.आई.बी.

संस्मरण



डिब्रुगढ राजधानी

आर पी सिंह, सहायक कमाण्डेन्ट
ग्रुप केन्द्र इंफाल मणिपुर

एक महीने का अर्जित अवकाश उपभोग करने के उपरांत, 13 अगस्त 2008 को मुजफ्फरनगर से नई दिल्ली तक का आरक्षण शालीमार एक्सप्रेस, से तथा उसके बाद नई दिल्ली से दीमापुर के लिए उसी दिन नई दिल्ली डिब्रुगढ राजधानी एक्सप्रेस में था। मैं निर्धारित समय (0730 बजे) से पहले ही मुजफ्फरनगर रेलवे स्टेशन पहुंच गया। यहां तक मुझे मेरा छोटा बेटा बाईक से छोड़ने आया था। प्लेटफार्म पर पहुंचते ही जब आने-जाने वाली गाड़ियों के चार्ट देखे तो पाया कि शालीमार एक्सप्रेस (जम्मू से नई दिल्ली) 2.30 घंटे लेट है। जानकर एकदम उलझन सी हो गयी। तो क्या ट्रेन आइडिया ड्राप करके बस से चला जाए, ताकि अगली गाड़ी किसी भी कीमत पर मिस न होने पाए । इन्कायरी आफिस में स्वयं गया, वहां पर बैठे सज्जन ने मेरी स्थिति के विषय में जानने के उपरान्त सुझाव दिया कि आप शालीमार की प्रतीक्षा न करके उत्कल एक्सप्रेस (हरिद्वार से पुरी) से निकल जाएं, 0915 पर आयेगी और उससे आप निश्चित 1200 या 1215 बजे तक दिल्ली पहुंच जायेंगे और 1400 बजे चलने वाली डिब्रुगढ राजधानी एक्सप्रेस आराम से ले सकेंगे। मुझे उनका सुझाव पसंद आया और मैं प्रतीक्षा करने लगा। मोबाईल पर वार्ता के बाद मेरे एक अन्य मित्र भी स्टेशन पहुंच गये ताकि जाते समय भेंट हो जाये और कुछ बाते करके इन्तजार का समय भी बिताया जाए।

वास्तव में यहां पर ट्रेनों का इतना आवागमन नहीं है और ना ही कभी इतनी अधिक देरी से चलती हैं। किन्तु इस समय जम्मू-कश्मीर में श्री अमरनाथ श्राईन बोर्ड को दी जानेवाली भूमि के विवाद को लेकर वहां का वातावरण अशान्त चल रहा था और काफी कुछ अव्यवस्थित हो रखा था। जिनसे ट्रेनों का आवागमन भी बाधित हो रहा था।

और इस प्रकार प्रतीक्षा करते हुए उत्कल एक्सप्रेस की उद्घोषणा हुई । मेरे मित्र ने पुनः यह सुझाव दिया कि आप इसे (उत्कल एक्सप्रेस को) गाजियाबाद में छोड़ दें और वहां से नई दिल्ली के लिए कोई भी दूसरी ट्रेन ले लें, जो कि आसानी से मिल जाएगी क्योंकि उत्कल एक्स वाया हजरत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन जानी थी। यदि मैं पहले निजामुद्दीन स्टेशन जाता हूं और वहां से पुनः नई दिल्ली लौटता हूं तो उसमें अधिक समय लगता और लेट होने एवं अगली ट्रेन छूटने की आशंका बनती थी। मैंने ऐसा ही किया ट्रेन मुजफ्फरनगर से चलकर मेरठ होते हुए जब मोदीनगर पहुंची तो वर्षा आरम्भ हो चुकी थी जो कि और तेज होती जा रही थी। यात्रा के दौरान मैंने टी.टी.ई. एवं पेन्ट्रीवालों से पुनः यह पूछकर आश्वस्त कर लिया कि ट्रेन गाजियाबाद में ही छोड़नी है।

उत्कल एक्स. लगभग 1200 बजे गाजियाबाद पहुंची। अब तक वर्षा और भी तेज हो चुकी थी। ट्रेन से उतरा पुनः मालूम किया तो पता चला कि 1240 बजे ई.एम.यू. नई दिल्ली के लिए जायेगी। कुछ ही क्षणों में ट्रेन (ई.एम.यू) प्लेटफार्म पर आकर लग गई। मैं अन्य यात्रियों के साथ उसमें बैठ गया। यह केवल गाजियाबाद से नई दिल्ली के लिए ही चलती है। इसमें अधिकांशतः शिफ्टों में काम करने वाले कर्मचारी (दैनिक) होते है। 1300 बज गए लेकिन ई.एम.यू. चलने में ही नहीं आ रही थी। बातों-बातों में चर्चा चली तो अधिकांश सहयात्रियों (जिनमें भी अधिकांश दैनिक यात्री होते हैं और ट्रेनों के विषय में पर्याप्त जानकारियां रखते हैं) ने मुझे पुनः आश्वस्त किया कि आप चिन्ता न करें। केवल चलने भर देर है और आप निश्चित रूप से, समय पर पहुंच कर, अपनी ट्रेन ले लेंगे।

इसी समय साथ वाले प्लेटफार्म पर रीवा एक्सप्रेस आकर रूकी जो कि नई दिल्ली की ओर जाने वाली थी। मैंने अपने सहयात्रियों (दैनिक यात्री) से जानना चाहा कि क्या मैं उसमें शिफ्ट हो जाऊं। मुझे पुनः आश्वस्त किया कि नहीं। आप इसी में बैठे रहे और चिन्ता न करें। देखते-देखते रीवा एक्सप्रेस जैसे आई थी दो मिनट रूककर, वैसे ही फिर चल दी और मैं जाते हुए (असहाय नजरों से) देखता रहा। खैर 1315 बजे ई.एम.यू भी चली और तिलक ब्रिज पर जाकर रूक गयी। बगल वाले प्लेटफार्म पर रीवा एक्सप्रेस भी खडी थी। मुझे महसूस हुआ कि मेरे सहयात्रियों की सलाह ठीक ही थी।

लेकिन यह क्या रीवा एक्स. फिर चल पड़ी और हमारी ई.एम.यू. खडी हो गयी। अब तक 1345 बज चुके थे और अगली ट्रेन पकडने की संभावना क्षीण होने लगी थी। मेरी हालत, कहना न होगा कि बहुत खराब थी। मेरे मन में अनेक प्रकार के विचार

आ और जा रहे थे। एक ओर हर प्रकार की असंभावनाएं थी तो दूसरी ओर मन के किसी कोने में किसी चमत्कार की अकल्पनीय सी आशा । बारिश और ठंड के बावजूद मेरे माथे पर, परेशानी के साथ-साथ पसीना भी उग आया था। ट्रेन तिलक ब्रिज से चली तो शिवाजी ब्रिज पर, आकर फिर रूक गई यहां पर भी पहले की तरह बगल वाले प्लेटफार्म पर वही रीवा एक्स. खडी थी। समय 01.50 से कुछ अधिक हो चुका था और अब लगभग यह निश्चित था कि डिब्रुगढ़ राजधानी से तो यात्रा संभव नही है। अब तो अन्य ट्रेन ही लेनी होगी। इस तरफ से जाने वाली ट्रेनों का बार-बार रूकना, एवं लेट होने का शायद यह भी एक कारण था कि उन दिनों नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर विस्तारीकरण का कार्य चल रहा था और ट्रेनों के लिए तुरन्त प्लेटफार्म (खाली) उपलब्ध नहीं हो पा रहे थें । तथा ट्रेनों के Route divert हो रखे थे।

सहयात्री मेरी स्थिति को लेकर काफी सहानुभूति दर्शा रहे थे। कोई कह रहा था कि यदि सभी ट्रेनों की यह स्थिति है तो संभवतः आपकी ट्रेन भी वहां से लेट ही चलेगी। कोई कहता था कि दो बजे कहते-कहते भी, 10-15 मिनट तो फिर भी देरी हो ही जाती है। और बस केवल ट्रेन स्टार्ट होने भर की देर है। इ.एम.यू. यह चली और वह पहुंची और फिर अब आपके पास कोई विकल्प भी तो नहीं। कोई विकल्प नहीं अर्थात् बिल्कुल नहीं। ना पैदल का, ना बस टैक्सी का और ना ही अन्य ट्रेन का।

चर्चा के इसी दौर में एक-दो सज्जनों ने अपने अनुभव के आधार पर जो एक नया सुझाव/विकल्प दिया, वह जितना विचित्र था, उतना ही अव्यवहारिक। उसकी संभावना और असंभावना का प्रतिशत एक और निन्यानवे का था उन्होंने कहा कि भाई साहब ट्रेन तो आप अपनी छूटी ही समझो। इसमें तो कोई दो राय नही है। फिर भी आप ऐसा कर सकते हैं कि टिकट हाथ में लेकर आने वाली ट्रेन को दिखाएं तो संभव है कि वह रोकेगा तो नहीं, लेकिन शायद थोडी धीमी कर दे। और यही अक्सर होगा आपके लिए कि यदि किसी भी कोच (डिब्बे) का कोई भी दरवाजा खुला है तो आप बस उसमें चढ जायें। लेकिन इसमें संभावना कम और खतरा अधिक था। हां लेकिन इतना उन्होंने निश्चित रूप से कहा कि इस बार जो भी ट्रेन दिल्ली की ओर से आएगी समझो वह, वही आपकी डिब्रुगढ राजधानी होगी, उसी का समय हुआ है। उसी के लिए इन ट्रेनों को रोका गया है। और किसी अन्य ट्रेन की गुंजाइश इस समय नहीं हैं। मैंने एक अन्तिम चांस लेने की सोच लिया और ट्रेन से उतर गया। इस समय मेरा दिमाग कम चल रहा था, बस, पैर और हाथ अधिक काम कर रहे थे।

जैसे ही मैं नीचे उतरा, रीवा एक्स. फिर से चल पड़ी। मैं बारिश में भीगता हुआ, जैसे-तैसे लाईन को पार करते हुए दूसरे प्लेटफार्म चढ़ा तथा दौडते-दौड़ते रीवा एक्सप्रेस में चढ़ गया। लेकिन यह क्या? प्लेटफार्म छोडते-छोडते रीवा एक्स. जैसे चली थी वैसे ही फिर रूक गयी। अर्थात् सारी (अन्तिम भी) संभावना समाप्त हो गई उसी समय दिल्ली की ओर से किसी ट्रेन की सीटी की आवाज सुनाई दी और उसके कुछ क्षण बाद ही लाल रंग का एक इंजन भी धीरे-धीरे हमारी ओर रेंगता हुआ दिखाई दिया। इंजन का लाल रंग इस बात का प्रतीक था कि यह राजधानी एक्सप्रेस ही है।

(यदि मेरा अनुमान सही है तो संभवत: राजधानी एक्सप्रेस के इंजन लाल रंग के ही होते हैं जो कि दूर से ही पहचाने जा सकते हैं।) यहां पर एक बात और कहना चाहूंगा कि शिवाजी ब्रिज के बाद रेलवे लाईन घुमावदार हैं। इसलिए ट्रेन की गति अभी तक अधिक नहीं थी। ट्रेन की गति कम निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता। मैं कह सकता हूं तो बस यह कि मुझे ना तो कहना चाहिए और करना तो बिल्कुल ही नहीं चाहिए था।

मैं तेज बारिश में एक बार फिर रीवा एक्स. से कूद पडा, लाईन पार करके दूसरे प्लेट फार्म पर पहुंचा। बैग कंधे पर मजबूती के साथ लटकाया, टिकट हाथ में लिया और ट्रेन की ओर दौड पडा। प्लेटफार्म समाप्त हो चुका था। अब मेरे दोनों ओर कई-कई लाईनें थी जिनके बीच मैं भीगता हुआ, दौड़ता जा रहा था। टिकट भी भीग चुका था। लेकिन मैं हाथ उठाकर बराबर उसे ड्राईवर को दिखाने की कोशिश कर रहा था। दिमाग मेरा नहीं चल रहा था। चल रहे थे तो केवल पैर और हाथ। मुझे उस समय वह ट्रेन न होकर कुछ और ही दिखाई दे रही थी। अब ट्रेन ने वास्तव में अभी तक स्पीड नहीं पकडी थी या ड्राईवर ने मेरी स्थिति भांपकर वास्तव में स्पीड नहीं बढ़ाई थी, या फिर वास्तव में उल्टे कुछ धीमे कर दी थी, मैं कुछ नहीं जानता मैं निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता। किन्तु मैंने देखा कि इंजन के साथ वाला (ठीक पीछे) डिब्बे की खिडकी अधखुली है। मैंने दौड़ते-दौड़ते दरवाजे के साथ लगे हैंडल (बार) को पकड़ा और अधखुले दरवाजे को धकेलते हुए किसी प्रकार अन्दर दाखिल हो गया मैं जितना भीगा हुआ था, हांफ रहा था, उससे कही अधिक मेरी धड़कन बढी हुई थी। वह सहायक गार्ड रूम था उसमें गार्ड के अतिरिक्त रेलवे के ही एक-दो लोग और थे। इस प्रकार इस स्थान पर मेरे घुस आने से वे भी हक्के-बक्के रह गये और चौंककर, मेरी ओर देखकर एकसाथ सब बोले और कई प्रश्न कर दिये जैसे–अरे भाई साहब आप कौन है, इसमें (डिब्बे में) कहां से आ गये, कैसे आ गये और वह भी यहां बीच रास्ते में? और भी एकाध प्रश्न किया गया, जो कि मैं ठीक से सुन नहीं पाया। सांसे मेरी बेकाबू थी फिर भी जैसे-तैसे मैं कोशिश करके बोला, बल्कि यूं कहिए कि उल्टे उन्ही से पूछा कि क्या यह डिब्रुगढ राजधानी है उन्होने कहा हां। क्या यह 2424 है? फिर उत्तर मिला हां। फिर मैंने कहा, तब ठीक है, बाकी बातें बाद में बताऊंगा। उन्होंने बैठने के लिए जगह दी। दोनों और की खिडकियां पूरी खोल दी, ताकि मेरे कपडे सूख सकें। फिर तसल्ली से पूछना-बताना हुआ। यहां तक कि मैंने उन्हें अपना टिकट भी दिखाकर उनकी तसल्ली कर दी।

इतना सब होने के बाद उन्होंने कहा कि आप निश्चिन्त होकर बैठे। कानपुर से पहले (लगभग 5 घण्टे) तो इसका कोई स्टाप नहीं है, जिससे कि आप अपने कोच में जा सकें। उन्होंने मजाक में यह भी कहा कि कानपुर तक आप यात्रा तो हमारे साथ कर सकते हैं, किन्तु कोच की तरह यहां पर चाय-नाश्ते की कोई व्यवस्था नहीं है। मैंने हंसकर ही उनका धन्यवाद किया तथा यह भी कहा कि चाय-नाश्ते की किसको पड़ी है। बस जान बच गई और ट्रेन मिल गयी, यही क्या कम है। फिर मैंने पूछा कि क्या उनके पास कोच में उपस्थित टी.टी.ई से कोई सम्पर्क है, ताकि वे मेरे आने की सूचना

उसे दे सकें जिससे कि मेरा आरक्षण रद्द न कर दे। उन्होंने कहा कि ऐसा कोइ साधन हमारे पास नहीं है। किन्तु आप चिन्ता न करें। ट्रेन रूकने पर हम उन्हें समझा देंगे और आपके सामने कोई परेशानी नहीं आयेगी।

मौसम अभी भी खराब ही चल रहा था। हम लोग कम ही बातें कर रहे थे। इसी बीच अलीगढ़ से थोडा पहले जंगल में हमारी ट्रेन अचानक रूक गई। इसी पर गार्ड ने कहा कि भाई साहब आपके लिए यही एक मौका है, अपने कोच में पहुंचने का। नजदीक के किसी भी कोच के दरवाजे को खटखटाइये, खुलने पर प्रवेश कर जाइये, और फिर तो आपका कोच कहीं भी हो, सभी का आपस में लिंक है, आप आराम से पहुंच जायेंगे। लेकिन एक बात का विशेष ध्यान रखियेगा कि, खिड़की खुलवाने के लिए अधिक आगे मत निकल जाना। कहीं ऐसा न हो कि आप दूर निकल जाये, ट्रेन स्टार्ट हो जाये और आप फिर वापिस इस डिब्बे में भी न आ सकें। बात बिल्कुल सही थी। मैंने ऐसा ही किया। गार्ड रूम से उतरते ही पहले एक और फिर दूसरे डिब्बे को नॉक किया तो थोड़ी हिचकिचाहट और ताक-झांक के बाद पेन्ट्रीवाले ने दरवाजा खोला। मैं अन्दर प्रवेश कर गया। अपने कोच के बारे में पूछा। उन्होंने काफी पीछे बताया अब तो मुझे कोई चिन्ता नहीं थी। मैं पहुंच गया। सीट पर बैग तथा टी.टी.ई. से मिला। टिकट टिक करवाया और बैठकर जैसे-जैसे अपनी सांसे दुरूस्त करता जाता था, वैसे वैसे भगवान का शुक्रिया अदा करता आता था। थोड़ी देर में लन्च सर्व हो गया और आगे की यात्रा चलती रही। यह बात अलग है कि नागालैंड में 15 अगस्त के बन्द को लेकर ट्रेन आगे न जाकर गुवाहाटी तक आकर ही रूक गयी। कुछ यात्रियों ने बताया कि ऐसा दिल्ली में ही उद्घोषित कर दिया गया था। खैर।

आज जब उस घटना के बारे में सोचता हूं तो रोंगटे खड़े हो जाते है। स्वप्न सा लगता है, अविश्वसनीय सा लगता है और साथ ही यह विचार भी आता है कि यह मैं क्या कर गया कैसे कर गया और ट्रेन में मैं चढा बल्कि भगवान ने ही मुझे चढ़ाया। ईश्वर करे कि फिर कभी ऐसी स्थिति न आने पाये। साथ ही आप सभी से मेरा अनुरोध है कि कभी ऐसा जोखिम न लें, वरना परिणाम कुछ भी हो सकता है।

रिर्पोट

केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली द्वारा नीमच में 21 दिवसीय गहन अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल नीमच में केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली के माध्यम से 1 जुलाई 2009 तक 21 दिवसीय संक्षिप्त अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें स्पेशल सैक्टर केरिपुबल तथा नीमच स्टेशन स्थित कार्यालयों के कुल 55 कार्मिकों ने भागीदारी की।

1 जुलाई 2009 को प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का उद्घाटन डा० एन० एस गंगरिया पुलिस उप महानिरीक्षक (चिकित्सा), नीचम की अध्यक्षता में किया गया। प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के दौरान केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो के अनुभवी प्रशिक्षण अधिकारियों ने प्रशिक्षार्थियों को अनुवाद संबंधी गुर सिखाए। उक्त कार्यक्रम का समापन श्री गुरदीप सिंह, पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र केरिपुबल नीमच की अध्यक्षता में संपन्न हुआ जिसमें श्री एन के एस गौतम, श्री मनफूल सिंह, उप कमा. ग्रुप केन्द्र, नीमच, श्री कवीन्द्र कुमार चांद, उप. कमा. ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, नीमच एवं डा० श्रीमती रीता बोहरा, हिंदी अधिकारी, सूमे/व.हि.अ. महानिदेशालय, श्री दिनेश सिंह धनिक, निरीक्षक(हिंअनु) स्पेशल सैक्टर केरिपुबल दिल्ली, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो के डा. सी पी सिंह, सहायक निदेशक व श्री इन्द्रजीत चावला, अनुवाद / प्रशिक्षण अधिकारी मौजूद थे। उद्घाटन / समापन कार्यक्रम के दौरान मंच का संचालन ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल नीमच के निरीक्षक (हिंदी अनुवादक) विनोद कुमार राणा द्वारा किया गया। उद्घाटन एवं समापन समारोह में केन्द्रीय ब्यूरो के विभिन्न वक्ताओं सर्वश्री विजय राम नौटियाल, ईश्वर चन्द्र मिश्र, एम एम भांडेकर, इंद्रजीत चावला, डा सी पी सिंह ने अनुवाद की बारिकियों के बारे में अपने विचार प्रकट किए। इस अवसर पर श्री गुरदीप सिंह, पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र केरिपुबल नीमच ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत एक विशाल देश है जिसमें अनेक विविधताओं के होते हुए भी अद्भुत एकता पाई जाती है। किसी देश में प्रजातंत्र की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि उस देश का कामकाज उसकी जनता की भाषा में हो। इसी बात को ध्यान में रखकर ही हमारे संविधान में 22 प्रांतीय भाषाओं को मान्यता दी गई है तथा देश का राजकाज चलाने के साथ-साथ केन्द्र व राज्यों के बीच सम्पर्क बनाएं रखने की भूमिका निभाने का दायित्व हिंदी को सौंप कर 14 सितम्बर, 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया। हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा अधिनियम किया जा रहा है। सैद्धांतिक मान्यताओं के होते हुए भी प्रयोग के क्षेत्र में हम अंग्रेजी का मोह पूरी तरह नहीं छोड़ पाये हैं, जिसके फलस्वरूप पांच दशक बीत जाने के बाद भी हिंदी को वह स्थान नहीं दिला पाए हैं, जिसकी वह अधिकारिणी है।

हिंदी का व्यवहार हमारे लिए गौरव एवं गर्व का विषय होना चाहिए। हमारी भाषा में गंभीरतम भावों की अभिव्यक्ति की पूर्ण क्षमता है। अच्छी हिंदी का व्यवहार गलत अंग्रेजी के व्यवहार के मुकाबले कहीं बेहतर है। हम हिंदी में ही सोचें और हिंदी में ही लिखें तथा इस सिद्धांत को अपना आदर्श बना लें, तो हमें हिंदी में काम करने में कोई कठिनाई या समस्या नहीं होगी तथा हिंदी की प्रगति में स्वयं ही तेजी आ जाएगी।

सुरक्षा बलों के लिए तो राजभाषा का महत्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि देश की सुरक्षा की जिम्मेदार निभाते समय उसकी भावनात्मक एकता मजबूत करने के लिए आम लोगों के साथ सम्पर्क करने में हिंदी ही जनता की अभिव्यक्ति का माध्यम है। पुलिस उप महानिरीक्षक माहेदय ने निदेशक केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो नई दिल्ली को इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन हेतु साधुवाद दिया। इसके अलावा महानिदेशालय के हिंदी अधिकारी, डा श्रीमति रीता बोहरा, सूमे/वहिअ महिपाल सिंह रावत एवं केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के अतिथि प्रवक्ता डा सी पी सिंह, श्री इन्द्रजीत चावला और स्पेशल सैक्टर केरिपुबल दिल्ली के निरीक्षक हिंदी अनुवादक दिनेश सिंह धनिक ने प्रशिक्षार्थियों को अनुवाद एवं राजभाषा हिंदी स्वरूप की महत्ता पर प्रकाश डाला। प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंत में गुरदीप सिंह, पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, नीमच के कर कमलों द्वारा 55 प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण पत्र एवं अतिथि वक्ताओं को स्मृति प्रतीक प्रदान किए गए।

24/7/2009 को ग्रुप केन्द्र, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, नीमच (मध्यप्रदेश) में नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति की 26वीं अर्द्धवार्षिक बैठक का आयोजन

भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति और राजभाषा हिंदी के प्रति अधिकारियों/कर्मचारियों में जागरूकता लाने तथा सरकारी कामकाज में उसके प्रयोग को गति प्रदान करने के उद्देश्य से नीमच नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति की छमाही बैठक का आयोजन 24/7/2009 को ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल नीमच मे ब्रिगेडियर (रिटा०) मान सिंह, पुलिस उप महानिरीक्षक आर.टी.सी, नीमच व अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति नीमच की अध्यक्षता में किया गया।

इस अर्द्धवार्षिक बैठक में नीमच नगर में स्थित केन्द्रीय सरकार के 34 कार्यालयों/ बैंकों/उपक्रमों के कार्यालय अध्यक्षों / वरिष्ठ अधिकारियों/ प्रतिनिधियों ने भागीदारी की।

_____ नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति, नीमच के सदस्य सचिव निरीक्षक / हिंदी अनुवादक विनोद कुमार राणा, द्वारा 1/10/2008 से 31/3/2009 के दौरान विभिन्न कार्यालयों में राजभाषा के संबध में किए गए कार्यो की समीक्षा की प्रस्तुति की गई तथा कार्ययूची पर मदवार विस्तृत चर्चा की गई। संयोगवश इस अवसर पर केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो के डा सी पी सिंह, सहायक निदेशक, श्री इन्द्रजीत चावला, अनुवादक/प्रशिक्षण

अधिकारी एवं महानिदेशालय केरिपुबल नई दिल्ली की हिंदी अधिकारी डा श्रीमति रीता बोहरा व स्पेशल सैक्टर मुख्यालय केरिपुबल दिल्ली के निरीक्षक/हिंदी अनुवादक दिनेश सिंह धनिक भी मौजूद थे जिन्होंने बैठक की महत्ता, राजभाषा के प्रचार प्रसार एवं हिंदी के प्रशिक्षण संबंधी अनेक महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डाला। इससे निश्चित तौर पर राजभाषा प्रचार प्रसार एवं हिंदी में कार्य को गति मिलेगी।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति नीमच के अध्यक्ष ब्रिगेडियर (रिटा) मान सिंह, पुलिस उप महानिरीक्षक आर टी सी, केरिपुबल ने सर्वप्रथम प्रतिनिधियों का सदस्यों का अभिवादन किया तथा अपने संबोधन में कहा कि हिंदी का व्यवहार हमारे लिए गौरव एवं गर्व का विषय होना चाहिए तथा अच्छी हिंदी का व्यवहार गलत अंग्रेजी के व्यवहार के मुकाबले कहीं बेहतर है। अन्होंने कहा कि भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2009-2010 के लिए जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शत-प्रतिशत प्रयास किए जाएं तथा राजभाषा अधिनियम/ नियम और सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने की दिशा में भारत सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किए आदेशों का अपने कार्यालयों में शत-प्रतिशत लागू करवायें ताकि राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक कार्य हो व इस बैठक के आयोजन का उद्देश्य पूरा हो सके। अध्यक्ष महोदय ने सभी सदस्यों से राजभाषा का निष्ठापूर्वक कार्यान्वयन एवं अनुपालन करने की अपील की। मंच संचालन नराकास सचिव निरीक्षक (हिं. अनु.) विनोद कुमार राणा द्वारा किया गया।

इस बैठक के सुचारू एवं सफल आयोजन का श्रेय श्री गुरदीप सिंह, पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, नीमच, श्री मनफूल सिंह, राजभाषा अधिकारी, ग्रुप केन्द्र केरिपुबल नीमच एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति नीमच के सदस्य सचिव निरीक्षक/हिंदी अनुवादक विनोद कुमार राणा और हिंदी सहायक हव/मं दिगम्बर सिंह को जाता है। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के लिए यह गौरव की बात है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता/प्रतिनिधित्व करने में सर्वोत्कृष्ट प्राप्त हुआ है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2007-08 में सर्वोत्कृष्ट कार्य हिंदी में करने हेतु ग्रुप केन्द्र केरिपुबल नीमच ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है जिसके लिए रनिंग शील्ड प्रदान की गई है।

लेख



माओवाद से फैलती गरीबी एवं असुरक्षा

राकेश कुमार सिंह
द्वितीय कमान अधिकारी 81 बटालियन, के.रि.पु.बल (छत्तीसगढ़)

समाज के आर्थिक एवं सामाजिक तौर पर पिछड़े वर्गों के उत्थान एवं सशक्तिकरण को सैद्धान्तिक आधार बनाकर माओवादियों द्वारा (नक्सली) चलाया जा रहा आंदोलन अपने उद्देश्य के विपरीत गरीबों को और गरीब एवं पिछड़ा बना रहा हैं। समाज का वो तबका जिसके लिए माओवादी संघर्ष करने का दंभ बढ़ रहा है उनको दो तरफा कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा हैं तथा लोगों में असुरक्षा की भावना पैठ कर गयी है। नतीतन, देश के कुछ हिस्सों में जहां नक्सलियों का दबदबा उन क्षेत्रों के अगम्य, भौगोलिक परिस्थितियां एवं प्रशासनिक उदासीनता के कारण हैं वहां के लोग अमानवीय जीवन जीने को मजबूर हैं। देश के आर्थिक विकास की धूम का वहां लेशमात्र भी लाभ नहीं पहुंच पा रहा है क्योंकि हर प्रशासनिक पहल माओवादियों के विचारहीन एवं वीभत्स हिंसा के सामने घुटने टेक देती है।

माओवादियों द्वारा तत्कालिक सी.पी.आई. (एम-एल), (पी० डब्लु) और एम.सी.सी.आई की संयुक्त केन्द्रीय कमिटियों द्वारा सितम्बर 2004 में "राजनीतिक प्रस्ताव" नामक दस्तावेज को अंतिम रूप दिया गया। इस प्रस्तावना का उद्देश्य माओवादियों के अनुसार उनके लोकयुद्ध का संचालन करने, संशोधनवाद और भारतीय एवं अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन के दक्षिण व वाम अवसरवादी प्रवृतियों

के खिलाफ संघर्ष करने तथा देश के विभिन्न भागों में एक स्थायी व मजबूत क्रांतिकारी आंदोलन का निर्माण करने के लिए अनुभवों का संश्लेषण एवं मार्गदर्शन हैं। माओवादी इस संश्लेषण से अपनी राजनीतिक मंशा को स्पष्ट करना चाहते हैं। अपने संगठन को गरीब लोगों से जुड़ा होना प्रसारित कर अपना आधार मजबूत करना प्रायः हरेक संगठन की रणनीति रही हैं। लेकिन प्रश्न यह उठता हैं कि इन राजनीतिक नीतियों के प्रति ये संगठन कितना निष्ठावान रहते हैं। दूसरा पहलू यह हैं कि इसके लिए वह क्या प्रक्रिया अपनाते हैं तथा इन उद्देश्यों के प्राप्ति के लिए संघर्ष के समय में आम लोगों की जिंदगी पर यह कितना असर डालती हैं

माओवादियों के राजनीतिक नीति का एक अहम पहलू होता हैं जनता में युद्ध का भय खड़ा करके रखना। प्रायः वे प्रचारित करते हैं कि ऐसा युद्ध साम्राज्यवादियों एवं पूंजीवादियों द्वारा छेड़ा जाएगा जो सर्वहारा वर्ग, किसानों एवं मजदूरों के लिए अहितकर होगा। सन् 1970 से ऐसी ही भयाक्रान्त मानसिकता फैलाने की कोशिश की जा रही है। माओवादियों ने अपने "राजनीतिक प्रस्ताव" में लिखा है कि "कामरेड माओ ने 20 मई 1970 के अपने प्रसिद्ध वक्तव्य में कहा हैं :– एक नये विश्वयुद्ध का खतरा बना हुआ हैं और समस्त देशों की जनता को इसके लिए तैयार रहना चाहिये। लेकिन क्रांति ही आज की दुनियां की मुख्य प्रवृति है।

माओवादी के शीर्ष नेता भारतीय परिपेक्ष में कम अमरीका को साम्राज्यवाद एवं पूंजीवाद की धुरी मानकर उसके खिलाफत करते रहने की नीति को अपनी रणनीति बनाये रखा है। चाहे वह आतंकवाद से लड़ने का विश्व स्तरीय प्रयास ही क्यों नहीं। माओवादियों का विचार है कि आतंकवाद से लड़ने के नाम पर पूरी दुनिया में इस्लामी देशो के खिलाफ तथा अमरीका एवं यूरोप में अप्रवासियों के खिलाफ जन उन्माद खड़ा किया जा रहा हैं। मीडिया के माध्यम से निर्दोष जनता पर संभावित आतंकवादी हमले की झूठी व मनगठन्त कहानियों के पुलिन्दों द्वारा जनता में असुरक्षा की भावना पैदा की जा रही है। इसकी आड़ में वस्तुतः हर देश में फासीवादी कानूनों को लागू किया जा रहा हैं। सुरक्षा के नाम पर मूलभूत अधिकारों तथा व्यक्गित स्वतन्त्रता को छीना जा रहा हैं और जनान्दोलनों, राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों तथा क्रांतिकारी आन्दोलनों पर राजकीय आतंक का बड़े पैमाने पर कहर बरपाया जा रहा हैं।

लेकिन माओवादियों द्वारा भारत के कुछ राज्यों में संघर्ष का जो रूप दिया गया हैं वह उनके सिद्धान्तो से ही परे हैं। जनता में माओवादियों के कारण जो असुरक्षा की भावना हैं वह किसी भी अन्य आंतरिक सुरक्षा की समस्याओं से नहीं हैं। यहां तक कि आंतकियों द्वारा समय-समय पर किये जा रहे मुख्य स्थानों पर आंतकी हमलों से ज्यादा भय नक्सल प्रभावित राज्यों में वहां के गरीब जनता के बीच है। माओवादी द्वारा पुलिस/अर्द्धसैनिक बलों को शोषक मानकर किये जा रहे हत्याओं में ज्यादातर सिपाही/हवलदार आखिर कर स्थानीय गरीब लगाकर किस तरह का जन सुलभ शासन माओवादी दे सकता है। वस्तुतः माओवादियों की अपनी नीतियां क्रूरतम होती जा रही हैं जहां समाज के आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों को शोषण एवं दोहन किया

जा रहा है। वे आम लोगों को हिंसा का भय दिखाकर उन्हे सरकार के प्रति आंदोलन करने के लिए मजबूर करते हैं तथा सरकार के कर्मचारियों खासकर सुरक्षा बलों पर झूठे आरोप लगवाये जाते हैं।

असुरक्षा का माहौल रचने में माओवादियों के वर्ग-संघर्ष के प्रक्रिया में हथियार बन्द लड़ाई को प्रमुखता देना है। उनके इस सिद्धान्त से कि सर्वहारा वर्ग के लोगों का कल्याण एवं उत्थान बंदूके उठाने एवं पूजीपतियों के विरूद्ध हिंसा करने से संभव हैं अत्यन्त निंदनीय है। अपनी इस प्रक्रिया में वे सरकारी कर्मचारी जो इन क्षेत्रों में कार्यरत हैं खासकर पुलिस, वन कर्मी एवं प्रशासनिक अधिकारी को प्रमुखतः सतत हिंसा का शिकार बनाते हैं। इसके कारण इन क्षेत्रों में विकास कार्य को भी अंजाम नहीं दिया जा पाता है। कर्मचारी भय एवं असुरक्षा के बीच इन क्षेत्रों में अपनी सम्पूर्ण उर्जा एवं क्षमता से कार्य नहीं कर पाते। फलतः गरीबी और फैलती ही जाती है।

धन इकट्ठा करने के लिए माओवादियों द्वारा और भी जन विरोधी तरीके अपनाये जाते हैं। वे अपने प्रभाव वाले क्षेत्रों में हरेक ठेकदारों, सम्पन्न व्यापारियों एवं उद्योगपतियों से "लेवी" के रूप कार्य राशि का एक अच्छा प्रतिशत मांगते हैं। जिससे वहां हो रहे जन कार्यों के गुणवता एवं मितव्ययिता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

माओवादियों के नीतियों को सही रूप उनके राजनीतिक कार्यनीतिक नारे से भी पता चलता हैं जिसमें वे सिर्फ लोक युद्ध, दमन, फासीवादी शक्तियों का उन्मूलन इत्यादि हिंसात्मक बातें ही करते हैं। उनके इन नारों में कहीं भी गरीबों के आर्थिक उत्थान, दलितों को समाज में समान स्थान दिलाने, महिला सशक्तिकरण एवं जन जागरूकता की बाते नहीं है। जैसे उनके कुछ राजनीतिक कार्यनीतिक नारे निम्न हैं :–

- लोकयुद्ध को तीव्र करें और उसे आगे बढ़ाएं।
- साम्राज्यवाद के युद्ध-मन्सूबों को विफल करे।
- फासीवादी शक्तियों को बेनकाब करें इत्यादि।

माओवादी इन कार्यों को सशस्त्र संघर्ष से पूरा करना चाहते है। अपने राजनीतिक प्रस्तावना में वे साफ-साफ लिखते हैं कि राजनीतिक कार्यनीतिक नारों को हमें सशस्त्र संघर्ष के द्वारा राजनीतिक सत्ता पर कब्जा करने और नवजनवादी राजसता स्थापित करने के सवाल के मातहत रखना चाहिये। माओवादी उसके आगे पी.एल.जी.ए (पीपुल्स लिबेरशन गुरिल्ला आर्मी) को मजबूत कर पी.एल.ए (पीपुल्स लिबेरशन आर्मी) व मुक्त क्षेत्रों की तरफ बढ़ने की बात करते हैं।

मुक्त क्षेत्रों (लिबरेटेट जोन) कुछ और नहीं बल्कि सरकारी तंत्रो को भयानक हिंसा से विमुख कर उन क्षेत्रों में अपना प्रभाव स्थापित करना है। इनसे भला गरीबों का क्या उत्थान होगा। ऐसे में अराजकता फैलेगी और गरीबों एवं आदिवासियों का सरकारी सहायता एवं सुरक्षा के अभाव में जीवन और बदतर होगा।

उद्योगों एवं विकास कार्यों का हिंसा के साथ विरोध कर माओवादी मजदूर वर्ग के

लिए रोजी-रोटी की समस्या ही नहीं खड़ी कर रहे हैं अपितु उनके लिए रोजगार के अवसर ही बंद करने पर उतारू हैं। उदाहरण के तौर पर छत्तीसगढ़ का बस्तर क्षेत्र खनिज सम्पदा से परिपूर्ण एक बेहद ही समृद्ध प्राकृतिक क्षेत्र है। लेकिन इन सम्पदा का सही उपयोग नहीं हो पा रहा है, क्योंकि माओवादी इस क्षेत्र में हर बड़े उद्योगों का विरोध कर रहे हैं क्योंकि इसे वे पूंजीपतियों की साजिश मानते हैं। तो क्या बडे उद्योग जिनसे लाखों को रोजगार मिलेगा एवं उनके जीवन में सुधार होगा कि स्थापना मध्यवर्गीय परिवार करेगा। उद्योगों के लिए बहुत पूंजी की आवश्यकता होती है एवं बाद में लाभ भी खूब होता है। जनहित में बेहतर होता अगर माओवादी लाभ का सम्पूर्ण हिंसा उसी क्षेत्र/ देश एवं लोगों के कल्याणकारी योजनाओं के लिए खर्च करने की बात करते न कि उद्योगों की स्थापना का विरोध करके। माओवादियों के विरोध एवं हिंसा का नतीजा हैं कि बस्तर प्राकृतिक सम्प्रदा से समृद्ध होने के बावजूद गरीबी एवं भूखमरी से ग्रस्त हैं।

माओवादी मध्य भारत में भौगोलिक परिस्थितियों का फायदा उठा कर वहां के लोगों को विकास कार्य में जुड़ने से भी रोक रहे हैं। मसलन सड़क इत्यादि निर्माण में न सिर्फ ठेकदारो को परेशान करना बल्कि मजदूरों को भी काम करने से रोकना। बिजली के टावरों को अक्सर विस्फोटो से उड़ा कर क्षेत्र में विद्युयत आपूर्ति रोकना एवं मोबाइल टावर को उड़ा कर संचार व्यवस्था को ठप करना अन्य फासीवादी नीतियां हैं जो पूंजीपतियों से ज्यादा आम जनता को तकलीफ पहुंचाती हैं। माओवादियों द्वारा अक्सर बंद का आहवान किया जाता है जिससे लोकल बसें नहीं चलती। इन बसों में गरीब एवं सर्वहारा वर्ग ही यात्रा करता है और सारी परेशानियां उन्हें ही झेलनी पड़ती हैं। समृद्ध लोग तो अपने वाहनों से यात्रा कर ही लेते हैं। तो क्या माओवादी अपने इन हरकतों का परिणाम नहीं जानते या यही इनका असली चेहरा है जिसको लक्ष्य गरीबों को प्रताड़ित एवं परेशान रखना है जिससे वे उनके संघर्ष के लिए मजबूरन साथ हो ले। माओवादियों का अन्य वीभत्स कार्यों में महिला आरक्षक को अगवा करना, पुलिस कार्मिकों की बर्बरता से घात लगाकर हमला करना, निहत्थे लोगों पर भी आक्रमण करना रहा हैं। अतएव यह साफ तौर पर दृष्टिगोचर होता हैं कि सिद्धान्तो का सिर्फ आवरण पहने की कोशिश में नक्सलियों ने 'माओवाद' का सिद्धान्त अपनाया तथा इस सिद्धान्त की सम्पूर्ण क्रूरता एवं हिंसा को अपना लिया लेकिन गरीबों के प्रति सेवा की भावना को त्याग दिया है।

वर्तमान भारत हर दृष्टिकोण से प्रगति कर रहा हैं। यहां के लोगो ने अपने उद्यमी प्रकृती, अपार ऊर्जा एवं ज्ञान के बल पर प्रचुर मात्रा में धन की उगाही कर रहे हैं। देश की शासकीय नीतियों 'वेल्थ क्रिमेशन' को बढ़ावा देती हैं तथा ऐसे धन को जनता के सुखार्थ कार्यों के लिए आधारभूत संरचानाएं एवं रोजगार के अवसर को पैदा करने में खर्च कर रही हैं। जब आर्थिक विकास का प्रभाव हरेक क्षेत्र में देखा जा रहा है ऐसी परिस्थिति में सिर्फ कुछ क्षेत्र जहाँ माओवादियों ने हिंसा फैला रखी है वहीं क्षेत्र पिछड़ा क्यों हैं। निसन्देह, माओवादी इन क्षेत्रों के विकास में बाधा हैं एवं इन क्षेत्रों को पिछड़ा रख कर वे यहां भोली-भाली जनता को राष्ट्र के खिलाफ भड़काने के कार्यों में लिप्त

हैं। माओवादियों की नीतियां एवं हिंसा यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि उनकी नीतियां न सिर्फ राष्ट्रविरोधी हैं अपितु जन विरोधी भी हैं और देश के कुछ क्षेत्रों में जहां विकास की अत्याधिक आवश्यकता है वह क्षेत्र माओवादियों के हिंसात्मक संघर्ष एवं तथाकथित लोक युद्ध के कारण विकास से अभी भी परे हैं। वे क्षेत्र जो शायद कभी विकास के कार्यों के लिए नीतिगत उपेक्षा का शिकार रहा हैं, आज संसाधन एवं समन्वित प्रयासों के वावजूद असुरक्षा एवं गरीबी के लिए शापित हैं। विडम्बना तो ये है कि माओवाद जिन्हें इन क्षेत्रों में विकास के कार्यों एवं सुरक्षित माहौल के लिए उत्प्रेरक का काम करना चाहिये वे ही यहां इन्हें पिछड़ा एवं भयग्रस्त रखने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं।

विविध समाचार

केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय (दूर संचार एवं सू०प्रौ), केरिपुबल, रांची में नगर स्तरीय हिन्दी व्याख्यान प्रतियोगिता

'भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान" नामकुम रांची में नगर स्तरीय हिन्दी व्याख्यान प्रतियोगिता "पृथ्वी के तापमान में वृद्धि एवं जलवायु परिवर्तन" का आयोजन 15 अप्रैल, 2009 को किया गया था। इस प्रतियोगिता में इस संस्थान के निरीक्षक/मंत्रालय सुब्रतो कुमार नाग ने भाग लेते हुए पृथ्वी के तापमान में वृद्धि एवं जलवायु परिवर्तन पर व्याख्यान दिया तथा उन्हें पुरस्कार के लिये चयन किया गया था।

उपयुक्त संदर्भ में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रांची के नगर स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालयों का 18 अगस्त, 2009 को "नेशनल इंस्टीट्यूट आफ फाउन्ड्री एण्ड फोर्ज टेक्नोलॉजी" हटिया, रांची में एक बैठक आयोजित की गयी। उपयुक्त बैठक में इस संस्थान के निरीक्षक/मंत्रालयिक सुब्रतो कुमार नाग को "नेशनल इंस्टीट्यूट आफ फाउन्ड्री एण्ड फोर्ज टेक्नोलॉजी" हटिया रांची के निदेशक डाक्टर विजय कुमार सिन्हा द्वारा पुरस्कृत किया गया।



ग्रुप केन्द्र केरिपुबल इंफाल को पूर्वोत्तर की राजभाषा शील्ड

पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र का वर्ष 2006-07 के लिए संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन तथा क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह 13 एवं 14 नवम्बर 2007 को दीनबंधु मंच सिलीगुड़ी में भारत सरकार गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय गुवाहाटी, असम, द्वारा आयोजित किया गया था। वर्ष 2006-07 के दौरान इस ग्रुप केन्द्र द्वारा पूर्वोत्तर क्षेत्र के अन्तर्गत राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य किये जाने के परिणामस्वरूप द्वितीय पुरस्कार से नवाजा गया। इस अवसर पर सचिव भारत सरकार द्वारा इस कार्यालय को शील्ड प्रदान की गई तथा राजभाषा के कार्यान्वयन में सरकार की राजभाषा नीति के अनुसरण/कार्यान्वयन में प्रशंसनीय कार्य करने पर निरीक्षक हिंदी अनुवादक कृष्ण कुमार को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। ग्रुप केन्द्र केरिपुबल इंफाल में 29 जनवरी 2008 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की संयुक्त बैठक के दौरान सचिव भारत सरकार द्वारा प्रदान की गई।

81 केरिपुबल जशपुर में रक्षा-बंधन का आयोजन

ए/81 केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल जशपुर में 5 अगस्त, 2009 को रक्षाबंधन का कार्यक्रम मनाया गया। इस मौके पर प्रजापिता ब्रम्हकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, बिजलीहोली, जशपुर से आई बहनों ने घर से मीलों दूर देश सेवारत जवान भाईयों की कलाई पर रक्षाबंधन का धागा बांधा और उनके खुशहाल और यशस्वी जीवन की कामना करते हुए अपनी शुभेच्छा प्रकट की। इस मौके पर रूकमणी बहनजी और शकुंतला बहनजी ने जवानों से भेंट स्वरूप अपनी एक बुराई त्यागने को कहा और

कोइ एक अच्छाइ आत्मसात करने हेतु बताया। देशसेवा के लिए अपने-अपने घरों से दूर जवानो की कलाईयों पर राखी बांधकर बहनों ने अलग-अलग प्रांतों के इन जवानो को भाई बनाकर अटूट रिश्ता कायम कर लिया। इस दौरान घरों से दूर पर्व पर उदास जवानों के चेहरों पर खुशी चमक उठी। इस दौरान सुहास खुडे, सहायक कमाण्डेन्ट ने कहा कि रक्षा-बंधन को स्नेह-बंधन कहना उचित होगा क्योंकि आज के जमाने में स्त्री कमजोर नही है क्योंकि कहते है –कोमल है कमजोर नही, शक्ति का नाम ही नारी है, जग की जीवन देने वाली मौत भी तुझसे हारी है। केरिपुबल के जवान हमेशा स्त्रियों के प्रति इज्जत रखते हैं। इस दौरान उप निरीक्षक. आर एन मलिक, उप नि. शत्रुघ्न सिंह, डा. सत्येन्द्र कुमार एवं काफी मात्रा में जवान उपस्थित थे।



ग्रुप केन्द्र सिन्दरी में रीजनल कावा द्वारा नशा उन्मूलन जागृति कार्यक्रम अभियान

ग्रुप केन्द्र सिन्दरी के महिला कल्याण संस्था रीजनल कावा की ओर से 21 जुलाई, 2009 को परिवार कल्याण केन्द्र मनोहर टांड़ के प्रांगण में नशा उन्मूलन जागृति कार्यक्रम अभियान चलाया गया। इसे सफल बनाने में कम्पोजिट अस्पताल, केरिपबल, सिन्दरी के महिला चिकित्सक डा सुनीला सोनी, चिकित्सा अधिकारी ने योगदान दिया। इस अभियान में केरिपुबल के कार्मिकों एवं महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

कार्यक्रम के अंत में रीजनल कावा सचिव ने चिकित्सा अधिकारी एवं उपस्थित बल के जवानों एवं महिलाओं का आभार व्यक्त किया।

रीजनल कावा के द्वारा ग्रुप केन्द्र सिन्दरी में साफ-सफाई का अभियान

ग्रुप केन्द्र सिन्दरी के महिला कल्याण संस्था रीजनल कावा की ओर से रीजनल कावा उपाध्यक्षा श्रीमती रीता मिश्रा के निर्देशन व देख रेख में 15 अगस्त, 2009 को मनोहर टांड़ एरिया में साफ-सफाई अभियान चलाया गया ताकि बरसात के मौसम में बीमारी, सांप-बिच्छू एवं जहरीले कीड़े-मकोड़े से बचाव किया जा सके।

अभियान के समापन के अवसर पर उपस्थित स्थानीय लोगों ने रीजनल कावा द्वारा किए गए इस प्राकर के सामाजिक कार्यों की सराहना की।



ग्रुप केन्द्र सिलचर में हैलीपेड की व्यवस्था

ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, सिलचर(असम) में 18 दिसम्बर, 04 को अस्तित्व में आया तथा पुलिस उप महानिरीक्षक, केरिपुबल, सिल्चर रेंज के प्रशासनिक नियंत्रण में रखा गया। इस ग्रुप केन्द्र के साथ 136/175 एवं 179 बटालियनों को संबद्ध किया गया तथा इस ग्रुप केन्द्र को एक लघु-ग्रुप केन्द्र के रूप में स्थापित किया गया। लघु-ग्रुप केन्द्र होने के बावजूद भी इस ग्रुप केन्द्र में एक नया हेलीपेड बनाया गया है।



उक्त विषय में यह भी लेख है कि असम राज्य में चुनाव के लिए सुरक्षा बंदोबस्त का जायजा लेने हेतु पुलिस महानिरीक्षक, पूर्वोत्तर सेक्टर मुख्यालय, केरिपुबल, शिलांग द्वारा ग्रुप केन्द्र केरिपुबल सिलचर में 10 अप्रैल, 2009 को हैलीकाप्टर द्वारा आगमन हुआ था तथा पुलिस महानिरीक्षक, पूर्वोत्तर सेक्टर, शिलांग द्वारा हेलीपैड का भूमि पूजन किया गया था।

70 बटालियन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में रक्षाबंधन पर्व का आयोजन

प्रजापिता ब्रम्हाकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के बवाना शाखा द्वारा बवाना स्थित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कैम्प में 4 अगस्त, 2009 को 70 बटालियन के प्रांगण में रक्षाबंधन के पवित्र पर्व का आयोजन किया गया। जिसमें श्री दुर्गा प्रसाद शेरसिया, द्वि क अधिकारी, कमाण्डेन्ट (सीसीडी) के अतिरिक्त बटालियन मुख्यालय में उपस्थित सभी अधिकारियों व जवानों ने हिस्सा लिया। सर्वप्रथम आगंतुक मेहमानों द्वारा इस पावन पर्व की महता पर प्रकाश डाला गया और ब्रम्हाकुमारीज चन्द्रिका बहन और लीला बहन द्वारा सभी उपस्थितजनों को राखी का पवित्र धागा बांधा गया।



ग्रुप केन्द्र सिन्दरी में महिलाओं के कल्याण हेतु चलाए गए व्यवसायिक प्रशिक्षण



ग्रुप केन्द्र सिन्दरी के परिवार कल्याण केन्द्र में महिला कल्याण संस्था रिजनल कावा के तत्वाधान में सिलाई के अलावा महिलाओं के कल्याण हेतु 21 जुलाई से 24 जुलाई, 2009 तक कढ़ाई कोर्स चलाया गया। यह कोर्स रीजनल कावा उपाध्यक्षा श्रीमती रीता मिश्रा के नेतृत्व में आयोजित किया गया। उक्त प्रशिक्षण श्रीमती नीलू चौधरी के द्वारा दिया गया जिसमें ग्रुप केन्द्र, सिन्दरी के कुल 50 महिलाओं ने भाग लिया।

खबरों में

जम्मू-कश्मीर से सीआरपीएफ की वापसी फिलहाल टली



जम्मू-कश्मीर से सीआरपीएफ की वापसी फिलहाल टली

श्रीनगर, हिमाचलप्रदेश और उत्तराखंड के 'अदिकल' स्था के पहले सीआरपीएफ की चार और बटालियनों को जम्मू-कश्मीर से हटाने की केंद्र की योजना पर अस्थायी रोक लग गई है। इन बटालियनों की तत्काल प्रभावित राज्यों में तैनात किया जाना था, लेकिन दोनों राज्यों ने फिलहाल जम्मू-कश्मीर को इंडियन रिजर्व पुलिस (आईआरपी) मुहैया नहीं कराने का फैसला किया है। सूत्र के मुताबिक, 'कश्मीर घाटी से पांच बटालियनों को हटाने के बाद चार और बटालियनों को श्रीनगर, गंदेरबल, पुंछ और राजौरी इलाकों से हटाया जाना था। इनकी जगह हिमाचल, उत्तराखंड, पंजाब व हरियाणा द्वारा मुहैया कराए जाने वाले आईआरपी के जवान तैनात किए जाने थे। इस संबंध में पंजाब व हरियाणा ने सहमति दे दी थी, जबकि हिमाचल और उत्तराखंड ने व्यवस्था की समस्या का हवाला देते हुए इसके खिलाफ फैसला किया।

श्रीनगर हिमाचलप्रदेश और उत्तराखंड के 'आड़ियल' रूख के चलते सीआरपीएफ की चार और बटालियनों को जम्मू-कश्मीर से हटाने की केंद्र की योजना पर अस्थायी रोक लग गई है। इन बटालियनों को नक्सल प्रभावित राज्यों में तैनात कि जाना था, लेकिन दोनों राज्यों ने फिलहाल जम्मू-कश्मीर को इंडिया रिजर्व पुलिस (आईआरपी) मुहैया नहीं कराने का फैसला कि है। सूत्रों के मुताबिक, कश्मीर घाटी से पांच बटालियनों को हटाने के बाद चार और बटालियनों को भद्रवाह, गंदोह, पुंछ और राजौरी इलाकों से हटाया जाना था। इनकी जगह हिमाचल, उत्तराखंड, पंजाब व हरियाणा द्वारा मुहैया कराए जाने वाले आईआरपी के जवान तैनात किए जाने थे। इस संबंध में पंजाब व हरियाणा तो राजी थे, जबकि हिमाचल तो राजी थे, जबकि हिमाचल और उत्तराखंड ने व्यवस्था की समस्या का हवाला देते हुए इसके खिलाफ फैसला किया।

सीआरपीएफ जवानों की ट्रेनिंग में तेजी आएगी

सीआरपीएफ में चलने वाला प्रशिक्षण फिर तेज गति पकड़ने वाला है। लंबी तैनाती, बटालियनों के लगातार स्थानातंरण से करीब ढाई साल तक प्रभावित नही नियमित अंतराल पर दी जाने वाली सर्विस ट्रेनिंग के लिए विस्तृत कार्ययोजना बनाई गई है। इसके तहत पहले चरण में कश्मीर में तैनात रही 35 कंपनियों सहित कुल 180 कंपनियों को इस सर्विस ट्रेनिंग के लिए सूचना दी गई है। उम्मीद है कि अगले महीने के दूसरे पखवाड़े के बाद इन्हें ट्रेनिंग पर भेजा जाएगा।


सीआरपीएफ जवानों की ट्रेनिंग में तेजी आएगी

सूत्रों के मुताबिक यह इन सर्विस ट्रेनिंग 6 से लेकर 12 सप्ताह तक होगी। इसका मकसद बल के कर्मियों को समकालीन चुनौतियों के अलावा नए जमाने के हथियारों से परिचित कराना होता है। इस समय सीआरपीएफ जम्मू-कश्मीर व पूर्वोत्तर में विदेशी घुसपैठ रोकने के कार्य में लगे होने के अलावा नक्सल क्षेत्रों में भी तैनात है। हाल के वर्षों में आंतरिक सुरक्षा को लेकर आई चुनौतियों की वजह से सीआरपीएफ को लगातार इधर से उधर तैनात कि आता रहा। इससे बल के काफी कर्मियों की इन सर्विस ट्रेनिंग नही हो पाई है। एक अधिकारी के मुताबिक कई बार यह हुआ है कि

इन सर्विस ट्रेनिंग के लिए दस बटालियनों को चुना गया लेकिन दो से तीन बटालियन ही ट्रेनिंग पर जा पाई। इन सर्विस ट्रेनिंग में आधुनिक हथियार और नई तकनीक वाले उपकरण चलाने के साथ ही डिजिटल मैप पढ़ने की विद्या से भी अवगत कराया आता है।

बिना दूसरी फोर्स आए न हटाएं सीआरपीएफ: उमर

नई दिल्ली जाब्यू: जम्म-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने आंतरिक सुरक्षा पर मुख्यमंत्रि के सम्मेलन के दौरान राज्य में सीआरपीएफ की तैनाती का मामला भी उठाया। उन्होंने केंद्र से अनुरोध किया है कि विभिन्न राज्यों से आईआरपी बटालियन को जल्दी भेजा जाए, ताकि वे सीआरपीएफ की जगह ले सकें। उमर ने कहा कि गृह मंत्रालय पहले ही सीआरपीएफ की पाँच बटालियन को हटाने का आदेश जारी कर चुका है। लेकिन अब तक आईआरपी की सिर्फ एक बटालियन ही पहुंची है। सीआरपीएफ के जवान राज्य के बेहद संवेदनशील इलाकों में तैनात हैं, इसलिए हिमाचल,हरियाणा, पंजाब और उत्तराखंड से आने वाली आईआरपी बटालियनों के पहुंचे बिना सीआरपीएफ को न हटाया जाए।



बिना दूसरी फोर्स आए न हटाएं सीआरपीएफ : उमर

नई दिल्ली, जाब्यू : जम्मू -कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने आंतरिक सुरक्षा पर मुख्यमंत्रियों के सम्मेलन के दौरान राज्य में सीआरपीएफ की तैनाती का मामला भी उठाया। उन्होंने केंद्र से अनुरोध किया है कि विभिन्न राज्यों से आईआरपी बटालियन को जल्दी भेजा जाए, ताकि वे सीआरपीएफ की जगह ले सकें। उमर ने कहा कि गृह मंत्रालय पहले ही सीआरपीएफ की पांच बटालियन को हटाने का आदेश जारी कर चुका है। लेकिन अब तक आईआरपी की सिर्फ एक बटालियन ही पहुंची है। सीआरपीएफ के जवान राज्य के बेहद संवेदनशील इलाकों में तैनात हैं, इसलिए हिमाचल, हरियाणा, पंजाब और उत्तराखंड से आने वाली आईआरपी बटालियनों के पहुंचे बिना सीआरपीएफ को न हटाया जाए।

झारखंड में सात नक्सली गिरफ्तार



झारखंड में सात नक्सली गिरफ्तार

एजेंसी. रांची. झारखंड के रांची और खूंटी जिले के विभिन्न स्थानों से पुलिस ने सात माओवादियों को गिरफ्तार किया है। उनके पास से भारी मात्रा में हथियार और गोलियां बरामद की गई है। इनमें 1100 कारतूस शामिल है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रवीण कुमार ने समाचार एजेंसी को बताया कि केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल और प्रदेश पुलिस के संयुक्त अभियान में शुक्रवार रात जंगलों से यह गिरफ्तारी की गई। उन्होंने बताया कि अभियान के दौरान माओवादी पलटन का स्वयंभू कमांडर डेविड उर्फ बोलू साहू और माओवादी कमांडर कुंदन पहन के निकट सहयोगी को छह अन्य माओवादियों के साथ विभिन्न स्थानों से गिरफ्तार कर लिया गया।

कविता

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल

सि/जीडी कंचन कुमार – 4 बटालियन

27 जुलाई 1939 में जो एक बीज बोया था।
सभी सुरमाओं को जोड़-जोड़ एक मोती में पिरोया था।
आज 69 वर्ष बीता ज्वारों का समंदर लाया है।

कभी सीमा पार, कभी संसद में नजरों से नजरें मिलाया है,
कभी अमन हवा कभी लाचारी में तूफानों से टकराया है।
हर धड़कन है इसकी सरफरोश, फौलादों सी इसकी काया है,
तोड़ गुलामी की जंजीरे उन्मुक्त हवा में लहराया है।

सुबह होती है राम-राम से, शाम होती है बड़े आराम से,
तेरा-मेरा अपना पराया मतलब नहीं है किसी कौम से।
नागालैंड हो या फिर हो मणिपुर, जम्मू कश्मीर की छाया है,
दुश्मनो को अपने घर से भगाकर, सबको अपना बनाया है।

इसमें ना सिख-इसाई या हिन्दु व मुसलमान होता है,
ना उत्तर-दक्षिण, ना पूर्व-पश्चिम, सिर्फ हिन्दुस्तान होता है।
तूफानों से लड़ना, तिरंगा लहराना यह इसकी सच्चाई है,
जब भी दुश्मन सामने आया, उसने मुंह की खाई है।

नाम लेते ही फख से उठता हमारा यह सर,
मत पूछो की हमपे कि होता है क्या असर।
बने जिन्दगी क्यों ना उसकी जब बोले यही सब,
केरिपुबल सदा अजय, भारत माता की जय।

शेप-1

उप.नि.(मं) अमिता शर्मा – ग्रुप केन्द्र-1, अजमेर

मैडिकल का दौर है आया
फिटनस का फण्डा अपनाया।
दौड–भाग कर वजन घटाया
खुद को फिट हमने करवाया।
हुए फिट तो सब भुलाया
हर तरह का खाना खाया।
खाना खाया वजन बढ़ाया
अपने आप को वहीं पर पाया।
भूल गए सब डाक्टर दर्शन
याद रहा बस अपना मन।
करें क्या जाएं कहां हम

अपनी व्यथा सुनाएं कहां हम।
फिटनस को पाएं कहां हम
मन सोच-सोच घबराया।
जीना अपना दूभर पाया
पदोन्नति का समय जब आया।
विभाग ने जब हमको अपनाया
एतराज ना इसका तब जतलाया।
लम्बे अंतराल के पीछे
सेहत का आईना दिखलाया।
आईना जो देखा करते हैं
अन्दर ही अन्दर हम मरते हैं।
जीने की कोशिश करते हैं
पर जीना कहां हमको है आया।
सुधार तो अब आता नहीं है
जिद्दी वजन भी जाता नहीं है।
कम करें कैसे उसको
इसका उपाय कोई बतलाता नहीं है।
हुआ ना ऐसा तो लगता है
राह दूसरी पे जाना पड़ेगा।
वी०आर का आवेदन लगाकर हमको
इस आफत से पीछा छुड़ाना पड़ेगा।
जीवन तो इसका नाम नहीं है
हार जाए वो जवान नहीं है।
कोई तो राह अपनाना होगा
इस मुसीबत को हराना होगा।
हर हाल में साथ निभाना पड़ेगा
दौड़ना और दौड़ाना पड़ेगा।
वजन की सुई को हिलाना पड़ेगा
शेप-1 को पाना पड़ेगा।

“शुक्रिया”

आर पी सिंह, सहायक कमाण्डेन्ट
ग्रुप केन्द्र इंफाल मणिपुर

करूं शुक्रिया तेरा अदा मैं किस तरह हमदम,
तूने मुझे न जाने क्या-क्या सिखा दिया।
गम को देखकर अक्सर डर जाते हैं लोग,
पर वाह रे तूने मुझे गम सहना सिखा दिया।
किसी को प्यार मिल जाए किस्मत है उसकी,
पर न करे कोई, यह कहना सिखा दिया।
तेरी आंखों के जरासे इशारे का करिश्मा,
किसी को जीना तो किसी को मरना सिखा दिया।
कुदरत ने बख्शा है हमदर्द एक सबको,
उसकी नहीं जरूरत मुझे तन्हा रहना सिखा दिया।

“शराब कर देगी जिन्दगी खराब”

हव/जीडी, श्रीराम पाण्डेय, – 174 बटालियन

ये प्यारे तुम मत पियो शराब
पीना है तो, पी ले “संयम शराब”
पीना है तो पी ले “सेवा शराब”
नहीं छोड़ेगा पीना शराब तो कर देगी तेरी जिन्दगी खराब!!
पीना है तो पी ले “अनुशासन शराब”
पीना हैं तो पी ले “सेवा भक्ति शराब”
ये प्यारे तुम मत पियो शराब नही तो हो जायेगी तेरी ‘किड़नी खराब!!
पीना है तो पी लो “मानवाधिकार की शराब”
पीना है तो पी आपसी “भाई चारे की शराब”

यदि नहीं मानेगा तुम और पीता रहेगा रोजेश, भेद भाव, को शराब।
तो निश्चय है कर देगी तेरी नौकरी खराब!!

ये प्यारे यदि तुम पीता रहा इसी तरह शराब,
तो निश्चय है कि कर देगी शराब तेरे साथ तेरे,
बच्चों तथा तेरे परिवार की जिन्दगी खराब!!
मेरे प्यारे तुम मत पी छोड़ दे शराब,
अन्यथा तेरे हो जायेगे लीवर खराब!!

मत पी शराब, मत पी शराब!!



लाइबेरिया में आयोजित अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल मैच के दौरान ड्यूटी करती हुईं बल की महिलाएं



नीमच में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में भाग लेते महानिदेशालय व नीमच स्टेशन के अधिकारीगण



सी.आर.पी.एफ समाचार

नवम्बर 2009



सीआरपीएफ की 70वीं वर्षगांठ परेड का निरीक्षण करते हुए माननीय गृहमंत्री श्री पी. चिदम्बरम

राष्ट्र के शांति प्रहरी



सीआरपीएफ वर्षगांठ पर माननीय गृहमंत्री श्री पी चिदम्बरम को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए बल महानिदेशक श्री ए.एस.गिल



सीआरपीएफ वर्षगांठ समारोह अवसर पर उपस्थित विभिन्न केन्द्रीय पुलिस बलों के प्रमुख एवं अन्य अधिकारीगण।

सीआरपीएफ सामाचार

Vol.21 No.10

नवम्बर 2009

मुख्य संपादकः अजय चतुर्वेदी, **संपादकः** पंकज गुप्ता, **चित्रः** जनसंपर्क फोटो सेल, महानिदेशालय और सीआरपीएफ यूनिट्स, **संपादकीय कार्यालयः** महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, ब्लॉक-1, केन्द्रीय कार्यालय परिसर, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003, **दूरभाषः** 24360649, **महानिदेशक सीआरपीएफ की ओर से मुद्रित और प्रकाशितः** विवा प्रेस प्रा. लि., सी-66/3, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली-110020, दूरभाष: 41611300-31, 9810049515

संपादकीय सलाहकार समिति

अध्यक्षः जे.सी.डुबास, अपर महानिदेशक (मुख्यालय), **सदस्यः** एस.के. सिंह, महानिरीक्षक (कार्मिक), श्रीकांत, महानिरीक्षक (संभरण एवं संचार), एस.आर.ओझा, उपमहानिरीक्षक (प्रशासन), टी.चंद्रशेखर, उपमहानिरीक्षक (कार्मिक), एल.आर.सिधरा, उपमहानिरीक्षक (परिचालन), रविन्द्रतोमर, उपमहानिरीक्षक (प्रशिक्षण), जी.डी. पेवाल, उपमहानिरीक्षक (संभरण), रोज़ी अग्रवाल, उप वित्तीय सलाहकार

सीआरपीएफ समाचार मासिक पत्रिका है जिसमें प्रकाशित किये जाने वाले विचार लेखकों के व्यक्तिगत विचार हैं। विभाग की नीति से इसका कोई संबंध नहीं है।

मुख्य संपादक



सीआरपीएफ की 70वीं वर्षगांठ



सीआरपीएफ परिवार कल्याण प्रदर्शनी



राजपत्रित अधिकारी



द्रुत कार्य बल स्थापना दिवस समारोह

विषय सूची

सीआरपीएफ की 70वीं वर्षगांठ
चिंतन
सीआरपीएफ परिवार कल्याण प्रदर्शनी
कुछ कुछ होता है
सुरक्षा बलों में जवानों द्वारा आत्महत्या की बढ़ती घटनाएँ
द्रुत कार्य बल स्थापना दिवस समारोह
आंखों देखी
आप, हम और हमारा बल
राजपत्रित अधिकारी
शहरी क्षेत्र में गश्त
अनमोल वचन
आपदा प्रबंधन
लालसा
विविध समाचार
खबरों में
कविताएं

रिपोर्ट

सीआरपीएफ की 70वीं वर्षगांठ



वर्षगांठ एक ऐसा अवसर है जब न केवल हम एक वर्ष और अनुभवी हो जाने पर गर्वित होते है बल्कि वर्ष भर की उपलब्धियों और असफलताओं के विषय में आत्ममंथन भी करते हैं।

सीआरपीएफ वर्ष 1939 में गठित “क्राउन रिप्रेजेंटेटिव पुलिस” और आजादी के बाद बदल कर “सेंट्रल रिजर्व पुलिस फोर्स”। इन बीते वर्षों में सीआरपीएफ ने अपना एक मुकाम हासिल किया है। 1000 की संख्या बल से बढ़कर 2,70,000 की संख्या तक पहुंचाने के सफर में बल के वीरों ने जो कुर्बानियां दी हैं, जो कारनामे किये हैं, जो शौर्य प्रदर्शित किया है, जो इतिहास रचा है, उससे बल की एक साख बनी है जो इसे

साधारण से अतिविशेष्ट बनाती है। इस दौरान बल की चुनौतियां व स्वरूप बदला है। सीआरपीएफ ने अपने अंदर ढल जाने की जो क्षमता विकसित की है जो इसे विविधपूर्ण ड्यूटियां निभाने में सक्षम बनाती है। परिस्थितियों के अनुसार बल ने अपने प्रशिक्षण में बदलाव किए हैं, अपने सभी सहायक तंत्रों को अद्यतन किया है। बढ़ती संख्या के लिए उसी अनुपात में प्रबंधन व व्यवस्था का अनुकूलन किया है।

वर्षगांठ एक ऐसा अवसर है जब हम न केवल उपलब्धियों की गणना करते हैं, बल्कि यह ऐसा अवसर भी है जब हम अपनी असफलताओं, चुनौतियों व अपनी रणनीतियों पर चर्चा करते हैं। इनके बारे में आत्मचिंतन करते हैं, आत्ममंथन करते हैं। इस अवसर पर क्या खोया, क्या पाया की तुलना भी करते हैं। सर्वोपरि हर वर्षगांठ पर अपनी संस्था का उम्र एक वर्ष और बढ़ने पर हम अधिक गर्वित महसूस करते है।

वर्षगांठ बल में एक उत्सव के समान है और इसका आयोजन भव्य स्तर पर किया जाता है इसलिए इसकी तैयारी महीनों पूर्व प्रारंभ हो जाती है। परिवहन / फंड की व्यवस्था, परेड, आमंत्रण सूचियां, आयोजन, पत्रिका प्रकाशन व खरीददारी जैसे कार्यों की तैयारी काफी पहले से युद्ध स्तर पर की जाती है ताकि कहीं किसी प्रकार की त्रुटि न हो।

परेड के लिए लम्बे, सजीले जवान व उनके पीछे बैंड बजाते सदस्यों का दल, ये सभी विभिन्न सेक्टरों का प्रतिनिधित्व करते हैं। और अलग-अलग यूनिटों से विशेषकर परेड हेतु चुनकर एक दस्ते के रूप में गठित किए जाते हैं।

कुछ वर्ष पूर्व एक बल की वर्षगांठ नीमच में आयोजित होती थी। अब कुछ वर्षों से इसका आयोजन नई दिल्ली में किया जा रहा है।

इस वर्ष 27 नवंबर को कादरपुर में बल की 70वीं वर्षगांठ का भव्य आयोजन किया गया। इस आयोजन के मुख्य अतिथि माननीय गृह मंत्री श्री पी चिदंबरम थे।

आयोजन स्थल बहुत ही शानदार तरीके से सजा हुआ था। परेड की फोर्ट वाल बहुत बड़ी और सुसज्जित थी जिस पर रंग-बिरंगे ध्वज फहर रहे थे व जिसके उर्ध्व भाग में संतरी तैनात थे। उसके आगे तैयार खड़े अलग रंग की पगड़ियों से सजे जवान व बैंड कर्मी बहुत ही सजीले लग रहे थे। परेड ग्राउंड के बीचों-बीच रंग-बिरंगे फूलों की क्यारियां सुंदर दृश्य प्रस्तुत कर रही थी। इसके ठीक सामने मुख्य अतिथि के मंच के दाहिनी और कुछ भाग में अति विशिष्ट मेहमानों के बैठने की व्यवस्था थी ग्रुप केन्द्र व यूनिटों के कार्मिकों व उनके परिवारों के लिए कुर्सियां व स्टैंड उपलब्ध थे। मंच के लिए कुर्सियां व स्टैंड उपलब्ध थे। मंच की बांयी ओर प्रेस-मीडिया व उसके आगे अधिकारियों व उनके परिवारों के लिए व्यवस्था थी।

मुख्य अतिथि माननीय श्री पी चिदंबरम हेलीकाप्टर से आयोजन स्थल पर पहुंचे। बल महानिदेशक ने उनकी अगवानी की। उसके पश्चात् वरिष्ठ अधिकारियों से उनका परिचय करवाया गया। तत्पश्चात् मुख्य अतिथि ने मंच पर आसन ग्रहण किया।

सीआरपीएफ के विभिन्न सेक्टरों ने परेड में प्रतिनिधित्व किया। इसके अतिरिक्त

आरएएफ की महिलाओं के दस्ते ने भी परेड में शिरकत की। प्रथम बार कोबरा सेक्टर ने भी परेड में प्रतिभागिता की। कोबरा की परेड यूनीफॉर्म को उपस्थित लोगों द्वारा बहुत पसंद किया गया। इसके अतिरिक्त बल के कार्यरत एवं सेवा निवृत खिलाड़ी जिन्होंने राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश व बल का नाम ऊंचा किया है, भी सुंदर नीली पगड़ियों व ड्रेस में परेड के अंत में शामिल हुए।

परेड का स्तर बहुत ही शानदार रहा। बैंड की धुन पर कदम से कदम व हाथ से हाथ मिलाकर परेड करते जवानों ने बहुत ही अनुशासित परेड की। परेड समाप्ति के उपरांत बल महानिदेशक श्री ए.एस.गिल ने संबोधन में माननीय गृहमंत्री का स्वागत किया व परेड का अतिथ्य स्वीकारने पर उनका धन्यवाद किया व बल की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। इसके बाद कार्मिकों को पदक प्रदान किए गए।

इसके बाद केन्द्रीय गृह मंत्री पी चिदंबरम ने परेड को सम्बोधित करते हुए कहा कि देश में बढ़ते आतंकी हमलों और नक्सलवादियों से मिल रही चुनौती के दौर में सीआरपीएफ जवानों को ज्यादा सुरक्षा और सुविधा देने की आवश्यकता है। इस कड़ी में उन्हें आधुनिक हथियारों के साथ आवासीय सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए 8826 क्वाटर बनाएं जाएंगे। इनका निर्माण 2011 तक पूरा कर लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि सीआरपीएफ के जवानों की बहादुरी का जवाब नहीं है। जवानों की हौसला अफजाई करते हुए चिदंबरम ने कहा कि सरकार देश की सुरक्षा को लेकर चितिंत है। यही वजह है कि सेना के आधुनिकरण के साथ जवानों की सुविधाओं का पूरा ख्याल रखा जा रहा है। आज सेना दो मोर्चे पर जूझ रही है। एक और सेवा और पुर्नवास के क्षेत्र में उनकी भूमिका बढ़ रही है तो दूसरे आतंकवादियों और नक्सलियों से भी जूझना पड़ रहा है। कॉमनवेल्थ गेम्स के दौरान भी सीआरपीएफ को कई अहम जिम्मेदारियां निभानी हैं। उन्होंने यह भी कहा कि भारत प्रतिदिन नए आर्थिक आयामों को छू रहा है। इस दौर में देश के सामने बड़ी चुनौती गरीबों के जीवन स्तर को सुधारना है। उन्होंने सीआरपीएफ की महिला बटालियन के द्वारा प्राप्त किए गए पदकों की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि सीआरपीएफ एक ऐसी फोर्स है जिसे जब भी, जहां भी पहुंचने के आर्डर मिले वहीं पर जवानों ने तुरंत मोर्चा संभाला है। इसी जज्बे के कारण सीआरपीएफ के जवानों को अब तक 983 बहादुरी मेडल व 2239 विशिष्ट सेवा मेडल प्राप्त हुए है।

इसके बाद माननीय मुख्य अतिथि को महानिदेशक द्वारा स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। इस वर्षगांठ पर हम एक वर्ष और अनुभवी हो गए। हमने जो अनुभव पाया वह हमारे कार्य करने का आधार और सफलता की पूंजी है। वर्षगांठ उत्सव शानदार और यादगार रहा।

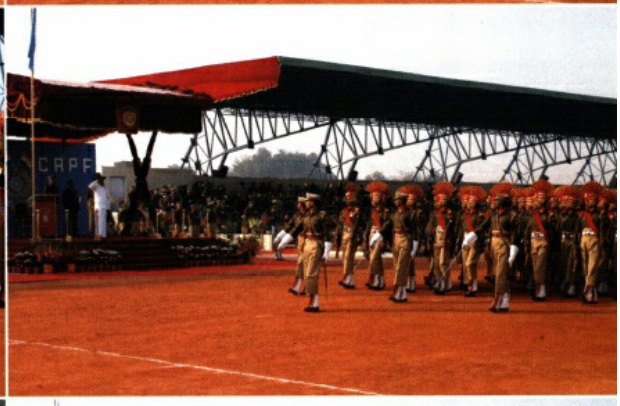
परेड की मुख्य झलकियां



















शहीदों, वीरों और उत्कृष्ट सेवा का सम्मान



70वीं वर्षगांठ पर कॉफी टेबल बुक एवं हॉट स्प्रिंग्स पर बनी फिल्म का विमोचन करते हुए माननीय गृहमंत्री



माननीय गृहमंत्री का सम्बोधन



शहीदों के परिवार जनों, पदक पुरस्कृत अधिकारियों एवं कार्मिकों के साथ माननीय गृहमंत्री



केरिपुबल के 70वें वार्षिकोत्सव परेड के अवसर पर महानिदेशक का सम्बोधन

परम आदरणीय गृह मंत्री श्री पी चिदम्बरम जी, गृह सचिव श्री जी के पिल्लई जी, सेवानिवृत्त महानिर्देशकगण, डायरेक्टर आई बी, विभिन्न बलों के प्रमुख, गणमान्य अतिथिगण, बल परिवार के सदस्यगण, मीडिया बन्धुओं, देवियों व सज्जनों।

केरिपुबल के 70वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर मैं आप सभी का हार्दिक स्वागत व आभार प्रकट करता हूं।

केन्द्रीय गृहमंत्री माननीय श्री पी चिदम्बरम जी आपने व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद आज के इस शुभ अवसर पर उपस्थित होकर हमें अनुगृहित किया है। इसके लिए मैं सीआरपीएफ की ओर से तहे दिल से धन्यवाद अर्पित करता हूं। महोदय, देश के

गृहमंत्री के कार्यभार ग्रहण करते ही आपने आंतरिक सुरक्षा की समस्याओं पर खास ध्यान दिया और अलगाववादी तथा विघटनकारी शक्तियों से निपटने के लिए कारगर कार्यक्रम को एक नई दिशा प्रदान की। आपने केन्द्रीय बलों के पुनर्गठन के लिये तुरन्त कदम उठाये व जरूरी साजो सामान जल्द से जल्द उपलब्ध कराने के लिये विशेष निर्देश देकर उपलब्ध करवायें व साथ ही राज्य पुलिस बलों को अपने स्टाफ में बढ़ोत्तरी व कार्य क्षमता बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। इसी के फलस्वरूप देश के पुलिस बल लगातार अपनी योग्यता व क्षमता बढ़ाने में कामयाब हो रहे हैं। पुलिस बलों को और पुलिसिंग को आपके मार्ग निर्देशन से बहुत अधिक गति मिली है। सभी पुलिस बल आपकी इस पहल से कृतज्ञ हैं।

विगत वर्षों में हमारे पूर्ण महानिदेशकों जिनमें से कई यहां उपस्थित हैं, ने सीआरपीएफ के लिए सपने संजोए। इन्हीं महानुभावों के मार्गदर्शन के फलस्वरूप आज सीआरपीएफ दुनियां का सबसे बड़ा व बहुआयामी बल है। मैं अपने बल के इन पूर्वजों को तहेदिल से यहां पधारने के लिए धन्यवाद करता हूं।

वर्तमान में सीआरपीएफ शांति-व्यवस्था, साम्प्रदायिक दंगे, उग्रवाद, आतंकवाद, जंगल वारफेयर, आपदा प्रबंधन, विशिष्ट व्यक्तियों व महत्वपूर्ण संस्थानों की सुरक्षा और चुनाव आदि जैसी कई प्रकार की ड्यूटियां कर रहा है। दुनियां में ऐसा और कोई बल नहीं है जो कि इतना बहुआयामी है और रातों-रात अपने आप को एक भूमिका से दूसरे भूमिका में बदल लेता है तथा लगातार कठिन से कठिन इलाकों में सालों साल बिना ब्रेक के तैनात रहकर अपने कर्तव्य एवं दायित्वों को पूरे मन, हिम्मत व मेहनत से बखूबी पालन करता हैं।

सीआरपीएफ का 70 साल का छोटा सा इतिहास सेवा, बहादुरी व बलिदान की गाथा है। चाहे उत्तर पूर्व का अलगाव हो, 1965 व 1971 का युद्ध हो, पंजाब व कश्मीर का आतंकवाद हो, चुनावों में व्यवस्था हो, इस बल के अधिकारियों व जवानों ने तन मन से मेहनत कर देश की एकता व अखण्डता को अक्षुण्ण रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसने अपने इतिहास में 01 अशोक चक्र, 01 वीर चक्र व 07 शौर्य चक्र सहित 1025 वीरता पदक प्राप्त किये हैं व अब तक 1716 अधिकारियों व जवानों ने देश के लिए बलिदान दिया है।

2009 में बल की टुकड़ियों के साथ मुठभेड़ों में 179 खूंखार आतंकवादी मारे गए व 1715 पकड़े गए।

विगत वर्ष में हमने अपने परिचालनिक कामकाज में कई सुधार किए हैं जैसे कि - अधिकारीगण ऑपरेशन को Closely monitor व lead कर रहे हैं, जवानों तथा अधिकारियों के बीच में नजदीकियां बढ़ी हैं, हर एक जवान को अपने कार्य में सुधार लाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। तीनों थियेटर की समस्याओं को देखते हुए उन क्षेत्रों में थियेटर Specific विशेष ट्रेनिंग कराई जा रही है। ट्रेनिंग कम्पनियों की तैनाती बंद कर दी गई है और उन्हें पूरे समय के लिए ट्रेनिंग को Field Specific व व्यवहारिक किया गया। इससे बल की व्यावसायिक दक्षता व मनोबल में वृद्धि हुई है।

वरिष्ठ अधिकारियों को लगातार इलाकों में भेजकर बटालियन की काबिलियत देखी गई व सुधार लाया गया। Area Specific Operational Strategy बनाकर व Operational tactics की कार्य योजना बनाकर सुधार के निरन्तर प्रयास किये गये। नई टेक्नोलोजी व नये उपकरणों को शामिल किया गया है।

बटालियनों का Annual Change Over बंद कर दिया गया है। इस से ऑपरेशनल एरिया में कामकाज में Continuity आएगी व इलाके, विघटनकारी शक्ति और उग्रवादियों के बारे में अधिक जानकारी हासिल होगी जिससे कि Operational performance का स्तर ऊंचा होगा।

फिलहाल बल का प्रधान कार्य C.I. Operations है और जंगल वारफेयर उसका एक हिस्सा है। देश के तीन इलाकों में सीआरपीएफ को आतंकवाद तथा उग्रवाद से लड़ना पड़ रहा है। इसके थियेटर Specific CIAT स्कूल होना जरूरी है। जल्द से जल्द नक्सलवादी इलाके के लिए उसी इलाके में एक CIAT स्कूल बनाना अति आवश्यक है। इसके लिये प्रस्ताव सरकार के पास विचाराधीन है।

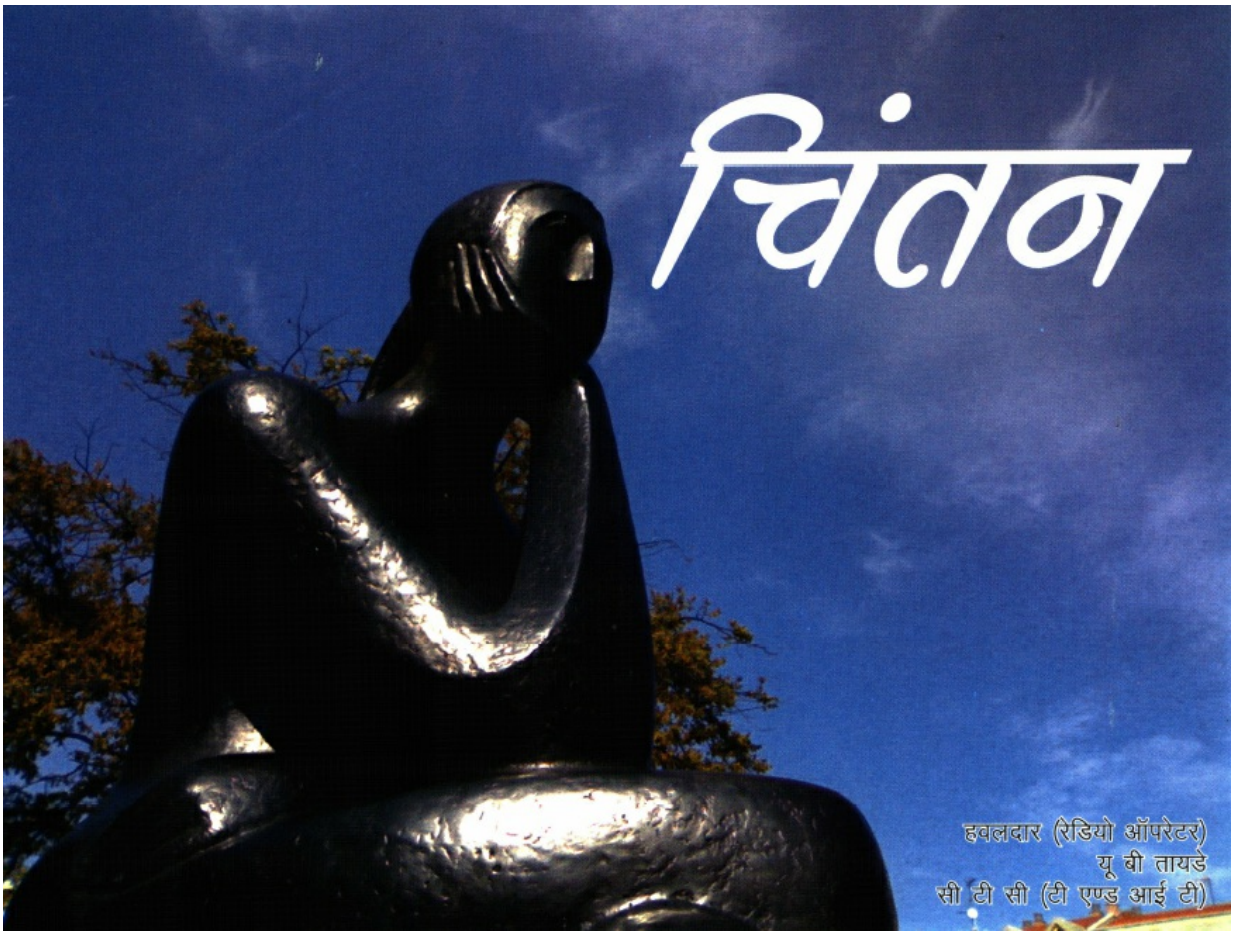
बल अभी 2,75,000 से अधिक Strength के साथ काफी बड़ा हो चुका है जिसकी वजह से बल में विशेष महानिदेशकों के पद के साथ तीन Zones भी बनाए गए हैं। Zonal Special DG को अपने Operational Administrative Role का कार्यकारी निर्वहन के लिए मजबूत करने की आवश्यकता है, ताकि इन पदों का सृजन सार्थक हो सके। इस विषय पर एक प्रस्ताव गृह मंत्रालय में विचाराधीन है।

आंतरिक सुरक्षा से संबंधित कई चुनौतियां राष्ट्र के समक्ष हैं, इन सभी चुनौतियों का सामना करने के लिए सीआरपीएफ को ड्यूटी पर लगाया जा रहा है। सीआरपीएफ की विभिन्न प्रकार की ड्यूटियों को ध्यान में रखते हुए सीआरपीएफ में Specialisation की आवश्यकता महसूस की जा रही है। चुनौतियां बहुत ही विशिष्ट और विभिन्न है जिनका समुचित सामना करने की आवश्यकता है और यह Specialisation से ही सम्भव है।

महोदय CRPF के जवान लगातार देश के दूरगामी प्रांतों में तैनात रहकर हर एक प्रकार के अलगाववादी, आतंकवादी व उग्रवादियों से जूझ रहे हैं। लम्बे समय तक परिवार से दूर रहकर मूलभूत सुविधाओं का अभाव होते हुए भी व्यापक खतरों के बीच विपरीत परिस्थितियों में इस बल के अधिकारी तथा जवान अपने प्राणों की परवाह नहीं करते हुए ड्यूटी दे रहे हैं। मैं पूरे बल की तरफ से आश्वासन देता हूँ कि हम राष्ट्र सेवा में पूर्णतया समर्पित रहते हुए प्रत्येक उत्तरदायित्व को सक्षमता के साथ निभाते हुये अच्छी output देने के लिए दृढ संकल्प रहेंगे।

धन्यवाद

जय हिन्द।



हमेशा अपने कार्य करो। कर्म से कभी भी मुंह न मोड़ो। कर्म शरीर के द्वारा की गई भगवान की सर्वोत्तम प्रार्थना है। जब हम हमेशा कार्यशील होंगे तभी जीवन में निरन्तर ताजगी और अटूट दिलचस्पी मिल सकती है और भीतरी विकास निरन्तर होता रहेगा। कर्म वह आईना है जो हमारा स्वरूप हमें दिखा देता है। इसलिए हमें कर्म का अहसानमंद होना चाहिए। जो व्यक्ति निश्चय कर लेता है, उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं है। परिश्रम ईश्वर की उपासना है। जिस कार्य को तुम कर सकते हो या कल्पना करते हो कि तुम कर सकोगे, उसको आरंभ करो, साहस में प्रतिभा, शक्ति और जादू है। सिर्फ काम में जुट जाओ, आरंभ करो, कार्य समाप्त होगा। तुम्हें कई कठिनाइयां आएंगी। कठिनाइयां हमें आत्मज्ञान कराती हैं, वह हमें दिखा देती है कि हम किस मिट्टी के बने हैं। मानव जीवन में लगन बड़े महत्व की चीज है। जिसमें लगन है, वह बूढा भी जवान है, जिसमें लगन नहीं, वह जवान भी मृतक है। किसी कठिन काम में सफल हो जाना, आत्मविश्वास के लिए संजीवनी के समान है। बहुत ज्यादा आराम स्वयं दर्द बन आता है। मनुष्य के लिए जीवन में सफलता का रहस्य हर आने वाले अवसर के लिए तैयार रहना है। काम करने में जिसे आनन्द नहीं मिलता, उसकी कृति में सुन्दरता कैसे आ सकती है। लेकिन याद रखो कर्म के लिए भक्ति का आधार होना आवश्यक है।

हमेशा ज्ञान अर्जित करने की कोशिश करो। लेकिन यदि हमारा उद्देश्य शुभ न हो

तो ज्ञान पाप हो जाता है। हम अपनी कोशिश में गिर सकते हैं। यदि हम गिरते हैं तो अधिक अच्छी तरह चलने का रहस्य सीख जाते हैं। ज्ञान का सार यह है कि ज्ञान में अपनी अज्ञानता स्वीकार कर लेनी चाहिए। ज्ञानी व्यक्ति के सिद्धांत हमेशा पवित्र लाभों में प्रतिफलित होते हैं। ज्ञान के साथ-साथ अहंकार का विकास मत होने दो क्योंकि ईश्वर व्यक्ति को दिमाग से नहीं दिल से नापता है। ज्ञान से चरित्र परिवर्तित नहीं होता, विचार परिवर्तित होते हैं, किन्तु चरित्र विकसित किया जाता है। ज्ञानी लोग सबसे ज्यादा क्षमाशील और झगड़ों से बचने के लिए प्रयत्नशील होते हैं।

मानव जीवन में व्यक्ति महत्वाकांक्षी होता है। हमारी अनगिनत इच्छाएं होती हैं। हम सोचते हैं जो हमें चाहिए वही हो जाए। जब हमारा मन असंतुष्ट हो जाता है तो हमें क्रोध आता है। क्रोध सदैव मूर्खता से शुरू होता है तथा पश्चाताप पर समाप्त। क्रोध जब अपने आवेग पर होता है तो दिल में अशोभनीय भावना जन्म लेती है। कोई अशोभनीय भावना न रखने में ही जीवन का रहस्य निहित है। इस जीवन में हमारे साथ कई बुरी बातें हो सकती हैं। बुरी बातों को भूल जाना चाहिए। बुरी बातों को ही देखते रहेंगे तो इंसान हैवान बन जाएगा। हमारी कोई निन्दा करता है तो हमें क्रोध आता है। निन्दा करने वाले व्यक्ति को तो अपने पास रखना चाहिए क्योंकि वह बिना साबुन पानी के ही हमारा स्वभाव निर्मल कर देता है। मनुष्य को कभी भी तुच्छ विषयों पर विचार नहीं करना चाहिए, यदि वह उन्हीं में उलझा रहेगा तो महान कार्य यूं ही रह जाएंगे।

जब क्रोध आए तो उसके परिणाम पर विचार करो। गुस्से में हो तो बोलने से पहले दस तक गिनो। अगर बहुत गुस्से में हो तो सौ तक।

हम जीवन में हमेशा डरते रहते हैं। डर से आत्म शांति समाप्त होती है और तनाव का जन्म होता है। ईश्वर से डरो, ईश्वर से डरने वाले को और किसी का क्या डर है ? ईश्वर हमें पराजय निश्चित होने पर भी लड़ने की हिम्मत देता है अगर हम उस पर पूरा विश्वास करते हैं क्योंकि विजय निश्चित हो तो कोई बुजदिल भी लड़ सकता है। हमेशा याद रखो संसार में हमारे तीन मित्र होते हैं : एक वह जो हमसे प्यार करता है, दूसरा वह जो हमसे घृणा करता है और तीसरा वह जो हमारे प्रति तटस्थ है।

चोरी से कोई धनवान नहीं बन सकता दान से कोई कंगाल नहीं हो सकता। थोड़ा-सा झूठ भी कभी छिप नहीं सकता यदि हम सच बोलेंगे तो सरल प्रकृति और सब जीव हमारी सहायता करेंगे और मन का डर समाप्त होगा। मनुष्य का सबसे बड़ा धन उसका चरित्र है। अच्छा चरित्र हमें स्थिरता प्रदान करता है। दूसरों का जो आचरण तुम्हे पसन्द नहीं है, वैसा आचरण दूसरों के प्रति मत करो। अगर हम सोचेंगे कि आज का दिन फिर कभी नहीं आएगा तो हम सकारात्मक जिएंगे। हमारा व्यवहार ऐसा होना चाहिए जैसा हमने आज ही करना है लेकिन कर्म ऐसे होना चाहिए जैसे आपने सौ वर्ष जीवित रहना है। संसार में सबसे बड़ा अधिकार सेवा और त्याग से पैदा होता है। न कोई जन्म से निर्दोष है और न दोषी। यह सब परिस्थितियों पर निर्भर है। वह सुखी है जो अपने स्वभाव को परिस्थिति के अनुकूल बना लेता है। अपनी वर्तमान

खुशियों को इस तरह भोगो कि भावी खुशियों को क्षति न पहुंचे।

जिन्दगी में यह देखो कि वह कितनी अच्छी है न कि यह कितनी लम्बी है। हम सब मानते हैं कि जिन्दगी जीने के लिए आगे ही देखना चाहिए, लेकिन उसे समझने के लिए तो पीछे भी देखना पड़ेगा। मेरे विचार से परमात्मा की सबसे बड़ी देन प्रेम है जिससे मनुष्य की समस्त दुर्बलताओं पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। किसी भी महान व्यक्ति की पहली पहचान उसकी नम्रता है। हमारे जीवन में शान्ति ठीक वहां से शुरू होती है, जहां महत्वाकांक्षा का अन्त होता है। हमारे सभी आभूषण घिसते हैं, लेकिन हमारी वाणी ही एक ऐसा आभूषण है जो कभी घिसती नहीं जब हम कायमरूपी सो जाते हैं तो उसे मृत्यु कहते हैं, जिस पर लोग रोते हैं, फिर भी हम एक-तिहाई जीवन सोने में गुजार देते हैं। विपत्ति से मत डरो क्योंकि विपत्ति से बढ़कर अनुभव सिखाने वाले कोई विद्यालय आज तक नहीं खुले।

जय हिन्द
जय भारत





सीआरपीएफ परिवार कल्याण प्रदर्शनी

सीआरपीएफ परिवार कल्याण प्रदर्शनी का आयोजन पिछले कुछ वर्षों से नियमित रूप से किया जा रहा है। इसक उद्देश्य यह की बल के परिवार कल्याण केंद्रों में कावा द्वारा विभिन्न व्यवसायिक प्रशिक्षणों की व्यवस्था बल कार्मिकों के परिवार की महिला सदस्याओं के लिए की जाती है और उन केंद्रों पर निर्मित सामान को बिक्री हेतु प्रदर्शनी तक लाय जाए ताकि न केवल विभिन्न प्रदेशों में तैयार विभिन्न प्रकार के उत्पाद बल के अन्य परिवारों तक पहुंचे अपितु इस बिक्री से स्थानीय परिवार कल्याण केंद्रों की आय बढ़े जिसका अंततः फायदा बन कार्मिकों के परिवारों को होगा। इसके अतिरिक्त इसके आयोजन से कावा द्वारा विभिन्न राज्यों के केंद्रो की गतिविधिये को देखने का अवसर प्राप्त होता है व केंद्रों के प्रतिनिधियों से भविष्य के। योजनाओं पर भी सार्थक चर्चा होती है, उनकी समस्याओं को सुना, समझा व हल किए जाने के उपायों पर भी विचार किया जाता है।

इस वर्ष तीन दिवसीय वार्षिक परिवार कल्याण प्रदर्शनी का आयोजन आर के पुरम के सेक्टर-12 में किया गया।

इस प्रदर्शनी में ग्रुप केंद्रों, आरएएफ, प्रशिक्षण केंद्रों, कावा आदि के स्टाल लगाए गए। इस बार वार्ब ने भी अपना स्टाल लगाने की शुरूआत की। इन स्टालों पर न केवल परिवार कल्याण केंद्रों द्वारा तैयार सामान बिक्री हेतु उपलब्ध था बल्कि संबंधित

राज्यों के प्रसिद्ध उत्पाद भी बिक्री हेतु लाए गए थे। कुछ केंद्रों द्वारा संबंधित राज्यों के पारंपरिक अंदाज में ही अपने स्टालों की सजावट की गई थी व कार्मिकों द्वारा उसी प्रदेश की पारंपरिक वेशभूषा धारण की गई थी, जो बहुत आकर्षक थी और ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों पूरा भारत एक छोटे से प्रागंण में साकार हो उठा हो।

दिल्ली व आस-पास के क्षेत्र में स्थित कार्यालयों / केंद्रों द्वारा अपने कार्मिकों व उनके परिवारों को प्रदर्शनी स्थल तक लाने की विशेष व्यवस्था की गई थी, जिसके कारण प्रदर्शनी में आए परिवारों का उत्साह देखते ही बनता था।

इस प्रदर्शनी का उद्घाटन दिल्ली प्रदेश की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित द्वारा किया गया। उन्होंने कई स्टालों पर जाकर परिवार कल्याण केंद्रों द्वारा निर्मित सामान को देखा और उसकी प्रशंसा की।

अपने संबोधन में श्रीमती दीक्षित ने कावा के इस प्रयास की भरपूर प्रशंसा की और कहा कि उनके इस प्रयास का असर बल कार्मिकों के परिवारों की आय पर होगा और उन्हें स्वावलंबी बनाएगा। उन्होंने कहा कि वे इससे पहले भी प्रदर्शनी में आ चुकी हैं व उन्होंने पाया है कि सभी मायनों में पिछली बार से कावा ने हर क्षेत्र में बेहतरी की है।

इस अवसर पर संबोधित करते हुए कावा अध्यक्षा श्रीमती मंजीत गिल ने कहा कि हमारे अधिकांश जवान परिवारों से दूर रहते है और उनकी अनुपस्थिति में घर की महिलाओं पर गृह प्रबंधन की जिम्मेदारी आ जाती है जिसमें केंद्रीय परिवार कल्याण समिति (कावा) अपनी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से परिवारों की सहायता बहुत अच्छी प्रकार से कर रही हैं। इसके अतिरिक्त कावा एचआईवी / एड्स जागरूकता का कार्य बहुत बढ़िया तरीके से किया जा रहा है। इस अवसर पर सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल के छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में रैफल ड्रा भी निकाला गया जिसमें प्रथम पुरस्कार मारूति 800 कार था, जो मुख्य आकर्षण का केंद्र था।

इस प्रदर्शनी से प्राप्त मुनाफा जवानों के परिवार कल्याण में खर्च किया जाएगा।




स्वागतम्
वार्षिक परिवार कल्याण प्रदर्शनी वर्ष 2009
समूह केन्द्र के.रि.पु.बल कादरपुर, गुड़गांव (हरियाणा)
समूह केन्द्र
के रि पु बल
गुड़गांव
हरियाणा


WELFARE


परिवार कल्याण केन्द्र
समूह केन्द्र, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, कादरपुर






CRPF WIVES WELFARE
2009





कुछ कुछ होता है

अनिल गुप्ता उप-कमाण्डेन्ट
आरएएफ मुख्यालय

“हैल्लो, चार्ली पीटर जरा एक मिनट वेट करना, देखना सेवन अल्फा साहब को बताना एयरपोर्ट पर कुछ हो गया है।”

सेट पर आवाज आयी और मेरा दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। मैं जब तक श्रीनगर में रहा, अन्य सभी लोगों की तरह अपनी रायफल और सेट हमेशा अपने सिराहने रख कर सोता रहा। कुछ हो न जाए, इस अंदेशे से हमेशा मन में कुछ न कुछ होता रहता। न रात को ढ़ंग से नींद आती, न खाने का मन करता। ये दूसरी बात है कि हमेशा कुछ हो जाने के बाद यह अहसास जरूर करा दिया जाता कि जो कुछ हुआ हमारे कुछ न करने की वजह से हुआ। अगर हम समय से कुछ कर देते, तो शायद इतना कुछ न होता जो हो गया। अब भले ही यह कुछ भूसे के ढेर में आग लगना हो, या किसी सड़क हादसे में किसी का मर जाना हो। अगर हम इस सबको होने से टालने में कुछ कर नहीं सकते थे, तो कम से कम इस खबर को तो उपर तक पहुंचाने में कुछ कर ही सकते थे।

कितनी बड़ी फजीहत हो गयी। इलाके में इतनी बड़ी आग लग गयी, इतना बड़ा हादसा हो गया और बड़े दफ्तर को खबर अखबार से मिली, हमारा तो होना न होना बराबर है। बात सही थी, सिवाए सिर झुकाए चुपचाप जी सर, जी सर करने के और

कोइ उपाय न था। क्रोध तो ऊपर से नीचे की तरफ बहता है, ऊपर से झाड़ सुनी, नीचे वालों को सुना दी।

“अरे तुम लोगो को डूब मरना चाहिए, आप लोगों की वजह से कितनी बातें सुननी पड़ती है, आप लोगों को कुछ होता है या नहीं।”

“होता है न सर, बहुत बार होता है, बहुत कुछ होता है, बस हम कुछ कर नही पाते।”

“क्या होता है? क्या नहीं कर पाते?”

“जब हमारी मां बीमार होती है और उसकी बीमारी के तार को छुट्टी का बहाना समझ लिया जाता है तो दिल में कुछ नहीं, कुछ-कुछ होता है।”

“जब कमांडेंट साहब के दौरे के दौरान हमारी चारपायी के नीचे से कूड़ा निकलता है और डांट आपको पड़ती है, तब भी कुछ होता है।”

“जब ड्यूटी के दौरान किसी को चोट लगती है, तब कुछ होता है।”

“जब किसी साथी को अस्पताल, दोस्त को कंधे पर उठा कर ले जाते है तब कुछ होता है।”

“जब किसी सिरफिरे द्वारा फेंके गये ग्रेनेड से अपनी आंखो के सामने किसी मासूम को दम तोड़ते देखते है, आपको क्या बताए, तब हमारे दिल में क्या कुछ होता है।”

“यही नहीं सर, होता तो और भी बहुत कुछ है, जब काम हम करते हैं, और शाबासी किसी और को मिलती है तब हमारे दिल में क्या कुछ गुजरता है, आप नही समझ पायेगें।”

“जब बात तो बड़ी-बड़ी होती है, मगर मौके पर कहीं सुनवाई नहीं होती, तब दिल में कुछ-कुछ होता है।”

“जब बूढ़ा हवलदार अपने सीने को पकड़कर कराहता है, मगर उसके दर्द को काम न करने का बहाना समझ लिया जाता है, तब कुछ होता है।”

“जब हम मन से आपके लिए कुछ करते है, और हमारे काम को शक की नजर से देखा जाता है, तब कुछ होता है।”

“और तो सब कुछ ठीक है सर , मगर जब मैदाने जंग में हम जान की बाजी लगाकर दुशमन को मार गिराते है, और तगमा कोई और ले आता है तब कुछ होता है।”

“बेशक आपकी नजरों में हम निकम्मे, ड्यूटी से जी चुराने वाले, रात-दिन रोटी तोड़ने और सोने वाले, मैस, लाईन और कैम्प की सफाई न रखने वाले हो, मगर आप देखिएगा, जब कभी मौका आएगा तो हम क्या कुछ नहीं कर जाएंगे।”

“हमारे तो हर काम को शक की नजर से देखा जाता है सर, अगर इजाजत हो तो एक शेर सुनाऊं?”

उनकी बातें सुन कर अब तक मेरे दिल में भी कुछ-कुछ होने लगा था, मैंने कहा, “सुनाइए।”

“सर ये हम सब की तरफ से आपके लिए है, सुनिए—

“करने चले थे होम, मगर हाथ जल गये,

हम यों हंसे कि आंख से आंसू निकल गये।

दिखते हैं यहां आज सबसे पीछे वो ही लोग,

मरने के रोज जो मौत से आगे निकल गये।”

मुझे लगा हमेशा चुप रहने वाले, कड़े अनुशासन और प्रशिक्षण में ढले हमारे जवान हाड़-मांस से बने मात्र धैर्य के पुतले ही नहीं है। उनका एक भावनात्मक पक्ष भी है। एक दिल भी है और उस दिल में कुछ-कुछ होता भी है। हमारी यह धारणा गलत है कि यहां कुछ नहीं होता, यहां कुछ नहीं हो सकता।

पुलिस शहीद दिवस

बल और शहादत का चोली-दामन का साथ है। हमारे हजारों जवानों ने अपना फर्ज़ निभाते हुए इस देश के लिए कुर्बानी दी है। अपनी जांबाजी और हिम्मत से ऐसी मिसालें दी है जो पुलिस इतिहास में स्वर्णाक्षरों में दर्ज़ हैं। इनकी दिलेरी और कारनामों को सुनकर हर देशवासी को गर्व होता है और दिल में श्रद्धा उत्पन्न होती है। इनकी शहादत के जज्बे का ऐसा असर होता है कि आज भी लोग देश सेवा करने के लिए भर्तियों में उमड़ पड़ते हैं।

ऐसा ही पुलिस इतिहास में एक कारनामा दर्ज है जो 21 अक्टूबर 1959 को हुआ जहां लद्दाख के हॉट स्प्रिंग में चीनी सेना के हमले में देश की रक्षा करते हुए सीआरपीएफ के दस जवान शहीद हुए थे। इन वीरों की याद में प्रत्येक वर्ष पूरे देश में सभी पुलिस बलों के राज्य पुलिस बलों द्वारा ‘पुलिस शहीद दिवस’ मनाया जाता है जिसमें इन शहीद वीरों के साथ-साथ वर्ष भर में शहीद हुए सभी जवानों के नाम पढ़े जाते हैं, उन्हें याद किया जाता है वे उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की जाती हैं

इस वर्ष 21 अक्टूबर 2009 को भी ग्रुप केन्द्र झड़ौदाकलां में पुलिस शहीद दिवस के अवसर पर बल के अधिकारियों व अन्य रैंकों द्वारा ‘शहीद स्मारक पर वर्ष में शहीद हुए पुलिस कार्मिकों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस दौरान सीआरपीएफ के शहीदों सहित सभी पुलिस शहीदों के नाम पढ़े गए।



सुरक्षा बलों में जवानों द्वारा आत्महत्या की बढ़ती घटनाएँ कारण और निवारण

उप निरीक्षक/मं केदार सिंह, रामपुर रेंज कार्यालय

भारतीय परिप्रेक्ष्य में आत्महत्या एक महत्वपूर्ण विषय है, क्योंकि भारतवर्ष में प्रत्येक वर्ष एक लाख से अधिक लोग आत्महत्या करते हैं। इसी प्रकार अर्द्धसैनिक बलों में भी आत्महत्या एवं होमीसाइड के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। सामान्यतः यह माना जाता है कि तनाव के कारण अर्द्धसैनिक बलों के जवान आत्महत्या कर लेते है या अपने ही साथी जवानों व अधिकारियों की हत्या कर देते है। इसी पहलू के दृष्टिगत् वर्ष 2004-2005 में तनाव प्रबन्धन अर्थात् "Stress Management" पर गृह, मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा श्री एस आर मेहरा, अपर महानिदेशक, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की अध्यक्षता में एक कमेटी का गठन किया गया था। श्री मेहरा की अध्यक्षता में गठित कमेटी ने अर्द्धसैनिक बलों के जवानों द्वारा विगत वर्षों में की गयी आत्महत्याओं एवं

जवानों द्वारा अपने ही साथी जवानों व अधिकारियों की हत्या करने संबंधी मामलों की गहन जांच पड़ताल की थी। कमेटी ने अपनी जांच में तनाव का मुख्य कारण जवानों को समय पर अवकाश ना मिल पाना तथा लगातार लम्बे समय तक परिवार से दूर तनाव पूर्ण परिस्थितियों में कार्य करने को पाया था तथा जवानों के तनाव को कम करने के भी अनेकों सुझाव दिये।

श्री एस आर मेहरा कमेटी द्वारा बताये गये तनाव के कारणों से असहमत नहीं हुआ जा सकता, लेकिन आधुनिकीकरण, पूंजीवाद एवं भूमण्डलीकरण के कारण समाज में जो बदलाव आये हैं उनका जवानों के पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन पर सीधा असर पड़ा है जिसके कारण बलों के जवान डिप्रेशन के शिकार हो रहे हैं तथा तनावग्रस्त रहने लगे हैं। इसमें जवानों से लेकर अधिकारियों तक सभी शामिल हैं।

वर्ष 1994 में कोलंबिया विश्वविद्यालय, अमेरिका के एसोसिएट प्रोफेसर द्वारा न्यूयार्क पुलिस के जवानों द्वारा की जाने वाली आत्महत्याओं का अध्ययन किया गया था, जिसमें मुख्यतः यह पाया गया था कि "जो जवान आत्महत्या कर रहे हैं उन्हे यह नहीं मालूम कि उनकी समस्याओं का समाधान कैसे होगा इसलिए हताशा में आत्महत्या जैसा घातक कदम उठा रहे हैं" लेकिन आत्महत्या का इतना कारण ही मान लेना उचित नहीं है। हमें उन कारणों का पता लगाना होगा जिसके कारण एक जवान इतना निराश, दुःखी एवं हताश हो जाता है कि वह अपने आपको ही कष्ट देने लगता है और अन्ततः अपनी जान दे देता है।

राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वर्ष 2007 में हुई आत्महत्याओं के आंकड़ों के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि भारत में आधुनिकीकरण, पूंजीवाद एवं भूमण्डलीकरण के कारण सामाजिक —आर्थिक, सामाजिक-दार्शनिक तथा सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्र में बहुत तेजी से बदलाव हुए है जिसके कारण जीवन में तनाव बढा है। आधुनिकीकरण एवं भूमण्डलीकरण का ग्रामीण जीवन एवं समाज पर भी व्यापक असर पड़ा है।

अर्द्धसैनिक बलों के लगभग 85 प्रतिशत जवान ग्रामीण पृष्ठभूमि से आते हैं। वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में सबसे महत्वपूर्ण बदलाव यह आया है कि संयुक्त परिवारों का बिखराव हो रहा है जोकि व्यक्ति को भावनात्मक सहयोग एवं स्थायित्व प्रदान करता था। एकल परिवार होने के कारण सभी दायित्वों का निर्वाह करने की जिम्मेदारी व्यक्ति विशेष पर आ जाती है। उससे अपेक्षा की जाती है कि वह परिवार, रिश्तेदार एवं समाज के सभी दायित्वों का निर्वाह करें, लेकिन अर्द्धसैनिक बलों में नौकरी की परिस्थितियों के कारण जवान लम्बे समय तक परिवार से दूर रहते हैं। परिणामस्वरूप, वे अपनी सामाजिक एवं पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वाह पूरी तरह से नहीं कर पाते जिसकी उनसे अपेक्षा की जाती है। परिचालनिक गतिविधियों या प्रशासनिक कारणों से ना तो उन्हें समय पर अवकाश मिल पाता है और ना ही उनके पास पर्याप्त पैसा होता है जिससे वे अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह कर सकें। परिणामतयः जवान डिप्रेशन एवं तनाव का शिकार हो जाता है।

राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के आंकडों से यह स्पष्ट होता है कि देश में व्यस्क व्यक्तियों में आत्महत्या की ऊंची दर सामाजिक-आर्थिक कारणों से जुडी हुई है। भारत की आम जनता द्वारा की गयी आत्महत्याओं के वर्ष 2007 के आंकड़ों के अनुसार 15 से 29 वर्ष की आयु के 351 प्रतिशत तथा 30 से 44 वर्ष की आयु के 34.1 प्रतिशत लोगों ने आत्महत्या की। इससे स्पष्ट है कि कुल आत्महत्या करने वाले व्यक्तियों में से लगभग 70 प्रतिशत व्यक्ति 15 से 44 वर्ष की आयु वर्ग के हैं। उसी प्रकार अर्द्धसैनिक बलों में भी आत्महत्या या होमीसाइड करने वाले लगभग 99 प्रतिशत जवान लगभग 20 से 44 वर्ष की आयु के ही हैं। यही वह आयु वर्ग है जिसमें व्यक्ति पर परिवार एवं समाज के प्रति उत्तरदायित्वों का निर्वाह करने का सबसे अधिक दबाब रहता है, इसलिए एक जवान इस आयु वर्ग में उलझी हुई पारिवारिक एवं सामाजिक परिस्थितियों से गुजरता है।

अर्द्धसैनिक बलों के अधिकतर जवान परिवार से दूर हिंसा एवं आतंकवाद से ग्रस्त क्षेत्रों में तैनात हैं। उनकी ड्यूटी की कोई निश्चित कार्य अवधि नहीं हैं। वे अनिश्चित एंव अनियमित ड्यूटी का निर्वाह करते हैं। उनके आराम या सोने का भी कोई निश्चित समय निर्धारित नहीं हैं जिसके कारण अर्द्धसैनिक बलों के अधिकतर जवान डिप्रेशन के शिकार है तथा तनावग्रस्त हो रहे हैं। ऐसी अवस्था में जब कोई जवान अपने पारिवारिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्वों का पालन अपनी सेवा संबंधी परिस्थितियों के कारण समय पर अवकाश ना मिलने, आर्थिक स्थितियों या अन्य किन्हीं कारण से नहीं कर पाता है तो वह काफी निराशा का अनुभव करता है। यह वह स्थिति है जिसमें व्यक्ति का स्वयं के ऊपर नियंत्रण समाप्त हो जाता है और वह घोर निराशा की अवस्था में आत्महत्या या होमीसाइड जैसा घातक कदम उठा लेता है।

अर्द्धसैनिक बलों के जवानों द्वारा की जाने वाली आत्महत्याएं एंव होमीसाइड की घटनाओं को केवल उनकी संख्याओं के आधार पर कम करके नहीं आंका जा सकता। वास्तव में स्थिति इससे भी भयावह है जिसके अन्दर हम झांकने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। यदि मनोवेज्ञानिक परीक्षण करवाये जाएं तो हमें पता चलेगा कि केन्द्रीय पुलिस बल में ही लगभग 70 प्रतिशत से अधिक जवान व अधिकारी तनावग्रस्त व डिप्रेशन के शिकार है। हमें ऐसे कदम उठाने होंगे जिससे हमारे अधिकारी एवं जवान तनावमुक्तता के साथ अपने सभी कर्तव्यों व दायित्वों का पालन कर सकें। इसके लिए हमें निम्नलिखित कदम उठाने की आवश्यकता है:—



1. हमें अपने प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का पुर्नगठन करना चाहिए। प्रशिक्षण के दौरान ही प्रशिक्षु को परिवार एवं समाज से दूर रहने पर जीवन में आने वाली चुनौतियों से निपटने के बारे में प्रशिक्षित किया जाये। डिप्रेशन, निराशा एवं तनाव से बचने के पाठ्यक्रमों को प्रशिक्षण का हिस्सा बनाया जाये।

2. आज भी हम अपने अधिनस्थों द्वारा कोई गलती करने पर या उनसे कोई कार्य कराने के लिए आदिम युगीन मानदण्डों का प्रयोग कर रहे हैं। पहले बलों में अनपढ़ या बहुत ही कम पढ़े लिखे युवा आते थे, लेकिन आज की परिस्थितियां बदली हुई है। हमें मानव प्रबन्धन की पुरातन व्यवस्था को छोड़कर नये तरीके सीखने होंगे। राजपत्रित अधिकारियों के प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में मानव प्रबन्ध जैसे विषयों को प्रमुखता देनी होगी, क्योंकि उनके ऊपर बल की दोहरी जिम्मेदारी है, पहले उन्हें स्वयं को निराशा एवं तनाव से बचाना होगा और फिर अपने अधिनस्थ कार्यरत् अधिकारियों एवं जवानों को। उन्हें अपने आपको कार्यालयों तक सीमित रखने के बजाय जवानों के साथ सीधा संवाद स्थापित करने के तरीके सिखाये जाने चाहिए ताकि वे जवानों के साथ व्यवहारिक एवं पारस्परिक संबंधों का विकास कर सकें। उन्हें अपने अधीन तैनात जवानों की घरेलू एवं सामाजिक समस्याओं को जानने का प्रयास करना तथा उन्हें हल करने में उनकी हर संभव सहायता करनी चाहिए।

3. राजपत्रित अधिकारियों के ऊपर बल के नेतृत्व की अहम जिम्मेदारी है, लेकिन काफी अधिकारी भी जवानों की ही भांति डिप्रेशन एवं तनाव के शिकार है। ऐसे में यह सहज ही अनुमान- लगाया जा सकता है कि जब हमारा नेतृत्व ही डिप्रेशन एवं तनाव का शिकार होगा तब उनका अपने जवानों के प्रति व्यवहार एवं आचरण कैसा होगा। वे कैसे अपने अधिनस्थ अधिकारियों एवं जवानों को डिप्रेशन एवं

तनाव से दूर रख पायेंगे। इस विषय में गंभीरता से सोचना होगा। यदि हमारा नेतृत्व डिप्रेशन एवं तनाव से मुक्त होगा तो यह निश्चित है कि उनके व्यवहार में अमूल-चूल परिवर्तन आयेगा जिसका सीधा असर निचले स्तर के अधिकारियों एवं कार्मिकों के व्यवहार एवं आचरण पर पड़ेगा।

4. आम समाज की तरह ही हमारे बलों में अविश्वास का माहौल पैदा हो गया है और लगातार इसमें बढ़ोत्तरी हो रही है। कोई भी व्यक्ति किसी पर विश्वास नहीं कर रहा है जिसके कारण अनेकों समस्याएं पैदा हो रही हैं। ऐसे वातावरण में बिना ठोस आधार के ही व्यक्ति एक-दूसरे के बारे में अनावश्यक भ्रांतियां पाल लेता है और धीरे-धीरे यही भ्रांतियां गंभीर घटनाओं को जन्म दे देती है। इसलिए हमारे राजपत्रित अधिकारियों एवं अधिनस्थ अधिकारियों का कर्तव्य है कि वे रोल कॉल आदि में ऐसे विषय पर जवानों के साथ लगातार चर्चा करें तथा परस्पर विश्वास बहाल करने का वातावरण बनाने का प्रयास करें।

5. प्रशिक्षण प्रोग्राम में योग एवं आध्यात्मिकता को शामिल किया जाये ताकि परिवार से दूर हिंसा एवं आतंकवाद से ग्रस्त क्षेत्रों में, अनिश्चित एवं अनियमित कार्यावधियों के बीच कार्यरत् अपने जवानों को निराशा, डिप्रेशन एवं तनाव का शिकार होने से बचाया जा सके।

6. बल के अराजपत्रित वर्ग में समयबद्ध प्रणाली लागू की जाये ताकि एक जवान को 18 से 20 वर्षों तक एक ही पद पर बने रहने से होने वाली घोर निराशा से बचाया जा सके तथा उसके मन में भविष्य के प्रति आशावादिता का संचार किया जा सके।

7. अर्द्धसैनिक बलों में कम्पनी स्तर पर अक्सर भाषा एवं क्षेत्र के आधार पर होने वाले ध्रुवीकरण को रोका जाये। ऐसे प्रयासों में शामिल कार्मिकों को तत्काल प्रभाव से स्थानान्तरित कर दिया जाना चाहिए।

8. अधिकारियों एवं कार्मिकों की पारिवारिक एवं सामाजिक जरूरतों को दृष्टिगत् रखते हुए उदार अवकाश व्यवस्था विकसित की जाये।

9. मनोवैज्ञानिकों, मनोचिकित्सकों एवं औषधिशास्त्रवेत्ताओं की मदद से डिप्रेशन एवं तनाव के शिकार जवानों एवं अधिकारियों के उपचार की उचित व्यवस्था की जानी चाहिए।

10. प्रत्येक जवान एवं अधिकारी को उसके पूरे सेवाकाल में कम से कम तीन अनिवार्य एच्छिक तैनाती दी जाये ताकि वह अपने पारिवारिक एवं सामाजिक दायित्वों का निर्वाह कर सकें।

द्रुत कार्य बल स्थापना दिवस समारोह



द्रुत कार्य बल ने अपनी स्थापना के 17 वर्ष पूरे कर लिए हैं। स्थापना के लिहाज से भले ही यह बल नया है परंतु इसी दौरान इस बल ने अपना एक मुकाम हासिल किया है। द्रुत कार्य बल ने 7 अक्टूबर को 105 बटालियन कोयम्बतूर में अपना 17 वां स्थापना दिवस मनाया। श्री ए.एस.गिल महानिदेशक सीआरपीएफ ने परेड की सलामी ली व निरीक्षण किया।

1992 में गठित द्रुत कार्य बल ने 17 वर्षों में अपना एक स्थान, एक मुकाम हासिल किया है। दंगो से निपटने के लिए गठित इस बल ने अपनी उपयोगिता और महत्व ने केवल देश में सिद्ध किया है बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी है, कोसोवो और अब लाईबेरिया जैसे संयुक्त राष्ट्र शांतिरक्षक मिशनों में हिस्सा लिया है । यद्यपि स्थापना के अनुसार यह बहुत युवा है परंतु अनुभव और उपलब्धियों के लिहाज से देखें तो यह बहुत अनुभवी बल है। इसमें पूरे बल से चुने हुए कार्मिकों की तैनाती की जाती है। यह एक निष्पक्ष बल के रूप में जानी जाती है।

इस अवसर पर महानिदेशक ने अपने संबोधन भाषण में द्रुकाब की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला और कहा कि लाईबेरिया में इस बल दस्ते को विश्व स्तर पर पहचान मिली है व वहां भी ख्याति व सम्मान अर्जित कर रही है। उन्होंने यह भी कहा कि संयुक्त राष्ट्र ने न केवल इस मिशन की अवधि बढ़ाने का निर्णय लिया है, अपितु एक पुरूष दस्ते की भी मांग की इसलिए एक पुरूष बल भी भेजा गया। इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी कहा कि द्रुकाब के लिए एक प्रशिक्षण केंद्र की आवश्यकता महसूस की जा रही है जिसके लिए आवश्यक कदम शीघ्र उठाए जाएंगे।

इससे पूर्व अपने स्वागत भाषण में द्रुकाब के महानिरीक्षक श्री जे.सी.डबास ने इस अवसर पर समारोह की शोभा बढ़ाने के लिए सभी को धन्यवाद दिया।

आंखों देखी


17TH RAF ANNIVE
RAPID ACT
07 अक्टूबर
009
BATTALION
MBAT




बल का












BHOPAL
DELHI
AMBALA
COIMBATORE
GUWAHATI


FIRE





स्थापना दिवस समारोह



आप, हम और हमारा बल

निरीक्षक ए के मिश्रा
162 बटालियन,

इस लेख के द्वारा बल के सभी सदस्यों का अभिवादन करता हूं। हमारा बड़ा सौभाग्य है कि हमें महान बल के सदस्य होने का गौरव प्राप्त हुआ है। अकसर हमने पाया है कि हमारे बल के जवान पद से सिपाही होने के साथ ही मन से भी अपने आपको सिपाही / हवलदार मान चुके हैं। मन से तात्पर्य है सही टर्न आउट नही, उत्साह नही, मायूस, हताश, ड्यूटी के प्रति उदासीन, ड्यूटी पर खड़े हो और पूछो क्या हो रहा है? बस टाइम पास कर रहे हैं, सर।

इस टाइम पास के चक्कर में हम अपना कर्तव्य निर्वाह करना भूल जाते है क्योंकि हम टाइम पास कर रहे होते हैं और हम पर ग्रेनेड फेंका जाता है और टाइम हमें पास कर देता है।

बहुत दुःखद है कि बल का वर्चस्व जितना बड़ा बल है, उसके बराबर बन नहीं पा रहा है, जिसके लिये हममें से ऐसे ही हमारे स्वजन जवाबदार / जिम्मेदार हैं चाहे उनका कोई भी पद क्यों न हो। जो भी अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर रहा या अपने कार्य में पारदर्शिता नहीं रखता, उदासीनतापूर्वक / पक्षपात पूर्वक कार्य करता है, ऐसे लोग या तो घर से उदास, निराश हैं उन्हें सपोर्ट नहीं मिल रहा है या अपने सर्विस से संतुष्ट नही है। ऐसे लोग सफलता तो चाहते है पर उसके लिये पूरी कोशिश नहीं करते। अपने ड्यूटी, कम्पनी के बारे में, यहां तक अपने बारे में पोजीटिव नहीं सोचते बल्कि आई जी साहब ने यह नही किया, कमाण्डेन्ट साहब यह गलत कर रहे हैं

वगैरह-वगैरह। ऐसे स्वजनों से मेरा अनुरोध है कि अपने जीवन को रिफ्रेश करें।

अपने जीवन, परिवार के बारे में सोचें। उनके जिन्दगी में कहां से तनाव है, कहां से परेशानी है, परिवार का कौन सा स्तम्भ उन्हें भयभीत कर रहा है, उसका क्या निराकरण हो सकता है या अपने जीवन को कैसे बेहतर बनाये। इसके साथ इन पर भी थोड़ा विचार जरूर करें :—

1 जीवन में सबसे महत्वपूर्ण है 'समय' जो बीत गया कभी वापस नहीं आयेगा, इसलिए समय के पाबन्द बनें। यह आपके जीवन में नीरसता को समाप्त करने का अमोघ मंत्र है।

2 प्रत्येक दिन / माह-साल की योजना बनायें। योजना / कामों को उसके महत्व के अनुरूप निर्धारित करें।

3 अपने किये हुए कार्यों की समीक्षा करें जिससे समय के सदुपयोग का जायजा ले सकें। यह आपको लक्ष्य के प्रति उत्साहित / प्रेरित करेगा। हर कार्य को 100% मन लगा कर करें जिससे उस कार्य में दुबारा समय, पैसा, परिश्रम न लगाना पड़े।

4 अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ संकल्प रहे। यही आपको लक्ष्य तक पहुंचाने का मूल पावर / ताकत होगी।

5 जीवन में उतार-चढाव आता रहता है। बिना दुःख के सुख का कोई महत्व मालूम नही होगा। दुःख से भयभीत मत होओ, याद रखो चिंता और चिता मे मात्र एक बिन्दी का फर्क है, इसलिए तनाव मुक्त रहे। सदा मुस्कराते रहो यह आपको अच्छा स्वास्थ्य देगा।

6 अपने प्रतिभा, गुणों को न छिपाये। इसका सदुपयोग करें। इसमें आपका कभी नुकसान नहीं होगा। विनम्र बनें, विनम्रता ही मनुष्य का गहना है न कि अहंकार। हम सभी जानते है कि हम जैसा सोचते हैं– वैसा करते हैं, जैसा करते हैं – वैसे बनते हैं, इसलिए हमेशा अच्छा सोचें। अच्छा सोचोगे तो– अच्छा करेंगे, अच्छा करेंगे तो – आपको अच्छा बनने से – आगे बढ़ने से कौन रोक सकता है।

7 आपका एक अच्छा दोस्त अच्छी किताब है। धर्म के प्रति आस्था आपको सही रास्ता दिखाएगी। ध्यान रखें अपना लक्ष्य अपने सामर्थ्य के अनुसार ही बनायें। यदि आप निराश-हताश -उदास हैं और आप अपने सर्विस मे रूचि नही ले रहे हैं, परिवार से सहयोग नहीं मिल रहा है, आपको यदि ऐसा लगता है तो अपने अधिकारी से समस्या से निजात पाने हेतु बात करें तो शायद उपरोक्त बातें भी आपके जीवन में जान फूंके और आप एक बार पुनः सदाबहार जीवन में प्रवेश कर सकेंगे। आप खुश, उत्साहित रहेंगे तो हर कार्य अच्छा ही करेंगें। जाहिर है कि आप अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे और आपके ही सर्तकता, उत्तरदायित्व के निर्वाह से ही हमारे बल का नाम रोशन होगा।

व्यंग्य



राजपत्रित अधिकारी

मनीश कुमार सच्चर
द्वितीय कमान अधिकारी
168 बटालियन

महाभारत की रणभूमि का हृदय विदीर्ण कर देने वाला दृश्य भीष्म पितामह बाणों की शैया पर पड़े कराह रहे हैं गुरू द्रोण का धड़ सर से अलग पड़ा है। गांधारी के सौ पुत्र क्षत्रियत्व के मार्ग पर अपने प्राण न्यौछावर कर चुके हैं, अंगराज अपने यश की अग्रिम गाथा छोड़कर वीरगति को प्राप्त हो चुके हैं।

इस मर्म दृश्य के बीच अर्जुन अपने सखा वासुदेव के साथ अपने रथ पर खड़ा है।

अर्जुनः- हे वासुदेव, आपकी प्रेरणा से मैं क्षात्रेय धर्म का पालन कर इस धर्म युद्ध में लड़ सका। मेरे ज्ञान चक्षु खुल चुके हैं और मैं मोह माया के बन्धन से मुक्त हो चुका हूं। तो क्या अब मृत्यु के उपरान्त मुझे मोक्ष की प्राप्ति और मै इस मरण के बन्धन से मुक्त हो पाऊंगा।

वासुदेवः- पार्थ यूं तो तू बहुत हद तक मोह माया के बन्धन से मुक्त हो चुका है परंतु अभी पूरी तरह से नहीं हुआ है। पूरी तरह से मोह माया के बन्धन से मुक्त होने के लिए तूझे कलयुग में एक बार फिर जन्म लेना होगा। तूने पूरे युद्ध में मेरे आदेशों का भली-भांति पालन किया है इसलिये उस जन्म में तू आदेशों का पालन करते करते मोह माया के सम्पूर्ण बन्धनों से मुक्त होगा। तेरे जीवन का उद्देश्य होगा "सेवा और भक्ति" और उस जन्म मे तू सीआरपीएफ का राजपत्रित अधिकारी कहलायेगा।

अर्जुनः- वासुदेव मैं तनिक भ्रमित हो रहा हूं। कृपया मुझे विस्तार से बताये कि उस जन्म में मेरी वेशभूषा कैसी होगी, मेरी चाल ढाल कैसी होगी और मैं दिखूंगा कैसा।

वासुदेवः- हे पार्थ, तेरी वेशभूषा मूल रूप से खाकी होगी परंतु इस विषय में तेरा चिन्तन तय करना आवश्यक नहीं है क्योंकि तेरी बुद्धि भ्रमित के लिए हर Pay Commission तेरी वेशभूषा थोड़ी बहुत परिवर्तित होती रहेगी, कभी खाकी टोपी, कभी नीली टोपी, कभी कम्बेट ड्रेस और कभी नीली डांगरी परंतु बहुत जल्द तू, इस बात से परिचित हो जायेगा कि वेशभूषा के परिवर्तन से तेरे कार्यक्षेत्र अथवा तेरी मूल प्रकृति में कोई परिवर्तन नहीं आता है अतः यह तेरी पहली विजय होगी जब तेरी बुद्धि भ्रमित होना बन्द कर स्थिर हो जायेगी। जहां तक चाल ढाल का प्रश्न है तो उस जन्म में तू कई प्रकार की चालें चलेगा जैसे धीरे-चाल, बंदर-चाल, चीता चाल जुज ए और चीता चाल जुज बी। इन सब चालो को चलने के कारण तू न मानव रह जायेगा और न जीव, और समाज के अल्प बुद्धि लोगों की समझ से तू बाहर हो जायेगा। इसके अतिरिक्त अभिवादन के रूप में तूझे विमान या चिडिया आसन सीखना होगा जिसमें तू अपने हाथ पीछे लेजाकर पंजों बल पर उठेगा और सबका अभिवादन करेगा इसका अर्थ होगा कि तू जल्द ही मोक्ष प्राप्त करके एक विमान की भांति उड़ जायेगा।

अर्जुनः- हे सखा, आपने बौद्धिक भ्रम पर विजय का मार्ग तो मुझे दिखा दिया। परंतु इसके पश्चात मैं काम, क्रोध, लोभ मोह अहंकार पर कैसे विजय प्राप्त करूंगा।

वासुदेवः- पार्थ, यह सब भी समय के साथ होता रहेगा। विभाग में तेरे पदापर्ण के साथ तुझे बेसिक ट्रेनिंग करवाई जायेगी जिसमें तूझे बल का अधिकारी बताकर और भारतीय संहिता की न जाने कितनी किताबें पढ़ाकर तुझमें अहंकार कूट-कूटकर भरा जोयगा। ट्रेनिंग के बाद कम्पनी में जाकर तू अपनी कम्पनी का नरेश यानि कम्पनी कमाण्डर कहलायेगा। तेरी तिलकोत्सव होगा और तेरे हाथ में 30 दिन का अर्दली रूम करने जैसी दण्डनीय शक्ति और महीने में दस रूपये का चूना खरीदने जैसी वित्तीय शक्ति होगी। अहंकार में भरा हुआ तू अपनी दण्डनीय शक्तियों का भरपूर उपयोग करेगा। यहां तक कि आततायी होकर तू लोगों की विभागीय जांच भी करवायेगा और वारंट आफ अरेस्ट भी निकालेगा। परंतु तेरे वारंट आफ अरेस्ट पर

पुलिस कभी किसी को पकड़कर नहीं लायेगी और विभागीय जांच के बयान दर्ज करते-करते तू इतना परेशान हो जायेगा कि तूझे अपनी यह शक्तियां व्यर्थ लगने लगेंगी और यहीं पर तू, अपने अहंकार पर विजय प्राप्त करेगा। रही अपने घर के काम की बात, तो जब भी तुझे काम होगा तो तुझे समय पर छुट्टी नहीं मिलेगी। इस तरह से तेरा परिवार और निकट संबंधी तुझ पर निर्भर रहना बन्द कर देगें और तेरे काम समाप्त हो जाएंगे। अतः तू काम पर भी विजय प्राप्त कर लेगा।

अर्जुनः-वासुदेव, अब कृपया लोभ, क्रोध और अहंकार पर विजय प्राप्त करने के विषय में भी मेरे ज्ञान चक्षु खोलने की कृपा करें।

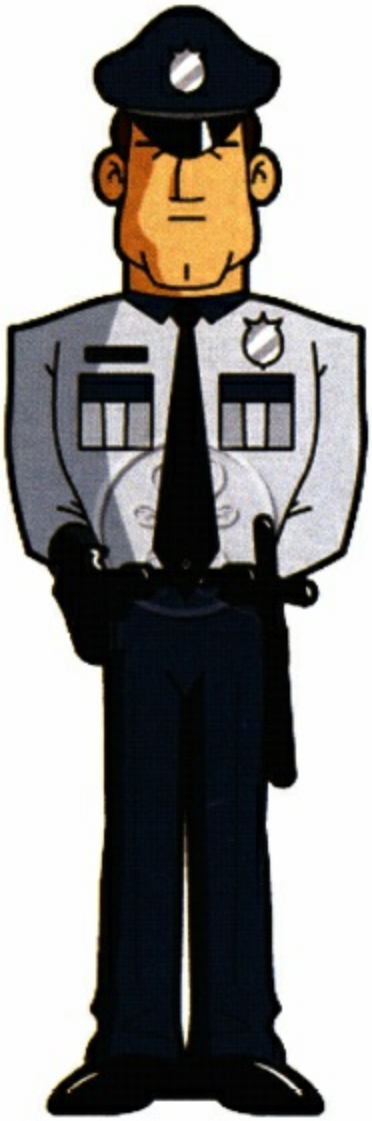
वासुदेवः- पार्थ, कम्पनी नरेश के कार्यकाल में तू उब जाये इससे पहले तेरी पदोन्नति हो जायेगी। तू उप-कामाण्डेन्ट के पद पर आसीन होगा और बटालियन मुख्यालय में तेरा राज्यभिषेक होगा। इस पर आरूढ़ होकर तु पूर्ण तथा दिशाविहीन हो जायेगा। कभी एडज्युटेन्ट बनाया जायेगा जहां तेरे पास कोई भी दण्डात्मक शक्ति न होते हुए भी तू बटालियन का दण्डपाल कहलायेगा। तुझे हर व्यक्ति को डांट-फटकार कर अथवा उसमें लालच एवं भेद उत्पन्न कर उससे काम लेना होगा। तुझे कलयुग की प्रबन्धन नीतियों का सम्पूर्ण ज्ञान होगा और वास्तविकता यह है कि तू महाधूर्तों की श्रेणी में गिना जायेगा। यदि ऐसा करने में तू असफल रहा तो उप-कमाण्डेन्ट परिचालन बनाकर दूर किसी कम्पनी में प्रवास करेगा। वहां पर तेरी अवस्था अज्ञातवास वाली होगी क्योंकि अगर तू कम्पनी में उपलब्ध मिला तो अपने राजा यानि कमाण्डेन्ट के क्रोध का पात्र बनेगा। अतः तू प्रयास करेगा कि तू जंगल में ही रहे तथा तू कहां है इसका ज्ञान किसी को न हो। नक्सलियों को पकड़ने से पहले तू उनके पीछे भागेगा। और उनके पकड़े जाने के पश्चात् सिविल पुलिस के पीछे भागेगा फोलायिंग अप एक्शन के लिए।

अर्जुनः-हे केशव, इस भयंकर अवस्था के विषय में सोचकर तो मेरा हृदय कांपा जा रहा है। क्या इससे बचने का कोई मार्ग नहीं है।

वासुदेवः- पार्थ, तू कर्मयोगी है अतः मार्ग तू स्वयं ही ढूंढेगा। समय के साथ तू अपने कमाण्डेन्ट के साथ अच्छे सम्बन्ध बनायेगा और वह तूझे बटालियन मुख्यालय नामक महल में क्वार्टर मास्टर बनाकर बुला लेगा। इस पद पर आरूढ़ हो तू इन्द्र के समान वैभवशाली एवं कुबेर के समान सम्पदावान होगा। सफाई के झाड़ू से लेकर मोची की कील तक और फिनायल से लेकर ई पी आई पी टेन्ट तक सब कुछ तेरे ही अधिकार क्षेत्र में होगा। हालांकि इसमें से कोई भी वस्तु तेरे काम की नहीं होगी अतः तेरा लोभ धीरे-धीरे समाप्त होने लगेगा। हां इस पद के लिए मेरी यह शिक्षा है तुझे कि कभी तेरे किसी वरिष्ठ अधिकारी का सुरक्षा सहायक यदि कोई वस्तु मांगे तो बिना प्रश्न उसे दे देना वर्ना तुझे फिर से उप कमा परिचालन बन अज्ञातवास को जाना पड़ेगा। इसके पश्चात् तू पदोन्नत होकर द्वितीय कमान अधिकारी बनेगा। इस पद पर आरूढ़ होकर तू अपनी वाहिनी के जलपान गृह यानि कैन्टीन में समोसे, कचौड़ी, डोसा नमकीन मिठाई इत्यादि बनवायेगा। वाहिनी का पूरा सामरस यानि स्पुनवत भी तेरे अधिकार में

होगा। इस सबके अतिरेक्त तू साबुन तेल उस्तरा इत्यादि भी बिकवायेगा। राज बाले के समान तेरी प्रसिद्धि होगी और तू देवी अन्नपूर्णा के साक्षात रूप में वाहिनी का वेलफेयर आफिसर कहलायेगा। परंतु पार्थ ध्यान रहे, अगर तू इस पद पर आरूढ़ होकर पथ भ्रष्ट हुआ तो शीघ्र ही तेरा फेयरवेल हो जायेगा। इतनी धन सम्पदा को भोगते-भोगते तेरा लोभ लगभग समाप्त हो जायेगा।

अर्जुन:-हे केशव, क्या राजपत्रित अधिकारी की इस योनि में मैं मोह और क्रोध पर भी विजय प्राप्त कर सकूंगा।



वासुदेव:- हां पार्थ, तू उन पर भी विजय प्राप्त कर लेगा, क्योंकि इसके पश्चात् तुझे कमाण्डेन्ट यानि महाराजाधिराज पद पर पदान्नत किया जायेगा। हालांकि पदोन्नति से पहले फिल्ड पीरियड़ तथा स्थाई आदेश 4 / 2000 जैसे कितने ही असुर तेरी पदोन्नति

में बाधा उत्पन्न करेंगे परंतु अपनी वीरता के बल पर तू इन सभी असुरों पर विजय प्राप्त करेगा और पदोन्नत हो जायेगा। तू पे बैन्ड 4 में आ जायेगा परंतु वास्तविकता यह है कि तेरा बैंड बज जायेगा। तेरी यह अवस्था अत्यन्त जटिल होगी क्योंकि तेरे राज्य का सम्पूर्ण भार एवं उत्तराधिकार तुझ पर ही होगा। तुझे अवकाश भी परिचालनिक आज्ञा आप्स क्लियरेन्स के पश्चात ही मिल पायेगा। ऐसी अवस्था में हर बार अपने परिवार एवं सम्बन्धियों में तेरा मोह जागेगा और टूटेगा और तुझे क्रोध भी आयेगा परंतु तीन-चार बार ऐसा होने के बाद तुझे क्रोध आना बन्द हो जायेगा। अपने परिवार को तू जब अपने छुट्टी आने के बारे में बतायेगा तो वह लोग तुझ पर विश्वास करना बन्द कर देंगे और धीरे-धीरे तू अपनी बटालियन को ही अपना घर एवं परिवार समझने लगेगा। अतः अपने परिवार और संसार के प्रति तेरा मोह भी स्वतः समाप्त हो जायेगा और इस अवस्था में तू काम, क्रोध, मोह और अहंकार से रहित मोक्ष प्राप्ति के योग्य एक सन्यासी बन जायेगा।

अर्जुनः-मैं नमन करता हूं आपको कि आपने मुझे मोक्ष प्राप्ति का यह सुगम मार्ग बतलाया। जब जब धर्म की हानि होती है तब तब आप वास्तव में प्रकट होकर हम जैसे प्राणियों को मोक्ष का मार्ग बताते हैं। आपको मेरा नमन है वासुदेव, नमन है।

शहरी क्षेत्र में गश्त

निरीक्षक(म) हुकम सिंह,
23 बटालियन

बदलते परिवेश में आज सरकार, सशस्त्र सेनायें, पुलिस तथा सुरक्षा बल जिसमें केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल भी शामिल है, उग्रवादियों तथा आतंकवादियों से निपटने हेतु विभिन्न तरह के अभियानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सीमित संसाधनों के चलते प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से सुरक्षा देना संभव नहीं है, ऐसे में प्रभावी गश्त द्वारा न केवल आदमी के दिल में सुरक्षा की भावना पैदा की जा सकती है बल्कि सुरक्षा बलों की विभिन्न पोस्टों के बीच पड़ने वाले रास्ते भी सुरक्षित किये जा सकते हैं।

गश्त क्या है ?:

बल की किसी भी टुकड़ी के सुनियोजित ढंग से घूमने तथा उग्रवादियों / आतंकवादियों / अवांछनीय तत्वों को समाज विरोधी कार्यवाई करने से रोकने को ही गश्त कहते है।

उद्देश्यः

सरकारी संपत्ति एवं लोगों की सुरक्षा करना, अपराधियों की गतिविधियों पर नजर रखना, लोगों का विश्वास जीतकर सूचना प्राप्त करना, समाज विरोधी तत्वों की गतिविधियों को कम करना, अचानक नाके बदलना, मौका मिलने पर कैसा भी आपरेशन कर देना, इलाके की जानकारी एवं अपना प्रभाव बनाना।

वर्तमान में 23 बटालियन जम्मू-कश्मीर राज्य में आन्तरिक सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था बनाये रखने हेतु श्रीनगर में कार्यरत है।

ऐसे मे आतंकवादी तत्वों को भीड़ से अलग कर पहचानना बड़ा मुश्किल है। फिर भी इस समस्याओं पर बेहतर जानकारी हासिल करके वांछित सफलता पाई जा सकती है, जैसे-छुपाव की जगह, विद्रोहियों की पहचान, मिलाप के साधन, पुख्ता खबरें, कमाण्डर का नियंत्रण।

गश्त के प्रकार :

पैदल तथा वाहन द्वारा गश्त। गश्त के संचालन के समय ब्रीफिंग, फारमेशन सुरक्षा, रास्ता, डी0 ब्रीफिंग खतरा या फायर होने पर कार्यवाई आदि बाते ध्यान रखनी चाहिए।

आतंकवादी/उग्रवादियों के खिलाफ प्रभावी गश्त का प्रयोग एक अचूक नुस्खा है। जरूरी है, कि हम अपनी गश्त पार्टी को इस तरह का प्रशिक्षण दें ताकि जरूरत पड़ने पर बिना समय गंवाये, यह पार्टी घेरा लगा सके, सर्च कर सके, नाका लगा सके। तथा अम्बुश लगाकर सूचनानुसार कार्यवाई कर वांछित परिणाम प्राप्त कर सके।



अनमोल वचन

निरीक्छक (मं) हुकुम सिंह
23 बटालियन

- उत्तम प्रशिक्षण ही जवानों का सबसे बड़ा कल्याण है।
- प्रशिक्षण से अनुशासन का जन्म होता है और अनुशासन ही प्रत्येक संस्था की बुनियाद होती है। अतः किसी भी संस्था की बुनियाद को मजबूत रखने के लिए प्रशिक्षण आवश्यक है।
- दुनियां में ऐसा कोई पैमाना नहीं बना है और न ही कोई मापने वाला यंत्र जो मां की ममता, पृथ्वी की सहन शक्ति तथा शहीद की शहादत को माप सके।
- मृत्यु उसी की होती है, जो स्वयं के लिए मरता है, देश के लिए मरने वाला शहीद कहलाता है।
- विद्या के समान दूसरा कोई धन नहीं है, सत्य के समान कोई तप नहीं है।
- असफलता केवल यह सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयत्न पूरे मन से नहीं हुआ।
- ईश्वर पर विश्वास न करने वाला ही नहीं, वह भी नास्तिक है जो अपने ऊपर विश्वास नहीं करता है।
- सज्जन व्यक्ति नारियल के समान होते है, जो बाहर से कठोर और अंदर से कोमल, इसके विपरीत दुर्जन व्यक्ति बेर के समान होते है, जो बाहर से कोमल लेकिन अंदर से कठोर।
- मनुष्य का आभूषण रूप है, रूप का आभूषण गुण है, गुण का आभूषण ज्ञान है एवं ज्ञान का आभूषण नम्रता एवं क्षमा है।
- उच्च विचार रखने वालों का बुरी संगति कुछ नहीं बिगाड़ सकती, जिस प्रकार चंदन के वृक्ष में भुजंग का वास होता है, लेकिन उस पर भुजंग के विष का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
- सच बोलने का सबसे बड़ा फायदा यह है बोलने के बाद यह याद नहीं रखना पड़ता है कि क्या बोला था।
- उन्हे मत सराहो जिन्होने अनीति पूर्वक सफलता पाई हो और संपत्ति कमाई हो।
- सचित, गुरू और वैद्य ये तीनो यदि का राज्य, धर्म और शरीर तीनों नष्ट हो जाते हैं। राजा के भय से उसके अनुकूल प्रिय वचन बोलते है तो उस राजा का राज्य, धर्म और शरीर तीनों नष्ट हो जाते हैं।
- मंदिर तोड़ दो, मस्जिद तोड़ दो गिरिजा तोड़ दो गुरूद्वारा तोड़ दो तब भी ईश्वर तुम्हे माफ कर देंगे, लेकिन किसी का दिल तोड़ने वाले को वे कभी माफ नहीं

करते हैं, क्योंकि उसमें साक्षात ईश्वर का वास होता है।

- जिसने पहली अवस्था में विद्या, दूसरी अवस्था में धन, तीसरी अवस्था में पुण्य नहीं कमाया, वह चौथी अवस्था अर्थात् बुढ़ापे में कुछ नहीं कर सकता।
- सार्थक और प्रभावी उपदेश वह है जो वाणी से नहीं आवरण सप्रस्तुत किया जाता है।
- अग्नि में राग द्वेष नहीं है, उसके पास जो जाता है, उसकी ठंड दूर होती है, अन्य की नहीं। इसी प्रकार जो ईश्वर की शरण में आता है, उसका बंधन काटता है, अन्य का नहीं। जिसके चित्त में राग द्वेष है उसे ईश्वर की कृपा प्राप्त नहीं होती।
- हर पर्वत पर मणि नहीं मिलती, हर हाथी के मस्तक में मोती नहीं मिलता, हर वन में चंदन के वृक्ष नहीं मिलते इसी प्रकार सज्जन व्यक्ति भी विरले ही मिलते है।
- हर दूसरों को नसीहत का पाठ पढ़ाने वाले यदि स्वयं उस पर अमल करना शुरू कर दे तो इस संसार को स्वर्ग बनते देर नहीं लगेगी।

लेख



आपदा की बात करें तो जेहन में एक तस्वीर उभरती है “हाहाकार” की जहां कोई नहीं जानता ऐसा क्यों हुआ, क्या हआ अब किसको करना क्या है और ऐसी तस्वीर उभरने के कई कारण हैं, कारण हमारे अनुभव पूर्वकाल में हुई ऐसी अनेक घटनायें जो हमारे मानस पटल पर छाई हैं और हमें सोचने पर मजबूर कर देती हैं कि कैसे एक सामान्य सी दिखने वाली घटना एक आपदा का रूप ले लेती है। और इसका सिर्फ एक कारण जो नजर आता है वह है हमारी अधूरी तैयारी और यह तैयारी किसी घटना से सबक लेने के बाद नहीं होगी या आज की जरूरत को देखते गुम नहीं होगी बल्कि इसे तो हमें हमारी दिनचर्या में शामिल करना होगा पांचवी छटी कक्षा से ही हमारे जेहन में इस प्रकार की घटनाओं से निपटने की तैयारी सामने लानी होगी अब मैं छोटा सा उदाहरण देता हूं आपदा का , आपदा से आश्य सामान्य रूप में समझा जा सकता है अचानक घटी घटना जिसका पूर्वानुमान न हो जिससे निपटने उपलब्ध संसाधन पर्याप्त न हो। किस कारण मानवजाति हो सकती या प्राकृतिक भी हो सकती हैं, आज जीवन में घटने वाली छोटी-छोटी घटनाओं को यदि हम ठीक से निपटान कर पाने में सफल हो तो बडी घटनाओं से भी निपट सकते है छोटा सा उदाहरण किश्तवार डोडा रोड़ आये दिन अखबारों में गाडियों के नियंत्रण खोने के कारण गहरी खाई में गिरने और एक बडी संख्या में लोगों के हताहत होने की खबर आती है ऐसी घटना में कई पहल सामने आते है कि अब हम इन्हे बचायें कैसे क्या 50-55 लोग

एक गाडी से नीचे गिर हो गये तो निकाले कौन? कैसे निकाले? कैसे रोड़ तक लायें। कैसे अस्पताल पहुचायें, क्या एम्बुलैंस है क्या अस्पताल नजदीक है अस्पताल है भी तो क्या इतने लोगों को एक साथ संभाल सकता है? क्या सभी को संभाला, तैयारी अस्पताल में है।

इन सब प्रश्नों का उत्तर बडी आसानी से एक 'नहीं' शब्द के साथ में हमारे जेहन में आता है और जब इस छोटी घटना घटने हम आपदा नहीं कह सकते है तो आपदा आने पर क्या होगा।

समस्या वह है कि हम ऐसा चाहते ही नहीं, इतने बड़े देश में जहां रोजमर्रा की जरूरतें पानी बिजली और आधारभूत सुविधाए पूर्ण नहीं हो पाती है वहा एक ऐसी योजना पर कार्य करना जिसका होना अनुमानित नहीं है, एक विचित्र बात लगती है।

पुरानी कहावत है

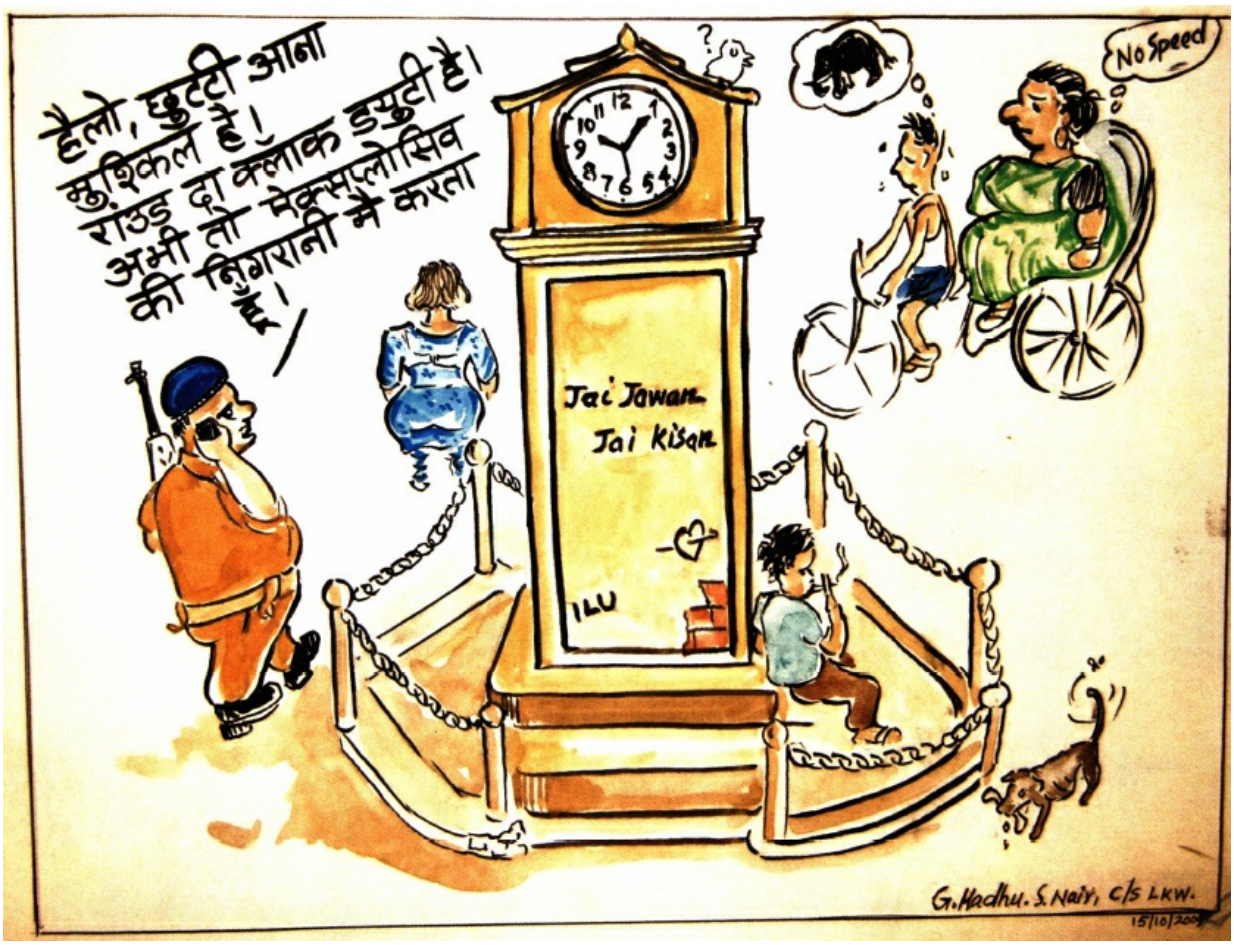
"यदि आप सफलता की योजना नहीं बना रहे है तो अपनी असफलता सुनिश्चित जरूर कर रहे हैं।"

क्योकि मुसीबतें बता कर नही आती है।

यही कारण है कि जब ऐसी घटनाये बढ़ती है तो छोटी घटनाएं भी आपदा का रूप ले लेती है और हताहतो की संख्या उस घटना को आपदा में बदल देती हैं।

ऐसे में कल्पना कीजिए ऐसे अस्पताल में जहां रोजमर्रा के ओपीडी मरीज जो पूरे देखे नहीं जा रहे हों या भर्ती वार्ड कम है वहां अलग से 10-15 गुना संख्या पहुच जाये तो क्या होगा जहां तक एक सामान्य दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को पहुचाने को एम्बुलेन्स नहीं हो वहां बड़ी घटना के घायल व्यक्तियों को कैसे पहुंचाये जाए जहां आग बुझाने को एक भी नल न हो वहां कालोनी की आग कैसे बुझे।

जब व्यवस्था में कुछेक पुलिसकर्मी हो तो अव्यवस्था के माहौल को कौन सम्भालें स्पष्ट है हमें कुछ ध्यान तो उधर देना ही होगा जो घटना हो भी सकती है नहीं भी, कोई भी एक व्यक्ति केवल इसीलिये वेतन लेता है कि किसी दिन आपदा में वह प्रबंधन करेगा। कोई अस्पताल और चिकित्सक केवल इसीलिये बना है, कि किसी मुसीबत में काम आयेगा कुछ वाहन केवल इसीलिये रिजर्व में खड़े होते है कि मुसीबत में उपलब्ध हो सकें ऐसी एक योजना तो बनानी ही होगी जहां व्यक्ति को आपदा से संबंधित प्रबंधन हेतु सोचने को ही स्वतंत्र रखा जायेगा। न की वह अपने वर्तमान कार्य के अतिरिक्त आपदा प्रबंधन का कार्य भी देखेगा। क्योंकि आपदा प्रबंधन तो अपने आप में एक बहुत बड़ा काम है जिस पर उसके पूरे व्यक्तियों को लगातार कार्य करने की जरूरत है चाहे वह सुरक्षा हो प्रशिक्षण हो प्रबंधन हो और पुनः अपना सुधार हो चक्र चलता रहता है तभी गति आती है और तभी मार्ग तय होता है।



लालसा

निरीक्षक/हिंदी अनुवादक • दिनेश सिंह धनिक • महानिदेशालय, केरिपुबल



लोभ की भावना सदैव अति की ओर ले जाती है किंतु अति सर्वत्र वर्जित है। कवि ने कहा है :-

अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।

अति का भला न बोलना,अति की भली न चूप।

काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईष्या व अहंकार मानव जीवन के विकार माने गए हैं। इन्हीं विकारों में फंसा हुआ मनुष्य अपना सम्पूर्ण जीवन समाप्त कर देता है। किसी चीज को अनैतिक तरीके से एवं आवश्यकता से अधिक संग्रह को लोभ कहा गया है। मनुष्य अपने जीवन में अत्याधिक धन, मकान, जमीन, शक्ति व पद पाने की इच्छा से अपने ऊपर तमाम बोझ डालता रहता है, इससे वह अपना स्वास्थ्य, परिवार, प्राकृतिक सौंदर्य को भी नष्ट कर लेता है।

धन, सम्पदा, शक्ति या पद प्रतिष्ठा पाना ही मात्र जीवन का एक मात्र उद्देश्य नहीं है। जहां तक जीवन यापन का प्रश्न है, वहां तक कार्य करते रहना पर्याप्त है। अपार धन दौलत पाने की लालसा मे लगे रहने में वास्तविक सुख नहीं है। धन सम्पति उच्च नैतिक जीवन जीने का साधन है, साध्य नहीं। काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि हमें पाप कर्म करने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। धन/सम्पति/इच्छाओं से कोई व्यक्ति कभी तृप्त नहीं हुआ है। धन, इच्छाएं जितनी बढ़ती है, चिंताए भी उतनी ही बढ़ती जाती है तथा और अधिक धन प्राप्ति की इच्छाओं की पूर्ति की लालसा बढ़ती जाती है।

मनुष्य, एक सीमा तथा आयु तक ही सांसारिक वस्तुओं एवं दैहिक सुखों का उपभोग

कर सकता है। न अधिक खा सकता है, न अधिक पहन सकता है। कोई भी, एक समय में एक ही घर, एक ही कमरे में, एक ही बिस्तर पर सो सकता है। कहा गया है कि लोभ/अति-इच्छाओं के विस्तार से बुद्धि चलायमान हो जाती है। लोभ तृष्णा को बढ़ाता है तथा तृष्णा से दुखी हुआ मनुष्य इस लोक और परलोक में कष्ट पाता है। संसार में जितने भी पाप कर्म तथा चोरी, डकैती, हत्या, लूट-पाट आदि सभी लोभ से प्रेरित होते हैं। कुछ में तो सिर्फ लोभ ही कारण होता है किन्तु कुछ में अन्य विकार भी सम्मिलित हो जाते है।

हमारा प्रयास हमेशा मनोविकारों पर विजय प्राप्त करने का होना चाहिए तथा सफल होने पर निश्चित रूप से आनंदमय जीवन की प्राप्ति होगी।

विविध समाचार

58वीं वाहिनी के 39वीं स्थापना दिवस के अवसर पर स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन

23वीं वाहिनी, के0रि0पु0बल

58वीं बटालियन, केरिपुबल के 39वीं वाहिनी स्थापना दिवस 1 सितंबर 2009 को वाहिनी मुख्यालय भीमाराम पुलिस लाईन, हनमकोंडा, वारंगल (आंध्र प्रदेश) में मनाया गया, इस शुभ अवसर पर वाहिनी मुख्यालय कई रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमे वाहिनी के जवानों एवं उनके परिवार एवं बच्चों ने भाग लिया, इस अवसर पर बड़ा खाना का भी आयोजन किया गया। 2 सितंबर 2009 को वाहिनी स्थापना दिवस के अवसर पर अंतराष्ट्रीय रेडक्रास संस्था, एवं स्थानीय प्रशासन तथा स्थानीय स्वयंसेवी संघ, लॉयन्स क्लब की मदद से 58वीं वाहिनी मुख्यालय मे श्री प्रभात चन्द्र झा, कमाण्डेंट-58 बटा के देखरेख मे स्वैच्छिक रक्तदान शिवर का आयोजन कि गया, जिसमे श्री प्रभात चन्द्र झा, कमांडेंट, श्री विनोद कुमार सहायक कमाण्डेन्ट, अधीनस्थ अधिकारी एवं वाहिनी के जवानों ने भाग लिया। शिवर में सर्वप्रथम श्री प्रभात चन्द्र झा (कमाण्डेंट-85 बटालियन) और श्री बिनोद कुमार (सहायक कमाण्डेंट) एवं जवानों सहित कुल 40 कार्मिकों ने रक्त दान किया। इस उपलक्ष्य में वारंगल के जानेमाने चिकित्सक पी. संमबासिवा राव एवं उनकी टीम रेडक्रास सोसाइटी की तरफ से मौजूद थे। उन्होने रक्तदान के महत्व के बारे मे जवानों को समझाया एवं 58 बटालियन, केरिपुबल के कार्य की सराहना किया। इसकी स्थानीय इलेक्ट्रानिक और प्रिंट मीडिया ने भी प्रशंसा की।

आयोजित समारोह मे कमाण्डेन्ट-58 बटालियन ने आन्ध्र प्रदेश की जनता को

संदेश दिया कि हम केवल नक्सलवाद को खत्म करने के लिए ही नही है बल्कि अन्य सामाजिक गतिविधियों में शामिल होने के लिए भी हमेशा तत्पर है।

सौल्लास मनाया गया बाल दिवस

80 बटालियन केरिपुबल, ने बस्तर जिले के दरभा क्षेत्र में पंडित जवाहर लाल नेहरू के जन्म दिवस को बाल दिवस के रूप में पूरे उत्साह के साथ मनाया।

इस अवसर पर 80 बटालियन की "बी" कम्पनी ने बाल दिवस के आयोजन की व्यवस्था की, स्थानीय शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तथा आस पास के स्कूलों के लगभग 550 बच्चों ने इसमें हिस्सा लिया। समारोह में सर्वप्रथम चाचा नेहरू के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया, तदोपरान्त स्कूली बच्चों की प्रारम्भ हुई मनोरंजक प्रतिस्पर्धाएं जिसमें वॉलीबाल, जलेबी रेस, चम्मच दौड़,बोरीरेस, चेयररेस व रस्साकसी में बालक व बालिकाओं ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया।

बाल दिवस के इस अवसर पर दरभा, जिला बस्तर के तहसीलदार श्री बागडे ब्लाक मेडिकल ऑफिसर डा मण्डावीद्रडा व वन विभाग के अधिकारी, एस एच ओ दरभा सहित सभी सम्मिलित स्कूलों के प्रधानाध्यापक, अध्यापक, ग्राम प्रधान, सरपंच, अन्य जनप्रतिनिधि व मीडिया कर्मी शामिल थे। बच्चों के मनोरंजन खेल-कूद प्रतियोगिताओं के उपरान्त स्कूली बच्चों व बल के कार्मिकों ने सामूहिक रूप से सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जिसमें बल के कार्मिकों की नशा उन्मूलन पर नाट्य प्रस्तुती को विशेश रूप से सराहा गया। उसके बाद सभी स्कूली बच्चों, बल के कार्मिकों व उपस्थित अतिथियों ने सामूहिक रूप से मध्याहन भोजन किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि तहसीलदार दरभा, श्री बागड़े ने सम्बोधित करते हुए कहा कि "सीआरपीएफ" के जवान न केवल नक्सलियों से हमारी सुरक्षा का कार्य कर रहैं है अपितु आज के इस आयोजन से यह भी आभास हुआ कि हमें सामाजिक और सांस्कृतिक सुरक्षा भी इनके द्वारा मिलेगी। इस आयोजन से हमें आत्मीयता मिली है तथा सुरक्षा बलों पर विश्वास बढ़ा है "80 बटालियन के इस आयोजन की सभी स्थानीय नागरिकों से भरी भूरी प्रशंसा की विशेषतः स्थानीय स्कूली बच्चे जो आज तक बल के वर्दीधारी जवानों को भय व आक्रान्त की दृष्टि से देखते थे उनमें इन वर्दीधारियों के प्रति आत्मविश्वास जगा।

कार्यक्रम के अन्त में 80 बटालियन की तरह से सभी बच्चों को खेल सामग्री, पेन, पेंसिल कापी कलर बाक्स ज्यामेट्री बाक्स, आदि वितरित किये गये। अन्त में सभी उपस्थित अतिथियों का धन्यवाद करते हुए कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम का सफल आयोजन/व्यवस्था/कमाण्डेन्ट–80 वाहिनी श्री एस पी सिंह के मार्गदर्शन में निरी/जीडी सी के शर्मा द्वारा की गई।

खबरों में

सिंगापुर एथलेटिक प्रतियोगिता में विजयी होकर लौटे 65 वर्षीय मुंशीराम शेखावत

पंजाब केसरी
25 नवंबर 2009



सिंगापुर एथलेटिक प्रतियोगिता में विजयी होकर लौटे

65 वर्षीय मुंशीराम शेखावत

मन में अगर जज्बा हो तो उम्र आड़े नहीं आती। हरियाणा के महेंद्रगढ़, सोढ़ी के श्री मुंशीराम शेखावत एक ऐसी ही शख्सियत हैं जिन्होंने युवाओं के साथ ही बुजुर्गों के लिए भी मिसाल पेश की है। एथलेटिक में जानदार प्रदर्शन करते आए शेखावत सीआरपीएफ में कमांडेंट की पोस्ट से सेवानिवृत हुए हैं। भले ही रिटायर हुए उन्हें 5 वर्ष बीत चुके हैं लेकिन वह अभी भी ऊर्जा से भरपूर हैं। हाल ही में उन्होंने सिंगापुर की 30वीं वार्षिक ट्रैक एंड फील्ड मास्टर्स चैंपियनशिप-2009 में भाग लेकर गोल्ड मैडल और ब्रांज मेडल जीता है। वर्तमान में श्री शेखावत दिल्ली के द्वारका क्षेत्र की एशोसिएशन के प्रधान के रूप में कार्यरत हैं और उनका कहना है कि यह संस्कार उन्हें पिताजी से मिले हैं। वह कहते हैं कि मेरे पिताजी ने द्वितीय विश्वयुद्ध में भाग लिया और उस दौरान पहलवानी किया करते थे। मुझे कालेज में इसके पूर्व बेस्ट एथलीट का खिताब मिल चुका है और जब मैंने सीआरपीएफ ज्वाइन किया, उन दिनों भी मुझे एथलीट के अलावा गोल्फ और बैडमिंटन खेलने का शौक था। 65 के उम्र में वह काफी तंदरुस्त लगते हैं, इसका राज उन्होंने अपने खान-पान और रहन-सहन को दिया। उनका कहना है कि मैं रोजाना योगा और एक्सरसाइज करता हूं और संयमित भोजन करता हूं। उनका मानना है कि परमात्मा ने हमें असीम ऊर्जा दी है जो कभी खत्म नहीं होती है, मेरा तो मानना है कि थकावट टांगों में नहीं, मानसिक होती है। अगर हम इन ऊर्जा को वेस्ट करना छोड़ दें, टकराव से बचें तो बुढ़ापे जैसी समस्या से दूर रह सकते हैं। श्री शेखावत का कहना है कि अगर आप मेडिटेशन करते हैं तो आपके भीतर आत्मविश्वास की वृद्धि होती है। अपनी ऊर्जा को स्रोत वह ब्रह्मकुमारीज दादी योगिनी जी को मानते हैं, जो 90 से ज्यादा उम्र की हैं और बुढ़ापा जैसे शब्द से कोसों दूर हैं। शेखावत के अनुसार आज भी कई खिलाड़ी ऐसे हैं जो धनाभाव में विदेशों में जाकर प्रदर्शन नहीं कर पाते। उनका कहना है कि मुझे हमेशा इस बात का मलाल रहेगा कि मुझे राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका नहीं मिल पाया। वह कहते हैं कि मास्टर्स फेडरेशन की ओर से मैं सिंगापुर एथलेटिक्स प्रतियोगिता में भाग लेने गया था पर न मुझे कोई डिस्काउंट मिला और न ही कोई खर्चा।

शेखावत जी कहते हैं कि मेरा प्लान है कि आने वाले समय में मैं वर्ल्ड कंपीटिशन में हिस्सा लूं भले ही मुझे सरकारी सुविधा मिले या न मिले। वह चाहते हैं कि सरकार बुजुर्गों के लिए पेंशन सुविधा लागू करे जिसका लाभ सभी बुजुर्ग उठा सकें। सरकार उन्हें टैक्स में राहत दे। उनका कहना है कि सरकार अगर बुजुर्गों को प्रोत्साहन देती है तो इससे समाज में जागरूकता आएगी।

मन में अगर जज्बा हो तो उम्र आड़े नहीं आती। हरियाणा के महेंद्रगढ़, सोढ़ी के श्री मुंशीराम शेखावत एक ऐसी ही शख्सियत हैं जिन्होंने युवाओं के साथ ही बुजर्गों के

लिए भी मिसाल पेश की हैं। एथलेटिक में जानदार प्रदशन करते आए शेखावत सीआरपीएफ में कमांडेंट की पोस्ट से सेवानिवृत हुए हैं। भले ही रिटायर हुए उन्हें 5 वर्ष बीत चुके हैं : लेकिन वह अभी भी ऊर्जा से भरपूर हैं। हाल ही में उन्होंने सिंगापुर की 30वीं वार्षिक ट्रैक एंड फील्ड मास्टर्स चैंपियनशिप-2009 में भाग लेकर गोल्ड मैडल और ब्रांज मेडल जीता है। वर्तमान में श्री शेखावत दिल्ली के द्वारका क्षेत्र की एसोसिएशन के प्रधान के रूप में कार्यरत हैं और उनका कहना है कि यह संस्कार उन्हें पिताजी से मिले हैं। वह कहते हैं कि मेरे पिताजी ने द्वितीय विश्वयुद्ध में भाग लिया और उस दौरान पहलवानी किया करते थे। मुझे कालेज में इसके पूर्व बेस्ट एथलीट का खिताब मिल चुका है और जब मैंने सीआरपीएफ ज्वाइन किया, उन दिनों भी मुझे एथलीट के अलावा गोल्फ और बैडमिंटन खेलने का शौक था। 65 के उम्र में वह काफी तंदरूस्त लगते हैं, इसका राज उन्होंने अपने खान-पान और रहन-सहन को दिया। उनका कहना है कि मैं रोज़ाना योगा और एक्सरसाइज करता हूं और संयमित भोजन करता हूं। उनका मानना है कि परमात्मा ने हमें असीम ऊर्जा दी है जो कभी खत्म नहीं होती है, मेरा तो मानना है कि थकावट टांगों में नहीं, मानसिक होती है। अगर हम इन ऊर्जा को वेस्ट करना छोड़ दें, टकराव से बचें तो बुढ़ापे जैसी समस्या से दूर रह सकते हैं। श्री शेखावत का कहना है कि अगर आप मेडिटेशन करते हैं तो आपके भीतर आत्मविश्वास की वृद्धि होती है। अपनी ऊर्जा को स्रोत वह ब्रह्मकुमारीज़ दादी योगिनी जी को मानते हैं, जो 90 से ज्यादा उम्र की हैं और बुढ़ापा जैसे शब्द से कोसों दूर हैं। शेखावत के अनुसार आज भी कई खिलाड़ी ऐसे हैं जो धनाभाव में विदेशों में जाकर प्रदर्शन नहीं कर पाते। उनका कहना है कि मुझे हमेशा इस बात का मलाल रहेगा। कि मुझे राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका नहीं मिल पाया। वह कहते हैं कि मास्टर्स फेडरेशन की और से मैं सिंगापुर एथलेटिक्स प्रतियोगिता में भाग लेने गया था पर न मुझे कोई डिस्काउंट मिला और न ही कोई खर्चा।

शेखावत जी कहते हैं कि मेरा प्लान है कि आने वाले समय में मैं वर्ल्ड कंपीटिशन में हिस्सा लूं भले ही मुझे सरकारी सुविधा मिले या न मिले। वह चाहते हैं कि सरकार बुजुर्गों के लिए पेंशन सुविधा लागू करे जिसका लाभ सभी बुजुर्ग उठा सकें। सरकार उनहें टैक्स में राहत दे। उनका कहना है कि सरकार अगर बुजुर्गों को प्रोत्साहन देती है तो इससे समाज में जागरूकता आएगी।

सीआरपीएफ की छह नई टुकड़ियां लालगढ़ में

पंजाब केसरी
6 नवंबर 2009



सीआरपीएफ की छह नई टुकड़ियां लालगढ़ में

लालगढ़ (वार्ता): पश्चिम बंगाल के लालगढ़ में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) की छह और टुकड़ियों के पहुंच जाने से इनकी संख्या बढ़कर 25 तक पहुंच गयी है। पुलिस महानिदेशक वेस्टर्न रेंज कुलदीप सिंह ने बताया कि सीआरपीएफ के जवान तय कार्यक्रम के अनुसार यहां पहुंच गए हैं और जंगल महाल क्षेत्र में कल से कोई अप्रिय घटना नहीं घटी है, लेकिन उधर पुलिस संत्रास विरोधी समिति (पीसीपीए) के लोगों ने इन बलों की वापसी की मांग करते हुए जंगल महाल क्षेत्र की सड़कों पर जगह जगह अवरोध खड़े कर दिए। माना जा रहा है कि ये अतिरिक्त टुकड़ियां लालगढ़ क्षेत्र में अतिरिक्त सुरक्षा मुहैया कराने के लिए मंगायी गयी हैं। इस इलाके में स्थित सौ ग्राम पंचायतों में से पचास फीसदी पिछले कई महीनों से तालाबंदी की स्थिति में

■ अब तक कुल 25 टुकड़ियां तैनात, लोग सड़कों पर

है। इन इलाकों में बने सरकारी कार्यालयों में आदिवासियों के डर की वजह से उपस्थिति बेहद कम है। इसके अलावा मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य के पश्चिमी मिदनापुर के आगामी सात और आठ नवम्बर के दौरे को देखते हुए सुरक्षा के लिहाज से सुरक्षा बलों की संख्या में यह बढोत्तरी की गयी है। इस बीच पीसीपीए के संयोजक असित महतो ने मुख्यमंत्री के प्रस्तावित दौरे की आलोचना की है और कहा कि यहां होने वाली बैठकें इससे पहले भी कई बार हो चुकी हैं लेकिन जंगल महल क्षेत्र में कोई विकास नहीं हुआ। श्री महतो ने कहा कि मुख्यमंत्री को खुद यहां आकर मौके पर मुआयना करना चाहिए कि क्या यहां एक भी विकास कार्य पूरा हो पाया है। उनमें लालगढ़ आने का साहस नहीं है क्योंकि सरकार आदिवासियों का सामना करने की हिम्मत खो चुकी है।

लालगढ़ (वार्ता) पश्चिम बंगाल के लालगढ़ में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) की छह और टुकड़ियों के पहुंच जाने से इनकी संख्या बढ़कर 25 तक पहुंच गयी है। पुलिस महानिदेशक वेस्टर्न रेंज कुलदीप सिंह ने बताया कि सीआरपीएफ के जवान तय कार्यक्रम के अनुसार यहां पहुंच गए हैं और जंगल महाल क्षेत्र में कल से कोई अप्रिय घटना नहीं घटी है, लेकिन उधर पुलिस संत्रास विरोधी समिति (पीसीपीए) के लोगों ने इन बलों की वापसी की मांग करते हुए जंगल महाल क्षेत्र की सड़कों पर जगह जगह अवरोध खड़े कर दिए। माना जा रहा है कि ये अतिरिक्त सुरक्षा मुहैया कराने के लिए मंगायी गयी हैं। इस इलाके में स्थित सौ ग्राम पंचायतों में से पचास फीसदी पिछले कई महीनों से तालाबंदी की स्थिति में है। इन इलाकों में बने सरकारी कार्यालयों में आदिवासियों के डर की वजह से उपस्थिति बेहद कम है। इसके अलावा मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य के पश्चिमी मिदनापुर के आगामी सात और आठ नवम्बर के दौरे को देखते हुए सुरक्षा के लिहाज से सुरक्षा बलों की संख्या में यह बढोत्तरी की गयी है। इस बीच पीसीपीए के संयोजक असित महतो ने मुख्यमंत्री के प्रस्तावित दौरे की आलोचना की है और कहा कि यहां होने वाली बैठकें इससे पहले भी कई बार हो चुकी हैं लेकिन जंगल महल क्षेत्र में कोई विकास नहीं हुआ। श्री महतो ने कहा कि मुख्यमंत्री को खुद यहां आकर मौके पर मुआयना करना चाहिए कि क्या यहां एक भी विकास कार्य पूरा हो पाया है। उनमें लालगढ़ आने का साहस नहीं है क्योंकि सरकार आदिवासियों का सामना करने की हिम्मत खो चुकी है।



सीआरपीएफ की बढ़ेगी सुविधा : चिदंबरम

दैनिक भास्कर
28 नवंबर 2009



सीआरपीएफ की बढ़ेगी सुविधा : चिदंबरम

जवानों के लिए बनेंगे 8826 क्वार्टर

भास्कर न्यूज | गुड़गांव

देश में बढ़ते आतंकी हमलों और नक्सलवादियों से मिल रही चुनौती के दौर में सीआरपीएफ जवानों को ज्यादा सुरक्षा और सुविधा देने की आवश्यकता है। इस कड़ी में उन्हें आधुनिक हथियारों के साथ आवासीय सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए 8826 क्वार्टर बनाएं जाएंगे।

इनका निर्माण 2011 तक पूरा कर लिया जाएगा। यह विचार केंद्रीय गृह मंत्री पी चिदंबरम ने सीआरपीएफ के गुड़गांव कैंप में 70वें वार्षिकोत्सव समारोह में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि सीआरपीएफ के जवानों की बहादुरी का जवाब नहीं है। जवानों की हौसला आफजाई करते हुए चिदंबरम ने कहा कि सरकार देश की सुरक्षा को लेकर चिंतित है। यही वजह है कि सेना के आधुनिकरण के साथ जवानों की सुविधाओं का पूरा ख्याल रखा जा रहा है। आज सेना दो मोर्चे पर जूझ रही है। एक ओर सेवा और पुर्नवास के क्षेत्र में उनकी भूमिका बढ़ रही है तो दूसरे आतंकवादियों और नक्सलियों से भी जूझना पड़ रहा है। कामनवेल्थ गेम्स के दौरान भी सीआरपीएफ को कई अहम जिम्मेदारियां निभानी हैं। जवानों को संबोधित करते हुए चिदंबरम ने कहा कि भारत प्रतिदिन नए आर्थिक आयामों को छू रहा है। इस दौर में देश के सामने बड़ी चुनौती गरीबों के जीवन स्तर को सुधारना है। उन्होंने सीआरपीएफ की महिला बटालियन के द्वारा प्राप्त किए गए पदकों की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि सीआरपीएफ एक ऐसी फोर्स है जिसे जब भी, जहां भी पहुंचने के आर्डर मिले वहीं पर जवानों ने तुरंत मोर्चा संभाल है। इसी जज्बे के कारण सीआरपीएफ के जवानों को अब तक 983 बहादुरी मेडल व 2239 विशिष्ट सेवा मेडल प्राप्त हुए हैं।

जवान को बाहदुरी पदक देते केन्द्रीय गृहमंत्री।

नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में खुलेंगे प्रशिक्षण स्कूल

भास्कर न्यूज | गुड़गांव

नक्सलवाद और माओवादियों की बदलती रणनीति समझने के लिए केंद्रीय रिजर्व सुरक्षा बल के जवान मानसिक रूप से तैयार होंगे। उन्हें इसके लिए खास प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। नक्सलियों और माओवादियों की गोरिल्ला रणनीति को समझाने के लिए नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में प्रशिक्षण स्कूल खोले जाएंगे, जिसमें जवानों को नवीनतम तौर तरीकों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस दौरान उन्हें नक्सलियों और माओवादियों द्वारा प्रयुक्त किए जा रहे हथियार और उनकी आक्रमण शैली से भी अवगत कराया जाएगा ताकि वह जवानों की आंखों में धूल न झोंक सकें। यह कदम आए दिन जवानों पर हो रहे नक्सल और माओवादियों के हमले के मद्देनजर लिया गया। सीआरपीएफ के डीजी एएस गिल ने दैनिक भास्कर के साथ विशेष बातचीत केदौरान यह जानकारी दी। गिल सीआरपीएफकैंप गुड़गांव के 70वें वार्षिकोत्सव में शामिल होने के लिए आए थे। गिल ने बताया कि योजना के मुताबिक नक्सलवाद क्षेत्र में एक ट्रेनिंग स्कूल खोला जाएगा।

देश में बढ़ते आतंकी हमलों और नक्सलवादियों से मिल रही चुनौती के दौर में सीआरपीएफ जवानों को ज्यादा सुरक्षा और सुविधा देने की आवश्यकता है। इस कड़ी में उन्हें आधुनिक हथियारों के साथ आवासीय सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए 8826 क्वार्टर बनाएं जाएंगे।

इनका निर्माण 2011 तक पूरा कर लिया जाएगा। यह विचार केन्द्रीय गृह मंत्री पी चिदंबरम ने सीआरपीएफ के गुड़गांव कैंप में 70वें वार्षिकोत्सव समारोह में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि सीआरपीएफ के जवानों की बहादुरी का जवाब नहीं है। जवानों की हौसला अफजाई करते हुए चिदंबरम ने कहा कि सरकार देश की सुरक्षा को लेकर चितिंत है। यही वजह है कि सेना के आधुनिकरण के साथ जवानों की सुविधाओं का पूरा ख्याल रखा जा रहा है। आज सेना दो मोर्चे पर जूझ रही है। एक और सेवा और पुर्नवास के क्षेत्र में उनकी भूमिका बढ़ रही है तो दूसरे आतंकवादियों और नक्सलियों से भी जूझना पड़ रहा है। कॉमनवेल्थ गेम्स के दौरान भी सीआरपीएफ को कई अहम जिम्मेदारियां निभानी हैं। जवानों को संबोधित करते हुए चिदंबरम ने कहा कि भारत प्रतिदिन नए आर्थिक आयामों को छू रहा है। इस दौर में देश के सामने बड़ी चुनौती गरीबों के जीवन स्तर को सुधारना है। उन्होंने सीआरपीएफ की महिला बटालियन के द्वारा प्राप्त किए गए पदकों की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि सीआरपीएफ एक ऐसी फोर्स है जिसे जब भी, जहां भी पहुंचने के आर्डर मिले वहीं पर जवानों ने तुरंत मोर्चा संभाला है। इसी जज्बे के कारण

सीआरपीएफ के जवानों को अब तक 983 बहादुरी मेडल व 2239 विशेष्ट सेवा मेडल प्राप्त हुए है।

नक्सलवाद और माओवादियों की बदलती रणनीति समझने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवान मानसिक रूप से तैयार होंगे। उन्हें इसके लिए खास प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। नकसलियों और माओवादियों की गोरिल्ला रणनीति को समझाने के लिए नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में प्रशिक्षण स्कूल खोले जाएंगे, जिसमें जवानों को नवीनतम तौर तरीकों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस दौरान उन्हें नक्सलियों और माओवादियों द्वारा प्रयुक्त किए जा रहे हथियार और उनकी आक्रमण शैली से भी अवगत कराया जाएगा ताकि वह जवानों की आंखों में धूल न झोंक सकें। यह कदम आए दिन जवानों पर हो रहे नक्सल और माओवादियों के हमले के मद्देनजर लिया गया। सीआरपीएफ के डीजी ए एस गिल ने दैनिक भास्कर के साथ विशेष बातचीत के दौरान यह जानकारी दी। गिल सीआरपीएफ कैंप गुड़गांव के 70वें वार्षिकोत्सव में शामिल होने के लिए आए थे। गिल ने बताया कि योजना के मुताबिक नक्सलवाद क्षेत्र में एक ट्रेनिंग स्कूल खोला जाएगा।

कविताएं

“मैं हूँ देश का प्रहरी”

निरीक्षक/मं0 हुकम सिंह

बारिश हो रही है बारिश की बौछार,
कर शीत लहर अस्थि में प्रहार,
साथियों के साथ जाना है मुझे,
यह है मेरी देश मॉ की पुकार।
यह भयानक शीत लहर और रात्रि के द्विप्रहर,
गर्मी की चाहत में सिर्फ मेरे पास कालाश्निकोव,
साथियों को ब्रीफ कर, निश्छिद्र अंधकार के आवरण को चीर कर,
भय को पैर तले रौंदते हुए, टुकड़ी को नेतृत्व देते हुए,
हम कर चले कूच, क्योंकि मैं हूँ देश का प्रहरी।
अगर कभी हे मेरे प्रभु। कर्तव्य निभाने में,

दण्ड मुझे निश्चेत देना, दया कभी ना दिखलाना,
तुम्हारी दया लायेगी कमजोरी,
क्योंकि मैं हूँ देश का प्रहरी।

प्रिया की पुकार न करे मुझे लाचार,
मेरी मॉ की स्नेह-यतन ना करे मन में विचरण,
रजनीगंधा की खुशबू न करें मुझे बेकाबू,
मेरी दुलारी दुहिता न चीखे पिता,
क्योंकि मैं जो हूँ देश का प्रहरी।

वज्र निनाद छोड़े, निर्दय मशीन गन,
देश मॉ की गोद में फैले प्रदूषण,
दुश्मन के कटुहास्य का निश्फल प्रयास
कैसे करें भयभीत मुझे ? संचारे त्रास,
क्योंकि मैं जो हूँ देश का प्रहरी।

देश की रक्षा करते हुए, गोली अगर मेरा सीना भेदे,
हे मेरे प्रिये न करो बृथा क्रंदन,
यह रूधिर पात लायेगा नया स्पंदन,
क्योंकि मैं हूँ देश का प्रहरी।

मेरा स्वप्न यह रंगीन होगा ही साकार,
यह अशुभ प्रयास करेंगे ही बेकार,
चारों तरफ होगी खुशी ही खुशी, खींच लायेगी मुझे फिर यह धरती,
क्योंकि मैं हूँ देश का प्रहरी।

मुझे लायेगी फूलों की सुगंध, नाच उठेगा यह नील गगन,
साथ लाऊँ मैं हरियाली अपार सिंगा मैं समन्वय का प्रचार,
क्योंकि मैं हूँ देश का प्रहरी।

पुस्तक की पुकार (मुझसे दोस्ती करो)

बी एन सिंह
कमाण्डेन्ट

मैं ईश्वर की देन हूं,
मैं ईश्वर की देन हूं,

हिन्दू में गीता बनकर,
मुस्लिम में कुरान बनकर,
सिक्ख में गुरूवाणी बनकर,
ईसाई में बाईबल बनकर।

इस सुन्दर पृथ्वी पर भेजी गई,
जाओ इंसानो से दोस्ती करो,
और इंसानो का कल्याण करो

मै चलती रही मैं चलती रही,
मैं दौड़ती रही मैं दौड़ती रही,
लेकिन किसी ने मुझसे दोस्ती नही की,
बस मुझसे दोस्ती करो क्योंकि मै ईश्वर की देन हूं।
हिन्दू मैं गीता बनकर-----

जिसने भी मेरी कद्र की या मुझसे दोस्ती की,
उन इंसानों का नाम रोशन किया
चाहे महात्मा गांधी हो, चाहे डाक्टर अम्बेडकर हो,
चाहे लाल बहादुर शास्त्री हो, चाहे सरदार पटेल हो,

चाहे अब्दुल कलाम हो, चाहे कल्पना चावला हो,
चाहे लिंकन हो, चाहे एडीसन हो,
बस मुझसे दोस्ती करो,
क्योंकि मैं ईश्वर की देन हूं।
हिन्दू मैं गीता बनकर----

मैं भारत में गली मौहल्ला व नगर-नगर घूमी,
सड़कों, ट्रेनों व हवाई जहाजों में घूमी,
लेकिन इंसानो ने कद्र ना की,
मुझसे दोस्ती न की बस मुझसे दोस्ती करो,
क्योंकि मै ईश्वर की देन हूं।
हिन्दू मैं गीता बनकर -----

मैं देखती हूं हजारों रुपये का टिकट लेकर चलते है,
लम्बी यात्रा करते है, गप्पे हांकते है,
आलस्य के शैतान हावी होते है,
लेकिन मुझसे कोई दोस्ती नहीं करता है,
मुझसे दोस्ती करोगे, तुम्हारा जीवन उज्जवल बनेगा,
मन मस्तिष्क का विकास होगा, बस मुझसे दोस्ती करो,
मुझे टीवी के पास रखो, मुझे टेबिल के पास रखो,
मुझे सिरहाने पर रखो मुझे यात्रा में पढो,
फिर तुम्हारे मन मस्तिष्क में आंकाक्षा, उत्साह,
आत्मविश्वास व जोखिम का विकास होगा,
नौकरी मिलने तक इंसान दोस्ती करता है,
बीबी और बच्चे होने पर मुझसे दोस्ती तोड देता है
इंसान, आलस्य के शैतान को घर में बैठता है,
शराब व सिगरेट का सेवन करके शैतान का आदर करता है,
बस मुझसे दोस्ती करो,
क्योंकि मैं ईश्वर की देन हूं।

हिन्दू मैं गीता बनकर ------
हे इंसानों चिल्ला-चिल्लाकर कहती हूं,
मुझसे दोस्ती करो मुझसे दोस्ती करो,
मेरे ही कारण हर पल नया बनता है,
मेरे ही कारण हर पल आविष्कार होता है,
मेरे ही कारण परिवार, समाज व देश का विकास होता है

इश्वर ने भी सोच समझकर भेजा था,
जाओ इंसानो से दोस्ती करो,
लेकिन नफरत, निराशा, घृणा देखकर,
कहीं आशा नजर नही आती,
लेकिन मै ईश्वर का हुक्म मानूंगी,
मै चिल्ला-चिल्लाकर कहूंगी,
बस मुझसे दोस्ती करो,
क्योंकि मैं ईश्वर की देन हूं।
हिन्दू मैं गीता बनकर -----

हे इंसानों धन अर्जित करने की अपेक्षा,
बच्चों को बुद्धि, परिश्रम देकर जाओ,
खुद भी मुझसे दोस्ती करो,
बच्चो से भी दोस्ती करवाओ,
जग में रहकर अपना नाम रोशन करो,
क्योंकि मैं ईश्वर की देन हूँ।
हिन्दू में गीता, मुस्लिम में कुरान बनकर -----

“जिन्दगी”

उप निरीक्षक, विभा त्रिपाठी
पुलिस उपमहानिरीक्षक कार्यालय
आर ए एफ, नई दिल्ली

जलती हुई चिताओं को
तुम देखकर न दहले
वह बुद्ध बन गए थे
एक लाश देखकर।
वैसे तो जुल्म सारे

जीवन के सह गया वो
बस, टूट गया बच्चों की
भूख प्यास देखकर।
ता उम्र देखते रहे।
रस्ता उन्हीं का हम
दुनियां ने भी जिद छोड़ दी
विश्वास देखकर।
सब झूठ था मालूम था
पर जिन्दा रहे वो भी
विधवा बहू की आंखों में
इक आस देखकर।
पड़ोसी का दर्द देखकर
जब दिल नहीं पिघला
तो क्या करोगे
राम का बनवास देखकर।
बादल सिमट रहे थे
आंखों की सरजमीं पर
बरसात हो गई है
आकाश देखकर

“मिलन की रात”

निरीक्षक/मं0 हुकम सिंह
23वीं वाहिनी, के0रि0पु0बल

तेरे गेसू जो कांधे पे मेरे परेशान हो गए
वो लम्हें जिन्दगी की खास पहचान हो गए।
दिन रात सिमट आए हैं, बाहों में मेरी,
फलक के चांद सितारे परेशान हो गए।

लुफ्त लेता हूं हर फिजां का पहलू बदल-बदल के
सारे मौसम आज मेरे धर मेहमान हो गए।
तुमसे जब तक दूर थे जिन्दगी ही दूर थी,
जीने के आज पूरे सभी अरमान हो गए।
महरूम खबर ही नहीं थी अपने बजूद की,
आज खुद जमीं कभी आसमान हो गए।

आज

निरीक्षक/मं0 हुकम सिंह
23वीं वाहिनी, के0रि0पु0बल

आज के दिन जिन्दगी ने मुझसे यह वायदा किया था
“मैं तुम्हारा साथ दूंगी शर्त है
तुम अपनी सूली अपने कंधे पर उठाना
मुश्किलें कैसी भी हों बढ़ते ही जाना।”
आज के दिन याद आता है मुझे वह आशियाना
जिसने पर आने से पहले ही मुझे उड़ना सिखाया
सख्तियां सहने का ऐसा गुर बताया
जो मेरी ऊंची उड़ानों में उड़ा था साथ मेरे
जिसको ऊंचे आसमां ने बारहा सजदे किये थे।
आज मैं जो कुछ भी हूँ जैसा भी हूँ
शामिल है उसमें मेरे मां-बाप की शराफत का चेहरा
जिसको मेरी जिन्दगी ने प्यार से इतना संवारा
जैसे जन्नत में उतारा।
आज मेरे दोस्त आएंगे मुबारकबाद देने और
मैं उनसे कहूंगा तुम मेरी हिम्मत बढ़ाना
मेरी बेखौफी को मेरे देश के काबिल बनाना।

फैसला

निरीक्षक/मं० हुकम सिंह
*23*वीं वाहिनी, के*0*रि*0*पु*0*बल

जो मैदान में उतरे हैं
अब उन्हें फैसला करना होगा,
देश की खातिर जीना होगा,
देश की खातिर मरना होगा।
नहीं तो लोग कहेंगे तुमसे
भगत सिंह की आन कहां है,
हुक्मराम बन कर बैठे हो
कुर्बानी की शान कहां है।
ठोक बजाकर आम आदमी
ये भी अब तुमसे पूछेगा,
क्या अपना, क्या उसका किया है
मेहनतकश ये भी सोचेगा।
अपनी गद्दी, अपना बेटा,
अपने घर को मान दिया है,
लोगों ने भी आपकी खुदगर्जी
को अब पहचान लिया है।
ऐसे मत सच्चाई लिखना
लोगों ने सौ बार कहा है,
तेरी हिम्मत देख के रब
ने तुझे सरदार कहा है।

सैनिक का स्वप्न

करने को साकार ले चुका, मैं तुम्हारे,
स्वप्न सारे उधार
घर की मरम्मत और बहन की शादी,
बूढ़ी मां का ईलाज, बीमारी से बर्बादी
ढूंढते-ढूंढते मिला एक दिन काम,
पहन लिया यूनिफार्म,
पेशे का कितना पवित्र था नाम,
और काम करना भी था मजबूरी
नहीं मेरे पास कोई विकल्प,
कर समझौता हालात से,
लिया मन में संकल्प
जीकर कठिन जीवन भी सैनिक का
लडूंगा दो दो दुश्मनों से डटकर,
बेकारी से घर में और बैरी से रण में
रख स्वयं को तलवार की धार पर,
कठिनाईयों के थार पर,
चला था मैं वीर जवान,
करने को अपना, समाज व राष्ट्र का कल्याण,
युद्ध छिड़ा, मैं खूब लड़ा
असंख्य गोलियों का शूल मेरे सीने में गढ़ा,
शव जब मेरा, मेरे गांव के आंगन में पड़ा
देखने को सारा गांव, राष्ट्र उमड़ पड़ा,
उल्टी हुई संगीनें, खाली बदन पर तिरंगा चढ़ा
नैन खो चुके थे पिता के आंसू न थमते,
चीत्कारें, रूदनों के माहौल थामे न थमते
गांव के चाचा ने तीन वर्ष के भतीजे को गोद में उठाया
जलती आग को उसके हाथ में थमाया
चिता में जलती आग लगवाया
पुत्र को, पिताजी भी, कहने नहीं आया

आग देखकर चिल्लाया, खिलखिलाया, फिर भी अश्रू नहीं बहाया।
अखबार की सुर्खियों में पहली बार आया मेरा नाम,
मरकर सोचा, चलो जीवन आया तो राष्ट्र के काम
बड़ी-बड़ी घोषणायें, आश्वासनों की कतारें,
जमीन, घर, परिवार को रोजगार देने की पुकारें,
सुनकर लगा कि शायद मरकर ही,
कर दूंगा साकार,
जो स्वप्न लिये थे उधार,
पर समय का घोड़ा दौड़ता रहा
हवाओं का रूख मोड़ता रहा
भूली बिसरी याद भर बन गया मैं,
राष्ट्र, शासन और बल के लिये,
जिसे सींचा मैंने खून से,
देश भक्ति के जूनून से,
आज भी
बैठे हैं घर के अंधेरे कोने में तेरे पिता,
चारपाई पर आंसती बूढ़ी मां
कुंए से पानी भरकर लाती बहन,
पत्नि ने दर्पण नहीं देखने का किया प्रण
तीन साल का बेटा, टुक-टुक मां को देखता
और मैं, जो था कभी इस घर की तकदीर
दिवाल पर लटककर सिर्फ बन गया एक तस्वीर,
जिस पर सजते हैं माला के बासी फूल
चढ़ाकर जिन्हें समाज, शासन, राष्ट्र गया भूल
जैसे मुझे
जो बन चुका है बस एक पदक, एक नाम,
साल में एक बार करने को सलाम
समझ ली है समाज, शासन, राष्ट्र ने इति श्री?
यह है पूरे समाज, शासन, राष्ट्र ने इति श्री?
यह है पूरे समाज, शासन, राष्ट्र का उत्तरदायित्व
पूरे करने का मेरे सारे कर्तव्य

जिनकी सुरक्षा में मैंने प्राण लुटाये हैं
उन्हीं से मुझे आशायें हैं।
कर आशाओं दायित्वों की पूर्ति बढ़ा यश कीर्ति
उस भावना की जो देगी हौसला, साहस,
बनने की हरेक को, सैनिक,
और शक्ति और लुटाने की लुटाने की प्राण, जैसे
लुटाये मैंने।

शेप-1

उप.नि.(मं) अमिता शर्मा – ग्रुप केन्द्र-1, अजमेर

मेडिकल का दौर है आया
फिटनस का फण्डा अपनाया।
दौड–भाग कर वजन घटाया
खुद को फिट हमने करवाया।
हुए फिट तो सब भुलाया
हर तरह का खाना खाया।
खाना खाया वजन बढ़ाया
अपने आप को वहीं पर पाया।
भूल गए सब डाक्टर दर्शन
याद रहा बस अपना मन।
करे क्या जाएं कहां हम
अपनी व्यथा सुनाएं कहां हम।
फिटनेस को पाएं कहां हम
मन सोच-सोच घबराया।
जीना अपना दूभर पाया
पदोन्नति का समय जब आया।
विभाग ने जब हमको अपनाया

एतराज ना इसका तब जतलाया।
लम्बे अंतराल के पीछे
सेहत का आईना दिखलाया।
आईना जो देखा करते हैं
अन्दर ही अन्दर हम मरते हैं।
जीने की कोशिश करते हैं
पर जीना कहां हमको है आया।
सुधार तो अब आता नहीं है।
जिद्दी वजन भी जाता नहीं है।
कम करें कैसे उसको
इसका उपाय कोई बतलाता नहीं है।
हुआ ना ऐसा तो लगता है
राह दूसरी पे जाना पड़ेगा।
वी0आर का आवेदन लगाकर हमको
इस आफत से पीछा छुडाना पडेगा।
जीवन तो इसका नाम नहीं है
हार जाए वो जवान नहीं है।
कोई तो राह अपनाना होगा
इस जंग को हराना होगा।
हर हाल में साथ निभाना पड़ेगा
दौड़ना और दौडाना पडेगा।
वजन की सुई को हिलाना पडेगा
शेप-1 को पाना पडेगा।



सीआरपीएफ वार्षिक कल्याण मेले के अवसर पर दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित स्टॉल पर प्रदर्शित सामान देखते हुए



सीआरपीएफ वार्षिक कल्याण मेले के अवसर पर दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित स्टॉल पर प्रदर्शित सामान देखते हुए



दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित सद्भावना स्वरूप गुब्बारे छोड़कर
सीआरपीएफ वार्षिक कल्याण मेले का शुभारम्भ करते हुए

सी.आर.पी.एफ समाचार

दिसम्बर 2009



कावा द्वारा प्रायोजित "जननी" योजना की लॉचिंग के अवसर पर बालिकाओं के अभिभावकों को बैंक पासबुक एवं स्मृति चिन्ह के स्वरूप पौधा प्रदान करते हुए केन्द्रीय गृहमंत्री माननीय श्री पी.चिदम्बरम।

राष्ट्र के शांति प्रहरी



जननी योजना के लॉचिंग अवसर पर माननीय गृहमंत्री श्री पी.चिदम्बरम बल की महिला भारोतोलक गीता रानी को सम्मानित करते हुए।



राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में उल्लेखनीय प्रदर्शन करने पर भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा प्रदत्त प्रथम पुरस्कार की शील्ड केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय माकन से ग्रहण करते हुए महानिदेशालय के प्रतिनिधि श्री वी.बी.चव्हाण, सहायक निदेशक।

सीआरपीएफ समाचार

Vol.21 No. 10

दिसम्बर 2009

मुख्य संपादक: अजय चतुर्वेदी, **संपादक:** पंकज गुप्ता, **चित्रः** जनसंपर्क फोटो सेल, महानिदेशालय और सीआरपीएफ यूनिट्स, **संपादकीय कार्यालय:** महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, ब्लॉक-1, केन्द्रीय कार्यालय परिसर, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003, **दूरभाष:** 24360649, **महानिदेशक सीआरपीएफ की ओर से मुद्रित और प्रकाशितः** विबा प्रेस प्रा. लि., सी-66/3, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली-110020, दूरभाष: 41611300-31,9810049515

संपादकीय सलाहकार समिति

अध्यक्षः जे.सी.डुबास, अपर महानिदेशक (मुख्यालय), **सदस्यः** एस.के. सिंह, महानिरीक्षक (कार्मिक), श्रीकांत, महानिरीक्षक (संभरण एवं संचार), एस.आर.ओझा, उपमहानिरीक्षक (प्रशासन), टी.चंद्रशेखर, उपमहानिरीक्षक (कार्मिक), एल.आर.सिधरा, उपमहानिरीक्षक (परिचालन), रविन्द्रतोमर, उपमहानिरीक्षक (प्रशिक्षण), जी.डी. पेवाल, उपमहानिरीक्षक (संभरण), रोजी अग्रवाल, उप वित्तीय सलाहकार

सीआरपीएफ समाचार मासिक पत्रिका है जिसमें प्रकाशित किये जाने वाले विचार लेखकों के व्यक्तिगत विचार हैं। विभाग की नीति से इसका कोई संबंध नहीं है।

मुख्य संपादक



चलायमान युद्धः
नक्सली युद्धनीति के बदलते आयाम



घाटी में आतंकवादियों की बदलती हुई युद्धक तकनीक तथा सुरक्षा-बलों के लिए
नई चुनौतियां



भोजन एवं स्वास्थ्य
मार्गदर्शिका



जननी
नारी सशक्तिकरण में ही निहित है
मानव सशक्तिकरण
कावा का प्रयास

विषय सूची

चलायमान युद्ध; नक्सली युद्धनीति के बदलते आयाम

घाटी में आतंकवादियों की बदलती हुई युद्धक तकनीक तथा सुरक्षा बलों के लिए नई चुनौतियां

हमारी पुरातन संस्कृति का अवमूल्यन और बल पर इसके दुष्परिणाम

आधुनिक

सकारात्मक सोचः तनाव भगाए एवं जीवन सवारे

खुदी को कर बुलन्द

158 बटालियन केरिपुबल में एच.आई.वी/एडस पर कार्यशाला

मेरा बुढापा कैसे कटेगा

मैन आफ दी मैच

195 बटालियन में मेडिकल कैम्प का आयोजन

श्रीनगर परिचालन रेंज में वॉलीबॉल, टेबल टेनिस एवं बैडमिंटन खेल प्रतियोगिता का आयोजन

कैंसर की रोकथाम जानकारी बने वरदान

भोजन एवं स्वास्थ्य मार्गदर्शिका

जननी

खबरों में

समाचार

कविताएं

लेख



चलायमान युद्धः नक्साली युद्धनीति के बदलते आयाम

राकेश कुमार सिंह
द्वितीय कमान अधिकारी
81 बटालियन

नक्सलियों द्वारा देश के कुछ राज्यों खासकर छत्तीसगढ़, झारखण्ड एवं उड़ीसा में लगातार हिंसक आंदोलनों द्वारा असुरक्षा का वातावरण बनाया जा रहा है। साथ ही साथ प्रचार मीडिया का उपयोग कर यह मिथ्य भी फैलाने की कोशिश की जा रही है कि हिंसा एवं हत्याएं बारम्बार अपनी युद्ध नीति को छापामार युद्ध से चलायमान युद्ध रणनीति में बदलने तथा पी.एल.जी.ए (PLGA) को पी.एल.ए (PLA) में बदलने का समय आ गया है, बता कर अपने हताश कैडरों को उत्साहित एवं ऊर्जावान रखने के प्रयास के साथ ही साथ सुरक्षा बलों को रक्षात्मक शैली अपनाने के लिए दबाव बनाने की कोशिश कर रहे हैं। नक्सलियों की इन नीतियों के परिप्रेक्ष्य में यह आवश्यक हो जाता है कि उनकी सैन्य नीतियों एवं रणनीतियों की विस्तृत विवेचना की जाए तथा

एकत्रित तथ्यों एवं निष्कर्षों के आधार पर उचित प्रतिकारक रणनीति तैयार की जाए। सुरक्षा बलों के नक्सल विरोधी अभियानों की सफलता में गुणात्मक वृद्धि हो इसके लिए आवश्यक है कि नक्सलियों की रणनीतियों को समझा जाए, उनकी मजबूत आधार एवं कमजोरियों का पता लगाया जाए तथा उनसे 'पहल' एवं 'गोपनीयता' को छीन लिया जाए। आम तौर पर, जब सुरक्षा बलों को किसी आंतरिक सुरक्षा संबंधी समस्या के समाधान के लिए भेजा जाता है तो उस समस्या के पृष्ठभूमि के बारे में अधिक जानकारी नहीं होती है और न ही इतना समय होता है। अतः ज्यादातर समय किसी हिंसक आंदोलनों के दौर में जो सुरक्षा बल पहले पहुंचती है उसे काफी हानि उठानी पड़ती है। नक्सली क्षेत्रों में भी हमारे बल

केरिपुबल के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। लेकिन अब हम अपने अनुभवों के आधार पर इस सम्पूर्ण आंदोलन को समझ कर इनके सैन्य नीतियों के जवाब में उचित रणनीति तैयार कर सकते हैं। यह लेख नक्सलियों के सैन्य नीति एवं उनके बहुचर्चित 'चलायमान' युद्ध नीति के बारे में प्रकाश डालने का प्रयास है जिससे कि नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में तैनात वाहिनियों के द्वारा प्रभावी परिचालनिक रणनीतियों के द्वारा सफलता प्राप्त की जा सके।

नक्सलवाद जनता की राजनीतिक सत्ता स्थापित करना चाहती है जिससे की वर्ग-संघर्ष खत्म हो तथा सर्वहारा वर्ग का उत्थान हो। वे अपने इस प्रयास में लोकयुद्ध के सहारे सशस्त्र संघर्ष को महत्वपूर्ण मानते हैं तथा इन प्रयासों के क्रम में सैन्यीकरण को विशेष महत्व दिया जाता हैं। माओ के प्रसिद्ध वक्तव्य "without a people's army people have nothing" और "political power flows through the barrel of the gun" के आधार पर लोकयुद्ध के लिए एक नियमित सेना बनाना चाहते हैं जो उनके राजनीतिक सत्ता एवं विचारों के अधीन हो। माओ के विचारों से प्रभावित हो नक्सलियों की अवधारणा है कि उनकी सेना पी.एल.जी.ए./पी.एल.ए. एक राजनीतिक सेना हैं जो पार्टी के राजनीतिक सिद्धान्तों एवं नेतृत्व के अधीन लोगों के हितों में बनायी गयी है न कि किसी अन्य उद्देश्यों के लिए यह क्रांतिकारी सेना लोकयुद्ध को गति प्रदान करने के लिए है। दूसरी अवधारणा यह है कि इस बात को हमें मानना चाहिये कि हमारी सेना दुश्मनों से कमजोर है तथा छोटी है। अतः हमारी जीत सिर्फ दुश्मनों को उनके कमजोरियों पर आघात कर तथा अपनी सम्पूर्ण शक्ति को इकट्ठा कर लड़ने में ही जीत संभव है। जब दुश्मन हम पर हावी होने लगे तो हमें पीछे हट जाना चाहिये।

नक्सली अपने सशस्त्र दस्तों को क्रमिक विकसित कर सशक्त करना चाहते हैं। अनियमित गुरिल्ला बल एवं जन मिलिशिया से ग्राम रक्षा दल तथा स्थानीय गुरिल्ला दस्ता बना कर क्रमशः स्कैंड, गुरिल्ला प्लाटून कंपनी विकसित कर रही हैं। छापामार युद्धों ने इन गुरिल्ला दस्तो को आवश्यकतानुसार एकत्रित कर समन्वित युद्ध करने के प्रयास से पी एल जी ए का गठन किया हैं जिसे नक्सली 'पी एल ए एवं 'बेस एरिया' के गठन के लिए पहला प्रयास मानते हैं।

चलायमान युद्ध (Mobile warfare)

क्रांतिकारी युद्धनीति के अपने सिद्धान्तों के तहत नक्सली छापामार युद्ध (Guerilla Warfare) को चलायमान युद्ध (Mobile warfare) एवं तदोपरान्त पोजीशनल युद्धनीति (Positional warfare) में क्रमिक विकास करना चाहते हैं। चलायमान युद्ध आजकल चर्चा का विषय हैं क्योंकि नेतृत्व यह मानने लगा है कि उनके छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में बदलने का समय आ गया है। चलायमान युद्ध का उनका मूल मंत्र है 'लड़ो जब तुम जीत सकते हो, और दूर निकल जाओ जब तुम नहीं जीत सकते (Fight when you can win, move away when you can't) चलायमान युद्ध में किसी खास स्थान पर कब्जा बनाये रखने के बदले प्रतिद्वंदी की सेना को तबाह करने एवं आक्रमण करते रहने पर ज्यादा जोर दिया गया है। चलायमान युद्ध में क्रांतिकारी सेना के बयान के लिए त्वरित परिचालन एवं आक्रमण के साथ तुरन्त एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में चले जाने (Move) की क्षमता पर बल दिया गया है। इस युद्धनीति के अनुसार बड़े क्षेत्रों में दुश्मन की रणनीति एवं क्षमता के अनुरूप एक जगह से दूसरे जगह बदलने एवं फुर्ती से पुनः एकत्रित होकर आक्रमण करने पर दुश्मनों का ज्यादा नुकसान हो, की नीति है। इसमें युद्ध नीति में स्थितियों के अनुसार हमेशा आवश्यक रणनीतियों में बदलाव एवं युद्ध की स्थिती अपने समर्थ के अनुसार ढ़ालने की भी प्रक्रिया हैं। इसके लिए ज्यादा संख्या में योद्धा एवं नियमित तथा विशेष रूप से प्रशिक्षित सैनिक आधुनिक हथियारों से लैस होकर समन्वित युद्ध करते हैं। यह छापामार युद्ध से ज्यादा कठिन एवं जटिल है तथा इसके लिए बड़े उच्च दर्जे का अनुशासन एवं उच्च कोटि की नेतृत्व क्षमता की आवश्यकता होती हैं तथा नेतृत्वकर्ता का युद्धकौशल में निपुण होना आवश्यक है। इसमें पहल ' एवं ' सरप्राईज' हमेशा उनके पास होता हैं जिससे विरोधी सेना रणनीतियों को हमेशा बदलते रहने को विवश रहता है तथा ज्यादातर समय नक्सलियों के सैन्य दस्तों के खोज में ही लगे रहना पड़ता है।

छापामार युद्ध मुख्यतः 'आक्रमण करो और भाग जाओ' की नीति अपनाती है । जबकि चलायमान युद्ध छापामार युद्ध एवं नियमित युद्ध के बीच की रणनीति है। इसमें छापामार युद्ध से ज्यादा समय दुश्मनों पर आक्रमण करने में लगाया जाता है क्योंकि गुरिल्लों को समन्वित तरीके से एकत्र कर आक्रमण किया जाता है तथा सारी प्रक्रिया केन्द्रित होती है। यह नक्सलियों द्वारा नियमित पी एल ए विकसित करने के क्रम तथा दस्तों के बड़े ईकाईयों को बनाने के प्रयास की स्थितियां हैं। जबकि छापामार दस्तो के छोटी ईकाईयों के अस्तित्व एवं उसमें स्थानीय कमांड में ज्यादा बदलाव किये बगैर बड़े ईकाईयों द्वारा केन्द्रित कमान के तहत आक्रमण करना एवं सुरक्षा बलों को परेशान करने की प्रक्रिया है। इस पद्धति में नक्सली सेकण्डरी एवं बेस फोर्स को एकत्रित कर आक्रमण को अंजाम देते हैं लेकिन उनका लक्ष्य अपने मेन फोर्स की संख्या को सीधे तौर पर बढ़ा कर मजबूत करने की भी होती हैं। अतएव, आज की परिस्थितियों में जहा वो चलायमान युद्ध में बदलाव की बात कर रहे

हैं स्पष्ट तौर अपने सामारेक सैन्य विकास की तरफ बढ़ने के लिए जमीनी तौर पर अनेक कार्य कर रहे हैं। जैसे अपनी "Cadre Strength" को बढ़ाकर main force में सीधे भर्ती करना। ऊंचे दर्जे के हथियारों को हासिल करना। सैन्य समन्वय के लिए आसूचना एवं सूचना तंत्र को विकसित करना। सैन्यीकरण को अपने राजनीतिक विचारधारा के अधीन रखने के लिए उचित अनुशासन, प्रशिक्षण एवं सिद्धान्तों पर बल देने के लिए बराबर कैडर से संबंध बनाना एवं नजर रखना इत्यादि कार्यों में लगे हैं। इन जटिल कार्यों में अनेक सूत्रधारों के अलावा इनमें प्रमुख नेता/कैडर लगे हुए हैं जिससे नक्सलियों का निसंदेह आवागमन एवं संचार नेटवर्क फैल रहा हैं तथा उनके अधिक expose होने की संभावना भी बनी रहती है। आसूचना तंत्र को इससे महत्वपूर्ण परिचालनिक महत्व की सूचना को इकट्ठा करने पर बल देना चाहिये। जिससे इनके युद्धों की बनती नयी रणनीतियों पर कुठाराघात किया जा सके।



नक्सलियों द्वारा अपने सैन्य सशक्तिकरण के लिए आधुनिक हथियारो को हासिल करने पर विशेष बल दिया जा रहा है। विस्फोटकों को लूट कर सुरक्षा बलों के खिलाफ IED का इस्तेमाल कर क्षति पहुंचा कर हथियार लूटना इनके रणनीति का एक अहम पहलू है। एनएमडीसी के स्टोर से लूटे गये 20 टन विस्फोटकों से, नक्सलियों के अनुसार ही उन्हें काफी फायदा मिला। इन विस्फोटकों के बल पर उन्होंने अपने 12 बोर वाली पीएलजीए के द्वारा अनेक शस्त्रागार लूटे तथा सैन्य क्षमता को मजबूत किया। अत: विस्फोटकों के सुरक्षा एवं इसमें प्रयोग के बारे में सही रणनीति बनाने एवं अमल में लाने की जरूरत है। ज्यादातर नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में खाद्यानों की खुदाई एवं अन्य उधोगों के लिए इसका उपयोग किया जाता हैं जहां से

भ्रष्ट तरीकों से या लूट कर नक्सली विस्फोटकों को हासिल कर रहे हैं। जब तक इन विस्फोटकों का सही हिसाब एवं सुरक्षा नहीं की जाएगी तब तक नक्सलियों को विस्फोटकों का सही हिसाब एवं सुरक्षा नहीं की जाएगी तब तक नक्सलियों को विस्फोटको को हासिल करने से नहीं रोका जा सकता है। इसके लिए उद्योग से जुडे लोगों को विशेष तौर पर सचेत करने एवं संवेदनशील बनाने की आवश्यकता है। लैंड माइंस के द्वारा सुरक्षा बलों को नुकसान पहुचाने के बाद नक्सली अब आधुनिक हथियारों से सशक्तिकरण कर अपनी नीति केन्द्रित कर रहे हैं क्योंकि अनुभवों एवं संसाधनों से पूर्ण सुरक्षा बल अब इस प्रकार के माइंस इत्यादि से बचाव मे सक्षम हैं। इस स्थिति में आमना-सामना होने पर हथियारों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

माओवादियों के जनवरी 2007 के नौवीं कांग्रेस में छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में रूपान्तरित करने का निर्णय लिया था। नक्सलियों के अनुसार 'नयागढ़' पर आक्रमण को इस नयी युद्धनीति के तहत पहल आक्रमण मानते हैं लेकिन बड़ी ईकाईयों के गठन में देरी होने से चलायमान युद्धनीति को पूरी तरह से क्रियान्वित नहीं किया जा सका है। हालांकि इस बीच नक्सलियों ने छापामार युद्ध एवं चलायमान युद्ध शैली को अपनाते हुए बड़े ही योजनाबद्ध तरीके से कभी एक क्षेत्र तो कभी उसके दूरस्थ क्षेत्र, फिर तीसरे क्षेत्र में वारदात कर रह हैं। 29 जून को उड़ीसा के वालीमेना में ग्रे हाउण्ड पर आक्रमण किया जिसमें 46 कर्मी शहीद हो गये। 16 जुलाई को मलकानगिरी में उड़ीसा पुलिस के एस ओ जी (SOG) के लैंड माइन्स प्रूफ गाड़ी को विस्फोट कर 17 कार्मियों की हत्या, 22 अक्टूबर 2008 को बीजापुर में केरिपुबल पर अम्बुश कर 12 कर्मियों की हत्या तथा एक फरवरी 2009 को गढ़चिरौली में 15 पुलिस कर्मी की हत्या कुछ प्रमुख बड़ी वारदात हैं जिसमें नक्सलियों ने सुनियोजित तरीके से बड़े पैमाने पर आक्रमण कर नुकसान पहुंचाया है।

नक्सलियों के चलायमान युद्धनीति को गहराई से समझने के उपरान्त इससे मुकाबला करने की नीति को योजनाबद्ध करने की आवश्यकता है। सुरक्षा बलों को अपने परिचालन के पूर्व नक्सलियों के तुरन्त मूव करने की क्षमता, कैडर को एकत्रित कर अम्बुश लगाने इत्यादि एवं आधुनिक हथियारों के साथ प्रशिक्षित सैनिकों की संभावना को ध्यान में रखते हुए बनाना है। प्रति नक्सली अभियानों में खास पहलू यह भी है कि नक्सली लम्बी लड़ाई की बात करते हैं तथा धोखा, छल-कपट या अन्य तरीकों से सुरक्षा बलों को नुकसान पहुचाना चाहते हैं चाहे कृत्य कितना ही बर्बर या अमानवीय क्यों न हो। सिद्धान्तों का आवरण ओढे, धूर्त एवं मूल्यहीन नक्सलियों की हिंसा को खत्म करने के लिए उन्हें दुश्मन की तरह समझना ही एक उचित' प्रतिकारक परिचालनिक रणनीति होगी।



घाटी में आतंकवादियों की बदलती हुई युद्धक तकनीक तथा सुरक्षा-बलों के लिए नई चुनौतियां

चितेश कुमार,
सहा कमांडेन्ट
130 बटालियन

दुनिया के सबसे खुबसूरत प्राकृतिक तथा भौगोलिक सुन्दर रचनाओं से परिपूर्ण कश्मीर घाटी पर अलग-अलग ऐतिहासिक राजवंशों का प्राचीन काल से प्रभुत्व रहा है। इस जन्नत सदृश घाटी में मौर्य वंश के अशोक महान् ने ललितपट्टन तथा लेवपट्टन शहर का निर्माण कर अपनी साम्राज्य विस्तार को पराकाष्ठा तक पहुंचाया वहीं मध्यकाल में जैनुल आबदीन (कश्मीर का अकबर) ने इस गौरवशाली धरती का सम्मान बनाए रखा। सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से अट्ठारहवीं सदी के पूवार्ध तक यहा अफगान शासकों ने अपनी प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज कराई फिर 'शाह'

शासकों, डोगरा शासकों ने जम्म और कश्मीर के इस संपन्न रत्नगर्भा भूमि को विदेशी आक्रांताओं के कोप से अक्षुण्ण बनाकर रखा। आजादी के उपरांत हमारे इस अभिन्न अंग के ऊपर कुदृष्टि रखने वाले पड़ोसियों ने आक्रमण की हिमाकत की जिसमें बहुत हद तक वे सफल भी रहे। आज लगभग 1 लाख 21 हजार वर्ग किलोमीटर के हिस्से को पाक और चीन ने अपने कब्जे में रखा है। इसके बावजूद भी छद्म युद्ध और परोक्ष आक्रमण कर पाकिस्तान जैसे राष्ट्र हमारी संप्रभुत्व के अधीन कश्मीर के हिस्से को पाने की कोशिश करता रहा है।

प्रत्यक्ष आक्रमण में कई बार मुंह की खाने के बाद पाक प्रायोजित आतंकवाद 80 के दशक के मध्य से यहा पैर पसारना आरंभ किया विगत दो दशकों में यहा वितस्ता (झेलम नदी) के अठखेलियां करती हुई लहरों ने आतंकवाद के कई घिनौने रूप देखे हैं। घाटी में आतंकवाद के प्रसव काल में यहां की स्थानीय जनता ने कश्मीर की आजादी के नाम पर आतंक के सौदागरों का काफी गर्मजोशी से स्वागत किया। यहां के नवयुवकों को आतंकवाद का प्रशिक्षण प्राप्त करवाने हेतु पाक जाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। मेरी कंपनी अभी पुलवामा जिले के पंजगाम नामक जगह पर तैनात है। इस कंपनी के संपूर्ण जिम्मेदारी के इलाके में लगभग 12 गांव आते हैं जिसमें कुल 47 आत्मसमर्पण कर चुके आतंकवादी है। मैं जब उनसे उनके आतंकवादी बनने का कारण पूछता हूं तो अधिकांशतः यह बताते हैं कि “90 के दशक के आरंभ में कश्मीर की आजादी का सपना लेकर जब हम प्रशिक्षण प्राप्त कर राइफल के साथ अपने गांव या इलाके में आते थे तो गांव वाले हमारा जबरदस्त तरीके से इस्तकबाल करते थे और हमें खुदा के बंदे होने की बात कहकर तारीफ करते थे। औरत, बूढ़े और लड़कियां काफी दूर तक इज्जत के साथ छोड़ने आते थे। बच्चे और नवयुवक हमसे काफी प्रभावित थे तथा बड़ा होकर हमारी जेहाद में शामिल होना चाहते थे। वास्तव में मैं भी उस समय 17 वर्ष का लड़का था मुझे जेहाद का सच्चा अर्थ मालूम नहीं था परन्तु अपने गांव वालों के बीच इस तरह का अभूतपूर्व इज्जत बहुत जोश भरने वाला होता था।”

उपर लिखित बातों से यह बिल्कुल स्पष्ट है कि आरंभ में जेहाद के नाम पर कश्मीरी कौम में आजादी पाना एक सपना था जिसे तथाकथित जेहादी पूरा करने का जिम्मा उठा रखा था। वे काफी प्रेरित थे तथा बड़ी संख्या में गांवों में घूमकर अपने लक्ष्य के बारे में चढ़ाबढ़ाकर प्रचारित करते थे। इसके बाद कश्मीर में रहने वाले कश्मीरी पंडितों को बड़े स्तर पर सामूहिक हत्या के द्वारा आतंकवादियों ने उन्हे अपने जमीन, घर तथा व्यवसाय को छोड़कर पलायन करने हेतु मजबूर किया। यह आतंकवाद का सबसे क्रूर चेहरा था जिसमें आतंक के मजहबी रंग ने कश्मीरी जनता को दो भागों में बांट कर रख दिया। कश्मीरियत जो इन्सानियत एवं भावप्रवणता के संवेदनशील मिश्रण रखने के लिए प्रसिद्ध है, आतंकवाद के तूफान की जद में आकर तार-तार हो गया।

वर्तमान समय में कश्मीर में जो आतंकवादियों का नया चेहरा सामने आया है यह

आतंकवाद को नया आयाम देने के लिए वचनबद्ध है। दक्षिण कश्मीर में सक्रेय आतंक के तंजीमों के बीच (अलबदर, जैश-ए-मोहम्मद, लश्कर-ए-तयबा, हिज्ब मुजाहिदिन) पारस्परिक सहयोग एवं समन्वय की नई मिसालें देखने को मिल रही हैं। यहां के स्थानीय लड़के जिनका झुकाव पहले हिज्ब तंजीम की ओर हुआ करता था अब नए लड़कों में लश्कर-ए-तयबा में शामिल होने की खबर लगातार आ रही है। इसके प्रमुख कारण है - द० कश्मीर में हिज्बुल मुजाहिदीन तंजीम लगभग आखिरी सांसे गिन रही है। लश्कर जिसके ऊपर स्तर के कमांडर जो मुख्यतः पाकिस्तानी होते हैं उन्हें अपने शरणगाह तथा विध्वंसक कार्यवाही को अंजाम देने के लिए स्थानीय स्तर पर मजबूत प्लेटफार्म की जरूरत है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि लश्कर के लिए पैसों की कोई कमी नहीं है। इसकी फंडिंग के कई स्त्रोत हैं।

(क) आई. एस. आई. द्वारा सीधे तौर पर।

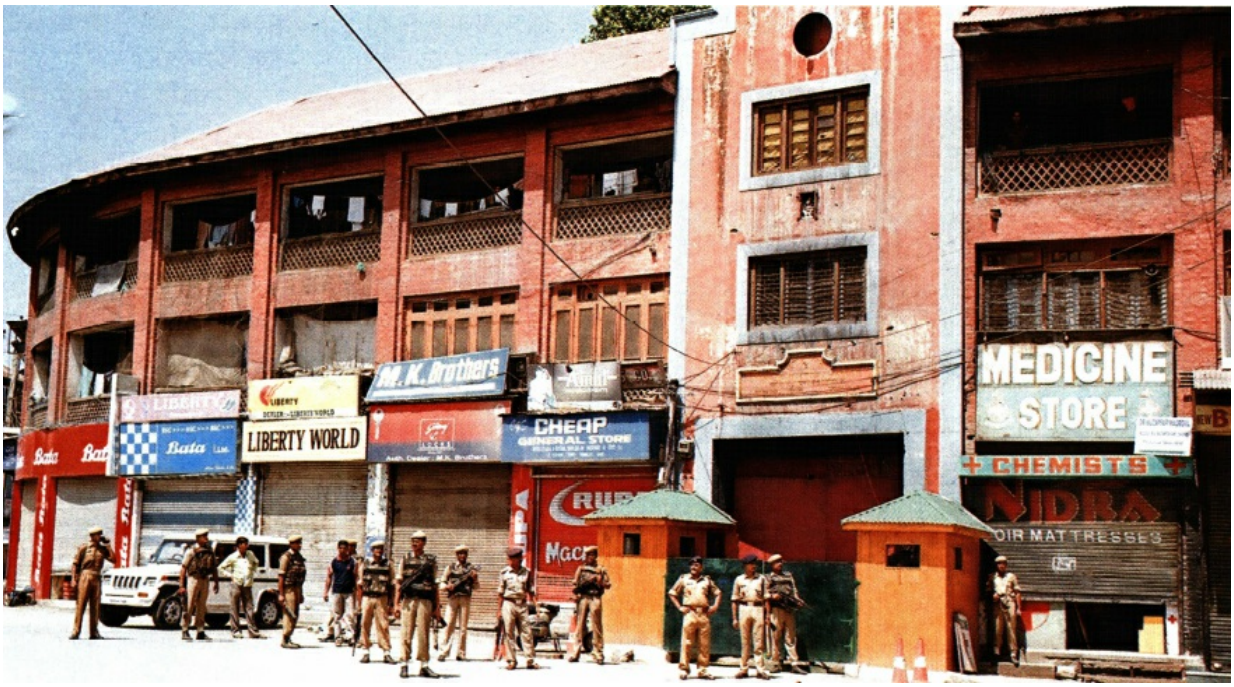
(ख) नकली भारतीय नोटों का उपयोग कर।

(ग) हवाला के माध्यम से।

(घ) चरस, अफीम या अन्य ड्रग्स के द्वारा। (यह तरीका द० कश्मीर में फंडिंग के लिए सबसे आसान है अतः इसे कई बार नार्को टेररिज्म का भी नाम दिया जाता है)

(ड) इदारे खिदमत खाक, अल-अख्तर ट्रस्ट इंटरनेशनल, जल-दवा मेडिकल मिशन तथा अल-रहमत ट्रस्ट जैसे संगठनों के माध्यम से लश्कर को कश्मीर में धन मुहैया होता है। इन पैसों के माध्यम से लश्कर अपने तंजीम को कश्मीर में हिज्बुल-मुजाहिद्दीन की तरह लोकप्रिय बना रहा है। पिछले वर्ष के दौरान मारे गए आतंकवादियों में स्थानीय तथा विदेशी आतंकियों की बराबर की संख्या में भागीदारी रही है। विगत वर्षों में (लगभग 5 वर्ष तक) द० कश्मीर में लश्कर-ए-तयबा का परिचालनिक कमांडर अबु आतिफ था जिसे पाकिस्तानी सेना के अधिकारी के रूप में जाना जाता है, 03 जुलाई 08 को हमारी वाहिनी के संयुक्त परिचालनिक अभियान में मारा गया। यह उपलब्धि सुरक्षा बलों के लिए बहुत बड़ी राहत की बात थी। अभी वर्तमान में अबु आतीफ की जगह उसका नायब अब्दुर्र रहमान ने लिया है जो अपने साथ एक फिदायीन लेकर चलता है। यह इस इलाके के जनता में अपना गहरी पैठ बना चुका है और कई बार सुरक्षाबलों की घेराबन्दी से फरार हो चुका है। यह आतंकी सरगना एक निश्चित कार्यकाल के लिए भारत आया था और अपने लक्ष्य को पूरा कर पिछले साल वापस जाने की तैयारी में था परन्तु अबु आतिफ के मारे जाने के बाद उसका कार्यभार इसे मिल गया। रहमान के द्वारा मुझे फोन पर इशारों में धमकी मिल चुकी है उस बातचीत में उसने आतिफ के बारे में कई बार जिक्र किया जिससे उसके लश्कर में बने हुए पहचान एवं कद के बारे में पता चलता है।





पहले लश्कर अपने तंजीम में खासकर गांव के मध्यम वर्ग/निम्न वर्ग के लड़कों को भर्ती करवाता था ताकि वह आसानी से समर्पण न कर सकें बल्कि उसके लिए जीवनपर्यंत कार्य कर सकें। वर्तमान में धनी तथा संपन्न परिवार के लड़के भागकर लश्कर में शामिल हाते हैं ताकि लश्कर की सामाजिक स्तर पर भी एक पहचान बनी रहे। इस वर्ष के आरंभ से ही प्रमाणों से यह लगता है कि यहां पर सक्रिय सभी तंजीमें समन्वित होकर नए सिरे से पुनर्गठित हो रही है। हमारे इंटरसेप्टर में पकड़े गए बातचीतों में लश्कर ने अपने अलग-अलग कमांडरों का कोड बदल दिया है जो पहले

वाले कोड से मेल नहीं खाते हैं। पाकिस्तान में आतंकवादियों के 52 प्रशिक्षण शिविर हैं जो सीमारेखा से सटे हुए हैं तथा तीस से अधिक लांचिंग पैड है जो केरान तांगधार, माचिल सेक्टर से आतंकियों को घुसपैठ कराते हैं। यह प्रशिक्षण शिविर तथा लांचिंग पैड की जगह हमेशा बदलते रहते हैं। इन आतंकियों को प्रशिक्षित करने में कथित रूप से पाकिस्तानी सेना एवं इंटर सर्विसेज इंटेलिजेंस के कई अफसर स्वैच्छिक मदद करते हैं। हाल ही में एनकाउंटर के दौरान/बाद में आतंकियों से बरामद सेलफोन, ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम(जी पी एस) सेटेलाइट फोन और उच्च स्तर के संवाद संयंत्र के अवलोकन से पता चलता है कि ये दहशतगर्द समय के मुताबिक अपने आप को कितना अद्यतन बना चुके हैं जबकि अलग-अलग तरह के विध्वंसक आई.ई.डी तकनीक का आउटसोर्सिंग अलग-अलग राष्ट्रों की मदद से कर रहे हैं। लश्कर-ए-तयबा एवं इनके समकक्ष अन्य तंजीमों के दहशतगर्दों के द्वारा प्रयोग की जानेवाली अत्याधुनिक हथियारों की बानगी अग्रलिखित है।

- ए के सीरीज की राइफल, पी के एम (पुलोमेट क्लाशनिकोव मोडर्नाइज्ड) राइफल
- आर पी जी (राकेट प्रोपेल्ड गन)
- यू एम जी (यूनिवर्सल मशीन गन)
- यू बी जी एल (अंडर बैरल ग्रेनेड लांचर)
- मल्टी बैरल ग्रेनेड लांचर तथा आटोमेटिक ग्रेनेड लांचर

इसके अतिरिक्त सुरक्षा बलों को व्यापक क्षति पहुंचाने के लिए जिस आई ई डी का उपयोग करते हैं उसमें आर डी एक्स, टी एन टी पोटाशियम तथा अल्युमिनियम का क्लोरेट नाइट्रेट एवं द्रवित आई ई डी के लिए टी एन जी एवं पेराक्साइड का इस्तेमाल करते हैं। इन आई ई डी को ब्लास्ट करने के लिए डुअल टोन मोडॅयूल तरंगे जो 4-5 अंकों का कोड होता है, का प्रयोग भी करते हैं। मोबाइल एवं रिमोट कन्ट्रोल से सक्रिय करने वाले विस्फोटक संयत्र इनके लिए पुरानी चीजें हो गई हैं। अभी तो यहां तक सुनने में आ रहा है कि बायोमेट्रिक सेंसर वाले आई ई डी भी बनाए जा रहे हैं। हिज्बुल मुजाहिद्दीन के दो बड़े कमांडर और आई ई डी विशेषज्ञ रहस काचरू एवं इशफाक के मारे जाने के बाद बहुत हद तक इन विस्फोटों की संभावनाओं में कमी आई है परंतु सभी तंजीमों के एकीकृत होकर काम करने की वजह से आई ई डी तकनीक और विकसित होने की प्रबल संभावना हो गई है।



घाटी के उत्तरी तथा दक्षिणी भाग में आतंकियों की कार्यशैली में बहुत कुछ विविधताएं/विषमताएं देखने को मिलती हैं। कुपवाड़ा तथा हंदवारा इलाके में बार्डर के नजदीकी एवं कठिन भू-आकृतिक रचनाओं एवं परिवेश के बदौलत उस इलाके में प्रतिविद्रोही अभियान चलाना काफी मुश्किल होता है, वहां के सीधे चढ़ाई वाले पर्वत चोटी जंगल एवं हिम खंडों से अच्छादित रहते हैं। आतंकी घुसपैठ कर जब इन पहाडों में आते हैं तो अपने अनुकूल समय के आने तक उन जगहों पर बने छुपाव-स्थल में समय बिताते हैं खाने-पीने तथा अन्य जरूरी सामानों की प्राप्त करने के लिए 10 बजे या 11 बजे रात को पाईन वाले इलाके (पहाड़ के बिल्कुल नीचे बसे हुए गांव) में पहुंचकर गांव वालों मे आवश्यक सामग्री सप्ताह भर/10 दिन के लिए लेते हैं जब तक सुरक्षाबलों को उनकी खबर मिलती है तब तक वे जंगलों के रास्ते सुरक्षित जगहों पर पहुच चुके होते हैं। इस दौरान वे आतंकी लोकल गाइडों का इस्तेमाल करते है जिन्हे पहाड़ी के रास्तों का भलीभांति ज्ञान होता है। अगर कभी वह किसी गांव में सुरक्षाबलों के घेराबन्दी में फंस जाते है तो कार्डन के कमज़ोर कड़ी को लोड़कर वे निकलने की कोशिश करते हैं। एक बार जंगल में निकल जाने के बाद फिर परिचालन करके उन्हें खत्म करना काफी मुश्किल हो जाता है। ये आतंकी अपने पास पीका नामक एक एल एम जी का रूपांतरित हथियार उपयोग करते हैं जो आसानी से परिवहन कि जा सकता है तथा फायर पावर एल एम जी से काफी अधिक शक्तिशाली होती है। द० कश्मीर में त्राल, पुलवामा तथा अनंतनाग ऐसे इलाके हैं जहां आतंकियों की जन्मस्थली एवं कर्मस्थली मानी जाती है। इन इलाकों में पहाड़ियों के अतिरिक्त कुछ खास नाम वाले जंगल हैं जो काफी सघन हैं इसमें कई सालों से बहुत सारे छुपावस्थल बने हुए हैं जो काफी वैज्ञानिक ढंग से बनाए गए हैं। इस छुपाव स्थल में एक बार में छः से सात आतंकी विश्राम कर सकते हैं साथ ही अपने हथियार को भी सुरक्षित रख सकते हैं।

यहां आतंकवादियों के द्वारा अल्सर ग्रेनेड सूबिंग, पेट्रोलिंग पार्टी पर स्निक फायर, साइलेंसर पिस्टल से फायर तथा अत्याधुनिक किस्म के आई ई डी का इस्तेमाल हो रहा है। अक्सर इनका समूह सायंकाल में मस्जिदों के नमाज के बाद निकलते हैं।

अभी कई जगहों से खबर आ रही हैं कि ये फौज की वर्दी में निकलते हैं और कंधे पर रैंक भी लगाते हैं। इस तरह काफी संशय की स्थिति बनी रहती है। परिचालनिक कार्रवाही के दौरान कार्डन पार्टी के उपर बाहर से अंधाधुंध फायर करना ताकि कार्डन में फसें आतंकियों को बाहर निकल भागने का मौका मिल सके जैसी दुस्साहसिक कार्य से भी पीछे नहीं हटते। आतंकियों के द्वारा सामाजिक स्तर पर भी पकड़ बनाए जाने की वजह से सुरक्षाबलों की कार्रवाही के दौरान प्रोपेगैंडा करना, फौज के ऊपर हेराफेरी एवं छेडखानी का झूठा इल्जाम लगाना इन कार्रवाईयों को शीघ्रतापूर्वक मजहबी रंग में रंग देना, इस तरह के प्रत्यारोप तथा महिलाओं को आगे रखकर भीड़ को भड़काते हुए हिंसक क्रियाकलापों को बढावा देना भी आतंकियों की नई चालें हैं। सुरक्षाबलों खासकर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की महती भागीदारी जम्मू और कश्मीर में परिचालनिक अभियान, आर ओ पी कानून व्यवस्था की पुनर्बहाली, इरकान/रेलवे की सुरक्षा, चुनाव की ड्यूटियां तथा अन्य कार्यों में रहती है। इस तरह हमारी (के रि पु बल) जम्मू और कश्मीर राज्य की शांति व्यवस्था तथा परिचालनिक कार्रवाही की दोहरी जिम्मेदारी है जो किसी अन्य से काफी कठिन है। इसके बावजूद हमारे पास संसाधनों का नितांत अभाव है हमारे पास कंपनी स्तर पर अपर्याप्त बुलैट प्रुफ जैकेट, पटका तथा अत्याधुनिक हथियारों की भारी कमी है। जहां आतंकी अपने आप को पूरी तरह से उपकरणों द्वारा अद्यतन बनाते हैं हमारे पास इसकी काफी कमी है।

अत: यह अत्यंत आवश्यक है कि कश्मीर घाटी में के रि पु बल के द्वारा संपादित कार्यों को और उन्नत तथा प्रभावशाली बनाने हेतु कंपनी स्तर पर विशिष्ट प्रशिक्षण (जी पी एस, प्रतिविद्रोहिता, दंगा नियंत्रण अत्याधुनिक शस्त्रों का) अवधि में उसकी जानकारी बल के निचले स्तर के कार्मिकों तक पहुंचाया जाए। साथ ही इन कार्रवाइयों हेत आवश्यक उपकरण की कमी न रहे ताकि जवान एवं अधिकारी आत्मविश्वास तथा स्वप्रेरणा से भरकर अपने कार्यों को अंजाम दे सकें। इसके अतिरिक्त हमें वक्त के साथ और व्यवसायिक ढंग से अपने कार्यसिद्धि के उपाय ढूंढ़ने होंगे जिससे इस महान बल की गरिमा और शान कभी कम न होने पाए।

हमारी पुरातन संस्कृति का अवमूल्यन और बल पर इसके दुष्परिणाम

पश्चिमी सेक्टर, मुम्बई

हमारी पुरातन भारतीय संस्कृति जिसकी मुख्य विशेषताएं हैं - कर्म प्रधानता,

आध्यात्मेकता, भाई-चारा, प्रेम, अमरता, चिन्तन की स्वतंत्रता, सामूहेक सहेष्णुता, आपसी विश्वास और उदारता तथा सबसे बढ़कर सबसे प्रधान विशेषता- अनेकता में एकता की विद्यमानता। आज की भाग-दौड़ भरी जिन्दगी में व पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण की दौड़ में हमारे समाज में इन विशेषताओं का अवमूल्यन बहुत तेजी से हो रहा है। परिणामस्वरूप समाज के सभी वर्गों के लोग मानसिक परेशानियों से घिरे हुए हैं और इन परिणामस्वरूप समाज के सभी वर्गों के लोग मानसिक परेशानियों से घिरे हुए हैं और इन मानसिक परेशानियों में तेजी लाने का एक मुख्य कारण सफलता की चाहत में पाश्चात्य संस्कृति के पीछे दौड़ते हुए हमारे सामाजिक व पारिवारिक रिश्तों में आई खटास भी है । विशेषकर बल के सदस्य, जो कतिपय कारणों से एकल परिवार प्रथा अपनाने को मजबूर हैं तथा अपने परिवार से दूर सुदूर इलाकों में बहुत ही कठिन परिस्थितियों में अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं, वे मानसिक परेशानियों से सबसे ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं।

किसी भी समस्या का समाधान खोजा जा सकता है, बशर्ते कि समाधान खोजनेवाले के पास सही सोच, सम्यक दृष्टि, उचित दिशा ज्ञान, दृढ़ इच्छा शक्ति और पक्की लगन हो। हम सभी के पास यह सब गुण हैं और हमारे प्रशिक्षण में भी कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में यह सभी गुण विद्यमान हैं, जिनसे हम अपनी समस्याओं का उचित समाधान खोज सकते हैं, किन्तु बढ़ते मानसिक तनाव के कारण हमारे साथी उचित समाधान नहीं निकाल पाते हैं और गलत रास्तों को अपना लेते हैं और नशाखोरी व गैर अनुशासनिक कार्यकलापों में संलिप्त हो जाते हैं। आज आवश्यकता इस बात की भी महसूस की जा रही है कि हम वापिस अपनी पुरातन संस्कृति को अपनाएं, ताकि पाश्चात्य संस्कृति जनित इन बुराइयों को हमारे समाज से जड़ से उखाड़ा जा सके। इसमें हमारे पारिवारिक और सामाजिक सौहाद्रपूर्ण रिश्ते महती भूमिका निबाह सकते हैं। रिश्तों की महत्ता के साथ उन्हें सौहाद्रपूर्ण बनाने और हमारे टूटते-उखड़ते रिश्तों की तुरपाई करते हुए आपके मर्म को छूने का एक प्रयास है

रिश्तों के वे बन्धन टूट गए जो कभी-

जीवन, जीवन संचार और जीवन की शक्ति, तो कभी समाज के निर्माण की अधिव्यक्ति थे। कभी पालन पोषण से लेकर प्रेमपूर्ण अनुशासन के प्रतीक थे। तो कभी सारे सपनों, इच्छाओं व अभिलाषाओं के पूर्तिकर्ता और पथ प्रदर्शक थे। कभी परिवार में दिए हुए संस्कारों के आश्रयदाता तो कभी भारतीय संस्कृति के धरोहर थे जिनकी कमी को कभी पूरा नहीं किया जा सकता है और न ही जिनके आर्शीवादों की सार्थकता को नकारा जा सकता है, क्योंकि इनके आर्शीवादों के हजारों हाथ होते हैं। आज भी हमारे बीच वो खुशनसीब हैं, जिनके ऊपर इनका साया है वो कोई और नहीं आपके हमारे अपने सौहार्दपूर्ण रिश्ते हैं हमारी मानसिक परेशानी की मूल जड़ इन्हीं की उपेक्षा है और इसी बुराई को हमारे बीच से जड़ से उखाड़ फेंकना हमारा सामाजिक कर्तव्य है यही सामाजिक और पारिवारिक सौहार्दपूर्ण रिश्ते, हमारी संस्कृति का ताना बाना है इन्हीं को पुनः पल्लवित कर हमारी पुरातन संस्कृति को

और हमारे समाज को और किसी को नहीं, हमें ही बचाना है, मजबूत व सशक्त बनाना है।

कार्टून कोना





आधुनिक

आर पी सिंह, सहा कमा
ग्रुप केन्द्र, इम्फाल

आजकल जिधर भी देखिए, लोगों के सिर पर आधुनिक होने की धुन सवार है। आधुनिक होना कोई बुरी बात नहीं है। समय के साथ-साथ सभी थोड़े बहुत आधुनिक होते ही हैं। कुछ आधुनिकता स्वंय आ जाती है, तो कुछ आधुनिकता के लिए पर्याप्त प्रयास करने पड़ते हैं। परिवर्तन प्रकृति का निर्विवाद सत्य है अर्थात् यदि न भी चाहें, तो भी कुछ न कुछ परिवर्तन तो होना ही है। किन्तु प्रश्न यह है कि क्या परिवर्तन और सुधार में कोई अन्तर नहीं है? अर्थात् परिवर्तन के दोनों रूप हो सकते है, अच्छा भी और बुरा भी, ठीक भी और गलत भी, बिगड़ा हुआ भी और सुधरा हुआ भी। मेरे कहने का तात्पर्य यही है कि अधिकांश चीजो (बातों) में बदलाव तो हुआ है किन्तु सुधार नहीं। हमने बदलाव के बिगड़े रूप को आवश्यकता का जामा पहनाकर स्वीकार कर लिया है। अधिकांश आधुनिकता हमने अपने ऊपर लाद ली है। वह आयातित है, नकल की हुई है, विदेशी है आर्थात् विदेशी है इसलिए आधुनिक है। या यूं कहें कि विदेशी (बातें) चीजें ही आधुनिकता का पर्याय बन गयी है। कहीं-कहीं तो इसकी पूरी-पूरी कोशिश की जाती है कि कहीं कोई गलती से भी हमें देशी (भारतीय) न मान ले, न समझ ले, न कह दे। अर्थात् यदि मुझे अपने आप को आधुनिक समझना है,

कहलवाना है तो इसके लिए पूरी तैयारी रखी जाए कि कहीं से भी हिन्दुस्तानी न लगने पाऊं।

प्रत्येक क्षेत्र में आधुनिक होने अथवा यूँ कहें कि विदेशी होने ही होड़ लगी हुई है। कोई वस्तु अथवा आचरण हमारे लिए उपयुक्त अथवा उपयोगी है या नहीं, यह आवश्यक नहीं। बस वह विदेशी होना चाहिए तो आधुनिक है। दूसरे की थाली में घी अधिक दिखता है या 'घर का जोगी। जोगड़ा, आन गांव का सिद्ध' की तर्ज पर लोग अनावश्यक रूप से अन्धा अनुकरण करते जा रहे हैं कहीं-कहीं तो हमारे घर, दुकान, कार्यालय या समारोह हमारे न दिखकर विदेशों की कार्यप्रणाली के सैम्पल (नमूना) मात्र लगते हैं अर्थात् देश को विदेश बनाने का प्रयत्न हर तरफ दृष्टिगोचर होता है। जिस प्रकार कुछ लोग अपने गलत आचरण एवं खान-पान की असंतुलित/असंयमित आदतो के कारण, जवानी में ही बुढ़ापे का आनन्द उठा रहे हैं उसी प्रकार देश में रहकर भी विदेशी होने का भ्रम पाले हुए हैं। देशी का अर्थ पिछड़ा हुआ और विदेशी का अर्थ अल्ट्रामार्डन। यह है आजकल के समाज का चलन। कहना न होगा कि-

जिधर देखता हूं, उधर तू ही तू है,
न तेरी सी खुशबू, न तेरी सी बू है।

इस बात का भरपूर प्रयास किया जाता है कि हमारे वस्त्र यदि किसी कारणवश(पूरे) विदेशी नहीं भी है, तो कम से कम उनका स्टाईल तो अवश्य ही विदेशी होना चाहिए। इस बात की चिन्ता 'कौन करता है कि हमारी जलवायु परिस्थितियाँ एवं संस्कार अनुरूप हैं या नहीं। वस्त्रों के साथ-साथ हमारे दैनिक उपभोग की वस्तुएं (कास्मेटिक्स) भी यदि विदेशी हैं तो हमारी प्रतिष्ठा(तथाकथित) और बढ़ेगी, ऐसा हम सोचते हैं। बात केवल वस्त्र (पहनावे) की ही नहीं बल्कि प्रत्येक क्षेत्र में जहां कहीं भी विदेशी वस्तु, तकनीक, शैली की घुसपैठ नहीं हुई है, हम अपने आप को पुरातनपंथी एवं दकियानूस समझने लगते हैं। वस्त्र अथवा पहनावा जीवन का ऐसा पहलू है जो सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है और दूसरों को प्रभावित अथवा कुप्रभावित करता है और गाहे-बगाहे इसके दुष्परिणाम अन्य लोगों को भी भुगतने पड़ते हैं।

क्या भोजन, क्या मनोरंजन, क्या शिक्षा अथवा क्या खेल। क्या संगीत अथवा क्या फिल्म। क्या उपकरण एवं क्या शैली। क्या बैंक (स्विस) अथवा क्या सैर। सभी कुछ यदि विदेशी है तो मौजां ही मौजां। विदेशी भाषा को जितना धारा प्रवाह एवं देशी भाषा को जितना अधिक रूक-रूक कर एवं अटक-अटक कर बोला जाये, उतने ही आप आधुनिक हैं। विदेशी भाषा बोलने में अटक गये तो अपमान और देशी को यदि धारा प्रवाह बोल दिया तो अपमान। अपने संस्कार के अनरूप भोजन किया तो घास-फूंस विदेशी डिश ली तो लजीज। देशी कार्यक्रम फिल्में बनाये/दिखाए/देखे तो बोर तथा विदेशी कार्यक्रम या विदेशी स्टाईल में देशी कार्यक्रम बनाये/चलाये तो बल्ले-बल्ले। देशी भाषाएं पढ़ीं/सीखी तो भैया टाइप छोकरा और विदेशी भाषा वह चाहे विदेश में या देशी जमीन पर पढ़ी/सीखी तो जेन्टलमैन। अपने खेल खेलें तो अज्ञातवास और

विदेशी अपनाए तो पौ बारह। जबकि हमारे यहां खेल एवं त्यौहारों का हमारी संस्कृति से गहरा जुडाव रहा है। शास्त्रीय संगीत, नृत्य है तो बूढ़ो का टाइम पास और कैबरे, बैले, पॉप है तो लाईफ फास्ट। तकनीक चाहे देशी हो या विदेशी वह तकनीक ही है लेकिन जब तक उस पर भी विदेशी की मोहर नहीं तो भला विश्वसनीय कैसे हो सकती है। व्यापार/ कारोबार भी चाहे देश में हो या विदेश में वह व्यापार ही है लेकिन मनी लान्ड्रिंग एवं हवाला का मजा देश में कहां? पैसा देश के किसी भी बैंक में जमा कराया जा सकता हैं किन्तु जो सुविधा स्विस बैंक (विदेशी) दे सकता है, वह कहां अर्थात् अन्य चीजों के साथ बैंक भी विदेशी।

अन्त में जो एक चीज बचती थी वह थी संबंध। मगर अफसोस कि अब हमारे संबंध भी देशी न रहकर विदेशी हो गये हैं। यदि अब हम अपने संबंधियों को पारम्परिक नामों, रिश्तो से पुकारते हैं तो गंवार तथा संबंधो में विदेशी तौर तरीके अपनाएं तो सिविलाईज्ड, मार्डन एवं एडवांस। कहने का तात्पर्य कि जितनी शीघ्रता से देशीपन (भारतीयता) का त्याग, उतनी ही तेजी से आधुनिकीकरण। जहां तक सम्भव है हम देशीपन का त्याग करते जा रहे हैं। हमने तो संबंधों के साथ-साथ संबंधियों का भी आयात कर लिया है। हमने इतनी तरक्की तो कर ली है, इतने आधुनिक तो हो गये है कि अपने सगे-संबंधियों का त्याग कर सकें, किन्तु उतना आधुनिक होना अभी बाकी है कि हम सभी संबंधियों का आयात कर सकें। इनमें से कुछ एक का प्रबंध तो हमने कर भी लिया है और शेष के लिए प्रयासरत हैं। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि हम इतने आधुनिक तो हो गये हैं कि मां-बाप का त्याग कर दें, उन्हें बाहर का रास्ता दिखा दें, नितु इतना आधुनिक होना बाकी है कि हम नये-नये मां-बाप का आयात कर लें। वैसे हमने इसका विकल्प तो खोज लिया है अर्थात् मॉ-बाप के बिना रहने जितना विकास तो कर ही लिया है, आशा करते हैं कि रहा-सहा विकास भी एक न एक दिन कर ही लेंगे और फिर तो यह सुविधा भी उपलब्ध हो जायेगी कि जब चाहेंगे इनके अन्य विकल्प तलाश कर, फिर और फिर से इनकी भी बदली कर सकेंगे। महान लोगों का महान देश। लोग महान, देश महान। ना-ना देश महान, लोग एडवांस।

‘बागबां ने आग दी,
जब आशियाने को मेरे,
तकिया था जिनपे,
वही पत्ते हवा देने लगे।’



सकारात्मक सोचः तनाव भगाए एवं जीवन सवांरे

के के पाण्डेय,
द्वितीय कमान अधिकारी
196 बटालियन

शुरूआत मैं एक शेर के दो मिसरे तथा एक चौपाई की दो पंक्तियों से कर रहा हूॅ।

“न खिज़ां में है कोई तीरगी,
न बहार में कोई रोशनी,
ये नज़र-नज़र के चराग हैं,
कहीं जल गए कहीं बुझ गए”

“जाकी रही भावना जैसी,
हरि मूरत देखे वह वैसी”

कहने का तात्पर्य यह है कि देखने वालों का नज़रिया या सोच पर निर्भर करता है कि कोई चीज कैसी नज़र आती है अच्छे नज़रिये से दुनियां को देखते हैं तो वह बेहद हसीन एवं खुशगवार दिखती है लेकिन नकारात्मक नजरिए से देखने पर वहीं दुनियां विद्रुप दिखती है। कई बार ऐसा पाया गया है एक व्यक्ति विशेष किसी की नज़र में बहुत अच्छा कार्यकर्ता है तथा वही व्यक्ति विशेष दूसरे की नज़र में नालायक साबित हो जाता है। कहने का लबोलुबाव यह है कि किसी व्यक्ति या चीज के गुण अवगुण के निर्धारण में खुद की सोच अहम भूमिका निभाती है। इसे एक शेर के माध्यम से स्पष्ट करना चाहूंगा।

“अपने चेहरे से जो ज़ाहिर है छुपाएं कैसे तेरे मरज़ी के मुताबिक नज़र आएं कैसे कोई अपनी ही नज़र से तो हमें देखेगा एक कतरे को समन्दर नज़र आएं कैसे”

जीवन इतना कठिन नहीं है जितना हम सोचते हैं। इसलिए अगर हम अपनी सोच में परिवर्तन कर लें तो अपने जीवन को काफी हद तक सहज बना सकते हैं। सभी की यह चाहत होती है कि उसकी जिन्दगी कुछ अलग ढंग की हो। अपनी इसी इच्छा को पूरा करने के लिए अक्सर मानसिक तनाव में रहते हैं। तनाव एक ऐसा दानव है जो विभिन्न व्याधियों को जन्म देता है। इसे अक्सर एक व्यक्ति की कल्पना तथा नकारात्मक सोच से उपजी कल्पित बात माना जाता है। ये नकारात्मक विचार हमें भयभीत करते है तथा हमारी तार्किक सोच को प्रभावित करते हैं। ऐसे विचार तब पैदा होते हैं जब हम अपने जीवन एवं आस-पास की चीजों के प्रति एक नकारात्मक सोच अपना लेते है। हम हर चीज का नकारात्मक मूल्यांकन करना शुरू कर देते है। इससे हमारे विचार प्रभावित होते हैं और आगे जाकर यह विचार हमारे मूड तथा व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

अतः अगर हम सावधानी से अपनी सोच में परिवर्तन लाए यानी सकारात्मक दृष्टिकोण इख्तियार करें तो जीवन आसान हो सकता है तथा हम ‘व्यवसायिक एवं निजी जीवन में सफलता हासिल कर सकते है। सकारात्मक दृष्टिकोण की बदौलत हम जीवन के मुश्किल दौर में खुद को सम्भाल कर इससे पार पा सकते हैं तथा दूसरे की जिन्दगी भी संवार सकते हैं।

सकारात्मक विचार जहां सफलता और प्रसन्नता की ओर अग्रसर करते हैं वहीं नकारात्मक विचार जीवन को गलत दिशा की ओर मोड़ सकते हैं। आइए, हम सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाएं तथा जीवन को संवारें।

सकारात्मक विचारों हेतु कुछ जरूरी सुझाव :-

1. हमेशा साधारण रहने की कोशिश करनी चाहिए। यह नहीं सोचना चाहिए कि मेरा नाम नहीं या फिर पहचान नहीं या मेरे पास कोई शक्ति नहीं है। इससे अपने अन्दर अस्तित्वहीनता की भावना पैदा हो जाती है। हर व्यक्ति को इस बात की कोशिश

करनी चाहिए कि वह शक्तिशाली बने और अपनी ऊर्जा तथा शक्ति का उपयोग हमेशा दूसरों की भलाई के लिए ही करें। आप जितना दोगे उससे ज्यादा आपको मिलेगा।

2. अपने अन्दर गुरूर का समावेश न होने दें। हर इंसान को इंसानियत की नजर से देखें। यहां पर इस शेर के दो मिसरों का जिक्र करना प्रासंगिक होगा-

   "हम अपने गुरूरों से बाहर निकल क्यों नहीं जाते, हर शख्स शख्सियत है समझ क्यों नहीं जाते"

3. शारीरिक और मानसिक संतुलन कायम रखना जरूरी है। सही आहार और नियमित कसरत एवं योग व्यक्ति को प्रसन्नचित रखते हैं जिससे जीवन के प्रति उसके दृष्टिकोण में भी उदारता आती है।

4. अपने दिल की आवाज भी सुने। किसी की कही हुई बातों या विचारों के अनुसार कभी भी परिस्थिति पर निर्णय न लें। अपने अनुभव से उस पर विचार करें तभी कोई निश्चय करें।

5. अपने विचार एवं भावनाओं को दूसरों के साथ शेयर करना सीखें जबकि क्रोध एवं हताशा को नियंत्रित करें।

6. जीवन से प्यार करें। अपने आस-पास मौजूद लोगों के प्रति मन में सहयोग और दया की भावना पैदा करें। प्यार चाहना और प्यार करना मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं में शामिल है।

7. मस्तिष्क एवं शरीर को व्यस्त रखे। इसके लिए शारीरिक एवं मानसिक गतिविधियों में भाग लें। इससे आपके आत्मविश्वास का स्तर बढ़ेगा और आप विपरीत परिस्थितियों से अच्छी तरह निपटने की क्षमता विकसित कर पाएंगे।

आखिर में कहना चाहूँगा

"हँसते हुए गुजर जाए
ये ज़िन्दगी तो अच्छा है,
आंसुओं में गम नहीं बहा करते।"



छत्तीसगढ़ में गश्त करते जवान



खुदी को कर बुलन्द

उप नि/जीडी
विनोद कुमार सिंह
72 बटालियन

खुदी को कर बुलन्द इतना कि,
तकदीर को लिखने से पहले,
खुदा बन्दे से खुद पूछे,
बता तेरी रज़ा क्या है?
किसी कवि की ये पंक्तियॉ किसी महामानव या अद्वितीय विलक्षण सम्पन्न व्यक्ति

के लिए नहीं है बल्कि हर उस मनुष्य के लिए है जिसने इस धरती पर मानव रूप में जन्म लिया है। मनुष्य और पशु में सिर्फ इतना फर्क है कि मनुष्य अपने मस्तिष्क के बल पर पशु स्वामी हो जाता है, जबकि मनुष्य एवं पशुओं की अन्य शारीरिक क्रियाएं एक जैसी होती है। फिर यक्ष प्रश्न यह है कि इस धरती पर जन्म लेने वाली एक मां कि दो सन्तानें ही कभी-कभी इतनी असमान क्यों हो जाती हैं? एक व्यक्ति तो संसार के धन-सम्पदा एवं सुख का उपभोग करता है और दूसरा व्यक्ति अभावों का रोना रोते-रोते इस संसार से विदा हो जाता है? क्या हमने कभी सोचा है कि इस संसार के एक प्रतिशत से भी कम व्यक्ति ही धनी एवं सुखी क्यों हैं? हममें और उनमें मूलभूत फर्क क्या है? हमारी औसत जनसंख्या कि सोच यह होती है कि- "जीवन में सब कुछ पूर्व निर्धारित है।" "उसकी किस्मत अच्छी थी।" समय से पहले एवं भाग्य से ज्यादा व्यक्ति को कुछ नही मिलता है।" "दिहाड़ी लग रही है।" "साहब ऐसे ही जीवन कट जाय तो बढ़िया है।" "सब कुछ मेरे ही जिम्मे नहीं है।" "थोड़ी सी जिन्दगी और रह गयी है, किसलिए ज्यादा परेशान होना है" इत्यादि।

सावधान! यदि ऐसा बोलने वाला व्यक्ति आपके आसपास भी मौजूद है तो यह आपके लिए खतरे की घण्टी है। उसकी नकारात्मक ऊर्जा आपके जीवन को भी औसत बनाकर छोड़ देगी। भगवान ने सबको एक जैसा बनाकर भेजा है। फिर हम कौन होते हैं अपने को हीन बनाकर उस परमात्मा की बेईज्जती करने वाले? क्यों हम डरते है विपत्तियों से? क्यों औसत जीवन जीने के लिए हम अभिशप्त हैं। आज मै आपके सामने बहुत ही मूलभूत तथ्य प्रस्तुत करना चाहूंगा। जिससे यह स्पष्ट हो जायेगा कि हम कौन हैं? हम ऐसे क्यों हैं? हम क्या हो सकते हैं?

पहले प्रश्न का जवाब है कि हम परमपिता परमात्मा की अनुपम कृति है। हम सभी उस ईश्वर की सन्तान है, वह पिता जो अपने सभी पुत्रों को समान प्यार करता है। हर इन्सान में उस परमपिता का अंश मौजूद है। हर जीव में उसने कुछ न कुछ विलक्षण प्रतिभा डाली है।

हम ऐसे क्यों है? यह एक यक्ष प्रश्न है जिसनें हमें सुखी, खुशहाल या अभिशप्त जीवन जीने के लिए बाध्य कर दिया है। इसकी शुरूआत होती है हमारी परवरिश से, हमारे परिवेश से, हमारी संगति से एवं कुछ मात्रा मे अनुवांशिकता भी इस पर प्रभाव डालती है परन्तु इन सबमें जो सबसे प्रमुख तत्व है वह है हमारी "सोच" को हमारे एटीट्यूड का जो हमारे जीवन को दिशा एवं दशा प्रदान करता है। हम ऐसे इसलिए हैं क्योंकि हम ऐसे ही रहना चाहते हैं। हम अपने दृष्टिकोण को बदलना ही नहीं चाहते है। जिसके पीछे कारण होता है कि बदलाव हमेशा कष्टकारी लगता है और हमारी मानवीय प्रवृत्ति होती है कि हम अपने जीवन में कुछ भी बदलाव नहीं चाहते हैं हमें ऐसा लगता है कि इस संसार में मौजूद धन-सम्पदा, सुख एवं सौन्दर्य हमारे लिए है ही नहीं, इसके हकदार वहीं हैं जो इसका उपभोग कर रहे हैं। बस यही वह टर्निंग प्वांइट है जो हमारे जीवन में राजाभोज एवं गंगूतेली की असमानता पैदा कर देता है हम गंगूतेली ही रहकर सन्तुष्ट हो जाते हैं। हम यह सोचने का कष्ट भी नहीं उठाते है कि

धनवान, सुखी व्यक्ति की सफलता के पीछे राज क्या है? उनमें से कितने ऐसे है जिन्हे जमीन में गड़ा खजाना मिल गया है? शायद किसी को नहीं। रिलायंस इंडस्ट्रीज एक साधारण से व्यक्ति की जीवन गाथा है दुनियां के नम्बर एक सुपरस्टार अभिताभ बच्चन को विरासत में कुछ भी नहीं मिला था। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह एक साधारण से परिवार में जन्म लेकर आज देश का नेतृत्व कर रहे हैं। इन लोगों के बारे में भी औसत सोच यही है कि हर इन्सान अम्बानी नहीं बन सकता, हर अभिनेता अभिताभ नहीं बन सकता, हर नेता प्रधानमंत्री नहीं बन सकता हमें ये भी तो सोचना चाहिए कि क्यों नहीं बन सकते? यदि आप यह सोचने का जोखिम भी लेना चाहते हैं तो मैं स्पष्ट करता हूं कि ऐसा क्यों होता है।

शिखर पर वही जाता है जिसके मन, वचन एवं कर्म में सम्पूर्ण निष्ठा मौजूद होती है। उसके हर काम में उसकी आत्मा लगी होती है। उसे लगता है यह मै कोई काम नहीं कर रहा हूं बल्कि ये काम ही मेरी जिन्दगी है। जब तक आप को अपने कर्म से उतना प्यार नहीं होगा जितना एक नवयुवक को अपनी नई प्रेमिका से तब तक कामयाबी को हासिल नहीं कर सकते है, मानव योनि में जन्म लेने को सार्थक नहीं कर सकते हैं।

तीसरा एवं अन्तिम प्रश्न- हम क्या हो सकते है? हम तो वह हो सकते है, जिस तक पहुँचने के लिए स्वर्ग में बैठे गांधी, आजाद, कैनेडी आदि भी सोचें कि यार काश मैं भी कुछ गलतियां न करता तो उस समय इस व्यक्ति जैसा हो सकता था। ईश्वर ने हममें सारे गुण दे रखे है सिर्फ जरूरत है उन्हें विकसित करने की। मनुष्य तो ईश्वर तुल्य हो सकता है क्योंकि-

“कौन कहता है कि आसमां में छेद नहीं हो सकता, एक पत्थर तो दिल से उछालों यारो”।



रिपोर्ट

158 बटालियन केरिपुबल में एच आई वी/एडस पर कार्यशाला

उप नि/जीडी
विनोद कुमार सिंह
72 बटालियन

विश्व एडस दिवस के अवसर पर दिनांक 01 दिसंबर 2009 को 158 बटालियन केरिपुबल में एच आई वी/एडस के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए शेरे कश्मीर आर्युविज्ञान संस्थान सौरा श्रीनगर के सहयोग से एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया वाहिनी के कमाण्डेन्ट श्री अनिल कुमार भारद्वाज ने कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए कहा कि एच आई वी/ एड्स एक विश्वव्यापी समस्या है जो दिन प्रतिदिन बढती जा रही है इसकी रोकथाम के लिए अभी तक कोई समाधान नही निकला है इस विशय पर अभी प्रयास जारी है वर्तमान में इस बिमारी की जानकारी ही बचाव है।

कार्यशाला में शेरे कश्मीर आयुर्विज्ञान संस्थान सौरा श्रीनगर की डा. नामेता शर्मा ने कार्यशाला में भाग लेने वाले कार्मिकों को एच आई वी/एडस क्या है? कैसे फैलता है? इसके बचाव के क्या उपाय है और यदि किन्ही कारणो से कोई व्यक्ति इससे पीडित हो गया हो तो उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाए आदि के बारे में विस्तार से बताया। डा शर्मा ने बताया कि 86 प्रतिशत एच आई वी/एड्स से पीड़ित लोगों में इस बीमारी के फैलने का कारण असुरक्षित यौन सम्बन्ध है संक्रमित रक्त व सुई आदि से भी यह बीमारी फैलती है, अभी तक इस बीमारी के ईलाज के लिए जो भी दवाईया वैज्ञानिकों के द्वारा विकसित की गई है उनसे इन बीमारी का पूर्ण निवारण तो नही होता परन्तु इनके सेवन से व्यक्ति की प्रतिरोधक क्षमता का और अधिक हास नहीं होता और रोग बढने की तीव्रता कम हो जाती है।

इस अवसर पर वाहिनी के श्री एस सी एस रावत, द्वितीय कमान अधिकारी, श्रीमती अपर्णा आर एस उप कमा, श्री विनोद सिन्हा स कमा, श्री हिमांशु कुमार ,स कमां तथा शिवचरण मीणा , स कमां, ने भी इस कार्यशाला में भाग लिया। कार्यशाला के बाद कार्मिको को श्री एस सी एस रावत, द्वितीय कमान अधिकारी ने शंकाओ के समाधान हेतु प्रश्न पूछने का अवसर दिया व बताया कि संकोच से बीमारी सदैव बढती है। सभी कार्मिक इस बीमारी के बारे में अध्ययन करे और अन्य सह कार्मियो में इस रोग की जानकारी बॉटे।

कार्यशाला के समापन पर श्रीमती अपर्णा आर एस ने कार्यशाला के सफल आयोजन के लिए शेरे कश्मीर आर्युविज्ञान संस्थान के डाक्टरों का आभार व्यक्त किया और आशा व्यक्त कि भविष्य में भी 158 बटालियन में स्वास्थ्य संबंधी समस्याओ के निवारण व जागरूकता फैलाने में उक्त संस्थान के चिकित्सकों का सहयोग व मार्ग दर्शन मिलता रहेगा।



श्रीनगर रेल मार्ग की सुरक्षा करते हुए सीआरपीएफ के जवान फोटो सौजन्य : पीटीआइ

व्यंग्य



सी आर पी एफ में मैं तबादलों से बहुत परेशान था। दिल्ली से श्रीनगर, श्रीनगर से गुवाहाटी, गुवाहाटी से फिर श्रीनगर, श्रीनगर से फिर असम, असम से हैदराबाद, और हैदराबाद से जब तक वापस दिल्ली में पैर रखा तो सांस में सांस आयी। इन 10-12 सालों में दोनों बेटियां जवान हो गयी थी। पत्नी परिवार को अकेले चलाने की और में फौजी जिन्दगी का अभ्यस्त हो चुका था।

महीना-15 दिन छुट्टी पर आना, बच्चो के लिए भी रूटीन जिंदगी में एक सुखद बदलाव होता था और मेरे लिए भी नियमों से लंबी फौजी जिंदगी से दूर एक खुला माहौल होता था सुखद मैं इसलिए नहीं लिख रहा हूँ क्योंकि इस दौरान कई बातों पर कोफ्त तो मुझे बहुत होती थी, मगर 'मैं दो चार दिन के लिए तो आया हूँ' सोच कर बर्दाश्त कर लेता था और बच्चे भी यह सोच कर मेरी सुनकें झेल जाया करते थे कि पापा कभी-कभी तो आते हैं।

मेज के नीचे धूल क्यों है, पदा इतना गंदा क्यों है, झूठे बतन मेज पर क्यों पड़े है, दीवार पर जाले क्यों हैं, किताबें घर में क्यों फैली पड़ी हैं, जूते कमरे में क्यों पड़े है, तुम लोग एक बार में कोई बात सुनते क्यों नहीं हो? पत्नी , बच्चे परेशान हो गये हैं। बोलते हैं, "ये घर है, आप का कैम्प नहीं?"

मुझे रात को 9 बजे खाना खाकर सोने की आदत है। बच्चों के सीरियल शुरू ही 9 बजे होते हैं। मैं सुबह पांच बजे उठ जाता हूँ, बच्चे और पत्नी स्कूल कालेज जाने से ठीक आधा घंटा पहले एक एक मिनट का हिसाब लगा कर बिस्तर छोड़ते हैं और उस के बाद आधे घंटे तक घर मे जो अफरातफरी मचती है कि पूछिए मत। मात्र आधे घंटे में तीनों दैनिक जीवन के सभी जरूरी काम निबटा कर-जिन में नित्यकर्मो के अतिरिक्त, स्कूल यूनीफार्म प्रेस करना, नहाना, तैयार होना, खाना बनाना, और परांठे हाथ में पकड कर चूहो की तरह कुतरते हुए सीढ़ियां उतर कर भागते दौड़ते बस में सवार होना तक तो शामिल है ही साथ ही इसी बीच सारे निर्देश भी जारी होते रहते हैं। बिजली का बिल जमा करा देना, बैंक हो आना, नाश्ता कर लेना, खाना ले जाना, घर को ठीक से बंद कर दफ्तर जाना वगैरा।

मैं उन की स्पीड देख कर कभी-कभी तो हैरान हो उठता हूं। हमारे यहां तो कोई काम शुरू करने से पहले सब कुछ सुनिश्चित करने में ही घंटे से ज्यादा लग जाता है। सब को फालइन करो। सुनिश्चित करो नाश्ता रख लिया, गाड़ी तैयार है, नफरी पूरी है, यूनिफार्म ठीक है, किसी की कोई समस्या तो नहीं, सब ठीक है, तो गाड़ी में बैठो और मार्च करो। आप सुनिश्चित नही करेंगे तो नाश्ता ही नहीं ले जाएंगे। ड्यूटी पर पहुंचने के बाद बताएंगे कि साहब ने तो बताया ही नहीं था कि पैक लंच ले कर आना है। अब आप गाडी वापस कैम्प भेज कर लंच मंगवाते रहिए क्योंकि भूखी फौज से तो आप ड्यूटी करवा नहीं सकते, नेपोलियन महाराज कह गये है कि फौज पेट के बल मार्च करती है। आप सुनिश्चित नही करेंगे तो ड्रेस ठीक से नहीं पहनेंगे, पूछोगे तो कहेंगे, 'मार्कर में तो बताया ही नहीं था, कि बैरेट कैप पहननी है या जंगल कैप। आप सुनिश्चित नहीं करेंगे तो मार्च के लिए गाडी ही नहीं लगेगी। कहेंगे आप ने इंडेंट ही साईन नहीं किया। इसलिए अफसर सब कुछ सुनिश्चित करता है और यह सुनिश्चित करने की आदत हमारी जिन्दगी में उतर जाती है और जहां लोगों को इस की जरूरत नहीं होती, वहां हमें लगता है कि हमारी किसी को कोई जरूरत ही नहीं है। जैसा मुझे लगने लगा है।

बच्चों के जाने के बाद में पलट कर घर को देखता हूँ तो ऐसे लगता है जैसे एक चक्रवात यहां से हो कर गुजरा हो और अगर कहीं इस चक्रवात से ध्वस्त को व्यवस्थित करने की हिमाकत मैं कर देता हूँ तो दोपहर को फिर हंगामा हो जाता है। मम्मी मेरी बुक कहां है, मम्मी मेरा नाइट सूट नहीं मिल रहा। ऐ जी मैंने यहां काले अखबार पर एक फोन नंबर लिखा था, अखबार कहां फेंक दिया आपने। पत्नी की आवाज आती है और मैं चूहे की तरह दुबक जाता हूं।

मेरा जब समाचार सुनने का समय होता है तो उन के मनपसंद गाने फुल वाल्यूम पर

चलते है। जब मैं कभी भूले भटके अपने पुराने भूले बिसरे गीत लगा देता हूं, तो वो उन की धीमी रफ्तार और सरल उच्चारण पर खूब हंसते हैं। मुझे अपनी यूनिट की याद आती है कि कैसे हम जवानों को शाम को एक साथ मनोरंजन कक्ष में बैठा देते थे और उन्हें वही फिल्म दिखाते थे, जो हम चुनते थे। जब मैं जागता हूं तो बच्चे सोते है, और जब मेरे सोने का समय होता है, तो वह उन की फुल मस्ती का समय होता है। बच्चे कहते हैं- पापा के पास तो हमारे लिए टाईम ही नहीं है।

छुट्टी के दिन तो और भी गजब होता है। सुबह देर तक घर में सन्नाटा पसरा रहता है। मैं बहुत कोशिश करता हूं कि देर तक सोऊं, मगर छः बजे के बाद जब बिस्तर पर लेटना असंभव हो जाता है, तो उठ कर तैयार होकर, खुद चाय बना कर, पी कर, यह सोच कर सैर भी कर आता हूं कि शायद मेरे लौटने तक घर में चहल पहल हो जाएगी। मगर अभी तक तो मुझे निराशा ही हाथ लगी है। मैं अखबार पढ़ने के बाद, नहा धो कर, पूजा कर, जानबूझ कर यह सोच कर रसोई में खटपट करने लगता हूं कि शायद मेरी आवाज सुन कर कोई उठ जाए। मगर मेरी हर कोशिश बेकार जाती है। मेरे घर दोपहर 11 बजे तक सुबह होती है, तब मैं बाहर बैठक में सजा संवरा सोफे पर बैठा सोच रहा होता हूं कि हमारे कैम्प में जो अभी तक लड़कों का लंच भी शुरू हो गया होगा।

पत्नी अलसाई हुई, अपने बाल बांधते हुए कमरे से निकलती है और मुझे इस तरह सजे संवरे सोफे पर बैठे देख कर हैरत से पूछती है, “कहीं जा रहे हो क्या?”

मेरा खून खौल जाता है। मेरे दिमाग में मार्कर परेड में ना आने वाले जवानों को दी जाने वाली पूरी नसीहतें, अच्छी दिनचर्या के पूरे लेक्चर घूम जाते है। मगर ‘छुट्टी का दिन है’- माहौल खराब हो जाएगा सोच कर खून का घूंट पी कर रह जाता हूं।

मैं बड़ी शिद्धत से अपने लिए नाश्ते का इंतजार करता हूं। मगर अगले एक घंटे तक तो इस दिशा में कोई कार्यवाही ही नही होती और जब मेरे सब्र का पूरा इम्तिहान लेने के एक घंटे बाद पत्नी पूछती है कि नाश्ता क्या करोगे, तो बच्चे बिस्तर मे ही चिल्लाते हैं- मैगी।

पत्नी बनावटी झल्लाहट के साथ पूछती है-

‘और पापा क्या खाएंगे?’

बच्चे बिस्तर से ही चिल्लाते हैं पापा को दूध के साथ अंडा ब्रेड दे दो।

और मेरी बात सुने बगैर ही मेरे नाश्ते का फैसला हो जाता है। ऐसे में मुझे मेरे कुक की बड़ी याद आती है। रात को पूछ लेता था- साहब सुबह नाश्ते में क्या खाओगे।

मैं अभी नहा कर बाहर भी नहीं निकलता था कि रसोई में डोसे/परांठों आदि की खुशबू उठने लगती थी। सातों दिन का मीनू तय था। रोज बदल बदल कर ब्रेकफास्ट बनाता था। मैं एक ठंडी आह भर कर रह जाता हूँ। बच्चे बिस्तर से उठते ही सीधे ब्रश करने के बाद मैगी पर टूट पड़ते हैं। मुझे बडी कोफ्त होती है। मन में विचार उठते रहते हैं अगर किसी जवान को मैस में ऐसे देख लूं, तो उसे उसी समय पिठू लगा दूं।

मगर बच्चे पर–पौडा का पूरा आनंद लेते हैं।

नाश्ता करते ही मेरी आंखों में नींद तैरने लगती है। मेरी मंशा भांपते ही बच्चे चिल्लाने लगते हैं। पापा ये नहीं होगा एक ही दिन तो छुट्टी होती है, और उस दिन भी आप सारा दिन सोते रहते है। पत्नी चेतावनी देती है, अब सोने की मत सोचना मुझे साफ सफाई करनी है, ये थैला पकड़ो और मंडी से आलू प्याज ले कर आओ। सच। इस समय मुझे अपना मैस कमांडर बहुत याद आता है। सुबह छः बजे दरवाजे पर आ कर खड़ा हो जाता था। साहब मंडी जा रहा हूँ, 'कुछ लाना है क्या?'

मेरा सिक्योरिटी एड उसे सौ रूपये थमाता और मेरी रसोई हफ्ते की सब्जियों से भर जाती थी।

गुस्सा तो बहुत आता है, मगर मन मसोस कर रह जाता हूँ। पत्नी को बोलता हूँ कि तुमने बच्चों को बिगाड़ कर रख दिया है, कभी इन के हाथ में किताब नहीं देखता हूँ इन की जिंदगी में कुछ नहीं होगा। तो बच्चे चिढ़ कर कहते हैं–पापा आप को तो हम में बुराईयाँ ही बुराईयाँ नजर आती है। और जब मैं उन्हें बुराईयाँ नज़र आने की वजहें गिनाने लगता हूँ, तो पत्नी बीच में टपक जाती है।

"रहने दीजिए आप को तो अपने जवान ही अच्छे लगते हैं, जाइए उन्हीं के साथ रहिए,"

और में चिंता में डूब जाता है। बच्चों के भविष्य को लेकर मैं बहुत चिंतित रहता हूँ। मगर बच्चे साल दर साल जब अपना रिजल्ट ला कर मेरे हाथ में रखते हैं, तो मुझे आश्चर्य होता है, सोचता हूँ–'ये पढ़ते कब है?' मगर फिर भी बच्चों से कहता हूँ कि तुम्हारे ऊपर चार बच्चे कैसे हैं?

बच्चे चिढ़ कर कहते हैं, 'पापा आप को तो हमारी कोई भी बात अच्छी लगती ही नहीं,'

पत्नी उकता कर कहती है, 'पता नहीं इस आदमी के साथ मेरा बुढ़ापा कैसे कटेगा?'

मजे की बात तो ये है कि यही सवाल मेरे भी दिमाग में घूमता रहता है कि मेरा बुढापा कैसे कटेगा?

अपनी जिंदगी के अहम साल फोर्स को देने के बाद हम सभी नियमों से बंधे एक अनुशासित, सलीके पूर्ण, मगर अनिश्चितताओं से भरी जिंदगी के अभ्यस्त हो जाते है और शायद जब इस जिंदगी से बाहर निकल कर स्वछंद स्वतंत्र, उन्मुक्त और निशिचिंत जिंदगी के साथ हमारा साक्षात्कार होता है तो शायद मेरी ही तरह आप भी सोचते होंगे कि 'मेरा बुढ़ापा कैसे कटेगा।'

पश्चिमी सेक्टर मुख्यालय में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

पांश्चमी सेक्टर मुख्यालय में 3 नवंबर से 7 नवंबर 2009 तक सतकेता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया, जिसमें शुभारम्भ में 3 नवम्बर को श्री इ राधाकृष्णा, पुलिस महानिरीक्षक की अध्यक्षता में सभी अधिकारियों व कार्मिकों ने शपथ ली तथा 'पहले हमारा देश'/'इण्डिया फर्स्ट' के सिद्धांत को अपने पूरे मनोयोग से जीवन के हर क्षेत्र में अपनाने का अपना इरादा जाहिर किया। कार्मिकों में जागरूकता व सतर्कता की भावना बढ़ाने के उद्देश्य से सप्ताह के दौरान विभिन्न अधिकारियों व कार्मिकों ने इस विषय पर अपने विचार व्यक्त किए तथा कार्यालय में मुख्य जगहों पर बड़े–बड़े बैनर भी लगाए गए। 6 नवंबर को 'सुरक्षा सतर्कता तथा जागरूकता' विशय पर स्टेशन स्तरीय लेख प्रतियोगिता का आयोजन कमाण्डेन्ट (स्टाफ), पुलिस उप–महानिरीक्षक, द्रुत कार्य बल की अध्यक्षता में किया गया, जिसमें मुम्बई स्थित सभी कार्यालयों के कार्मिकों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। कार्मिकों के उत्साहवर्धन के लिए प्रथम तीन स्थान अर्जित करनेवाले कार्मिकों को नकद पुरस्कार भी स्वीकृत किया गया।



“मैन आफ दी मैच”

आर पी सिंह, सहायक कमाण्डेन्ट
समूह केन्द्र, इम्फाल(मणिपुर)

बात आज से लगभग सत्रह साल पहले (1992) की है। मैं उस समय सब इंस्पेक्टर था। हमारी कम्पनी की तैनाती पातडां, जिला पटियाला (पंजाब) में थी। कम्पनी का शिविर एक खाली पड़े राइस मिल में था तथा मिल के सामने से गुजरने वाली सड़क के दूसरी ओर एक अन्य राईस मिल में ओ सी साहब का निवास था। कारण कि उस मिल में एक ठीक–ठाक गेस्ट हाउस की व्यवस्था थी जो कि कम्पनी के कैम्प में उपलब्ध नहीं था। कम्पनी कमाण्डर साहब के लिए अलग से चौबीस घण्टों के लिए गारद तैनात थी, जो कि वहीं पर रहती थी। गारद के सदस्य बारी–बारी से कैम्प में आकर खाना खा/ले जाते थे अथवा एक दूसरे को लेकर चले जाते थे। अन्य कार्यों के लिए भी उनका

आना–जाना लगा बात आज से लगभग सत्रह साल पहले (1992) की है। मैं उस समय सब इंस्पेक्टर था। हमारी कम्पनी की तैनाती पातडां, जिला पटियाला (पंजाब) में थी। कम्पनी का शिविर एक खाली पड़े राइस मिल में था तथा मिल के सामने से गुजरने वाली सड़क के दूसरी ओर एक अन्य राईस मिल में ओ सी साहब का निवास था। कारण कि उस मिल में एक ठीक–ठाक गेस्ट हाउस की व्यवस्था थी जो कि कम्पनी के कैम्प में उपलब्ध नहीं था। कम्पनी कमाण्डर साहब के लिए अलग से चौबीस घण्टों के लिए गारद तैनात थी, जो कि वहीं पर रहती थी। गारद के सदस्य बारी–बारी से कैम्प में आकर खाना खा/ले जाते थे अथवा एक दूसरे को लेकर चले जाते थे। अन्य कार्यों के लिए भी उनका आना–जाना लगा रहता था। जैसे कार्यालय समय में कम्पनी कमाण्डर साहब के साथ आना–जाना। मैं उस समय कम्पनी में अकेला एस ओ था।

जिस समय, मैं कम्पनी में पहुँचा उस समय एक अन्य उप निरीक्षक साहब भी उपस्थित थे जो कि मेरे पहुँचने के कुछ ही दिनों बाद अन्य कम्पनी में संलग्न कर दिये गये थे। वे मुझसे सीनियर थे। अतः मार्कर एवं रोल काल में रिपोर्ट उन्हीं को लगती थी और ब्रीफिंग / निर्देश आदि की अधिकांश बातें वे ही जवानों को बताया करते थे।

उनकी बाते (ब्रीफिंग) लचीली थी, जो कि प्रत्येक अवसर एवं समय के साथ बदलती थी। जब वे सवेरे मार्कर में ब्रीफिंग करते थे तो कुछ इस प्रकार की बातें कहते थे, जैसे कि, देखो भई हम अपने घर–परिवार से दूर यहाँ पर हैं। कोई घर पर हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। हमें अपने पैसे और सेहत का पूरा–पूरा ध्यान रखना चाहिए। बातें बिल्कुल सही थी और जब वे शाम को रोलकाल में बोलते थे, तो उनकी बातें कुछ इस तरह होती थीं कि, देखो भई जिन्दगी का क्या भरोसा। हम आज हैं, कल का क्या पता। कल किसने देखा है। इसलिए जो खाना–पीना है, मौज–मस्ती करनी है, कर लो। सब कुछ यही धरा रह जायेगा। कुछ भी साथ नहीं जायेगा। बातें तो ये भी ठीक ही प्रतीत होती थी किन्तु पता नहीं क्यों उनकी बातों को सुनकर कुछ जवान मन्द–मन्द मुस्कराते थे, कुछ इस कान से सुनकर उस कान से निकाल देते थे और कुछ उनपर "अमल" भी करते थे। मुझे भी उनका यह दर्शनशास्त्र समझने में कुछ समय लगा, किन्तु तब तक वह दूसरी कम्पनी में जा चुके थे।

उनकी अनुपस्थिति में अब हर कार्य की देखभाल करना स्वाभाविक रूप से मेरी जिम्मेवारी थी। मैंने नोट किया कि बाकी सब चीजें तो ठीक हैं, किन्तु कुछ लोग मैस में खाने के लिए काफी देर से आते हैं, जिनके लिए मैस कमाण्डर/सिपाही प्रतीक्षा करते रहते हैं। कुछ ऐसे भी थे जो स्पष्ट आदेश के बावजूद भी खाना मैस (डायनिंग हाल) में न खाकर लाइन्स में ही ले जाने की जिद करते थे। यह बात मुझे उचित नहीं लगी और मैं इस मुठभेड़ से निपटने के लिए रणनीति बना ही रहा था, कि अगले ही दिन इसका खुलासा हो गया।

हुआ यूँ कि एक नायक था जंग बहादुर (नेपाली) शाम को लगभग 9/9–30 बजे मुझे मैस की तरफ से किसी के तेज आवाज में बातें करने की आवाज सुनाई दी। मैं बाहर निकला, मैस की तरफ गया तो देखता हूँ कि नायक जंग बहादुर खाने की बात

को लेकर मैस सिपाही से उलझ रहा है। वहाँ पर कुछ अन्य जवान भी उपास्थित है, जो कि खाना तो कब का खा चके हैं, किन्तु जंग बहादुर का नाटक देखने की लालसा उन्हें वहाँ पर रोके हुए हैं। केवल देखना ही नहीं, बल्कि कोई–कोई तो बीच में कुछ कमेन्ट करके जंगबहादुर को उकसाकर आनन्द को और बढ़ा रहे हैं, जिससे मैस सिपाही कभी हंसकर तो कभी मान मनौव्वल करके नायक से पिण्ड छुडाना चाह रहा था। मैंने स्थिति को तुरन्त अपने हाथ में लेकर नाटक का पटाक्षेप करना चाहा किन्तु उसी समय ओ सी साहब रेजीडेन्स का गार्ड कमाण्डर, वायरलैस की बैटरी बदली करने वहाँ आ पहुँचा जो कि या तो सम्भवतः वह शाम को बदली करना भूल गया था, अथवा वह अचानक डिस्चार्ज हो गयी थी।

हवलदार शंभूनाथ (गार्ड कमाण्डर) ने सेट की बैटरी तो बदली की ही साथ ही उसके विभाग की बैटरी भी चार्ज हो गयी। उसने जाते ही सबसे पहले अपनी ड्यूटी बजायी और परिणाम कुछ ही मिनटों में ओ सी साहब कैम्प में हाजिर। मैं दृश्य में पहले से हाजिर था, ही सो उन्होंने भला किसी और से कुछ क्यूँ पूछना था। पूछते ही बोले यह क्या हो रहा है। यह मेरे लिए दूसरा मोर्चा था। मैंने उनको स्पष्ट करना चाहा तथा अन्य बातों के अतिरिक्त मरे मुँह से अकसमात् जो शब्द निकले, वे थे–सर आप परेशान ना हो ऐसी कोई बात नहीं हैं मैं सब ठीक कर लूंगा और अन्त में कि आप किस–किस से माथापच्ची करेंगे। यहाँ तो रोज ही कोई न कोई "मैन आफ दी मैच" होता हैं। अन्तिम शब्दों को सुनकर उपस्थित अन्य लोगों के साथ–साथ ओ सी साहब भी अपनी हंसी रोक नहीं पाये। इस बीच नायक जंगबहादुर वहां से खिसक चुका था। सीन का पटक्षेप हो चुका था।

वास्तव में देखा जाये तो ओ सी साहब सम्भवतः गार्ड कमाण्डर द्वारा वर्णित दृश्य से इतने परेशान नहीं हुए थे, जितना कि उन्हें इस समय कैम्प में आने में डिस्टर्ब अनुभव हुआ था। सुबह अन्य दिनों के समान सब कुछ सामान्य था, केवल एक बात को छोड़कर कि सभी में इस शब्द "मैन आफ दी मैच" की भरपूर चर्चा थी। उसके बाद तो यह शब्द एक मिसाल बन गया। यदा–कदा जब भी कोई जंगबहादुर की स्थिति को प्राप्त करने की कोशिश करता तो लोग स्वयं यही कहते सुने जाते कि आज का मैन ऑफ दी मैच तो अमुक है। इस शब्द ने फिर कभी मेरा पीछा नहीं छोड़ा। कारण कि उसके बाद जिस कम्पनी में भी रहा ऐसी स्थिति में यह शब्द एक बार मुँह से निकला नहीं कि, कम्पनी के जवानों द्वारा इसकी पुनरावृत्ति आरम्भ हो जाना।



कभी–कभी तो ऐसे अवसर भी आये जब मैन आफ दी सीरीज के भी दर्शन हुए, किन्तु बहुत कम। कभी–कभी तो खाना खा चुके लोग केवल इसलिए मैस में रूके रहते थे कि देखें क्या आज भी किसी मैन आफ के दर्शन होंगे। लेकिन यहाँ एक अन्तर हैं। जब कोई खिलाडी (क्रिकेटर) मैन आफ दी मैच घोषित होता हैं, उसके चेहरे पर कई दिन तक प्रसन्नता, गर्व, उच्च मनोबल आदि–आदि की स्पष्ट झलक दृष्टिगोचर होती हैं, किन्तु ऊपर वर्णित मैन ऑफ दी मैच के चेहरे पर अगले दिन (प्रातः से ही) शर्मिन्दगी होती है। वह नजरें मिलाने से कतराता है और सोचता है कि ऐसे मैन आफ दी मैच होने से क्या फायदा।

रिपोर्ट



195 बटालियन में मेडिकल कैम्प का आयोजन

195 बटालियन ग्रुप केन्द्र भोपाल में खड़ी हुई थी जहाँ पर नवारक्षियों को 44 सप्ताह का गहन प्रशिक्षण देने के उपरान्त 23 जुलाई 2008 को पासिंग आउट परेड सम्पन्न किया गया जिसके तरन्त बाद गढचिरौली (महाराष्ट्र) एवं जम्मू कश्मीर जैसे संवेदनशील जगहों पर चुनाव ड्यूटी के लिए नियुक्त किया गया जिसे बखूबी निभाने के उपरान्त जिला–दंतेवाडा (छत्तीसगढ़) जैसे अति नक्सल प्रभावित क्षेत्र में तैनात किया गया जहाँ पर आम जनता एवं केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रति मैत्री एवं आपसी सामंजस्य बढ़ाने के उद्देश्य से मुफ्त चिकित्सा शिवर का आयोजन किया गया।

वर्तमान में बटालियन मुख्यालय सतधर, जिला – दंतेवाडा (छत्तीसगढ़) में तैनात है। यह अति नक्सल प्रभावित क्षेत्र के साथ–साथ अति पिछडा क्षेत्र भी माना जाता है। बटालियन द्वारा ग्राम हितालकुडम में ग्रामीणों तथा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रति मैत्री एवं आपसी सामंजस्य बढ़ाने के लिए 12 नवंबर 2009 को सिविक एक्शन प्रोग्राम के तहत चिकित्सा शिविर लगाया गया एवं बटालियन द्वारा ग्रामीणों के लिए अल्पाहार की भी व्यवस्था की गयी। जिसके दौरान श्री सुनील कुमार कमाण्डेन्ट–195 बटालियन, श्री दीपक कुमार, उप कमाण्डेन्ट(परिचालन), बटालियन के अन्य अधिकारीगण एवं जवानों के साथ–साथ श्री अनिल तिवारी थाना प्रभारी बारसूर एवं

मीडिया के सदस्य मौजूद थे। चिकित्सा शिविर के तहत बटालियन के चिकित्सक द्वारा ग्राम हितालकुडम के 85 रोगियों को उचित चिकित्सा परामर्श के साथ–साथ निःशुल्क दवाईयां भी वितरित की गई। ज्ञात हो कि 195 बटालियन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल समय–समय पर क्षेत्र के ग्रामीणों की हर संभव सहायता करती रही है तथा यहाँ के नजदीकी ग्रामीणों को कोई भी बीमारी होने से उन्हें बटालियन के हॉस्पिटल में अविलम्ब चिकित्सा मुहैया उपलब्ध करायी जाती है तथा कोई बीमारी होने अथवा आपात स्थिति में एम्बुलेंस की सुविधा भी प्रदान की जाती है। श्री सुनील कुमार, कमाण्डेन्ट–195 बटालियन ने उपस्थित पत्रकारों के समक्ष ग्रामीणों को उत्साहित किया कि वे अपने सभी बच्चों को स्कूल भेजें जिससे कि उनका भविष्य उज्जवल हो तथा इस कार्य में सीआरपीएफ उनकी पूरी मदद करेगी। साथ–ही–साथ इन्होंने यह भी बताया कि यह हमारा पहला प्रयास है इसके पश्चात यहाँ के आस–पास के गांवों में भी इसी तरह का आयोजन किया जाएगा, ताकि ग्रामीण एवं पुलिस के संबंध मधुर हों और केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रति जनता का विश्वास हो। चिकित्सा कैम्प के दौरान ग्रामीणों को दी गयी चिकित्सा व्यवस्था एवं निःशुल्क दवाई वितरण एवं भविष्य में और भी अधिक सुविधा मुहैया किये जाने पर ग्रामीणों में काफी उत्साह देखा गया।

श्रीनगर परिचालन रेंज में वॉलीवॉल, टेबल टेनिस एवं बैडमिंटन खेल प्रतियोगिता का आयोजन

श्रीनगर परिचालन रेंज मे 11 नवंबर 2009 से लेकर 29 दिसंबर 2009 तक परिचालन रेंज के अधीन कार्यरत 158, 144, एवं 161वी वाहिनी में वॉलीबाल, टेबल टेनिस एवं बैडमिंटन खेल प्रतियोगिता का क्रमानुसार आयोजन करवाया गया।

सर्वप्रथम इस परिचालन रेंज के अधीन कार्यरत 158 वीं वाहिनी के देख–रेख में 11 नवंबर 2009 से लेकर 15 नवंबर 2009 तक वॉलीवॉल प्रतियोगिता का आयोजन करवाया गया जिसमें 157वीं वाहिनी ने प्रथम एवं 158वीं वाहिनी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

इसके उपरांत इस परिचालन रेंज के अधीन कार्यरत 144वीं वाहिनी के देख–रेख में 2 दिसंबर 2009 से 3 दिसंबर 2009 तक टेबल टेनिस का एकल एवं युगल प्रतियोगिता का आयोजन करवाया गया जिसमे प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिनिधियों का विवरण निम्न प्रकार है–

एकल प्रतियोगिता

विजेता

- बल सं० 010270077 सि/जीडी सत्यजीत शर्मा – 23वीं वाहिनी
- बल सं० 055151203 सि/जीडी एम शांति कमार – 23वीं वाहिनी उपविजेता
- बल सं० 015151445 सि/चालक एम. बोबो सिंह–23 वाहिनी
- बल सं० 045150846 स/क० एस प्रेमानंद –23 वाहिनी



तदोपरांत 161 वाहिनी की देखरेख में 21 से 22/12/2009 एवं 29 तक बैडमिंटन एकल एवं युगल खेल प्रतियोगिता का आयोजन करवाया गया जिसमें सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों का विवरण निम्न प्रकार है–

एकल प्रतियोगिताः

राजपत्रित अधिकारी

विजेता

- ईरला सं०. 3129 श्री अशोक सामयाल कमांडेंट–61वी वाहिनी

उपविजेता

- श्री सी एच बॉबी सिंह उप क०–23 वाहिनी

युगल प्रतियोगिताः

राजपत्रित अधिकारी

विजेता

- श्री शाम चंद पु उप महा ाने, पारेचालन श्रीनगर
- श्री सी एच बॉबी सिंह, उप/क० –23 वाहिनी

उप विजेता:

राजपत्रित अधिकारी

- ईरला सं० 4683 श्री भूपेश यादव द्वितीय कमान अधि–144वीं वाहिनी
- ईरला सं० 7837 श्री संजीव जोशी सहा कमा. – 144वीं वाहिनी

एकल प्रतियोगिताः

राजपत्रित अधिकारी एवं अन्य अधिकारी

विजेता

- बल सं०. 010260077 सि/जीडी सत्यजीत शर्मा–44वीं वाहिनी
- उपविजेता बल सं०.041581167 सि/जीडी कुलविन्दर सिंह–158वीं वाहिनी

युगल प्रतियोगिताः

राजपत्रित अधिकारी एवं अन्य अधिकारी

विजेता

- बल सं०. 045264736 सि/जीडी सोनू कुमार–23वीं वाहिनी
- बल सं०. 045150757 सि/जीडी टी सुरेश–23वीं वाहिनी

उपविजेता

- ईरला सं०. 3129 श्री अशोक समयाल कमाण्डेंट 161वीं वाहिनी
- बल सं०. 903062649 उप/नि(एम) एम एस बिष्ट 161वीं वाहिनी

लेख



कैंसर की रोकथाम जानकारी बने वरदान

डा० मीना कुमारी, चिकित्सा अधिकारी
88, महिला बटालियन

ध्यान दे : कैंसर का हो सकता है इलाज, समय पर अगर करा लें जाच और उपचार
कैंसर के आरंभिक लक्षणों को जाने व समझें:–

- अकारण वजन घटना, भूख कम हो जाना व निगलने में तकलीफ होना।

- मूत्र व पखाने जैसी रोजमरा की आदतों में परिवर्तन होना।
- मुँह में सफेद धब्बा या घाव का होना व उसका ना भरना।
- पेशाब, पखाना या बच्चेदानी के रास्ते असामान्य खून का बहना या अन्य श्राव होना।
- स्तन या शरीर के अन्य भाग में गिल्टी(गांठ) बनना तथा उसका सख्त हो जाना।
- त्वचा में उपस्थित तिल या मस्से के आकार या रंग में अचानक से परिवर्तन होना या उसमें घाव होना।
- लगातार खाँसी या गले मे रूखापन, आवाज मे परिवर्तन व सांस लेने मे तकलीफ होना।

ध्यान रखें:–

- आरंभिक अवस्था मे कैंसर का प्रभाव प्रायः पीड़ा रहित होता है।
- स्वयं शारिरिक परीक्षण के माध्यम से मुँह एवं स्तन के कैंसर का पता आरंभिक अवस्था में ही चल सकता है।
- तम्बाकू का किसी भी रूप में प्रयोग (सिगरेट, बीड़ी, गुटखा पान मसाला, नसवार, खैनी आदि) कैंसर पैदा कर सकता है।
- शराब के सेवन से भी कैंसर हो सकता हैं। शराब और तम्बाकू का एक साथ सेवन करने से कैंसर होने का खतरा कहीं अधिक हो जाता है।

जागरूक रहें: कैंसर से बचें

आप कैंसर को रोकने के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं

1. तम्बाकू का किसी भी रूप से सेवन से बचें – तम्बाकू का सेवन (सिगरेट, बीड़ी, गुटखा, पान मसाला, नसवार, खैनी) आदि कैंसर पैदा कर सकता हैं।
2. शराब के सेवन से भी कैंसर हो सकता है – शराब और तम्बाकू का एकसाथ सेवन करने से कैंसर होने का खतरा कहीं अधिक हो जाता है।
3 स्वास्थय वर्धक खान–पान अपनाएं:– अत्याधिक वसायुक्त / तले हुए भोजन से परहेज करें। प्रतिदिन भोजन में पर्याप्त मात्रा में ताजा फल एवं सब्जियाँ लें।
4. नियमित शारीरिक व्यायाम करें:– मोटे लोगों में कैसर होने का खतरा अधिक रहता है।
5. सुरक्षित शारीरिक संबंध अपनाएं:– अनैतिक शारीरिक संबंध से होने वाला संक्रमण बच्चे दानी के मुख के कैंसर का प्रमुख कारण हैं। शारीरिक संबंध अपने जीवन साथी तक सीमित रखें। जरूरत पड़ने पर कन्डोम अपनाएं।
6. स्वयं स्तन परीक्षण करने की विधि सीखें:– महिलाओं में पाये जाने वाले कैसरों में

स्तन कैंसर सबसे आम है। स्तन कैंसर का पता नियमित स्वयं स्तन परीक्षण के माध्यम से आसानी से किया जा सकता है।

याद रखें, कैंसर का हो सकता हैं ईलाज समय पर यदि करा ले जाँच एवं उपचार। आप कैंसर के शुरू आती लक्षणों के बारे में अवश्य जानें।

बच्चेदानी के मुख के कैंसर का आरंभिक अवस्था में ही आसानी से पता चल सकता है।

इन लक्षणों पर ध्यान दें

इनमें से किसी भी लक्षणों के पाये जाने पर डॉक्टर से शीघ्र सम्पर्क करें:–

1. यौन से असामान्य स्त्राव जैसे मवाद, सफेद पानी या उसके साथ खून बहना
2. माहवारी के मध्य योनि से खून आना।
3. संभोग के दौरान पीड़ा या बाधा महसूस होना और उसके बाद योनि से खून बहना।
4. माहवारी के दौरान अत्याधिक खून बहना।
5. माहवारी के पूर्ण बन्द के बाद भी खून का बहना

बच्चेदानी के मुख के कैंसर के प्रमुख कारणों को जाने तथा उनसे बचें

1. अधिक प्रजनन, कम उम्र में शारीरिक संबंध बनाना।
2. अनैतिक यौन संबंध से हुए मानव पैपिलोमा कीटाणु का संक्रमण बच्चेदानी के मुख के कैंसर का सबसे प्रमुख कारण है।
3. धूम्रपान या तम्बाकू युक्त पदार्थ का सेवन।

बच्चेदानी के मुख के कैंसर का पता सरल जाँच (पैप स्मीयर कॉल्पोकोस्कोपी) से शुरूआत में ही चल सकता है।

इन छोटी सावधानियों से आप अपना जीवन बचा सकते हैं।



भोजन एवं स्वास्थ्य मार्गदर्शिका

जोगिन्दर सिंह
कमाण्डेन्ट– 72 बटालियन

"आप वह हैं जो आप खाते हैं,
और वह भी, जो आप नहीं खाते।"

भोज्य पदार्थों को हम आहार के नाम से जानते हैं। जिन पदार्थों को हम ग्रहण करते हैं वह पदार्थ शरीर को शक्ति प्रदान करते हैं, जिससे हम सभी कार्यो को सरलता पूर्वक सम्पन्न करते हैं। व्यक्ति को इसकी जानकारी होनी चाहिए कि कितनी मात्रा में और कैसा भोजन शरीर के लिए लाभकारी और उपयोगी होगा। भोजन से शरीर को शक्ति मिलती है और गर्मी उत्पन्न होती है। ऊत्तकों का निर्माण और मरम्मत भी इसी के द्वारा होती है।

सम्पूर्ण पौष्टिक आहार मैस से पूरा नहीं किया जा सकता है। इसलिए केवल मैस पर निर्भर न रहकर बाजार से खरीदकर सम्पूरक पौष्टिक तत्व लेना चाहिए। अच्छा पोषण

प्रातोंदेन अच्छा स्वास्थ्य तथा ऊजा प्रदान करता है। यह कई चीजों का मिश्रण है। विविध, संतुलित तथा संयमित रूप से किए गए सही भोजन से न्यूनतम प्रयास के बिना शरीर की पोषक तथा ऊर्जा संबंधित जरूरतें पूरी होती हैं।

इसलिए आधुनिक जीवन शैली में संतुलित आहार ग्रहण कर रोगों पर काबू पाया जा सकता है इसे दूर करने का सबसे सरल उपाय कम वसायुक्त भोजन, नियमित व्यायाम, अनुशासन आदि है।

भोजन और स्वास्थ्य

भोजन के कार्य

भोजन के निम्नलिखित कार्य होते हैं:–

1. भोजन तत्वों से एन्जाइम तथा हार्मोन्स बनता है जो शरीर के लिए लाभकारी होता है।
2. भोजन के द्वारा शरीर का निर्माण और मरम्मत का कार्य होता है।
3. भोजन शरीर को शक्ति प्रदान करता है।
4. भोजन द्वारा रोगों से सुरक्षा भी होती है।
5. भोजन से ऊत्तकों का रखरखाव होता है और इनके कार्यों पर नियंत्रण भी होता है।

भोजन की आवश्यकता

"श्रेष्ठ भोजन का सेवन एक
सर्वश्रेष्ठ निवेश है
जो आप अपने स्वास्थ्य
के लिए करते हैं।"

जो भोजन हम खाते हैं उसका हमारे स्वास्थ्य तथा तन्दुरूस्ती पर गहरा प्रभाव पड़ता है। स्वास्थ्यकर भोजन तथा सक्रिय जीवनशैली अपना कर, हम शरीर स्वस्थ रख सकते हैं तथा जीवनशैली एवं भोजन से जुड़ें रोगों जैसे हृदयरोग, मधुमेह, उच्च रक्तचाप तथा कैंसर के खतरे को कम कर सकते हैं।

लेकिन, हममें से कितने स्वस्थ भोजन का अर्थ जानते हैं ?

स्वस्थ भोजन के सेवन का अर्थ है ऊतकों की प्रतिपूर्ति तथा उनके सृजन के लिए आवश्यक सभी पोषक तत्वों की आपूर्ति करना, स्वस्थ प्रतिरोधक प्रणाली को बनाए रखना, और प्रचुर ऊर्जा प्राप्त करना ताकि आपका शरीर दिन–प्रतिदिन के सभी कार्य आसानी से कर सके। हम न केवल अच्छा महसूस करेंगे, हम अच्छा दिखेंगें भी।

भोजन, पोषण तथा संतुलेत आहार

प्रायः भोजन तथा पोषण शब्दों को पर्यावाची रूप में प्रयोग किया जाता है। परन्तु यह पूर्ण रूप से उचित नहीं होता। "भोजन बहुत से तत्वों का मिश्रण होता है। इसकी मात्रा में थोड़े से ग्राम से लेकर सैकड़ों ग्रामों में परिवर्तन हो सकता है

पोषण

दूसरी जगह, पोषण एक गतिशील प्रक्रिया होती है जिसमें ग्रहण किए गए भोजन को शरीर को पोषण प्रदान करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

संतुलित आहार

संतुलित आहार वह होता है जिसमें विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों का समावेश उस मात्रा में होता है जिससे शरीर को शक्ति, अमिनो एसिड, विटामिन, मिनरल, वसा, कार्बोहाइड्रेट तथा अन्य पोषक तत्वों की प्राप्ति आवश्यक मात्रा में हो पाती है जिससे वह स्वस्थ रह सकें तथा प्रतिदिन के कार्यों को कुशलतापूर्वक कर सकें तथा इसके पश्चात् भी उसमें इतनी शक्ति शेष रह जाएं जिससे वह थोड़े समय तक होने वाली अपौष्टिकता को सहन कर पाएं।

क्या खाना चाहिए, कब खाना चाहिए तथा किस प्रकार से खाना चाहिए, इस संदर्भ में चर्चा करने के लिए छ: बिल्डिंग ब्लाक्स (आहार के तत्वों) का वर्णन करना आवश्यक है।

1. कार्बोहाइड्रेट : प्रतिदिन ग्रहण की जाने वाली कुल कैलोरी का लगभग 60 प्रतिशत भाग कार्बोहाइड्रेट होता है। यह केवल नूडल से सम्बन्धित नहीं है। कार्बोहाइड्रेट सभी प्रकार के भोजन का आधार होना चाहिए। इसमें सम्मिलित होते हैं : चीनी, स्टार्च, सेल्यूलोस, अनाज, ब्रेड, चावल तथा चपाती।

अधिकतर भारतीय भोजन में कार्बोहाइड्रेट अत्याधिक मात्रा में उपस्थित होता है, जो प्रायः पूर्ण शक्ति का 90 प्रतिशत होता हैं। एक वयस्क अपने शरीर में 500 ग्राम तक कार्बोहाइड्रेट को संरक्षित कर सकता है तथा जो अतिरिक्त मात्रा ग्रहण की जाती है, वह सामान्यतः चर्बी में परिवर्तित हो जाती है यदि वह जटिल क्रियाओं से ज्वलित नहीं हो जाती तो। जब मनुष्य कुछ नहीं खाता, तो यह संरक्षित मात्रा ही ऊर्जा प्रदान करती हैं।

2. वसा : भारतीय भोजन में चर्बी तथा तेल अधिक मात्रा में प्रयोग किया जाता है। एक ग्राम वसा लगभग 9 कि० कैलोरी की मात्रा में शक्ति उत्पन्न करती हैं। वसा से भोजन का स्वाद बेहतर हो पाता है।

अधिक वसा से आपके शरीर का भार बढ़ेगा तथा आपका स्वास्थ्य दुष्प्रभावित होगा।

जानवरों की चर्बी, मक्खन, तला हुआ भोजन कम मात्रा में ही ग्रहण करें। यह संतृप्त हो जाते हैं तथा हृदय के रोगों को बढ़ा सकते हैं। वनस्पति वसा को ग्रहण करें क्योंकि वह प्रायः असंतृप्त होते हैं तथा कम हानिकारक होते हैं। प्रतिदिन ग्रहण की जाने वाली कैलोरी की कुल मात्रा में से यह प्रयत्न करें कि आप वसा 20 से 25 प्रतिशत की मात्रा में ही लें। इसके लिए आपको घी, मक्खन तथा तले हुए पदार्थों को कम मात्रा में ग्रहण करना चाहिए तथा वसा को पोषक खाद्य स्रोतों से प्राप्त करना चाहिए। इसमें सम्मिलित होता है वनस्पति खाद्य तेल जिसे पनीर, मछली तथा चिकन बनाते समय प्रयोग किया जाता है। कुछ विशेष वनस्पति वसा से आवश्यक फैटी एसिड्स की पूर्ति की जा सकती है। वह शरीर के लिए भी आवश्यक होते हैं। वसा शक्ति प्राप्त करने का मुख्य साधन होते हैं। वसा मुख्य ए, डी, ई तथा के प्रकार की होती हैं।

शरीर में उपस्थित होने वाली वसा विभिन्न प्रकार की आंतड़ियों को समर्थन प्रदान करती हैं, जैसे हृदय तथा गुरदा। त्वचा के नीचे पाई जाने वाली वसा ठंड के विरूद्ध सुरक्षा प्रदान करती हैं। जिस वसा की आवश्यकता प्रतिदिन होती है (जो ग्रहण की जाने वाली कुल कैलोरी का 20 से 25 प्रतिशत होता है) उसकी मात्रा प्रतिदिन के लिए आवश्यक वसा की 10 से 25 ग्राम होती है। इसमें से करीबन 10 प्रतिशत मात्रा को हमें वसा, घी, तेल के रूप में ग्रहण करना पड़ता है तथा अन्य 10 प्रतिशत की प्राप्ति संतुलित आहार में सम्मिलित होने वाली सब्जियों तथा दालों से होती है।

3. प्रोटीन : प्रोटीन को प्रायः शरीर के निर्माता तत्व के रूप में जाना जाता है। इन निर्माता प्रवर्धकों को अमिनो एसिड भी कहा जाता है। शरीर रचना तथा उनकी देखभाल के लिए यह आवश्यक होते हैं। प्रोटीन की आवश्यकता मांसपेशियों, लाल रक्त कणों तथा ऊतकों में होने वाली तोड़–फोड़ की मरम्मत करने के लिए भी होती है। यही हारमोन्स को संश्लेशित करने का कार्य भी करते हैं। इसलिए एक व्यक्ति को प्रतिदिन ऐसे भोजन की आवश्यकता होती है, जिसमें प्रोटीन प्रचुर मात्रा में उपस्थित हों। परन्तु ऐसा करते हुए भी सावधान रहना चाहिए क्योंकि आवश्यकता से अधिक मात्रा में ग्रहण किए जाने वाला प्रोटीन चर्बी के रूप में शरीर में एकत्रित हो जाता है। विभिन्न आयु वर्ग के व्यक्तियों को प्रोटीन की आवश्यकता भिन्न–भिन्न मात्रा में होती हैं। आयु, लिंग, ऊतकों के विकास तथा रोगों के अलावा यह शरीर के भार के अनुसार परिवर्तित होती हैं।

शरीर के लिए आवशयक प्रोटीन की मात्रा आवश्यक तथा अनावश्यक प्रोटीन के स्रोतों पर निर्भर करती हैं तथा गेस्ट्रो–इन्टेस्टिाइन ट्रैक्स में उसके पाचन पर। जहाँ तक भोजन की बात है तो जानवरों द्वारा उत्पन्न होने वाले प्रोटीन (जैसे मछली, दूध, मक्खन तथा अंडे) पर्याप्त होते हैं। सम्पूर्ण प्रोटीन जिसमें श्रेष्ठ अनुपात तथा आवश्यक अमीनो एसिड सही मात्रा में उपस्थित हो, उसका किस्म मानक होता है अंडे की सफेदी। अपूर्ण प्रोटीन वह होते हैं जिनमें पौधों से उत्पन्न होने वाले तत्वों का अभाव होता है (जैसे अनाज, बीज तथा फली)।

4. विटामिन : विटामिन प्रबल संघटित संयोजक होते हैं जो भोजन में कम एकाग्रता

में पाए जाते हैं। वह विद्युतीय चिन्गारी होती है जो मनुष्य के शरीर रूपी मोटर को चलाने में सहायता प्रदान करते हैं। विटामिन हमारे शरीर में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट तथा वसा की भांति उत्पन्न नहीं होते परन्तु फिर भी सभी महत्वपूर्ण कार्यों में इनकी आवश्यकता होती है। चयापचयी कैटालिस्टस जीव रसायनिक प्रतिक्रियाओं को शरीर में नियंत्रित करने के लिए आवश्यक होते हैं। विटामिन डी इस तथ्य को नियंत्रित करता है कि शरीर कैल्शियम के तत्व को किस प्रकार से प्रयोग करता है। विटामिन ए आपकी दिव्य दृष्टि को बेहतर करता है। कोई भी मनुष्य विटामिन के बिना जीवन यापन नहीं कर सकता। अपनी वास्तविक स्थिति में यह संघटित भोजन में बहुत ही कम मात्रा में प्राप्त होते हैं। विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों से हमें इन्हें प्राप्त करते रहना चाहिएं।

5. मिनरल्स : मिनरल्स असंघटित पदार्थ अथवा असंघटित पोशण होते हैं। यह हमें किसी भी प्रकार से शक्ति प्रदान नहीं करते अथवा इनमें कैलारी विद्यमान नहीं हाती। फिर भी यह मानव के लिए आवश्यक होते हैं क्योंकि यह शरीर में उन कारकों को नियंत्रित करते हैं जो शक्ति उत्पन्न करने वाली क्रियाओं को करने में सहायक होते हैं। इसलिए शरीर को यह पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होने चाहिए जिससे उसके विभिन्न अंग कुशलतापूर्वक कार्य कर सकें। यह रक्त में विविध तरीकों से मिल जाते हैं तथा कई प्रकार की संरचनाओं का निर्माण करते हैं (जैसे आक्सीजन)। विटामिन के रूप में, प्रत्येक मिनरल शरीर में एक विशिष्ट कार्य करता है, परन्तु ऐसा कुछ परिस्थितियों में नहीं होता (गर्भावस्था, अनीमिया आदि)। प्रायः जिन तत्वों की आवश्यकता शरीर को होती है, वह हमें एक संतुलित आहार से प्राप्त होते हैं। मिनरल्स शरीर में जल की उस आवश्यकता मात्रा को संरक्षित करने में सहायता करता है, जो मानव शरीर के लिए जीवन निर्वाह करने के लिए अनिवार्य होती है। यह कोशिकाओं में से रसायनिक पदार्थो को निकालने में भी सहायता करते हैं तथा रक्त में उपस्थित होने वाले द्रव्यों को विशैले होने से बचाते हैं। मिनरल्स पदार्थ जिनकी आवश्यकता मानव शरीर को होती है, वह हैं: कैल्शियम, फोस्फोरस, आइरन, मैगनिशियम, सोडियम, कोपर, कोबाल्ट, मैगनीज, जिंक, सेलेनियम, सिलकोन, फ्लोरिन तथा अन्य तत्वों की भी आवश्यकता थोड़ी मात्रा में होती है।

6. जल : जीवन निर्वाह के लिए जल अति आवश्यक होता है। यदि आपके शरीर से अधिक मात्रा में पसीना बह जाएं तो उससे आपके शरीर में जल की मात्रा बहु कम हो जाएँगी। परन्तु इससे वसा में किसी भी प्रकार से कमी नहीं होगी और जैसे ही आप पर्याप्त मात्रा में द्रव ग्रहण करना आरम्भ करेंगे तो आपके शरीर का वजन फिर से बढ़ जाएगा।

जल, जो मानव शरीर में सबसे अधिक मात्रा में पाया जाता है, वह पोषण आवश्यकताओं के लिए भी अति महत्वपूर्ण होता है। यह तीन प्रकार के कार्यों को करता है, जो मानव जीवन के लिए अति आवश्यक होते हैं, जो हैं :–

- यह शरीर की संरचना तथा रूपरेखा को सहायता प्रदान करता है।

- कोशिकाओं के कार्यों के लिए यह आवश्यक द्रव्योय वातावरण प्रदान करता है।
- शरीर के तापमान को नियंत्रित रखने में यह सहायता करता है।

उपरोक्त चर्चा के पश्चात् यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि एक व्यक्ति के लिए संतुलित रूप से विकास तथा प्रतिदिन के कार्यों को कुशलतापूर्वक करने के लिए आवश्यक पोषक तत्वों का ज्ञान होना अति आवश्यक होता है। भोजन की मात्रा जो शरीर को शक्ति तथा ऊर्जा प्रदान करने के लिए आवश्यक होती है, वह सभी व्यक्तियों के लिए भिन्न होती हैं। परन्तु संतुलन के आधारभूत सिद्धान्त का ध्यान उपर्युक्त स्वास्थ्य के लिए रखना अति आवश्यक होता है।

आदर्श स्वास्थ्य क्या है?

क्या आप अच्छा दिखना, अच्छा महसूस करना और अधिक ऊर्जा चाहेंगे? आदर्श स्वास्थ्य निम्नलिखित चार प्राकृतिक सिद्धान्तों को अपना कर प्राप्त किया जा सकता है–

1. नियमित व्यायाम
2. सकारात्मक दृष्टिकोण
3. यथोचित आराम
4. बेहतर पोषण

अपने लिए आदर्श स्वास्थ्य अर्जित करने के लिए प्रतिबद्ध हों तथा उसे दूसरों के साथ भी बांटें। इन सिद्धान्तों को अपना कर समय के साथ तन्दरूस्ती में बढ़ोतरी होती है ओर ऐसे पदार्थो से दूर रहें जो आपके शरीर के लिए हानिकारक हैं। अपनी तन्दरूस्ती में दीर्घकालीन बदलाव करने के लिए प्रतिबद्ध होना होगा।

आदर्श स्वास्थ्य

जीवन के लिए प्राकृतिक सिद्धान्त

नियमित व्यायामः व्यायाम तेजी से या इस तरह न करें कि वो कष्टदायक लगें। अध्ययनों से पता चला है कि प्रतिदिन 20 मिनट चलने से भी सकारात्मक परिणाम सामने आते हैं। नियमित रूप से व्यायाम करने वाले किसी भी व्यक्ति से पूछे वह यही कहेगा, "मुझे बहुत अच्छा महसूस हो रहा है।" नियमित व्यायाम करने के बहुत से लाभ है : पेशियां स्वस्थ रहती है, स्वाभिमान में बढ़ोतरी, आराम, चिन्ता कम होना आदि। केवल शुरूआत करने का निर्णय करें, बाकी सब आसान हो जाएगा।

जीवन के लिए पोषणः अच्छा पोषण प्रतिदिन अच्छा स्वास्थ्य तथा ऊर्जा प्रदान करता है। यह कई चीजों का मिश्रण है। विविध, संतुलित तथा संयमित रूप से किए गए सही भोजन से न्यूनतम प्रयास के बिना शरीर की पोषक तथा ऊर्जा संबंधित जरूरतें पूरी होती हैं आपके शरीर को प्रतिदिन 40 विभिन्न पोषक तत्वों की

आवश्यकता होती है, जो काबोहाइड्रेट, प्रोटीन, थोड़ी सी वसा तथा विटामिन एवं खनिजों का संतुलन हो। नियमित भोजन करना तथा भोजन की अपनी पसंद को सही अनुपात में संतुलित करना भी महत्वपूर्ण है। रोजाना 8 गिलास पानी पीना वह सर्वोत्तम प्रयास है जो आप अपने शरीर के लिए करते हैं।

पर्याप्त आरामः क्या आपको नींद आने में दिक्कत होती है? यदि ऐसा है, तो इस समस्या से जूझने वाले 20–40: व्यस्क लोगों से बात करें। सामान्यतः अधिकतर लोगों को रात में 6–8 घंटे की नींद चाहिए। अपर्याप्त आराम से कई समस्याएँ आ जाती हैं जैसे कि थकान, एकाग्रता में कमी, चिड़चिड़ापन, निस्तेज त्वचा आदि। रोजाना आराम, यद्यपि अक्सर महत्वपूर्ण नहीं लगता, सर्वोत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति में इसका अत्यन्त महत्व है। इसके बिना, जीवन अत्यधिक थका–मांदा हो जाएगा।

सकारात्मक सोचें: अध्ययन बताते हैं कि सकारात्मक दृष्टिकोण से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है। मन एक शक्तिशाली साधन है और इसे भी स्वस्थ रखना जरूरी है। जीवन की प्रतिदिन की चुनौतियों तथा मेलजोल से तालमेल बिठाना सीखने से प्रतिदिन के तनाव का सामना करने में आसानी होती है जबकि तनाव को सकारात्मक रूप में देखा जाता है, यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें सक्रिय रखता है तथा सुधार करने के लिए प्रेरित करता है।

हानिकारक वस्तुओं से दूर रहें: धूम्रपान, शराब, प्रदूषित वातावरण, कॉफी और चाय हमारे शरीर से मूल्यवान पोषक तत्व लूटने वाले लुटेरे हैं। आप इन लुटेरों से कैसे अपनी रक्षा करेंगें? यह बहुत ही आसान है – धूम्रपान छोड़ दें, शराब छोड़ दें, चाय और कॉफी की मात्रा कम कर दें, विभिन्न किस्मों से तैयार आहार दिन में तीन बार खाने की कोशिश करें। इन लुटेरों को पहचान कर तथा इनका सेवन न करके आप अपने जीवन और अपने स्वास्थ्य का ख्याल रख सकते हैं। अपने स्वास्थ्य के खतरे को एक–एक कर कम करें, और कभी–भी एक साथ सभी को बदलने की कोशिश न करें।

संतुलित आहार क्या है?

जैसा कि हमने पहले भी बताया है, पांच भोजन समूह हमें आवश्यक पोषक तथा ऊर्जा प्रदान करते हैं।

समूह एक : गेहूँ, चावल तथा अनाज, ये स्टार्च, कार्बोहाइड्रेट, बी–विटामिन तथा फाइबर के मुख्य स्रोत हैं।

समूह दो : फल तथा सब्जियां कई विटामिन तथा खनिजों, कार्बोहाइड्रेट तथा फाइबर के प्रचुर स्रोत हैं।

समूह तीन : मॉस, मछली, पोल्ट्री और दालें–शरीर को मुख्यतः प्रोटीन, विटामिन बी12, जिंक तथा आयरन प्रदान करते हैं।

समूह चार : दुग्ध उत्पादन, आंधेक प्रोटीन, कैल्शियम तथा कइ अन्य आवश्यक विटामिन ए, बी, बी2, बी6, बी12, तथा डी।

समूह पांच : वसा, तेल और चीनी – हमारे शरीर के लिए ऊर्जा के मुख्य स्रोत हैं। इनका प्रयोग कम करे।

चुनौतीपूर्ण पोषकता

वास्तव में पूर्णतः स्वस्थ भोजन उचित संतुलन मे खाना एक चुनौती भरा कार्य है। हमारी तीव्र–गति तथा व्यस्त जीवन–शैली के कारण, हम प्रतिदिन भोजन की पोषकता को छोड़ते जाते है।

खाने की आदतें : जो भोजन प्रतिदिन हम करते हैं, उसका चयन हम उसकी पौष्टिकता के अलावा विभिन्न अन्य कारणों से करते हैं।

सुविधा : हममें से कई व्यस्त हैं। हम सुविधा के अनुसार भोजन का चयन करते हैं और अक्सर पौष्टिकता को नजर अन्दाज कर देते हैं।

स्वाद : हम भोजन का चयन उसकी पौष्टिकता के आधार पर न कर उसके स्वाद के आधार पर करते हैं।

भोजन न कर स्नैक्स खाना : हममें से अधिकांश नियमित भोजन समय का पालन नहीं करते और अक्सर नाश्ता या दिन का भोजन नहीं करते। बाद में या तो हम स्नैक्स खाते हैं या आवश्यकता से अधिक खाते हैं। हमारे बच्चे भी भोजन करने की इन गलत आदतों को अपनाते हैं, जो बाद में उनके जीवन का हिस्सा बन जाती हैं।

प्रासेसिंग : आज जो भोजन हम खरीदते हैं, उसमें से अधिकांश भोजन प्रोसेस्ड होता है। फ्रोजन सब्जियों में ताजी सब्जियों के मुकाबले 50% कम विटामिन सी होता है, पॉलिश किए हुए सफेद चावल में प्राकृतिक बी–विटामिन का 90 प्रतिशत नष्ट हो जाता है।

भण्डारण तथा पकाना : भण्डारण के दौरान भोजन अपनी प्राकृतिक पौष्टिकता की पर्याप्त मात्रा खो देता है। फलों तथा सब्जियों को छीलने, भोजन का पानी में भिगोने तथा पकाने से भोजन के विटामिन कम हो जाते हैं।

खाद्य पदार्थ	प्रोटीन (ग्राम)	वसा (ग्राम)	कार्बोहाइड्रेट (ग्राम)	आयरन (ग्राम)	कैल्शियम (मि. ग्राम)	विटामिन (मि. ग्राम)	कैलोरी (कि. कैलोरी)
बाजरा	5.8	2.5	33.75	2.5	21.0	0.0	180.5
मक्का	5.55	1.8	33.1	1.0	5.0	0.0	171.0
चावल	3.4	0.25	39.1	1.55	5.0	0.0	172.5
चावल की पपड़ी	3.3	0.6	38.65	10.0	10.0	0.0	173.0
मुरमुरे	3.75	0.05	36.8	3.3	11.5	0.0	162.5
सूजी	5.2	0.4	37.4	0.8	8.0	0.0	174.0
गेहूं	6.05	0.85	34.7	5.75	24.0	0.0	17.0
दालें							
साबूत चना	8.75	2.65	30.45	5.1	101.0	1.5	180.0
चने की दाल	10.4	2.8	29.9	4.55	28.0	0.5	186.0
भुने चने	11.25	2.6	29.05	4.75	29.0	0.0	184.5
काले चने की दाल	12.0	0.7	29.8	4.55	77.0	0.0	173.5
लोबिया	12.05	0.5	27.25	2.95	38.5	0.0	161.5
हरा छोलया	12.0	0.65	28.35	3.65	62.0	0.0	167
मुंग की दाल	12.25	0.6	29.95	4.25	37.5	0.0	174
अरहर की दाल	12.55	0.35	29.5	2.4	34.5	0.0	171.5
मोथ बीन्स	11.8	0.55	28.25	4.75	101.0	1.0	165
सूखा मटर	9.85	0.55	28.25	2.55	37.5	0.0	157.5
भुने हुए मटर	11.45	0.7	29.40	3.2	40.5	0.0	170
राजमाह	11.45	0.65	30.3	2.9	130.0	0.0	173
रेडग्राम दाल	11.15	0.85	28.8	2.9	36.5	0.0	167.5
सोयाबीन	21.6	9.75	10.45	5.75	120.0	0.0	216
सुतारी	10.75	0.15	30.45	0.0	151.0	0.0	166
कन्द तथा मूल							
चंकुदर	0.85	0.05	4.4	0.5	9.0	5.0	21.5
गाजर	0.45	0.1	5.3	1.1	40.0	1.5	24.0
कोलोकैसिया	1.5	0.05	10.55	0.85	20.0	0.0	48.5
कमल ककड़ी	0.85	0.05	5.65	0.2	10.5	11.0	26.5
प्याज	0.6	0.05	5.55	0.35	23.5	5.5	25.0
आलू	0.8	0.05	11.3	0.35	5.0	8.5	48.5
मूली	0.3	0.15	3.4	0.25	25.0	8.5	16.0
शकरकन्दी	0.6	0.15	14.1	0.4	23.0	12.0	60.0
शलगम	0.25	0.1	3.1	0.2	15.0	21.5	14.5
अन्य सब्जियॉ							
करेला	0.8	0.1	2.1	0.9	10.0	44.0	12.5
लौकी	0.1	0.05	1.25	0.35	10.0	0.0	6.0
बैंगन	0.7	0.15	2.0	0.45	9.0	6.0	12.0
फूलगोभी	1.3	0.2	2.0	0.75	16.5	28.0	15.0
खीरा	0.2	0.05	1.25	0.75	5.0	3.5	6.5
चोब	1.25	0.05	1.85	2.65	15.0	60.0	13.0
भिन्डी	0.95	0.1	3.2	0.75	33.0	6.5	17.5
पपीता	0.35	0.1	2.85	0.45	14.0	6.0	13.5
मटर	3.6	0.05	7.95	0.75	10.0	4.5	46.5
केला	0.7	0.1	7.0	0.3	5.0	12.0	32.0
सीताफल	0.7	0.05	0.35	0.35	5.0	1.0	12.5
टिंडा	0.7	0.1	1.7	0.45	12.5	9.0	10.5
टमाटर	0.95	0.05	1.8	0.9	10.0	15.5	11.5
बंदगोभी	0.9	0.05	2.3	0.4	19.5	62	13.5
कड़ी पत्ता	3.05	0.5	9.35	3.5	415.0	2.0	54.0
चोब की पत्ती	3.35	0.85	6.25	3.5	220.0	110.0	46.0
मेथी के पत्ते	2.2	0.45	3.0	8.25	197.5	26.0	24.5
नोल–खोल ग्रीन	1.75	0.2	3.2	6.65	370.0	78.5	21.5
सलाद	1.05	0.15	1.25	1.2	25	5.0	10.5
पुदीना	2.4	0.3	2.9	7.8	100	13.5	24.0

जीवनशैली की रूचियों का खाये गये पोषक तत्वों पर प्रभावः

डायटिंग, प्रतिबंधित भोजन, चिकित्सा, संतति–निग्रह गोली, धूम्रपान, शराब पीना, अधिक चाय और काफी पीना, जीवनशैली के ये सभी तत्व हमारे शरीर के आवश्यक विटामिन तथा खनिज नष्ट कर देते हैं।

प्रौढ़ावस्था तथा वृद्धावस्था : जैसे–जैसे हमारी उम्र बढ़ती है, पाचन मे कमी, दांतों की खराब स्थिति, दवाइयाँ खाने आदि के कारण कुछ पोषक तत्वों की जरूरत बढ़ जाती है, लेकिन कैलोरी की आवश्यकता कम हो जाती है।

सम्पूरक क्यों ?

क्या आप वास्तव में स्वस्थ भोजन खाने वाले व्यक्ति हैं – बताए गए सभी पाँच भोजन समूहों में से प्रतिदिन सही संतुलित अनुपात लेते हैं ?

क्या आप प्रदूषण तथा तनाव रहित वातावरण में एक स्वस्थ जीवनशैली जी रहे हैं?

क्या आप उन व्यक्तियों में फिट होते हैं जो भोजन नहीं करते, जिसके पास व्यायाम करने के लिए समय नहीं है, कम सोते है, अधिकतर बाहर खाते है, साधारणतया जितनी ऊर्जा होनी चाहिए उससे कम है या कार्यस्थल में तनाव हैं?

प्रतिदिन के कार्यकलापों के केन्द्र में अधिक संभावना है, हम आवश्यक प्रोटीन तथा खनिज से दूर होते जा रहे हैं, जो अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त करने तथा वास्तव में जीवन का आनन्द लेने के लिए ऊर्जा तथा जोश से भर देता है।

सर्वोत्तम स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए बेहतर पोषण सबसे अधिक महत्वपूर्ण तत्व है। यदि हम हर समय संतुलित भोजन करने में दिक्कत महसूस करते हैं, तो पौष्टिकता की कमी को दूर करने का आसान तथा तत्काल तरीका है कि अपने रोजाना के आहार में भोजन सम्पूरकों को शामिल कर लिया जाए।

खाद्य पदार्थ	प्रोटीन (ग्राम)	वसा (ग्राम)	कार्बोहाइड्रेट (ग्राम)	आयरन (ग्राम)	कैल्शियम (मि. ग्राम)	विटामिन (मि. ग्राम)	कैलोरी (कि. कैलोरी)
पालक	1.0	0.35	1.45	5.45	36.5	14.0	13.0
गिरीदार फल तथा तेलहन							
बादाम	10.4	29.45	5.25	2.25	115.0	0.0	327.5
काजू	10.6	23.45	11.15	2.5	25.0	0.0	298.0
सूखा नारियल	3.4	31.15	9.2	1.35	20.0	3.5	331.0
नारियल	2.25	20.8	6.5	0.85	5.0	0.5	222.0
मूंगफली	12.65	20.05	13.05	1.4	45.0	0.0	283.5
भूनी मूंगफली	13.1	19.9	13.35	1.55	38.5	0.0	285
अखरोट	7.75	27.25	5.5	2.4	50.0	0.0	343.5
मसालें							
इलायची	5.1	1.1	21.05	2.5	65.0	0.0	114.5
सूखी मिर्च	7.95	3.1	15.8	1.15	80.0	25.0	123.0
हरी मिर्च	1.45	0.3	1.8	0.6	15.0	55.5	14.5
लौंग	2.6	4.45	23.0	2.45	370.0	0.0	143.0
धनिया	7.05	8.05	10.8	8.95	315.0	0.0	144.0
जीरा	9.35	7.5	18.3	15.5	540.0	1.5	178.0
फैनीग्रीक बीज	13.1	2.9	22.05	7.05	80.0	0.0	166.5
सूखा लहसुन	3.15	0.05	14.9	0.65	15.0	6.5	72.5
अदरक	1.15	0.45	6.15	1.3	10.0	3.0	33.5
मिर्च का दाना	5.75	3.4	24.6	8.4	230.0	-	152
हल्दी	3.15	2.55	34.7	7.4	184.5	-	174.5
आंवला	0.25	0.05	6.85	0.6	25.0	300.0	29.0
सेब	0.1	0.25	6.7	0.5	5.0	0.5	29.5
केला	0.6	0.15	13.6	0.45	8.5	3.5	58.0
चेरी	0.55	0.25	6.9	0.65	12.0	3.5	32.0
सूखे खजूर	1.25	0.2	37.9	3.65	60.0	1.5	158.5
खजूर	0.6	0.2	16.9	0.0	11.0	-	72.0
हरे अंगूर	0.25	0.15	8.25	0.25	10.0	0.5	35.5
अमरूद	0.45	0.15	5.6	0.7	5.0	106	25.5
नींबू	0.5	0.45	5.55	1.15	35.0	19.5	28.5
लिची	0.55	0.1	6.8	0.35	5.0	15.5	30.5
आम	0.3	0.2	8.45	0.65	7.0	8.0	37.0
खरबूजा	0.15	0.1	1.75	0.7	16.0	13.0	8.5
संतरा	0.35	0.1	5.45	0.15	13.0	15.0	24.0
पपीता	0.3	0.05	3.6	0.25	8.5	28.5	16.0
नाशपाती	0.3	0.1	5.95	0.25	4.0	0.0	26.0
अन्नानास	0.2	0.05	5.4	0.6	10.0	19.5	23.0
मछलियां							
एमलेट	10.45	0.55	1.85	0.55	130.0	-	59.0
चितल	9.3	1.15	1.55	1.5	90.0	-	59.0
केब	4.45	0.55	1.65	10.6	685.0	dSjksVsu	29.5
गोश्त							
बीफ	11.3	1.3	0.0	0.4	5.0	30.0	57.0
ऐग डक	6.75	6.85	0.4	1.5	35.0	600.0	90.5
ऐग हैन	6.65	6.65	0.0	1.05	30.0	600.0	86.5
चिकन	12.95	0.3	0.0	0.0	12.5	-	54.5
बकरे का गोश्त	10.7	1.8	0.0	0.0	6.0	-	59.0
लीवर गोट	10.0	1.5	0.0	0.0	8.5	-	53.5
लीवर शीप	9.65	3.75	065	3.15	5.0	11150	75.0
मटन मसल	9.25	6.65	0.0	1.25	75.0	-	97.0
पोर्क मसल	9.33	2.2	0.0	1.1	15.0	वि.सी. 1	57.0
दूध तथा दूध से निर्मित पदार्थ							
भैंस का दूध	2.15	4.4	2.5	0.1	105.0	0.5	58.5
गाय का दूध	1.6	2.05	2.2	0.1	60.0	1.0	33.5
बकरी का दूध	1.65	2.25	2.3	0.15	85.0	0.5	36.0
स्त्री का दूध	0.55	1.7	3.7	0.0	14.0	1.5	32.5

सम्पूरकों की आवश्यकता किसे हैं ?

कोई भी जो संतुलित आहार नहीं खा रहा है : संतुलित आहार में प्रतिदिन कम से कम पांच बार तथा सब्जियाँ, साथ ही साबुत अनाज, कम वसा वाले दुग्ध उत्पाद तथा थोड़ी सी चरबीहीन मांस, पोल्ट्री, मछली या दालें शामिल हैं, जिनसे पर्याप्त प्रोटीन, विटामिन तथा खनिज न मिल पा रहे हों।

खाद्य पदार्थ	प्रोटीन (ग्राम)	वसा (ग्राम)	कार्बोहाइड्रेट (ग्राम)	आयरन (ग्राम)	कैल्शियम (मि. ग्राम)	विटामिन (मि. ग्राम)	कैलोरी (कि. कैलोरी)
मलाईदार दूध	1.25	0.05	2.3	0.1	60.0	0.5	14.5
पनीर	9.15	10.4	0.6	0.0	104.0	1.5	132.5
चीज	12.5	12.55	3.15	0.05	39500	-	174.0
खोया	10.0	12.95	12.45	0.0	478.0	3.0	206.5
मलाईदार दूध पाउडर	19.0	0.05	25.5	0.7	685.0	2.5	178.5
दूध पाउडर	12.9	13.35	19.0	0.3	475.0	2.0	248.0
वसा तथा खाद्य तेल							
मक्खन	-	40.5	-	-	-	-	364.5
गाय के दूध से निर्मित घी	-	50.0	-	-	-	-	450.0
भैंस के दूध से निर्मित घी	-	50.0	-	-	-	-	450.0
वनस्पति घी	-	50.0	-	-	-	-	450.0
मूंगफली, सरसों, नारियल का तेल	-	50.0	-	-	-	-	450.0
मिठाईयां							
बर्फी	2.65	8.95	28.55	204.5	-	-	-
गुलाब जामून	3.4	12.1	18.9	193.5	-	-	-
हलवा	1.3	6.5	17.05	131.5	-	-	-
जलेबी	2.2	17.15	21.0	247.0	-	-	-
गुजिया	4.1	13.25	28.95	250.5	-	-	-
मिल्क केक	2.3	7.3	22.75	165.5	-	-	-
शक्करपारे	2.7	3.4	40.35	201.5	-	-	-
बालुशाई	2.7	11.0	31.1	234.5	-	-	-
पुड़ा	3.05	9.8	30.8	223.5	-	-	-
मीठा दलिया	3.85	3.55	15.25	108.5	-	-	-
चोकलेट की टॉफी	2.55	10.15	32.6	232.0	-	-	-
नारियल की टॉफी	2.1	5.75	35.1	214.5	-	-	-
खीर	2.05	2.25	10.55	70.5	-	-	-
मीठे चावल	1.25	4.4	22.3	133.5	-	-	-
पेठा	2.3	5.25	24.2	153.5	-	-	-
केक	2.55	15.25	24.75	246	-	-	-
स्पांज केक	3.8	2.25	26.9	143	-	-	-
रवा अप्पम	2.55	5.85	24.05	159.0	-	-	-
मीठा अप्पम	3.15	16.1	42.6	328.0	-	-	-
मीठा वदाई	2.85	8.95	27.65	202.5	-	-	-
अदी रसम	1.9	7.2	41.55	241.0	-	-	-
विविध भोजन							
नमकीन बिस्कुट	3.3	16.2	27.3	-	9.0	-	267.0
मीठे बिस्कुट	3.2	7.6	35.95	-	5.5	-	225.0
ब्राउन ब्रैड	4.4	0.7	24.5	1.1	6.0	-	122.0
सफेद ब्रैड	3.9	0.35	25.95	0.55	5.0	1.0	122.5
केन शुगर	0.05	-	49.7	-	7.5	1.5	199.0
जेगरी शुगर	0.2	0.05	47.5	5.7	40.0	-	191.5
पापड़	9.4	0.15	26.2	8.6	5.0	-	144.0
शुगर केन जूस	0.05	0.1	4.55	0.55	75.0	-	19.5
जैम	0.25	-	35.4	-	-	-	139.0
विस्की	-	-	-	-	-	-	140.0
ब्रैन्डी	-	-	-	-	-	-	150.0
बीयर	0.3	-	2.2	-	-	-	22.0

जैसे–जैसे हमारी उम्र बढ़ती है : हमें आवश्यक सभी पोषक तत्व नहीं मिल पाते। ऐसा इसलिए है क्योंकि बुढ़ापे के कारण कुछ पोषक तत्वों को पचाने तथा उनका उपयोग करने में अधिक कठिनाई होती है। विटामिन सी, डी, बी6, बी12, तथा फोलिक एसिड के साथ ही जिन्क सहित कुछ खनिज वृद्धजनों के लिए समस्या जनक पोषक तत्व हैं।

रिपोर्ट



जननी

नारी सशक्तिकरण में ही निहित है मानव सशक्तिकरण कावा का प्रयास

कावा द्वारा नन्हीं छां संस्था के सहयोग से लॉच की गई जननी नामक योजना की लॉचिंग 18 दिसम्बर को महानिदेशालय, नई दिल्ली द्वारा आयोजित एक समारोह में केन्द्रीय गृहमंत्री माननीय श्री पी.चिदम्बरम के कर कमलों द्वारा की गई। इस अवसर पर गृहमंत्री ने बालिकाओं के माता–पिता को सद्भावना व स्मृति चिन्ह के रूप में पौधे

प्रदान किए।

इसके अतिरिक्त वर्ष 2009 में पैदा होने वाली बालिकाओं के नाम कावा की ओर से आवर्ती खाते खुलवाकर दिए गए जिनका आगे रख रखाव उनके अभिभावक करेंगे।

इस अवसर पर गृहमंत्री महोदय ने सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल की प्रतिभावान तथा उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली कुछ छात्राओं को भी सम्मानित किया।

अपने स्वागत उद्बोधन में कावा अध्यक्षा श्रीमती मंजीत गिल ने कहा कि बालिकाओं और महिलाओं को समाज में उनका निर्धारित स्थान मिले व वे भी समाज के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके। इसमें कावा अपनी ओर से पूरा–पूरा सहयोग देने के लिए प्रतिबद्ध है।

उन्होंने यह भी कहा कि पर्यावरण आज समाज की जिंदगी की सबसे बड़ी जरूरत है और महिलाएं स्वच्छ पर्यावरण बनाने में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं इसलिए बालिकाओं और पर्यावरण दोनों को संरक्षित किया जाना चाहिए। उन्होंने यह बताया कि जननी कार्यक्रम की लॉचिंग अब सीआरपीएफ के अन्य ग्रुप केन्द्रों तथा यूनिटों में की जाएगी।

अपने उद्बोधन में गृहमंत्री महोदय ने कहा कि समाज के उत्थान में महिलाओं की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। उन्होंने यह भी कहा कि महिलाएं घर एवं बाहर दोनों जगह के कार्यक्षेत्र में समान रूप से अपनी महत्ती भूमिका निभाती है और वह मल्टी टॉस्किंग में कुशल होती हैं और कुछ मामलों में पुरूषों से बेहतर होती हैं। अतः उनका सम्मान व संरक्षण किया जाना चाहिए।

इस समारोह में फोर्टीस अस्पताल के सीईओ व नन्ही छां संस्था के फाउंडर श्री हरपाल सिंह, श्रीमती आहलूवालिया, महानिदेशक श्री ए.एस.गिल, अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण, बल कार्मिकों के परिवारों के सदस्य शामिल थे।

सीआरपीएफ वाइव्स वेलफेयर एसोसिएशन (कावा) की स्थापना एक एन०जी०ओ० के रूप में वर्ष 1995 में बल के कार्मिकों के परिवारों व शहीद जवानों की विधवाओं की मदद एवं उनको सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से की गई थी।

कावा अपने प्रयासों द्वारा आन्तरिक सुरक्षा की चुनौतियों से जूझ रहे बल के कार्मिकों के परिवारों को सुविधाएँ दिलाने के अनेक प्रयास कर रहा है। अपने बहुआयामी कार्यक्षेत्रों में कावा "नन्हीं छॉ" संस्था के सहयोग से एक और नया प्रयास 'जननी' के रूप में करने जा रहा है जिसके मुख्य उद्देश्य है :–

- बालिकाओं के अधिकारों की सुरक्षा।
- दहेज जैसी कुरीति के बारे में जागरूकता पैदा करना।
- महिलाओं/बालिकाओं को स्वस्थ्य रखना।
- क्षमता वृद्धि के माध्यम से महिला सषक्तिकरण।

- पर्यावरण संतुलन के बारे में जागरूकता लाना।

महिला एक धुरी के समान है जिसपर परिवार का हर सदस्य आश्रित होता है। वह बेटी, बहन, पत्नी और जननी की भूमिका से समाज को पूरा बनाती है। इस धुरी के आधार को मजबूत करने के लिए हमें बालिकाओं को अधिकार देने होंगे ताकि वे आत्म सम्मान से प्रगति कर सकें और स्वस्थ समाज का निर्माण हो सके परन्तु इसी समाज में लिंग परीक्षण करवाकर बालिका भ्रूण हत्या जैसी समस्या महामारी के रूप में फैल रही है। इस वीभत्स प्रथा को रोकने की हमारी जिम्मेदारी बनती है तथा इस जघन्य सामाजिक अपराध की निरन्तरता की छुट समाज को न दें, इस बात का प्रयास 'जननी' के माध्यम से किया जा रहा है। आज दहेज रूपी कुप्रथा ने समाज में अपनी गहरी जड़ें जमा ली हैं। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमन्ते तत्र देवता' मानने वाली इस धरती पर आज उसी पूजनीय नारी का शोषण हो रहा है। समाज की इस भयानक कुरीति को रोकने का प्रण तथा प्रयास 'जननी' द्वारा शुभारम्भ किया जा रहा है।



सशक्त नारी हो प्रयास।
बढे सशक्त समाज की आस।

परिवार को यदि स्वस्थ रखना है तो स्त्री का स्वस्थ होना अति–आवश्यक है। अतः 'जननी' योजना में स्त्री स्वास्थ्य को महत्व दिया गया है। समाज में इन सब कुरीतियों के चलते भावनात्मक, आर्थिक व मानसिक स्तर पर नारी का आत्मसम्मान क्षीण होने से उसके आत्मविश्वास में कमी आई है। 'जननी' का प्रयास है कि नारी को आत्मनिर्भर बनाएँ, उसकी क्षमताओं में वृद्धि करें जिससे कि उनमें आत्म सम्मान और

आत्मविश्वास जागृत हो और वह आर्थिक रूप से भी स्वावलंबी बनें।

पर्यावरण की रक्षक, जग में नारी है।
माँ प्रकृति की उसने, छटा संवारी है।

जिस प्रकार पेड पौधे प्रकृति में संतुलन बनाकर पर्यावरण को सुरक्षित रखते हैं उसी प्रकार नारी भी अपने बच्चे को पोषित कर एक अच्छा नागरिक बनाकर समाज में संतुलन बनाए रखती है। अतः घर में नन्हीं बिटिया होने या बहू आने पर क्यों न एक पौधा लगाया जाये जो प्रतीक होगा नन्हें पौधे से पेड बनकर समाज में खुशहाली फैलाने का।

इसका अर्थ यह नहीं कि परिवार में लड़कों की अनदेखी की जाए, बल्कि उन्हें अच्छी शिक्षा व अच्छे संस्कार दिए जाएं ताकि वे आगे चलकर नारी का सम्मान करें। इससे स्वस्थ समाज बनेगा तथा समाज में मौजूद कुरीतियों और नारी संबंधी अपराधों का अंत होगा। यह प्रयास किसी विशेष धर्म, सम्प्रदाय, जाति से नहीं मानव धर्म से जुडा है।

आइए, हम सब “जननी” नामक प्रयास को सफल बनाएं।

खबरों में

‘रिजर्व’ नहीं रह गया केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल

हिन्दुस्तान 2 दिसंबर 2009

कहने को यह भारत के पास सबसे बड़ी रिजर्व पुलिस फोर्स है, लेकिन विडंबना देखिए आज इसकी एक भी बटालियन ‘रिजर्व’ नहीं बची है। देश में लगातार बिगड़ती कानून–व्यवस्था, खासतौर पर नक्सली गतिविधियों में आए उफान के बाद 210 बटालियनों वाला 60 साल पुराना केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) आज शत–प्रतिशत तैनाती की हालत में है।


'रिजर्व' नहीं रह गया केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल

मनोज मिश्रा नई दिल्ली

210 2.1

110

41

गौरतलब है कि सीआरपीएफ केंद्र सरकार का सशस्त्र रिजर्व बल है, जिसका गठन कानून–व्यवस्था हाथ से निकल जाने जैसी आपात स्थितियों में राज्यों को मदद पहुँचाने के लिए किया गया है। नियमानुसार बल की तैनाती अल्पकालीन होती है और काम पूरा हो जाने के बाद जवान वापस बैरकों में लौट जाते हैं। लेकिन एक अर्से से गृह मंत्रालय ने सीआरपीएफ को नक्सली हिंसा, आतंकवाद, सांप्रदायिक दंगों आदि से लड़ने तथा चुनाव ड्यूटी, आपदा राहत और वीआईपी सुरक्षा जैसे दर्जनों स्थाई कामों में इस कदर झोंका हुआ है कि बल की एक भी बटालियन रिजर्व नहीं है। सीआरपीएफ के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, 'आज हामरे पास सिर्फ तीन कंपनियाँ (300 जवान) और एक महिला कंपनी रिजर्व में है।'

सीआरपीएफ की ताकत इसकी विविधता है। दुनिया की किसी भी अन्य फोर्स के पास यह खूबी नहीं है। 'गृह मंत्रालय के सूत्र कहते हैं कि दिसंबर में झारखंड चुनावों के बाद माओवादी हिंसा में तेजी आएगी। सूत्रों के अनुसार, 'कुछ राज्यों में नक्सल विरोधी अभियान तेज किए जाने थे, लेकिन महाराष्ट्र और झारखंड के चुनावों की वजह से इन्हें रोका गया है। चुनाव प्रक्रिया पूरी होते ही ये अभियान पूरी गति पकड़ेंगे और जाहिर है सीआरपीएफ ही इनमें सबसे आगे होगा।'

सीआरपीएफ को नक्सलियों से लोहा लेने के लिए मिलेंगे आधानिक हथियार

जनसत्ता 12 दिसंबर 2009

नई दिल्ली, 11 दिसंबर (भाषा)। गृह मंत्रालय नक्सल विरोधी बड़े अभियान की तैयारी कर रहे सीआरपीएफ के लिए अत्याधुनिक हथियार खरीदने की प्रक्रिया में है। सूत्रों के मुताबिक मंत्रालय बल के लिए रात में निशाना साधने में सक्षम राइफलें खरीदने पर विचार कर रहा है जो नक्सल विरोधी अभियानों में बल की क्षमता को मजबूत करेंगी।



सीआरपीएफ को नक्सलियों से लोहा लेने के लिए मिलेंगे आधुनिक हथियार

नई दिल्ली, 11 दिसंबर (भाषा)। गृह मंत्रालय नक्सल विरोधी बड़े अभियान की तैयारी कर रहे सीआरपीएफ के लिए अत्याधुनिक हथियार खरीदने की प्रक्रिया में है। सूत्रों के मुताबिक मंत्रालय बल के लिए रात में निशाना साधने में सक्षम शक्तिशाली खरीदने पर विचार कर रहा है जो नक्सल विरोधी अभियानों में बल की क्षमता को मजबूत करेगी।

कोबरा के कर्मियों को पहले ही कार्बन फाइबर वाली एके47 सुलभ कराई जा चुकी है जो सामान्य एके47 से हल्की लेकिन उतनी ही कारगर हैं। खरीदे जाने वाले नए हथियारों में अंडर बैरल ग्रेनेड लांचर (यूबीजीएल) शामिल हैं जो 50 से डेढ़ सौ मीटर की दूरी से हथगोले दागने के लिए एके–47 सहित किसी भी बंदूक में लगाए जा सकते हैं। इसके अलावा स्वचालित एमपी 5ए रायफल और फ्रेगमेंटेशन ग्रेनेड हैं जो भारी नुकसान पहुँचा सकते हैं क्योंकि यह कई टुकड़ों में विभाजित होकर हमला करते हैं।

इसके अलावा हल्के फाइबर वाले ग्लोक पिस्तौल खरीददारी सूची में हैं। ये पिस्तौल सटीक निशाना साधने में सक्षम होंगी। विशेष इकाई के कमांडो के पास लेजर साइट के इस्तेमाल का विकल्प भी होगा जो माओवादियों से निपटते वक्त सटीकता के लिए किसी भी बंदूक में लगाया जा सकता है। इसके अलावा उच्च श्रेणी के विशेष टेलीस्कोप मेनीप्यूलेटर और पोर्टेबल एक्स–रे मशीनें भी बल को दी जाएंगी।

नक्सल प्रभावित इलाकों खसकर घने जंगलों और सुदूरवर्ती गांवों में बल नियंत्रण स्टेशन से संपर्क के लिए बेहतर उपग्रह फोन और हाई फ्रीक्वेंसी ट्रांसमीटर से सुसज्जित होगा। इस समय बल के कर्मी करीब 14 किलोग्राम भार वाले बुलेटप्रूफ जैकेट का इस्तेमाल करते हैं। मंत्रालय अब करीब छह किलोग्राम भार वाले जैकेट खरीद रही है। सीआरपीएफ ने ऐसे 59 हजार जैकैटों के लिए निविदा जारी कर भी दी है।

कल्याणकारी योजनाओं के पथ पर ग्रुप केन्द्र दुर्गापुर का एक और कदम



01 दिसम्बर 2009 को ग्रुप केन्द्र, दुर्गापुर मुख्य द्वार पर भारतीय स्टेट बैंक एटीएम का उद्घाटन श्री एम.एस. बालाकेशवन, पु उ म नि, ग्रुप केन्द्र के कर कमलों द्वारा सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर भारतीय स्टेट बैंक के महा प्रबन्धक श्री रजत चटर्जी, रीजनल प्रबन्धक श्री एस सोम राजन एवं श्री संजीव राय, कमाण्डेन्ट(स्टाफ) दुर्गापुर रेंज कार्यालय, श्री बी सी पात्रा द्वि कमा. अधिकारी सहित ग्रुप केन्द्र के तमाम अधिकारी, अधीनस्थ अधिकारी, अन्य पदाधिकारी एवं उनके परिवारजन उपस्थित थे। उद्घाटन समारोह के दौरान मुख्य अतिथि द्वारा कहा गया कि इस स्टेट बैंक एटीएम के प्रारम्भ होने को ग्रुप केन्द्र परिसर में रह रहे समस्त परिवार जन एवं कैम्पस के नजदीक/लगे हुए क्षेत्र में निवास कर रही दुर्गापुर की आम जनता के लिए भी कल्याणकारी योजनाओं में आकलन की जायेगी।

ग्रुप केन्द्र दुर्गापुर परिसर में विश्व एड्स दिवस का आयोजन



ग्रुप केन्द्र, दुर्गापुर में श्री एम.एस.बालाकेश्वन, पुउमनि ग्रुप केन्द्र की अध्यक्षता में विश्व एड्स दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री संजीव राय, कमाण्डेन्ट (स्टाफ) रेंज कार्यालय, श्री बी सी पात्रा, द्विकमा अधिकारी, श्री नीमा लामा, उप

कमाण्डेन्ट, डा एम के रजक, चिकित्सा अधिकारी एवं सब–डीविजेनल अस्पताल दुर्गापुर की चिकित्सा अधिकारी डा अदिति मुखर्जी, कांउसिलर श्री मेघनाथ मण्डल सहित ग्रुप केन्द्र के तमाम अधिकारी, अधीनस्थ अधिकारी अन्य पदाधिकारी एवं कैम्प परिसर मे रहने वाले परिवारजन भी उपस्थित थे। अध्यक्ष महोदय द्वारा सभी उपस्थित को संबोधित करते हुए कहा गया कि बचाव ही "एड्स" जैसी खतरनाक बीमारी से बचाव का सबसे बड़ा उपाय है। इस अवसर पर सभी को "एडस" पर आधारित डॉक्युमेन्ट्री दिखाई गई तथा पम्पलेट्स भी वितरित किए गए।

दोस्ताना क्रिकेट मैच का आयोजन



ग्रुप केन्द्र दुर्गापुर परिसर में 31 दिसम्बर 2009 को वर्ष 2009 के विदाई एवं नव वर्ष 2010 के स्वागत मे रेंज कार्यालय व ग्रुप केन्द्र के राजपत्रित अधिकारी की टीम डेअर डेविल्स एवं अधीनस्थ अधिकारी व जवानों की टीम ब्लू चैलेंजर्स के मध्य 20–20 क्रिकेट का दोस्ताना मैच का आयोजन किया गया। जिसमे बल के सभी सदस्यों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया एवं आयोजन को सफल बनाया। इस अवसर के माननीय मुख्य अतिथि श्री एम. एस. बालाकेशवन, पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र द्वारा विजेता टीम डेअर डेविल्स के कैप्टन श्री संजीव राय, कमाण्डेन्ट (स्टॉफ) रेंज कार्यालय सहित तमाम खिलाड़ियों को पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया। इस अवसर पर श्री बी सी पात्रा द्वितीय कमान अधिकारी, श्री जे के गुप्ता, उप कमाण्डेन्ट सहित ग्रुप केन्द्र के तमाम अधिकारी, अधीनस्थ अधिकारी, अन्य पदाधिकारी एवं कैम्प परिसर में रहने वाले परिवारजन आदि उपस्थित थे।

समाचार

देहरादून में क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित



केशवदेव मालवीय पेट्रोलियम अन्वेषण संस्थान ओ एन.जी.सी. देहरादून में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में महानिदेशालय, के.रि.पु. बल, नई दिल्ली को 'क' क्षेत्र में वर्ष 2007–08 के दौरान भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रदर्शन करने पर भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार भारत सरकार के केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय माकन द्वारा प्रदान किया गया। महानिदेशालय क प्रतिनिधि के रूप में श्री वी बी चव्हाण, सहायक निदेशक ने मंत्री महोदय के कर कमलो से प्रथम पुरस्कार की शील्ड ग्रहण की। इसके अतिरिक्त महानिदेशालय में पदस्थ निरीक्षक/हिंदी अनुवादक एस एस वर्मा को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

परिचालनिक उपलब्धियाँ

वर्ष 2009 के दौरान केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने कुल 293 मुठभेड़ों में कुल 190 आंतकवादियों को मार गिराया व सदिग्धों सहित 2054 को गिरफ्तार किया व 212

लोगों को आत्मसमर्पण करवाया। उनसे 685 हथियार, 47902 गोली बारूद एवं 1962 किलो ग्राम विस्फोटक बरामद किया।
इन घटनाओं में बल ने अपने 70 बहादुर कार्मिकों को खोया, 639 कार्मिक घायल हुए।

कविताएं

नई भोर हुई जागो प्यारे

राकेश कुमार गंगेल, उप नि/मं,102 बटालियन?

नई भोर हुई जागो प्यारे।
नये साल में स्वागत करने।
नील गगन से उतरे तारे।
नई भोर हुई जागो प्यारे।

अमराई आमों में आई।
धानी चूनर अम्बर छाई।
कूक–कूक कर कोयल रानी।
वीर तुम्हें दे रही बधाई।
भीषण सपना आये कोई, इसके पहले जागो प्यारे।
नई भोर हुई जागो प्यारे।

बृन्दावन में नाचे कन्हैया।
ग्वालों के संग ता–था–थैया।
रक्षा करने अपनी प्यारे।
बुला रही तुम्हें भारत मैया।
नये साल में शीश उठा कर शपथ लो वीरो प्यारे।
नई भोर हुई जागो प्यारे।

नये साल की अमृत बेला।
मचा देश में ठेलम–ठेला।
मंहगाई ने कमर तोड़ दी।
सच्चाई ने नजर मोड़ ली।
सारी दुनिया में बस, तुम ही सच्चे वीर हो प्यारे।
नई भोर हुई जागो प्यारे।

देश तुम्हें आगाज दे रहा।
जन–जन है आवाज दे रहा।
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई।
गले लगो और दो बधाई।
फूहड़ता की इस दुनिया में, भेद भाव सब तोड़ो प्यारे।
नई भोर हुई जागो प्यारे।

सीना ऊँचा रखना हरदम।
देश का ऊँचा रखना परचम।
ना शान देश की जाने पावे।
चाहे जान भले ही जावे।
हंसते–हंसते शीश उठाकर, बल बेदी पर चढ़ जा प्यारे।
नई भोर हुई जागो प्यारे।

फूलों की वादी में घर हो।
राह में ना कोई पत्थर हो।
नया साल हो तुम्हें मुबारक।
रंच मात्र ना तुमको डर हो।
नजर सामने सीना ऊँचा, कदम बढाओ आगे प्यारे।
नई भोर हुई जागो प्यारे।

अम्बर के जितने हैं तारे।
खुशी से झोली भरें तुम्हारे।

जीवन पथ पर हंस कर चलना।
संकट में भी नहीं विचलना।
भारत माँ के वीर सिपाही, जय हिन्द तुम बोलो प्यारे।
नई भोर हुई जागो प्यारे।

बदल देते हैं

आर पी सिंह, सहा कमा
ग्रुप केन्द्र, इम्फाल

सुना है कि वे तकदीर बदल देते हैं,
आईना वही रहे तस्वीर बदल देते हैं।
पकड़ में न कही आ जाये इसलिए,
कत्ल के बाद शमशीर बदल देते हैं।
ख्वाब तो दिखाते हैं वे कुछ बुरे नहीं,
आँख मगर खुलते ही ताबीर बदल देते हैं।
हाथ आयेंगे कैसे, ये अपनी जगह,
पंजाब कहीं असम, कश्मीर बदल देते हैं।
शक्ल भी अगर पहचान को इनकी,
ये शक्ल के साथ तस्वीर बदल देते हैं।

समझायें उन्हें

जिन्दगी की राह में बिछड़े जहाँ से हम,
क्या करें तरकीब कि उस मोड़ पे लाये उन्हें।
कैसे रिश्ते थे कभी उनके और महरूम के,
काश ऐसा हो कि याद आ जाये उन्हें।
मेरे जैसा दिल कहाँ से लाओगे,
ये बात इस दौर में कैसे समझाये उन्हें।
खुदा करे हमसे भी कोई काम पड़ जाये,

ऐसा हो कि हम भी जो भरके तरसायें उन्हें।
वो हमसे खफा है किसी और के हम हो गये,
हम परेशां है किसको अपना बतलाएं उन्हें।

तेरी बात

सुबह उम्मीद ही, हर दिन कोशिश की बात,
शाम ख्यालों की हर रात तेरे ख्वाबों की रात।
जब–जब भी समझा मैं शबे वस्ल,
साबित हुई वहीं नाकामियों की रात।
लोगों की निगाहों से छिपाये रहा मगर,
हर एक से की इशारों में तेरी बात।
लकीरें अपने हाथों की देखता हूँ मैं,
बनाने में इसके किस–2 का रहा हाथ।
हार मेरी तुम्हारी जीत में कहाँ,
हार जाओ एक बार देने को मुझे मात।
इलाही गैर भी क्या समझेगें भला मुझे,
जब वो नहीं समझे जो करते हैं मुझसे बात।

इजहार

ये सच है कि इज़हार मुहब्बत सह गये तुम,
मैं भी तो खामोशी तुम्हारी सह गया हूँ।
तुमने सब बात कह दी खामोश रहकर,
मैनें क्या किया कि सबकुछ कह गया हूँ।
तुमने सबक हकीकत का समझाया मुझे,
मैं क्यूँ मौजे जज्बात में बह गया हूँ।
तुमको वफा सारे जमाने की मिली,
बस एक मैं ही तन्हा रह गया हूँ।
महरूम गिराने में दीवार नफरत की,

उनकी नजर में खाक बनके रह गया हूँ।

डर है

मजबूत सबसे पहले कर लीजिये दिल को,
सबसे पहले इसके ही खो जाने का डर है।
जब ये धड़कने लगे तो जुबां बंद रखना,
उछलकर बाहर ही हो जाने का डर है।
दुनियाँ में होती है सोते हुए चोरी,
यहाँ जागते में ही हो जाने का डर है।
तुम अश्क तो अपनी आँखों के छपा लोगे,
बेइख्तियार का हंसी में ही खो जाने का डर है।
लब खुले होंगे, आँखे भी बन्द न होगी,
इसका ऐसे में ही सो जाने का डर है।
ये न सोचो कि लेंगे, इसके बगैर भी,
इसके जरिये ही सब के जाने का डर है।
खैर समझो गर दिल पर ही बीत जाये,
पर इसमें तो खुद ही खो जाने का डर है।

तनहाई

शाम होते ही बिस्तर लपेट देता हूँ,
रातों में मुझे नींद नहीं आती।
बात वस्ल की तमन्ना की नहीं यारो,
शबे इन्तजार से नजर चुराई नहीं जाती।
मैं जानता हूँ उम्र अकेले में ही कटेगी,
कुछ भी करो दिन में तन्हाई नहीं आती।
एक ही चीज तो मिली है मुहब्बत में,
कितनी भी मुश्किल हो लौटाई नहीं जाती।

इन्तजार

आधी रात सोचा कि अभी बहुत रात है,
बाकी इस तरह कि वो आ रहे होंगे।
आज सारे जख्म दिखाऊँगा उन्हे,
यकीनन वो मरहम ला रहे होंगे।
देर भी लग जाती है, दवा के समझने में,
एक रख रहे होंगे, एक उठा रहे होंगे।
घर से निकलना इस तरह नहीं आसां,
वो कोई भी बहाना बना रहे होंगे।
हर राही उनपे शक करता होगा,
हर एक को कुछ न कुछ समझा रहे होंगे।



अखिल भारतीय पुलिस गोल्फ प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त करने पर हरियाणा पुलिस के महानिदेशक से ट्रॉफी प्राप्त करते हुए उप महानिरीक्षक, प्रशिक्षण श्री रविन्द्र तोमर।



उधमपुर में *187* बटालियन द्वारा सिविक एक्शन कार्यक्रम में स्थानीय छात्रों को खेल सामग्री का वितरण करते हुए कमा० श्री एम.पी.बहुगुणा